नालयिरा दिव्य प्रबंधम्

तिरूवायमोळी (सहस्रगीति चतुर्थ)

नम्माळवार

संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

समर्पण

श्रीमद्भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

श्रीमते रामानुजाय नमः

परिचय

शान्तानन्तमहाविभूति परमं यद्ब्रह्मरूपं हरेः
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम् ।

श्री वैष्णव दिव्य देश की कुल संख्या **108** मानी गयी है। दिव्य देश के मन्दिरों में नारायण हरि के भिन्न भिन्न अर्चारूप हैं। इन अर्चा विग्रहों की प्रशस्ति **12** आळवार संतों द्वारा स्वतः स्फूर्त हृदयोद्गार से की गयी है और इन सबों के संकलन को दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। इसमें कुल चार हजार पाशुर या छंद हैं इसलिये इसे नालयिरा दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। मूल पाशुर तमिल में हैं। कालक्रम में इनका लोप हो गया था परंतु श्री नाथमुनि के अथक परिश्रम से नम्माळवार की कृपा हुई और ये पुनः प्राप्त हुए। बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिये इस संकलन को चार भागों में बांटा गया है एवं हर भाग को सहस्रगीति कहते हैं।हालांकि नम्माळवार का तिरूवाय्मोळि को भी केवल सहस्रगीति से संबोधित किया जाता है क्योंकि सारे **24** प्रवंधों में यह सर्वोत्तम महत्व वाला प्रबंध है। दिव्य प्रबंधम् में संकलित सारे **24** प्रबंधों का एक विहंगम अवलोकन नीचे के वर्णिका से किया जा सकता है।

संकलन	आळवार	प्रबंध	पाशुरों की संख्या रीति 1	पाशुरों की संख्या रीति 2
प्रथम सहस्रगीति मुदल आयिरम	पेरियाळवार (विष्णुचित्त स्वामी)	1पेरियाळवार तिरूमोळी	1 से 473	1 से 473
	आंडाल	2 तिरूप्पावै	474 से 503	474 से 503
		3 नाच्चियार तिरूमोळी	504 से 646	504 से 646
	कुलशेखराळवार	4 पेरूमाल तिरूमोळी	647 से 751	647 से 751
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	5 तिरूच्चन्दविरूत्तम	752 से 871	752 से 871
	तोंडरादिप्पोडियाळवार (भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी)	6 तिरूमालै	872 से 916	872 से 916
		7 तिरूप्पळ्ळियळुच्चि	917 से 926	917 से 926
	तिरूप्पाणाळवार	8 अमलनादिपिरान्	927 से 936	927 से 936
	मधुरकवियाऴवार	9कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु	937 से 947	937 से 947
द्वितीय	तिरूमङ्गैयाळवार	10 पेरिया तिरूमोळि	948 से 2031	948 से 2031

सहस्रगीति इरान्दाम आयिरम		11 तिरूक्कुरून्दाण्डगम्	2032 से 2051	2032 से 2051
		12 तिरूनेडुन्दाण्डगम्	2052 से 2081	2052 से 2081
तृतीय सहस्रगीति मून्राम आयिरम (इयर्पा)	पोय्गैयाळवार	13 मुदल् तिरूवन्दादि	2082 से 2181	2082 से 2181
	भूदत्ताळवार	14इराण्डाम् तिरूवन्दादि	2182 से 2281	2182 से 2281
	पेयाळवार	15 मून्राम तिरूवन्दादि	2282 से 2381	2282 से 2381
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	16नान्मूगन तिरूवन्दादि	2382 से 2477	2382 से 2477
	नम्माळवार	17 तिरूविरूत्तम	2478 से 2577	2478 से 2577
		18 तिरूवाशिरियम	2578 से 2584	2578 से 2584
		19 पेरिया तिरूवन्दादि	2585 से 2671	2585 से 2671
	तिरूमङ्गैयाळवार	20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	2672	2672
		21 शिरिय तिरूमडल	2673 से 2710	2673
		22 पेरिय तिरूमडल	2711 से 2790	2674
	तिरूवरङ्गत्तमुदनार	23 इरामानुश नुट्रन्दादि	2791 से 2898	-
चतुर्थ सहस्रगीति नान्गाम आयिरम	नम्माळवार	24 तिरूवाय्मोळि	2899 से 4000	2675 से 3776

ऊपर के वर्णिका में एक और ध्यान देने योग्य बात है कि प्रबंध संख्या **23** जो रामानुज नुट्रन्दादि है यह आळवारों की रचना नहीं है और यह रामानुज स्वामी के शिष्य मुदनार की कृति है जिसे सुनकर स्वामीजी ने अपने जीवनकाल में इसकी स्वीकृति दे दी थी। नित्यानुसंधानम में प्रायः इसका पाठ तिरूवाय्मोळि के बाद किया जाता है।

पाशुरों की गणना की संख्या की भी दो रीतियां प्रचलित हैं। रीति **2** में 'शिरिय तिरूमडल' तथा 'पेरिय तिरूमडल' जो कमशः प्रबंध **21** एवं **22** हैं के पाशुरों को समेकित रूप से एक एक ही माना गया है जबकि पाठ

के वस्तु सामग्री तथा उनके कम में कोई अंतर नहीं है। प्रबंध **23** यानी रामानुज नुट्रन्दादि को कोई पाशुर की गिनती में नहीं रखा जाता है।इस तरह से प्रबंध **24** तिरूवायमोळी की गिनती **2675** से शुरू कर कुल **1102** पाशुरों को लेने पर दिव्य प्रबंधम् के कुल समेकित पाशुर **3776** होते हैं।

पाशुरों को पहचानने की एक और रीति है जो शतक एवं दशक की संख्या से संबोधित होती है। जैसे कि तिरूवायमोळी में दस शतक हैं एवं प्रत्येक शतक में **10** दशक हैं तथा एक दशक में **11** पाशुर हैं। दूसरे शतक का सातवां दशक **13** पाशुरों का है क्योंकि यह भगवान के **12** नामों के लिये है और प्रत्येक नाम पर एक पाशुर है तथा अंतिम पाशुर फलश्रुति है। इसतरह से प्रत्येक दशक में अंतिम पाशुर जो ग्यारहवां पाशुर है फलश्रुति का है। शतक दशक पाशुर की रीति में अगर कोई कहता है **2**।**7**।**3** देखिये तो इसका अर्थ हुआ कि **2**रे शतक के **7**वें दशक का **3**रा पाशुर है। यह रीति ज्यादा प्रचलित है जो 'तिरूवायमोळी' के अतिरिक्त 'पेरयिा आळवार तिरूमोळी' तथा 'पेरिया तिरूमोळी' के पाशुरों को पहचानने में भी उपयोग में लाया जाता है। यह विदित है कि श्री विष्णुचित्तस्वामी वाले 'पेरयिा आळवार तिरूमोळी' में **5** शतक हैं तथा श्री परकाल स्वामी वाले 'पेरिया तिरूमोळी' में **11** शतक हैं जबकि नम्माळवार वाले 'तिरूवायमोळी' में **10** शतक हैं। यह देखा जा सकता है कि ऊपर के तीन प्रबंधों के पेज के कमांक में प्रत्येक पेज के पादप में पाठकों की सुविधा के लिये शतक एवं दशक की संख्या भी दिया हुआ है।

दिव्य प्रबंधम का हिन्दी में सरल भावार्थ श्रीमान् सुन्दर कीदम्बी द्वारा तैयार किया हुआ देवनागरी लिपि के पाशुरों को उपयोग में लाते हुए किया गया है। इसके लिये श्रीमान् के सदा आभारी हैं जिनकी अनुमति इस तरह के कैंकर्य के लिये दास को मिल चुकी है। देवनागरी में उपलब्ध पाशुरों को श्रीमान् के www.prapatti.com से लिया गया है। एक बार फिर अपना आभार श्रीमान् द्वारा किये गये महान कैंकर्य के लिये प्रकट करते हैं कि देवनागरी में पाशुरों को न उपलब्ध रहने पर इस तरह के कैंकर्य की कल्पना करने का साहस नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त श्रीमान् से अन्य महत्वपूर्ण वेब साईट का लिंक भी प्राप्त हुआ जिससे दास का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ। श्रीबरदराज स्वामी से श्रीमान् के ऊत्तरोत्तर प्रगति के लिये प्रार्थना है।

तिरूमला तिरूपति देवस्थान द्वारा अंग्रेजी में सात खंडों में प्रकाशित '**108** वैष्णव दिव्य देशम' जो डा॰ सुश्री एम एस रमेश आई ए एस की कृति है को दिव्य देशम के वर्णन के लिये उपयोग में लाया गया है । उपयुक्त जगहों पर इसके खंड एवं पेज का संदर्भ ब्रैकेट में दिया गया है। सुश्री रमेश एवं ति ति देवस्थानम को विनम्र आभार प्रकट करते हैं।

डा॰ एस जगतरक्षण का 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम्' जिसकी अंग्रेजी टीका श्री राम भारती द्वारा की गयी है हिन्दी के इस कैंकर्य में बड़ा ही सहायक हुआ है। डा॰ एस जगतरक्षण का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

भगवान देवराज वरदराज स्वामी की कृपा से कांचीपुरम में परम विद्वान श्री कोईल अन्नन स्वामी से बड़ा मनोबल बढ़ा और दास आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। पेरूमाल कोईल कांचीपुरम के श्रीनम्माळवार

सन्निधि के स्वामी टी ए भास्यम् ने दिव्य देशम का सद्यः स्वानुभूत ज्ञान से लाभ करा कर इस कैंकर्य को बड़ा सुगम बना दिया। हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।

दिव्य प्रबंधम् के चार सहस्रगीतियों का यह चौथा भाग तिरूवायमोळी का है जो सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय भाग स्वतंत्र रूप से पूर्व में समर्पित किये जा चुके हैं।

विनीत दास

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी
कांचीपुरम
21 जुलाइ 2011

उच्चारण संकेत

www.praptti.com से लिये देवनागरी लिपि वाले मूल पाशुर के उच्चारण का अपना नियम है जो साभार नीचे दिया जा रहा है।

Attention: New letters have been introduced to facilitate reading Tamil texts in Devanaagarii. Distinction has been made between certain short and long consonants that do not exist in Devanaagarii. For e.g., नॆ and ने should be treated with the same distinction as that exists between नि and नी. The letters ऎ and ए, and ऒ and ओ, should be treated in the same way. The letter ऴ denotes the *za* in Tamil. For e.g., *aazvaar* would be written as आऴ्वार् in Devanaagarii. There is a subtle difference between ऱ and र, however, they can be pronounced in the same way. Also note that ट्ऱ sounds almost like ट्र, ट्ऱि like ट्रि, and so on. The consonant-cluster न्ऱ is pronounced somewhere between न्र and न्ड्र. It is, however, colloquially acceptable to pronounce the clusters ट्ऱ and न्ऱ as त्त and न्न, respectively.

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ तिरुवाय्मॊऴि त्तनियन्गळ् ॥

नाथमुनिगळ् अरुळिच्चॆय्ददु

भक्तामृतं विश्वजनानुमोदनम्
सर्वार्थदं श्रीशठकोपवाङ्मयम्।
सहस्रशाखोपनिषत्समागमम्
नमाम्यहं द्राविडवेदसागरम्॥

ईश्वरमुनिगळ् अरुळिच्चॆय्ददु

तिरुवऴुदि नाडॆन्ऱुम् तॆन् कुरुगूर् एन्ऱुम्⋆
मरुविनिय वण्पॊरुनल् एन्ऱुम्⋆ –अरुमऱैगळ्
अन्दादि शॆय्दान् अडियिणैये एप्पॊऴुदुम्⋆
शिन्दियाय् नॆञ्जे! तॆळिन्दु

शॊट्टै नम्बिगळ् अरुळिच्चॆय्ददु

मनत्तालुम् वायालुम् वण् कुरुगूर् पेणुम्⋆
इनत्तारैयल्ला दिऱैञ्जेन्⋆ –तनत्तालुम्
एदुम् कुऱैविलेन् एन्दै शडगोबन्⋆
पादङ्गळ् यामुडैय पट्रु

अनन्दाळ्वान् अरुळिच्चॆय्ददु

एय्न्दपॆरुङ्गीर्त्ति इरामानुसमुनि तन्⋆
वाय्न्दमलर् प्पादम् वणङ्गुगिन्ऱेन्⋆ –आय्न्द पॆरुम्
शीरार् शडगोबन् शॆन्दमिऴ् वेदम् तरिक्कुम्⋆
पेराद उळ्ळम् पॆऱ

भट्टर् अरुळिच्चेय्दवै

वान् तिगळुम् शोलै मदिळरङ्गर् वण् पुगळ्मेल्*
आन्र तमिळ्मरैगळ आयिरमुम्* -ईन्र
मुदळाय् शडगोबन् मॊय्म्बाल् वळर्त्त*
इदत्ताय् इरामुनुसन्

मिक्क इरैनिलैयुम् मॆय्याम् उयिर्निलैयुम्*
तक्क नॆरियुम् तडैयागित्तॊक्कियलुम्*
ऊळ्विनैयुम् वाळ्विनैयुम् ओदुम् कुरुगैयर् कोन्*
याळिनिशै वेद त्तियल्

॥ नम्माळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥

1 उयर्वर (2899 – 2909)

आत्म उपदेशम्

(सर्वेसर्वा प्रभु से शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति)

‡उयर्वर् उयर् नलम्* उडैयवन् यवन् अवन्* मयर्वर मदि नलम्* अरुळिनन् यवन् अवन्* अयर्वरुम् अमरर्गळ्* अदिबदि यवन् अवन्* तुयररु शुडरडि* तॊळुदॆळॆन् मनने ! ॥१॥	उठो ! हे ह्रदय ! आपकी पूजा करो जो उच्चतम से भी उच्चतर हैं।सदा जाग्रत स्वर्गिकों के नाथ हैं। सभी शंका का निवारण कर शुद्ध ज्ञान देते हैं। **2899**
मनन् अग मलम् अर* मलर् मिशै एळुदरुम्* मनन् उणर्वळविलन्* पॊरियुणर्ववै इलन्* इनन् उणर् मुळु नलम्* एदिर् निगळ् कळिविनुम्* इनन् इलन् एनन् उयिर्* मिगुनरै इलने॥२॥	आप ह्रदय को शुद्ध कर इसे प्रस्फुटित करते हैं एवं वृद्धि कराते हैं। आप विचार अनुभव एवं इन्द्रियों से परे हैं। आप शुद्ध चैतन्य सर्वथा योग्य एवं शाश्वत हैं। कोई अन्य आपसे वरीय एवं योग्य नहीं है आप सब जीवों में हैं। **2900**
इलन् अदुवुडैयन् इदु* एन निनैवरियवन्* निलनिडै विशुम्बिडै* उरुविनन् अरुविनन्* पुलनॊडु पुलन् अलन्* ऒळिविलन् परन्द* अन्-नलन् उडै ऒरुवनै* नणुगिनम् नामे॥३॥	आप 'यह हैं' 'वह नहीं हैं' की तरह नहीं सोचे जा सकते।आप चैतन्य एवं जड़ हैं। आप ऊंचे में है तथा नीचे में हैं। आप इन्द्रियों में हैं लेकिन उनसे ही नहीं हैं तथा अंतहीन है। अच्छे वाले को खोजें जो सर्वत्र हैं। **2901**

<table>
<tr><td>नाम् अवन् इवन् उवन्⋆ अवळ् इवळ् उवळ् एवळ्⋆
ताम् अवर् इवर् उवर्⋆ अदुविदुवुदुवॆदु⋆
वीम् अवै इवै उवै⋆ अवै नलम् तीङ्गवै⋆
आम् अवै आयवै आय्⋆ निन्ऱ अवरे॥४॥</td><td>आप नर की तरह हैं ‘वहां’ ‘यहां’ ‘बीच में’ । आप मादा की तरह हैं ‘वहां’ ‘यहां’ ‘बीच में’ एवं ‘कहीं भी’। आप वस्तुएं हैं ‘वहां’ ‘यहां’ ‘बीच में’ एवं ‘कहीं भी’। आप ‘अच्छे’ ‘बुरे’ ‘उदासीन’ एवं सबके भूत काल तथा भविष्य काल हैं। 2902</td></tr>
<tr><td>अवरवर् तमदमदु⋆ अऱिवऱि वगैवगै⋆
अवरवर् इऱैयवर्⋆ एन अडि अडैवर्गळ्⋆
अवरवर् इऱैयवर्⋆ कुऱैविलर् इऱैयवर्⋆
अवरवर् विदिवऴि⋆ अडैय निन्ऱनरे॥५॥</td><td>जो जैसा उचित समझता है वैसी पूजा करे।प्रत्येक अपने देवता के चरण को पायेगा। हमारे प्रभु जो सर्वोपरि हैं अन्य देवों को अर्पित पूजा को स्वीकार कर उस देवता को वैसा ही फल देने का निदेश करते हैं। 2903</td></tr>
<tr><td>निन्ऱनर् इरुन्दनर्⋆ किडन्दनर् तिरिन्दनर्⋆
निन्ऱिलर् इरुन्दिलर्⋆ किडन्दिलर् तिरिन्दिलर्⋆
एन्ऱुमॊर् इयल्विनर्⋆ एन निनैवरियवर्⋆
एन्ऱुमॊर् इयल्वॊडु⋆ निन्ऱवॆन्दिडरे॥६॥</td><td>हमारे प्रभु शाश्वत रूप से अपरिवर्तनशील हैं। खड़े बैठे सोये एवं घूमते हुए। खड़े नहीं, बैठे नहीं, सोये नहीं, एवं नहीं घूमते हुए। सदा एक तरह एवं सदा वैसा नहीं। 2904</td></tr>
<tr><td>तिड विशुम्बॆरि वळि⋆ नीर् निलम् इवै मिशै⋆
पडर् पॊरुळ् मुऴुवदुमाय्⋆ अवै अवैदॊऱुम्⋆
उडल् मिशै उयिर् एन⋆ क्करन्दॆङ्गुम् परन्दुळन्⋆
शुडर् मिगु शुरुदियुळ्⋆ इवैयुण्ड शुरने॥७॥</td><td>वेदों के प्रभु जिन्होंने ब्रह्मांड को निगल लिया अग्नि पृथ्वी जल आकाश एवं वायु के रूप में प्रकट हुए। इन सबों से निर्मित आप सब वस्तुओं में हैं। जीवन की तरह छिपे हुए सब शरीर में आप हैं। 2905</td></tr>
<tr><td>शुरर् अऱिवरु निलै⋆ विण् मुदल् मुऴुवदुम्⋆
वरन् मुदलाय् अवै⋆ मुऴुदुण्ड पर परन्⋆
पुरम् ऒरु मून्ऱॆरित्तु⋆ अमरर्क्कुम् अऱिवियन्दु⋆
अरन् अयन् एन⋆ उलगऴित्तमैत्तुळने॥८॥</td><td>जबकि आप सर्वत्र हैं पर दिखते नहीं, यहां तक कि देवों को भी नहीं।आप प्रथम कारण हैं तथा सर्वशक्तिमान हैं एवं सबों को आपने निगल लिया।आपने तीन नगरों को जलाकर देवों को बुद्धि प्रदान की। आप ही ब्रह्मा स्रष्टा हैं एवं विनाशक शिव भी। 2906</td></tr>
<tr><td>उळन् एनिल् उळन् अवन्⋆ उरुवम् इव्वुरुवुगळ्⋆
उळन् अलन् एनिल् अवन्⋆ अरुवम् इव्वरुवुगळ्⋆
उळन् एन इलन् एन⋆ इवै कुणम् उडैमैयिल्⋆
उळन् इरु तगैमैयॊडु⋆ ऒऴिविलन् परन्दे॥९॥</td><td>क्या कहेंगे, आप हैं, तब आप हैं, एवं यह सब आप हैं। मानो कि आप नहीं हैं, फिर भी आप हैं सबों में रूपविहीन चैतन्य की तरह। इन दो गुणों ‘है’ एवं ‘नहीं हैं’ के साथ आप सब वस्तुओं में हैं, सर्वत्र हैं एवं सदा के लिये हैं। 2907</td></tr>
<tr><td>परन्द तण् परवैयुळ्⋆ नीर्दॊऱुम् परन्दुळन्⋆
परन्द अण्डम् इदॆन⋆ निल विशुम् ऒऴिवऱ⋆
करन्द शिल् इडन्दॊऱुम्⋆ इडन्दिगळ् पॊरुळ् तॊऱुम्⋆
करन्दॆङ्गुम् परन्दुळन्⋆ इवैयुण्ड करने॥१०॥</td><td>जिन्होंने सबों को निगल लिया आप शीतल सागर में शयन करते हैं।हर बूंद में हैं, ब्रह्मांड में हैं, संपूर्ण हैं, पृथ्वी पर हैं, आकाश में हैं, हर अणु एवं परमाणु में सदा के लिये सब जगह छिपे हैं। 2908</td></tr>
</table>

‡कर विशुम्बॅरि वळि⋆ नीऱ् निलम् इवै मिशै⋆ वरनविल् तिऱल् वलि⋆ अळि पॅऱैयाय् निन्ऱ⋆ परन् अडिमेल्⋆ कुरुगूर् च्चडगोबन् शॊल्⋆ निरनिऱै आयिरत्तु⋆ इवै पत्तुम् वीडे॥११॥ ॥ नम्माळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक प्रभु के बारे में है जो अग्नि में ताप की तरह पृथ्वी में भार की तरह जल में शीतलता की तरह आकाश में शक्ति की तरह एवं वायु में शब्द की तरह हैं। जो इसका पाठ करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं। **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

2 विडुमीन् (2910 - 2920)

उलगिर्कु उपदेशम् (भक्ति से प्रभु को प्राप्त करने का परामर्श देते हैं)

</td></tr>
<tr><td>वीडुमिन् मुट्रवुम्⋆ वीडुशॆय्दु⋆ उम्मुयिर्
वीडुडै यानिडै⋆ वीडुशॆय्म्मिने॥१॥</td><td>सब चीज छोड़कर अपनी आत्मा नियंता के जिम्मे सुपुर्द कर दो एवं उनका संरक्षण स्वीकार करो। 2910</td></tr>
<tr><td>मिन्निन् निलैयिल⋆ मन्नुयिर् आक्कैगळ्⋆
एन्नुम् इडत्तु⋆ इरै उन्नुमिन् नीरे॥२॥</td><td>तड़ित से भी क्षणिक इस शरीर का जीवन काल है। इस पर तनिक देर स्वयं सोच लो। 2911</td></tr>
<tr><td>नीर् नुमदॆन्रिवै⋆ वेर् मुदल् मायत्तु⋆ इरै
शेर्मिन् उयिरक्कु⋆ अदन् नेर् निरै इल्ले॥३॥</td><td>तुम एवं तुम्हारा का मूलोच्छेदन करो। प्रभु के साथ मिल जाओ इससे बड़ी उपलब्धि नहीं होगी। 2912</td></tr>
<tr><td>इल्लदुम् उळ्ळदुम्⋆ अल्लदवन् उरु⋆
एल्लैयिल् अन्नलम्⋆ पुल्गु पट्ट्रे॥४॥</td><td>प्रभु 'हैं' एवं 'नहीं हैं' के परे हैं। सारे संबंध तोड़कर अनंत सुख प्राप्त करो। 2913</td></tr>
<tr><td>अट्रदु पट्रॆनिल्⋆ उट्रदु वीडुयिर्⋆
शॆट्रदु मन्नुरिल्⋆ अट्रिरै पट्रे॥५॥</td><td>जब सारे संबंध टूट जाते हैं तो जीव मुक्त हो जाता है। शाश्वत प्रभु को प्राप्त करो एवं सभी संबंध तोड़ दो। 2914</td></tr>
<tr><td>पट्रिलन् ईशनुम्⋆ मुट्रवुम् निन्रनन्⋆
पट्रिलैयाय्⋆ अवन् मुट्रिल् अडङ्गे॥६॥</td><td>प्रभु का कोई बंधन नहीं है आप सर्वत्र हैं। बंधन से मुक्त होकर प्रभु के साथ पूर्णतया मिल जाओ। 2915</td></tr>
<tr><td>अडङ्गॆळिल् शम्बत्तु⋆ अडङ्ग क्कण्डु⋆ ईशन्
अडङ्गॆळिल् अग्दॆन्रु⋆ अडङ्गुग उळ्ळे॥७॥</td><td>ज्योति के वृहत साम्राज्य को देखो। विदित हो कि सब प्रभु का है एवं उनमें मिल जाओ। 2916</td></tr>
<tr><td>उळ्ळम् उरै शॆयल्⋆ उळ्ळविम् मून्रैयुम्⋆
उळ्ळि क्कॆडुत्तु⋆ इरै उळ्ळिल् ऒडुङ्गे॥८॥</td><td>विचार के स्रोत शब्द एवं कृत्य के नजदीक जाओ। इनको प्रभु के प्रति उन्मुख करो एवं स्वयं को भी आत्मसात कर दो। 2917</td></tr>
<tr><td>ऒडुङ्ग अवन् कण्⋆ ऒडुङ्गलुम् एल्लाम्⋆
विडुम् पिन्नुम् आक्कै⋆ विडुम्बॊळुदॆण्णे॥९॥</td><td>इस तरह से उन्मुख होने पर सभी अवरोध समाप्त हो जायेंगे। तब शरीर त्याग के समय तक प्रतीक्षा करो। 2918</td></tr>
<tr><td>एण् पॆरुक्कन् नलत्तु⋆ ऒण् पॊरुळ् ईरिल⋆
वण् पुगळ् नारणन्⋆ तिण् कळल् शेरे॥१०॥</td><td>गौरवशाली नारायण के चरणारविंद के साथ आत्मसात हो जाओ जो अनगिनत सद्गुणों के प्रभु हैं तथा अप्रतिम हितैषी हैं। 2919</td></tr>
</table>

‡शेर्त्तड★ त्तॅन् कुरुगूर् च्चडगोबन् शॊल्★ शीर् त्तॊडै आयिरत्तु★ ओर्त्त इप्पत्ते॥११॥	हजार पदों वाली रचना का यह दशक सिंचित खेतों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के सुविचारित शब्द हैं। **2920** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

3 पत्तुडै (2921 - 2931)

अडियवरक्कु एळियवन्

( )

‡पत्तुडै अडियवर्क्केळियवन्⋆ पिऱर्गळुक्करिय वित्तगन्⋆ मलर् मगळ् विरुम्बुम्⋆ नम् अरुम्बॅरल् अडिगळ्⋆ मत्तुऱु कडै वॅण्णॅय्⋆ कळविनिल् उरविडैया प्पुण्डु⋆ ऍत्तिऱम् उरलिनोडु⋆ इणैन्दिरुन्देङ्गिय ऍळिवे ! ॥१॥	प्रभु प्रेम से भक्तों को मिलते हैं। आपके चरणारविंद का मिलना दूसरों के लिये कठिन है यहां तककि पद्मश्री लक्ष्मी को भी।ओह ! गोपनारी के घड़े से मक्खन चुराने के लिये अपने को निर्दोष बताते कितनी सुगमता से आप ऊखल में बंध गये ! **2921**
ऍळिवरुम् इयल्विनन्⋆ निलै वरम्बिल पल पिऱप्पाय्⋆ ऑळिवरु मुळु नलम्⋆ मुदल् इल केडिल वीडाम्⋆ तॅळिदरुम् निलैमैयदॊळिविलन्⋆ मुळुवदुम् इऱैयोन्⋆ अळिवरुम् अरुळिनोडु⋆ अगत्तनन् पुऱत्तनन् अमैन्दे॥२॥	स्थान एवं प्रसंग को भुलाकर आप अनेकों स्वरूपों में प्रकट होते हैं। आपसे निकलने वाली प्रभा का आदि अंत नहीं है। मुक्ति का अमृतमय अनुभव प्रदान करते हुए आप भीतर एवं बाहर आनंदप्रद करूणा के साथ वर्त मान रहते हैं। **2922**
अमैवुडै अऱनॅऱि⋆ मुळुवदुम् उयर्वऱ उयरन्द⋆ अमैवुडै मुदल् कॅडल्⋆ ऑडिविडै अऱ निलम् अदुवाम्⋆ अमैवुडै अमररुम्⋆ यावैयुम् यावरुम् तानाम्⋆ अमैवुडै नारणन्⋆ मायैयै अऱिपवर् यारे॥३॥	नारायण के अचंभों को कौन समझ सकता है ? आप वैदिक यज्ञ के उच्चतम फल हैं। सृष्टि से एवं संहार से तथा इन दोनों के मिश्रण से आप सर्वदा खेलते रहते हैं। आप में देवगन चेतन एवं जड़ स्थित हैं। **2923**
यारुम् ओर् निलैमैयन् ऍन⋆ अऱिवरिय ऍम् पॅरुमान्⋆ यारुम् ओर् निलैमैयन् ऍन⋆ अऱिवॅळिय ऍम् पॅरुमान्⋆ पेरुम् ओर् आयिरम्⋆ पिऱ पल उडैय ऍम् पॅरुमान्⋆ पेरुम् ओर् उरुवमुम्⋆ उळदिल्लै इलदिल्लै पिणक्के॥४॥	यह देखना कठिन है कि हमारे प्रभु अपरिवर्तनशील है। यह देखना सरल है कि हमारे प्रभु अपरिवर्तनशील है। हमारे प्रभु के हजारों नाम एवं स्वरूप हैं। हमारे प्रभु नाम स्वरूप दृश्य एवं अदृश्य का विरोध करते हैं। **2924**
पिणक्कऱ अऱुवगै च्चमयमुम्⋆ नॅऱियुळ्ळि उरैत्त⋆ कणक्कऱु नलत्तनन्⋆ अन्दमिल् आदियम् भगवन्⋆ वणक्कुडै त्तवनॅऱि⋆ वळिनिन्ऱु पुऱनॅऱि कळैगट्टु⋆ उणक्कुमिन् पशैयऱ !⋆ अवनुडै उणर्वु कॊण्डुणर्न्दे॥५॥	वेद की विधि का पालन करते हुए आत्मानुभव से प्रभु को प्राप्त करो। वेद में बताये गये की तरह आप अंतहीन हैं तथा सबके प्रारंभ हैं।भ्रम का त्याग करके अपने बंधनों को काट दो।प्रभु ही छः दर्शन सिद्धांतो के द्वंद को समाप्त करते हैं। **2925**

उणरन्दुणरन्दिळिन्दगन्ऱ⋆ उयरन्दुरुवियन्द इन्निलैमै⋆ उणरन्दुणरन्दुणरिलुम्⋆ इऱै निलै उणर्वरिदुयिर्गाळ् !⋆ उणरन्दुणर्न्दुरैत्तुरैत्तु⋆ अरिययन् अरन् एन्नुम् इवरै⋆ उणरन्दुणर्न्दुरैत्तुरैत्तु⋆ इरैञ्जुमिन् मनप्पट्टदोन्रे॥६॥	हे लोगों ! यद्यपि कि तुम शरीर, एवं रूपहीन बिना लंबाई चौड़ाई तथा ऊंचाई वाले स्वभाव स्वरूपी जीव के अंतर को अनुभव कर चुके हो इससे प्रभु का साक्षात्कार नहीं होगा। जो ब्रह्मा विष्णु एवं शिव की तरह बताये गये हैं उनकी प्रशस्ति गाओ। आप ही तुम्हारे हृदय में बसते हैं। **2926**
ऑन्रॆन प्पलवॆन⋆ अरिवरुम् वडिविनुळ् निन्ऱ⋆ नन्रॆळिल् नारणन्⋆ नान्मुगन् अरनॆन्नुम् इवरै⋆ ऑन्रनुम् मनत्तुवैत्तु⋆ उळ्ळिनुम् इरु पशै अरुत्तु⋆ नन्रॆन नलम् शॆय्वदु⋆ अवनिडै नम्मुडै नाळे॥७॥	आप सभी स्वरूपों में हैं जिसकी गिनती एक या अनेकों नहीं की जा सकती। आप तेजोमय नारायण चतुर्मुख ब्रह्मा एवं शिव हैं। दृढ़ भक्ति से आपको हृदय में स्थापित करो सब इच्छा को त्यागकर एकमात्र सेवा करो जो श्रेयस्कर है। **2927**
नाळुम् निन्ऱडु नम पळमै⋆ अङ्गॊडु विनैयुडने माळुम्⋆ ओर् कुरैविल्लै⋆ मननग मलम् अऱ क्कळुवि⋆ नाळुम् नम् तिरुवुडै अडिगळ् तम्⋆ नलम् कळल् वणङ्गि⋆ माळुम् ओरिडत्तिलुम्⋆ वणक्कॊडु माळ्वदु वलमे॥८॥	सभी इच्छाओं से हृदय को रिक्त कर लक्ष्मीपति के दिव्य चरणों की पूजा करो। हमारे पूर्व के कर्मो का नाश हा जायेगा एवं नयी इच्छा नहीं उत्पन्न होगी। मृत्यु के आगमन पर शांति से शरीर छूटेगा। **2928**
वलत्तनन् तिरिपुरम् एरित्तवन्⋆ इडम्पॆऱ तुन्दि तलत्तु⋆ एळु दिशैमुगन् पडैत्त⋆ नल्लुलगमुम् तानुम् पुलप्पड⋆ पिन्नुम् तन् उलगत्तिल्⋆ अगत्तनन् ताने शॊल्ल प्पुगिल्⋆ इवै पिन्नुम् वयिट्रुळ⋆ इवै यवन् तुयक्के॥९॥	तीन नगरों को जलाने वाले शिव प्रभु के दायें रहते हैं एवं ब्रह्मा जो सातों लोक को बनाये नाभि पर रहते हैं। तबभी प्रभु इस ब्रह्मांड में हमलोग सभी को देखने के लिये हैं। ये सब आपके चमत्कार हैं जो हमारे मन में छाये रहते हैं। **2929**
तुयक्करु मदियिल् नल् ज्ञानत्तुळ⋆ अमररै तुयक्कुम्⋆ मयक्कुडै मायैगळ्⋆ वानिलुम् पॆरियन वल्लन्⋆ पुयल् करु निरत्तनन्⋆ पॆरु निलङ्गडन्द नल् अडि प्पोदु⋆ अयरप्पिलन् अलट्रुवन्⋆ तळुवुवन् वणङ्गुवन् अमरन्दे॥१०॥	स्पष्ट चित्त वाले देव गनों के लिये भी आप रहस्य हैं। आपके आश्चर्य आकाश को भर देंगे। आपका वर्ण मेघ की तरह श्याम है, आपके चरणाविंद ने पृथ्वी को मापा। हम सर्वदा बैठ कर आपकी प्रशस्ति गायेंगे एवं सम्मान करेंगे तथा पूजा अर्पित करेंगे। **2930**

‡अमरर्गळ् तॊळुदॆळ⋆ अलै कडल् कडैन्दवन् तन्नै⋆ अमर् पॊळिल् वळङ्गुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् कुट्रेवल्⋆ अमर् शुवै आयिरत्तु⋆ अवट्रिनुळ् इवै पत्तुम् वल्लार्⋆ अमररोडुयर्विल् शॆन्रु⋆ अरुवर् तम् पिरवियञ्जिरैये॥११॥	घने बागों वाले श्रीसंपन्न कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक स्वर्गिकों के प्रभु के बारे में है जिन्होंने महान समुद्रमंथन किया। जो इसे याद कर लेंगे वे स्वर्ग में आनन्द मनायेंगे। **2931** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

4 अंजिरैय (2932 - 2942)

तलैमगल तूदुविडल्

(नायिका भाव में पक्षियों को दूत बनाते हुए)

अञ्जिरैय मड नाराय्!⋆ अळियत्ताय्!⋆ नीयुम् निन् अञ्जिरैय शेवलुमाय्⋆ आवा एन्रॆनक्करुळि⋆ वॆञ्जिरै प्पुळ्ळुयर्त्तार्क्कु⋆ एन् विडु तूदाय् च्चॆन्रक्काल्⋆ वन्जिरैयिल् अवन् वैक्किल्⋆ वैप्पुण्डाल् एन्शॆय्युमो॥१॥	हे सुन्दर पंखों वाले अपनी सौंदर्यशालिनी प्रेयसी के साथ विहरते करूण क्षीणकाय सारस ! क्या हम पर तरस खाते हुए तुम दोनों हमारा संवाद गरूड़ पक्षी पर सवारी करने वाले प्रभु के पास पहुंचा सकते हो ? क्यों, तुम दोनों को वे पिंजरा में बंद कर देंगे ? क्या इससे तुमलोग दुखी होगे ? **2932**
एन्शॆय्य तामरै क्कण्⋆ पॆरुमानार्क्कॆन् तूदाय्⋆ एन्शॆय्युम् उरैत्तक्काल्⋆ इन क्कुयिल्गाळ्! नीर् अलिरे मुन्शॆय्द मुळुविनैयाल्⋆ तिरुवडिक्कीळ् क्कुट्रेवल्⋆ मुन्शॆय्य मुयलादेन्⋆ अगल्वदुवो विदियिनमे॥२॥	हे एकत्रित कोयल! क्या राजीवनयन प्रभु के पास हमारा संवाद पहुंचाने में तुम्हें पीड़ा पहुंचेगी ? क्या तुम हमारे प्रिय पालतू नहीं हो ? ओह ! हमारे पूर्व के कुकर्म कि हमने उन्हें लंबी अवधि से स्मरण नहीं किया ! **2933**
विदियिनाल् पॆडै मणक्कुम्⋆ मॆन् नडैय अन्नङ्गाळ्!⋆ मदियिनाल् कुरळ् माणाय्⋆ उलगिरन्द कळ्वर्कु⋆ मदियिलेन् वल् विनैये⋆ माळादो एन्रॊरुत्ति⋆ मदियॆल्लाम् उळ् कलङ्गि⋆ मयङ्गुमाल् एन्नीरे॥३॥	हे गौरवमय हंस ! प्रिया के साथ रहना सौभाग्य है। चतुर बौना जिसने तिकड़म से पृथ्वी की भिक्षा मांग ली को जाकर कहो कि उनकी प्रेयसी अचेत हो गयी है। हाय ! असावधान मैं ! हमारे काले कर्म का अंत नहीं होगा। **2934**
एन् नीमै कण्डिरङ्गि⋆ इदु तगादॆन्नाद⋆ एन् नील मुगिल् वण्णर्कु⋆ एन् शॊलि यान् शॊल्लुगॆनो⋆ नन् नीमै इनियवर् कण्⋆ तङ्गादॆन्रॊरु वाय्च्चॊल्⋆ नन नील मगन्रिल्गाळ्!⋆ नल्गुदिरो नल्गीरो॥४॥	मेघ वर्ण के श्यामल प्रभु हमारी दशा को न तो देखते हैं और न कहते ही हैं 'यह उचित नहीं है'। ज्यादा मैं क्या कह सकती हूं ? हे सारस की जाति के नीले पक्षी गन ! जा कर प्रभु को कहो कि उनमें श्रेयस रह नहीं पायी है।क्या तुम मेरा कहना करोगे या नहीं करोगे ? **2935**

नल्गि त्तान् कात्तळिक्कुम्* पॉळिल् एळुम् विनैयेर्के* नल्गा त्तान् आगादो* नारणनै क्कण्डक्काल्* मल्गु नीर् प्पुनल् पडप्पै* इरै तेर् वण् शिरु कुरुगे !* मल्गु नीर् क्कण्णेर्कोर्* वाशगम् कॉण्डरुळाये॥५॥	सिंचित बागों में कीड़ा खोजते हे मछली खाने वाले पक्षी ! विनती है, अगर तुम नारायण प्रभु को देखोगे तो क्या यह संवाद दोगे ? आपने बाग के रूप में सात लाकों को बनाया एवं स्नेह से इसकी वृद्धि करायी।केवल यह अभागी किशोरी अश्रुपूर्ण आंखों से अछूत सी खड़ी है। **2936**
अरुळाद नीर् अरुळि* अवर् आवि तुवरामुन्* अरुळ् आळि प्पुट्कडवीर्* अवर् वीदि ऑरुनाळ् एन्रु* अरुळ् आळि अम्मानै* क्कण्डक्काल् इदु शॉल्लि* अरुळ् आळि वरि वण्डे !* यामुम् एन् पिळैत्तोमे॥६॥	हे चतुर मधुमक्खी ! अगर हमारे प्रभु को देखो तो उनसे यह बताओ 'आप अन्यायी हैं, इसके पहले कि उसका जीवन बर्बाद हो जाये आप गरूड़ को उसकी गली में जाने के लिये आदेश दें।' हाय ! हमने कौन से अपराध किये हैं ? **2937**
एन्बिळै कोप्पदु पोल* प्पनि वाडै ईर्गिन्र* एन्बिळैये निनैन्दरुळि* अरुळाद तिरुमालार्क्कु* एन्बिळैत्ताळ् तिरुवडियिन्* तगविनुक्केन्रॉरु वायच्चॉल्* एन्बिळैक्कुम् इळङ्गिळिये !* यान् वळर्त्त नीयलैये॥७॥	हे मेरी प्रिय सुग्गा ! तुम अपनी बातों से हमें पीड़ा पहुंचाती हो। क्या तू हमारी पालतू नहीं हो ? ओस वाली शीतल हवा हमारी हड्डियों में सूई की तरह चुभ रही है।जो अकेले हमारे दोष को देख लेते हैं उन एकमात्र अडिग प्रभु से जाकर पूछो 'कौन सी गलती उसने की है जो उसे आप अपनी करूणा नहीं प्रदान कर रहे हैं ?' **2938**
नीयलैये शिरु पूवाय् !* नॅडुमालार्क्कॅन् तूदाय्* नोय् एनदु नुवल् एन्न* नुवलादे इरुन्दॉळिन्दाय्* शायलॉडु मणि मामै* तळर्न्देन् नान्* इनि उनदु वाय् अलगिल् इन्नडिशिल्* वैप्पारै नाडाये॥८॥	हे मेरी छोटी मैना ! मैं अपनी आभा एवं आकर्षण खो चुकी हूं। हाय ! यद्यपि कि मैं तुम्हें आवश्यक कार्य से हमारे दूरस्थ प्रभु के पास जा कर 'मैं रोगपीड़ित हूं' कहने के लिये कहती हूं तो तुम ध्यान नहीं देती।अच्छा होगा कि किसी अन्य को खोज लो जो तुम्हें भोजन दे सकें। **2939**
नाडाद मलर् नाडि* नाडोरुम् नारणन् तन* वाडाद मलर् अडिक्कीळ्* वैक्कवे वगुक्किन्रु* वीडाडि वीट्रिरुत्तल्* विनैयट्रॅन् शॅय्वदो* ऊडाडु पनि वाडाय् !* उरैत्तीराय् एनदुडले॥९॥	हे ओसवाली शीतल वायु ! यह शरीर नारायण प्रभु के चरणों पर नित्य फूल चुनकर चढ़ाने के लिये ही बना है। इस तरह से उनसे हमें अलग करने का क्या लाभ ? जाओ और यह उनसे पूछो तब लौटकर मेरी हड्डियों को विदीर्ण करना। **2940**

उडल् आळि प्पिऱप्पु वीडु⋆ उयिर् मुदला मुट्रुमाय्⋆ कडल् आळि नीर् तोट्रि⋆ अदनुळ्ळे कण् वळरुम्⋆ अडल् आळि अम्मानै⋆ क्कण्डक्काल् इदु शॉल्लि⋆ विडल् आळि मड नॆञ्जे !⋆ विनैयो ऑन्ऱाम् अळवे॥१०॥	चक्रीय पुनर्जन्म, जीव एवं अन्य सभी के सृष्टि के कारण स्वरूप प्रभु तेजोमय चक्र धारण करते हुए सागर में शयन करते हैं। हम अभागिन जन जब उनसे मिलूंगी तो यह बताउंगी और तब उनमें समा जाऊंगी। तब तक के लिये, हे काले अकेले हृदय ! हमारे साथ रहो। **2941**
‡अळवियन्ऱ एळ् उलगत्तु⋆ अवर् पॆरुमान् कण्णनै⋆ वळ वयल् शूळ् वण् कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् वाय्न्दुरैत्त⋆ अळवियन्ऱ अन्दादि⋆ आयिरत्तुळ् इप्पत्तिन्⋆ वळवुरैयाल् पॆऱलागुम्⋆ वान् ओङ्गु पॆरु वळमे॥११॥	उपजाऊ खेतों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित अद्वितीय हजार पद का यह दशक सात लोकों को बनाने वाले अगम्य कृष्ण के बारे में है। जो इसे याद कर लेंगे वे स्वर्ग की संपन्नता का आनन्द उठायेंगे। **2942** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

5 वऴ्वेऴ् (2943 - 2953)

माऱनै माल् शीलगुणत्ताल् शेर्त्तल् (।नायकी भाव में)

वऴ्वेऴ् उलगिन् मुदलाय॰ वानोर् इरै़यै॰ अरुविनैयेन् कऴ्वेऴ् वॅण्णॅय् तॊडुवुण्ड॰ कळ्वा ! एन्बन् पिन्नैयुम्॰ तऴ्वेऴ् मुरुवल् पिन्नैक्काय्॰ वल्लान् आयर् तलैवनाय्॰ इळवेरेऴुम् तऴुविय॰ एन्दाय् ! एन्बन् निनैन्दुनैन्दे ॥१॥	अभागिनी मैं ! स्वर्गिकों के देव एवं सातों लोक के कारण प्रभु को देखकर धीमे स्वर में बोली 'नटखट ! जिसने चोरी का मक्खन खाया' तब कहा 'चमेली जैसी मादक मुस्कान वाली नप्पिनाय को जीतने के लिये सात वृषभों को नष्ट करने वाले शक्तिशाली गोपकिशोर, मेरे प्रभु !' **2943**
निनैन्दु नैन्दुऴ् करैन्दुरुगि॰ इमैयोर् पलरुम् मुनिवरुम्॰ पुनैन्द कण्णि नीर् शान्दम्॰ पुगैयोडेन्दि वणङ्गिनाल्॰ निनैन्द एल्ला प्पॊरुळ्गट्कुम्॰ वित्ताय् मुदलिल् शिदैयामे॰ मनञ्जॅय् ञानत्तुन् पॆरुमै॰ माशूणादो मायोने ॥२॥	हे हमारे आश्चर्यमय प्रभु ! संपूर्ण सृष्टि की आप ही नहीं घटने वाली इच्छाशक्ति एवं बीज हैं जो केवल हृदय से जाने जाते हैं। स्वर्गिक एवं संत जन आपके ध्यान में अचेत हो जाते हैं। जल चंदन अगरबत्ती एवं फूल से वे पूजा अर्पित कर द्रवित हृदय से आपकी गाथा गाते हैं परंतु कभी भी अंत नहीं पाते। **2944**
मा योनिगळाय् नडै कट्॰ वानोर् पलरुम् मुनिवरुम्॰ नी योनिगळै प्पडै एन्ऱु॰ निरै़ नान् मुगनै प्पडैत्तवन्॰ शेयोन् एल्ला अरि़वुक्कुम्॰ दिशैगळ् एल्लाम् तिरुवडियाल् तायोन्॰ एल्ला एव्वुयिर्क्कुम् तायोन्॰ तानोर् उरुवने ॥३॥	आपने ही संत एवं स्वर्गिकों की सृष्टि की तथा चतुर्मुख को बनाकर उन्हें सारे जगत का गर्भ रचने की शक्ति दे दी। सारी सृष्टि के ऊपर से पैदल पार होने वाले प्रभु आपने संपूर्ण विश्व को माप डाला। मां की तरह सबों के प्रति आप दयावान हैं। **2945**
तानोर् उरुवे तनि वित्ताय्॰ तन्निल् मूवर् मुदलाय॰ वानोर् पलरुम् मुनिवरुम्॰ मट्रुम् मट्रुम् मुट्रुमाय्॰ तानोर् पॆरुनीर् तन्नुळ्ळे तोट्रि॰ अदनुऴ् कण्वळरुम्॰ वानोर् पॆरुमान् मा मायन्॰ वैगुन्दन् एम् पॆरुमाने ॥४॥	स्वर्गिकों के प्रभु, वैकुंठ के प्रभु, मेरे अपने प्रभु, आप ही ब्रह्मा शिव एवं इन्द्र को बनाये तथा अपने में स्थापित कर लिया।आपने स्वर्गिकों संतों एवं समस्त चेतन तथा अन्य सभी को बनाया और शेष शय्या पर गहरे सागर में सोये अवस्था में प्रकट हुए। **2946**
मानेय् नोक्कि मडवाळै॰ मार्विल् कॊण्डाय् ! मादवा !॰ कूने शिदैय उण्डैविल्॰ निरै़त्तिल् तॆरि़त्ताय् ! गोविन्दा !॰ वानार् शोदि मणिवण्णा !॰ मदुशूदा ! नी अरुळाय्॰ उन् तेने मलरुम् तिरुप्पादम्॰ शेरु माऱु विनैयेने ॥५॥	पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु माधव ! धनुष के समान शरीर वाली त्रिविका को सीधा करने वाले गोविन्द प्रभु ! आभापूर्ण मणिवर्ण वाले मधुसूदन प्रभु ! हमें सुनिये। यह भाग्यहीना को अपना चरणारविंद प्रदान कीजिये। **2947**

विनैयेन् विनै तीर् मरुन्दानाय् !⋆ विण्णोर् तलैवा ! केशवा !⋆ मनै शेर् आयर् कुल मुदले !⋆ मा मायने ! मादवा !⋆ शिनैयेय् तळैय मरामरङ्गळ्⋆ एळुम् एय्दाय् ! शिरीदरा !⋆ इनैयाय् ! इनैय पेयरिनाय् !⋆ एन्ऱु नैवन् अडियेने ॥६॥	गोपकुल में प्रवेश कर उनके प्रमुख बनने वाले माधव ! स्वर्गिकों के प्रभु एवं हमारी उदासी की औषधि तथा निदान केशव ! सात घने वृक्षों को बाण से बेधने वाले श्रीधर ! अनेक महान कृत्य एवं बहुत से नाम वाले ! मैं तो आपके नामों को पुकारते पुकारते अचेत हो जाती हूं। **2948**
अडियेन् शिरिय ञानत्तन्⋆ अरिदल् आर्क्कुम् अरियानै⋆ कडि शेर् तण्णन् तुळाय्⋆ क्कण्णि पुनैन्दान् तन्नै क्कण्णनै⋆ शेडियार् आक्कै अडियारै⋆ श्शेर्दल् तीर्क्कुम् तिरुमालै⋆ अडियेन् काण्बान् अलट्टुवन्⋆ इदनिल् मिक्कोर् अयर्वुण्डे ॥७॥	तुलसीमाला पहने मेरे प्रभु तिरूमल ! कृष्ण ! आप भक्तों को मृत्यु के बंधन से घास की तरह निकाल लेते हैं। हाय ! जब महान बुद्धि वाले आपको समझने में सक्षम नहीं हैं तब यह निम्न बुद्धि वाली आपके दर्शन के लिये विलाप करती है। इससे बड़ी गलती हो सकती है क्या? **2949**
उण्डाय् उलगेळ् मुन्नमे⋆ उमिळ्न्दु मायैयाल् पुक्कु⋆ उण्डाय् वेण्णेय् शिरु मनिशर्⋆ उवलै आक्कै निलै एय्दि⋆ मण् तान् शोरन्ददुण्डेलुम्⋆ मनिशर्क्कागुम् पीर्⋆ शिरिदुम् अण्डा वण्णम् मण् करैय⋆ नेय्यूण् मरुन्दो मायोने ॥८॥	सात लोकों को निगलकर पुनः उगलदेने वाले प्रभु ! क्या आश्चर्य है कि कृष्ण शिशु के रूप में आपने मक्खन चुरा कर खाया एवं उसका कोई चिह्न नहीं छोड़ा। क्या जो मिट्टी आपके भीतर रह गयी थी उसको वाहर निकालने की यह औषध थी ? **2950**
मायोम् तीयवलवलै⋆ प्पेरुमा वञ्ज प्पेय् वीय⋆ तूय कुळवियाय् विड प्पाल् अमुदा⋆ अमुदु शेय्दिट्ट मायन्⋆ वानोर् तनि त्तलैवन्⋆ मलराळ् मैन्दन् एव्वुयिर्क्कुम् तायोन्⋆ तम्मान् एन्नम्मान्⋆ अम्मा मूर्त्तियै च्चारन्दे ॥९॥	स्वर्गिकों के अद्वितीय नाथ ! हमारे नाथ एवं संरक्षक श्री पति हैं। मां की तरह संपूर्ण सृष्टि के प्रति दयालु आपका सुन्दर स्वरूप है। एक शिशु की सरलता के साथ आपने घोर राक्षसी के विषैले स्तन का पान करते हुए उसका प्राण खींच लिया। **2951**
शारन्द इरुवल् विनैगळुम् शरित्तु⋆ माय प्पट्रुत्तु⋆ तीरन्दु तन्बाल् मनम् वैक्क⋆ त्तिरुत्ति वीडु तिरुत्तुवान्⋆ आरन्द ञान च्चुडर् आगि⋆ अगलम् कीळ् मेल् अळविरन्दु⋆ नेरन्द उरुवाय् अरुवागुम्⋆ इवट्रिन् उयिराम् नेडुमाले ॥१०॥	प्रदीप्त ज्ञान वाले वैकुंठ के प्रभु ! आप आकार प्रकार एवं स्थिति से परे सभी में उनके अन्तःचेतन की तरह विराजते हैं। हमारे युगल कर्मो को भगाते हुए आपने हमारे माया के बंधन को काट दिया और तव हमारे हृदय को विश्वासपूर्वक अपने ऊपर दृढ़ कर दिया। **2952**

‡माले ! माय प्पॆरुमाने !★ मा मायने ! ए॒न्रॆन्रु॒★ माले ए॒रि॒ माल् अरुळाल्★ मन्नु कुरुगूर् च्चडगोपन्★ पालेय् तमिळर् इशैगारर्★ पत्तर् परवुम् आयिरत्तिन् पाले★ पट्ट इवै पत्तुम्★ वल्लार्क्किल्लै परिवदे॥११॥	कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक संगीतज्ञ गायक एवं भक्तों से बहुप्रशंसित है तथा करूणा से पूर्ण आश्चर्यमय प्रभु के बारे में है। जो इसे गायेंगे वे पृथ्वी पर कभी यातनाग्रस्त नहीं होंगे। **2953** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

6 परिविदिल् (2954 - 2964)

आरादनै क्केळियवन् (य)

परिविदिल् ईशनै प्पाडि⋆ विरिवदु मेवल् उऱुवीर् !⋆ पिरिवगैयिन्ऱि नन्नीर् तूय्⋆ पुरिवदुवुम् पुगै पूवे ॥१॥	अक्षुण्ण आनंद को चाहने वाले छोड़ते नहीं। निर्मल प्रभु की गाथा गाओं एवं पूजा में फूल जल अगरबत्ती अर्पित करो। **2954**
मदुवार् तण्णन् तुळायान्⋆ मुदुवेद मुदल्वनुक्कु⋆ एदुवेँदन् पणि एन्नाद्⋆ अदुवे आट्चॆय्यु मीडे ॥२॥	शीतल सुगंधित तुलसी वाले प्रभु वेद के प्रशंसित प्रभु हैं। पूरे मन से भक्ति ही आपकी सेवा के लिये योग्यता का काम करता है। **2955**
ईडुम् एडुप्पुम् इल् ईशन्⋆ माडु विडादॆन् मनने⋆ पाडुम् एन् नावलन् पाडल्⋆ आडुम् एन् अङ्गम् अणङ्गे ॥३॥	प्रभु चाह एवं तिरस्कार से परे हैं। मेरा हृदय कभी आप से अलग नहीं होता जीभ सर्वदा गाथा गान करती है एवं मेरा शरीर प्रेत की तरह नाचता है। **2956**
अणङ्गॆन आडुम् एन् अङ्गम्⋆ वणङ्गि वळिपडुम् ईशन्⋆ पिणङ्गि अमरर् पिदट्रुम्⋆ कुणङ्गॆळु कॊळ्कैयिनाने ॥४॥	प्रभु की सेवा एवं पूजा में मेरा शरीर प्रेत की तरह नाचता है जो सद्‌गुणों के कोषागार हैं एवं स्वर्गिक आपके लिये उतावले होकर व्याख्यान करते रहते हैं। **2957**
कॊळ्गै कॊळामै इलादान्⋆ एळ्गल् इरागम् इलादान्⋆ विळ्गै विळ्ळामै विरुम्बि⋆ उळ् कलन्दार्क्कोर् अमुदे ॥५॥	प्रभु न तो आकर्षित होते हैं और न छोड़ते ही हैं। न घृणा एवं न तो मैत्री का प्रदर्शन करते हैं। संयम एवं दृढ़ पूजा से प्रसन्न रहने वाले भक्तों के अमृत हैं। **2958**
अमुदम् अमरर्गट्कीन्द⋆ निमिर् शुडर् आळि नॆडुमाल्⋆ अमुदिलुम् आट्र इनियन्⋆ निमिर् तिरै नीळ् कडलाने ॥६॥	प्रभु अमृत से भी मधुर हैं। आपने देवों को अमृत दिया। आप गहरे सागर में हाथ में तेजोमय चक्र के साथ शयन करते हैं। **2959**
नीळ् कडल् शूळ् इलङ्गै क्कोन्⋆ तोळ्गळ् तलै तुणि शॆय्दान्⋆ ताळ्गळ् तलैयिल् वणङ्गि⋆ नाळ् कडलै क्कळिमिने ॥७॥	आपने लंका टापू के राजा के सिर एवं बाहों को काट गिराया। आपके आगे सिर नवा कर समय के अथाह सागर को तैर कर पार जाओ। **2960**
कळिमिन् तॊण्डीर्गळ् कळित्तु⋆ तॊळुमिन् अवनै तॊळुदाल्⋆ वळि निन्ऱ वल्विनै माळ्वित्तु⋆ अळिविन्ऱि आक्कम् तरुमे ॥८॥	हे भक्तों ! अपने को समर्पित कर दो। राह के जो रोड़े तुम्हारे कर्म हैं उनका क्षय हो जायेगा एवं तुम अक्षुण्ण श्रीसंपन्न बनोगे । **2961**
तरुमवरुम् पयनाय⋆ तिरुमगळार् तनि क्केळ्वर्⋆ पॆरुमै उडैय पिरानार्⋆ इरुमै विनै कडिवारे ॥९॥	युगल कर्मों को नष्ट कर आप ऊच्चतम फल देते हैं। महान सम्मानीय प्रभु लक्ष्मी के अलौकिक पति हैं। **2962**

कडिवार् तीय विनैगळ्* नॊडियारुम् अळवैक्कण्* कॊडिया अडु पुळ् उयर्त्त* वडिवार् मादवनारे॥१०॥	सुन्दर दूल्हा माधव पलक झपकते हमारे कर्मों को अलग कर देंगे। भयंकर गरूड आपके ध्वज के प्रतीक चिह्न हैं। **2963**
‡मादवन् पाल् शडगोपन्* तीदवम् इन्रियुरैत्त* एदमिल् आयिरत्तिप्पत्तु* ओद वल्लार् पिरवारे॥११॥	शुद्ध हृदय के शडगोपन से विरचित निर्मल हजार पद का यह दशक सार्वभौम माधव के बारे में है जो पुनर्जन्म से छुटकारा दिलाता है। **2964** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

7 पिऱ्वित्तियर् (2965 - 2975)

आरादिप्पारक्कु मिग इनियन्

()

पिऱ्वित्तुयर् अऱ्★ ज्ञानत्तुळ् निन्ऱु★ तुऱवि च्चुडर् विळक्कम्★ तलैप्पॅय्वार्★ अऱवनै★ आऴिप्पडै अन्दणनै★ मऱवियै इन्ऱि★ मनत्तु वैप्पारे॥१॥	जो सबकुछ त्याग कर चेतन में प्रवेश करते हैं एवं प्रबुद्ध बनकर पुर्नज्न्म की यातना से मुक्त रहना चाहते हैं वे अपने हृदयाकाश में सर्वदा चक्रधारी प्रभु के चरणारविंद पर ध्यान केन्द्रित रखते हैं। **2965**
वैप्पाम् मरुन्दाम्★ अडियरै वल्विनै★ तुप्पाम् पुलन् ऐन्दुम्★ तुञ्जक्कॊडान् अवन्★ एप्पाल् यवर्क्कुम्★ नलत्ताल् उयर्न्दुयर्न्दु★ अप्पालवन् एङ्गळ्★ आयर् कॊळुन्दे॥२॥	अनंत सद्गुण वाले प्रभु जो किसी व्यक्ति से एवं किसी स्थान पर नहीं पहुंचे जा सकते गोपकुल के लाड़ले कुमार हैं। आप भक्तों के औषध एवं संपन्नता हैं। भक्तों को सर्वनाश से बचाने के लिये आप इन्द्रियों की शक्ति को निरंकुश नहीं छोड़ते। **2966**
आयर् कॊळुन्दाय्★ अवराल् पुडैयुण्णुम्★ माय प्पिरानै★ एन् माणिक्क च्चोदियै★ तूय अमुदै★ प्परुगि प्परुगि★ एन् माय प्पिऱवि★ मयर्वऱुत्तेने॥३॥	अपने मृदुमय प्रभु का अमृत हमने जी भर के पिया है जो आश्चर्यमय प्रभु हैं, मणि के वर्ण वाले हैं, एवं गोपकुल के लाड़ले हैं परंतु मक्खन चुराने के लिये उनसे मार खा चुके हैं। पुनर्जन्म से जोड़ने वाला अज्ञान का धागा टूट चुका है। **2967**
मयर्वऱ् एन् मनत्ते★ मन्निनान् तन्नै★ उयर्विनैये तरुम्★ ऑण् शुडर् क्कट्टैयै★ अयर्विल् अमरर्गळ्★ आदि क्कॊळुन्दै★ एन् इशैविनै★ एन् शॊल्लि यान् विडुवेनो॥४॥	हम अपने पूज्य प्रभु को कैसे छोड़ सकते हैं ? अज्ञान को भगाकर आप हमारे हृदय में पूर्णतया प्रवेश कर गये हैं। सभी सर्वज्ञ स्वर्गिकों के आप मूल एवं कोष हैं। आपने हमें आत्म प्रकाश एवं गौरवशाली सद्गुण दिया है। **2968**
विडुवेनो एन् विळक्कै★ एन्नावियै★ नडुवे वन्दु★ उय्य क्कॊळ्गिन्ऱ नादनै★ तॊडुवे शॆय्दु★ इळ वायच्चियर् कण्णिनुळ्★ विडवे शॆय्दु★ विळिक्कुम् पिरानैये॥५॥	गोपकिशोरियों के समक्ष एक छोटे शिशु के रूप में प्रकट होकर उनके साथ छेड़खानी करने वाले प्रभु हमारी आत्मा एवं ज्योति हैं। कैसे हम आपको अब छोड़ सकते हैं ? **2969**

पिरान्⋆ पॆरु निलङ्कीण्डवन्⋆ पिन्नुम् विराय्⋆ मलर् त्तुळाय् वेय्न्द मुडियन्⋆ मरामरम् एय्द मायवन्⋆ एन्नुळ इरान् एनिल्⋆ पिन्नै यान् ऑट्टुवेनो॥६।	आपने प्रलय जल से धरा को ऊपर उठाया। क्या ही आश्चर्य कि आपने एक बाण से सात पेड़ों को बेध दिया। अपने मुकुट पर सुगंधित तुलसी धारण करने वाले प्रभु हमारे हृदय में बस गये हैं। क्या हम कभी भी आपको छोड़कर जाने देंगे ? **2970**
यान् ऑट्टि एन्नुळ्⋆ इरुत्तुवम् एन्निलन्⋆ तान् ऑट्टि वन्दु⋆ एन् तनि नॆञ्जै वञ्जित्तु⋆ ऊन् ऑट्टि निन्ऱु⋆ एन् उयिरिल् कलन्दु⋆ इयल् वान् ऑट्टुमो⋆ इनि एन्नै नॆगिळ्क्कवे॥७॥	अपने हृदय में हम आपको रोकना नहीं चाहते हैं। आप स्वयं आये और हममें पूरी तरह विराज गये। हमारे मांस एवं सांस में आप पूर्णतया विलीन हो गये हैं। क्या हमें अब छोड़ने के लिये आप निर्णय लेंगे ? **2971**
एन्नै नॆगिळ्क्किलुम्⋆ एन्नुडै नन्नॆञ्जम् तन्नै⋆ अगल्विक्क त्तानुम्⋆ किल्लान् इनि⋆ पिन्नै नॆडुम् पणै त्तोळ्⋆ मगिळ् पीडुडै⋆ मुन्नै अमरर्⋆ मुळुमुदलाने॥८॥	प्राचीन स्वर्गिकों के आप प्रथम कारण हैं। नप्पिनाय के बांस समान बाहों के साथ आलिंगन विहार में आप आनंद लेते हैं। अगर आप हमारा परित्याग करना चाहते हैं तो हमारा हृदय इतना अच्छा है कि हमें छोड़ कर जाने में आप असक्त हैं। **2972**
अमरर् मुळुमुदल्⋆ आगिय आदियै⋆ अमररक्कमुदीन्द⋆ आयर् कॊळुन्दै⋆ अमरवळुम्प⋆ त्तुळावि एन्नावि⋆ अमर त्तळुविट्टु⋆ इनि अगलुमो॥९॥	देवों को अमृत देने वाले प्रभु गोपकुल के लाड़ले हैं। हमारी आत्मा ने हमारे प्राण को आप में विलीन कर दिया है। फिर अलग होने का विचार कैसे उठा ? **2973**
अगलिल् अगलुम्⋆ अणुगिल् अणुगुम्⋆ पुगलुम् अरियन्⋆ पॊरुवल्लन् एम्मान्⋆ निगरिल् अवन् पुगळ्⋆ पाडि इळैप्पिलम्⋆ पगलुम् इरवुम्⋆ पडिन्दु कुडैन्दे॥१०॥	छोड़देने पर हमारे प्रभु चले जाते हैं एवं रोकने पर ठहरते हैं। हमारे प्रभु को पाना कठिन है। हमारे प्रभु को पाना सरल है। हमलोग प्रभु की प्रशंसा करें एवं अनंत गाथा का गान करें। रात दिन आपके मिलन का आनंद उठायें। **2974**
कुडैन्दु वण्डुण्णुम्⋆ तुळाय् मुडियानै⋆ अडैन्द तॆन् कुरुकूर्⋆ च्चडगोपन्⋆ मिडैन्द शॊल् तॊडै⋆ आयिरत्तिप्पत्तु⋆ उडैन्दु नोय्गाळै⋆ ओडुविक्कुमे॥११॥	कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक मधुमक्खी लिपटे अमृतमयी तुलसी माला वाले प्रभु के बारे में है जो रोग एवं यातना का निदान प्रदान करते हैं। **2975** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **8 ओडुम्बुळ (2976 - 2986)** ईश्वरन् आर्जव गुणमुडैयवन् ()	
‡ओडुम् पुळ्ळेरि⋆ शूडुम् तण् तुळाय्⋆ नीडु निन्ऱवै⋆ आडुम् अम्माने॥१॥	हमारे प्रभु शीतल तुलसी धारण करते हैं, गरूड़ की सवारी करते हैं, एवं शाश्वतों के साथ रहते हैं। **2976**
अम्मानाय् प्पिन्नुम्⋆ एम्माण्बुम् आनान्⋆ वॆम् मा वाय् कीण्ड⋆ शॆम् मा कण्णने॥२॥	यद्यपि सबों के नाथ हैं परंतु राजीवनयन कृष्ण के रूप में अवतार लेकर केशिन घोड़े का जवड़ा फाड़ा। **2977**
कण्णावान् एन्ऱुम्⋆ मण्णोर् विण्णोर्क्कु⋆ तण्णार् वेङ्गड⋆ विण्णोर् वॆर्पने॥३॥	स्वर्गिकों एवं मरणशीलों के आंखों के तारे होकर आप वेंकटम पर राज्य करते हैं जहां देव भी पूजा के लिये तरसते हैं। **2978**
वॆर्पै ऑन्ऱॆडुत्तु⋆ ऑर्कम् इन्ऱिये⋆ निर्कुम् अम्मान् शीर्⋆ कर्पन् वैगले॥४॥	ऊंचे पर्वत को धारण कर खड़े रहने वाले प्रभु की हम सर्वदा प्रशस्ति गायेंगे जो आपके बड़प्पन का प्रमाण है। **2979**
वैगलुम् वॆण्णॆय्⋆ कै कलन्दुण्डान्⋆ पॊय् कलवादु⋆ एन् मॆय् कलन्दाने॥५॥	मक्खन चुराकर दोनों हाथ से खाने वाले प्रभु बिना संदेह हममें विलीन हो गये हैं। **2980**
कलन्दॆन्नावि⋆ नलङ्गॊळ् नादन्⋆ पुलङ्गॊळ् माणाय्⋆ निलम् कॊण्डाने॥६॥	हमारी आत्मा में मिलकर आप हमारे लिये श्रेयस्कर हैं। मनमोहक किशोर के रूप में आपने धरा को मापा। **2981**
कॊण्डान् एळ् विडै⋆ उण्डान् एळ् वैयम्⋆ तण् तामम् शॆय्दु⋆ एन् एण् तान् आनाने॥७॥	आपने सात लोकों को निगला एवं सात वृषभों का शमन किया। आपका सुखद आवास हमारा चैतन्य है। **2982**
आनान् आन् आयन्⋆ मीनोडेनमुम्⋆ तान् आनान् एन्निल्⋆ तान् आय शङ्गे॥८॥	हमारे स्नेह में गोपकुमार बनकर आये तथा मत्स्य एवं वराह भी। **2983**
शङ्गु चक्करम्⋆ अङ्गैयिल् कॊण्डान्⋆ एङ्गुम् तानाय्⋆ नङ्गळ् नादने॥९॥	सभी स्वरूपों में आनेवाले हमारे प्रभु सुन्दर हाथों में चक्र एवं शंख धारण करते हैं। **2984**
नादन् ञालम् कॊळ्⋆ पादन् एन्नम्मान्⋆ ओदम् पोल् किळर्⋆ वेद नीरने॥१०॥	धरा को मापने वाले हमारे प्रभु सागर की लहरों की तरह वेदों से प्रशंसित हैं। **2985**
‡नीर्पुरै वण्णन्⋆ शीर् शडगोपन्⋆ नेर्दल् आयिरत्तु⋆ ओर्दल् इवैये॥११॥	शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक सागर सा सलोने प्रभु की गाथा गाता है। **2986** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

9 इवैयुम् अवैयुम् (2987 - 2997)

आळवारोडु एम्पेरूमान् कलन्दवगै

(॥)

इवैयुम् अवैयुम् उवैयुम्⋆ इवरुम् अवरुम् उवरुम्⋆ अवैयुम् यवरुम् तन्नुळ्ळे⋆ आगियुम् आक्कियुम् काक्कुम्⋆ अवैयुळ् तनिमुदल् एम्मान्⋆ कण्ण पिरान् एन्नमुदम्⋆ शुवैयन् तिरुविन् मणाळन्⋆ एन्नुडै च्चूळल् उळाने॥१॥	सर्वत्र के सभी बस्तुओं एवं प्राणियों के आप प्रथम कारण हैं।आप उन्हें अपने में रख लेते हैं एवं पुनः बनाते हैं तथा उनकी रक्षा करते हैं। हमारे प्रभु! हमारे अमृत! मधुर स्वाद! श्रीपति ! हमारे पास आचुके हैं। **2987**
शूळल् पल पल वल्लान्⋆ तॉल्लैयङ्गालत्तुलगै⋆ केळल् ऑन्रागि इडन्द⋆ केशवन् एन्नुडै अम्मान्⋆ वेळ मरुप्पै ऑशित्तान्⋆ विण्णवर्क्कॅण्णल् अरियान्⋆ आळ नॅडुङ्गडल् शेर्न्दान्⋆ अवन् एन्नरुगलिल्लाने॥२॥	हमारे केशव प्रभु अनेकों आश्चर्य के प्रभु हैं। आपने मदमत्त हाथी का वध किया, सूकर के रूप में धरा को उठाया। आप गहरे सागर में शयन करते हैं जो स्वर्गिकों के लिये भी रहस्य है। आप अब हमारे पास हैं। **2988**
अरुगल् इलाय पॅरुम् शीर्⋆ अमरर्गळ् आदि मुदल्वन्⋆ करुगिय नील नन् मेनि वण्णन्⋆ शॅन्दामरै क्कण्णन्⋆ पॉरु शिरै प्पुळ्ळुवन्देरुम्⋆ पू मगळार् तनि क्केळ्वन्⋆ ऑरुगदियिन्जुवै तन्दिट्टु⋆ ऑळिविलन् एन्नोडुडने॥३॥	अनंत गौरव के निर्मल प्रभु ! स्वर्गिकों के प्रथम कारण ! श्यामल मणिवर्ण के अरूणाभ कमलनयन प्रभु ! लक्ष्मी के अलौकिक पतिदेव ! भयानक पंखों वाले गरूड़ की सवारी में आप आनंद लेते हैं।मिलन का आनंद देते हुए आप हममें प्रवेश कर गये हैं। **2989**
उडन् अमर् कादल् मगळिर्⋆ तिरुमगळ् मण्मगळ् आयर् मड मगळ्⋆ एन्रिवर् मूवर् आळुम्⋆ उलगमुम् मून्रे⋆ उडन् अवै ऑक्क विळुङ्गि⋆ आल् इलै च्चेर्न्दवन् एम्मान्⋆ कडल् मलि माय प्पॅरुमान्⋆ कण्णन् एन् ऑक्कलै याने॥४॥	तीनों रानियां भू देवी श्री देवी एवं नीला देवी आपके साथ बैठने में आनंद लेती हैं। जगत जिस पर आपका राज्य है वे भी तीन हैं। सागर से भी ज्यादा आश्चर्यजनक प्रभु सबों को निगल कर एक शिशु के रूप में तैरते बटपत्र पर सो गये। जागकर अब आप हमारे गोद में आ गये हैं। **2990**
ऑक्कलै वैत्तु मुलै प्पाल् उण् एन्रु⋆ तन्दिड वाङ्गि⋆ शॅक्कम् शॅग अन्रवळ् पाल्⋆ उयिर् शॅगवुण्ड पॅरुमान्⋆ नक्क पिरानोडयनुम्⋆ इन्दिरनुम् मुदलाग⋆ ऑक्कवुम् तोट्रिय ईशन्⋆ मायन् एन् नॅञ्जिन् उळाने॥५॥	अपनी ईच्छा से आश्चर्यमय प्रभु ने शिव इन्द्र ब्रह्मा तथा सभी देवों एवं समस्त जगत को बनाया। पूतना के विषैले स्तन पीने वाले आप हमारे लाड़ले शिशु कृष्ण हैं। जागकर अब आप हमारे वक्ष पर आ गये हैं। **2991**

मायन् एन् नॅञ्जिन् उळ्ळान्⋆ मट्रुम् यवरक्कुम् अदुवे⋆ कायमुम् शीवनुम् ताने⋆ कालुम् एरियुम् अवने⋆ शेयन् अणियन् यवरक्कुम्⋆ शिन्दैक्कुम् कोशरम् अल्लन्⋆ तूयन् तुयक्कन् मयक्कन्⋆ एन्नुडै त्तोळ् इणैयाने॥६॥	सभी के शरीर एवं प्राण, हमारे वक्ष के प्रभु, शुद्ध आकर्षक एवं छली हैं। वायु एवं अग्नि भी आप ही हैं। आप दूर भी एवं पास भी हैं तथा बुद्धि से आपको कोई नहीं समझ सकता। आप हमारे कंधों पर चढ़ गये हैं। इस आश्चर्य को कौन समझ सकता है ? **2992**
तोळ् इणै मेलुम् नन् मार्बिन् मेलुम्⋆ शुडर् मुडि मेलुम्⋆ ताळ् इणै मेलुम् पुनैन्द⋆ तण्णम् तुळाय् उडै अम्मान्⋆ केळ् इणै ऑन्रुम् इलादान्⋆ किळरुम् शुडर् ऑळि मूर्त्ति⋆ नाळ् अणैन्दॉन्रुम् अगलान्⋆ एन्नुडै नाविन् उळाने॥७॥	आप आभापूर्ण ज्योति के प्रतीक हैं एवं आपकी प्रभा तुलना के परे है। कंधे वक्षस्थल मुकुट तथा दिव्य चरणों पर आप तुलसी की गुंथी हुई माला पहनते हैं। दिनानुदिन प्रिय से प्रियतर होते हुए आप हमारी जीभ पर हैं। **2993**
नाविनुळ् निन्रु मलरुम्⋆ ञान क्कलैगळुक्कॅल्लाम्⋆ आवियुम् आक्कैयुम् ताने⋆ अळिप्पोडळिप्पवन् ताने⋆ पूवियल् नाल् तडम् तोळन्⋆ पॉरु पडै आळि शङ्गन्दुम्⋆ कावि नन् मेनि क्कमल क्कण्णन्⋆ एन् कण्णिन् उळाने॥८॥	सबके ज्ञान में, एवं जीभ से प्रस्फुटित होने वाले कला में, आप शब्द एवं चेतन हैं। सुमन सा सुकोमल चतुर्भुज प्रभु, युद्ध विनाशक चक्र एवं शंख धारण करने वाले कमलनयन प्रभु, अब हमारी आंखों में हैं। **2994**
कमल क्कण्णन् एन् कण्णिन् उळ्ळान्⋆ काण्बन् अवन् कण्गळाले⋆ अमलङ्गळ् आग विळिक्कुम्⋆ ऐम्बुलनुम् अवन् मूर्त्ति⋆ कमलत्तयन् नम्बि तन्नै⋆ क्कण्णुदलानॊडुम् तोट्रि⋆ अमल त्तॆय्वत्तोडुलगम् आक्कि⋆ एन् नॅट्रि उळाने॥९॥	आपने कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा ललाट पर आंख वाले शिव को बनाया। आपने शुद्ध देवतागन तथा उनके समस्त लोक को बनाया। मैं कमलनयन प्रभु को अपनी आंखों में देखता हूं और आप भी हमें स्पष्ट रूप से देखते हैं। आप हमारे ललाट में हैं। **2995**
नॅट्रियुळ् निन्रॆन्नै आळुम्⋆ निरै मलर् प्पादङ्गळ् शूडि⋆ क्कट्रै तुळाय् मुडि क्कोल⋆ क्कण्ण पिरानै त्तॊळुवार्⋆ ऑट्रै प्पिरै अणिन्दानुम्⋆ नान्मुगनुम् इन्दिरनुम्⋆ मट्रैय अमररुम् एल्लाम् वन्दु⋆ एनदुच्चि उळाने॥१०॥	शशिभूषण शिव, चतुर्मुख ब्रह्मा, इन्द्र, एवं अन्य देवगन अपने अपने सिर प्रभु के चरणारविंद पर रखकर पूजा करते हैं। तुलसी की माला धारण किये कृष्ण मेरे ललाट से मेरी रक्षा करते हुए प्रभु अब मेरे सिर पर पधार गये हैं। **2996**
‡उच्चियुळ्ळे निर्कुम् देव देवर्कु⋆ क्कण्ण पिरार्कु⋆ इच्चैयुळ् शॆल्ल उणर्त्ति⋆ वण् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ इच्चॊन्न आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् ओर् पत्तॆम्बिरार्कु⋆ निच्चलुम् विण्णप्पम् शॆय्य⋆ नीळ् कळल् शॆन्नि पॊरुमे॥११॥	कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक देवों के प्रभु कृष्ण को प्रेम से संबोधित करता है जो अपने चरणकमल सदा के लिये उन्हें प्रदान कर देंगे जो इसे आत्मीयता के साथ प्रभु के सामने गायेगें। **2997** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

10 पोरूमानीळ् पडै (2998 - 3008)

ईश्वरन् कारणम् इन्रि च्चेय्युम् उपकारम् (।।)

<table>
<tr><td>‡पॊरु मा नीळ् पडै⋆ आऴि शङ्गत्तॊडु⋆
तिरु मा नीळ् कऴल्⋆ एऴ् उलगुम् तॊऴ⋆
ऒरु माणि क्कुरळ् आगि⋆ निमिरन्द⋆ अ–
क्करु माणिक्कम्⋆ एन् कण्णुळदागुमे॥१॥</td><td>अपनी आंखों में मणि वर्ण के श्यामल प्रभु को युद्ध के लिये उद्धत तेजोमय चक्र एवं शंख को धारण किये देखा। उस समय आप वामन के रूप में आये और अपने महान चरणों से धरा को मापा। अहा कैसे आप विस्तृत होकर सातों लोकों से पूजे गये! **2998**</td></tr>
<tr><td>कण्णुळ्ळे निर्कुम्⋆ कादन्मैयाल् तॊऴिल्⋆
एण्णिलुम् वरुम्⋆ एन् इनि वेण्डुवम्⋆
मण्णुम् नीरुम्⋆ एरियुम् नल् वायुवुम्⋆
विण्णुमाय् विरियुम्⋆ एम् पिरानैये॥२॥</td><td>हमारे प्रभु अपने को पृथ्वी आकाश वायु जल एवं अग्नि के रूप में प्रकट किये। जब भी मैं प्रेम से पूजा करता हूं आप मेरी आंखों में प्रवेश कर जाते हैं एवं हमारे हृदय को भर देते हैं। इससे अधिक हमें क्या चाहिये ? **2999**</td></tr>
<tr><td>एम् पिरानै⋆ एन्दै तन्दै तन्दैक्कुम्
तम् पिरानै⋆ तण् तामरै क्कण्णनै⋆
कॊम्बरावु⋆ नुण् नेर् इडै मार्वनै⋆
एम् पिरानै तॊऴाय्⋆ मड नॆञ्जमे॥३॥</td><td>हे हृदय ! शांत राजीवनयन प्रभु की पूजा करो। अपने वक्षस्थल पर आप पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करते हैं जिनका अधोभाग नागिन या पेड़ की डाली की तरह पतला है। आप हमारे पिता के नाथ हैं, उनके पिता के नाथ हैं, तथा उनके पहले के पूर्वजों के नाथ हैं। **3000**</td></tr>
<tr><td>नॆञ्जमे नल्लै नल्लै⋆ उन्नै प्पॆट्राल्
एन् शॆय्योम्⋆ इनि एन्न कुरैविनम्⋆
मैन्दनै मलराळ्⋆ मणवाळनै⋆
त्तुञ्जुम्बोदुम्⋆ विडादु तॊडर् कण्डाय्॥४॥</td><td>हमारे प्रभु राजकुमार हैं जिन्होंने पद्मश्री लक्ष्मी से व्याह किया। हे हृदय ! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तुम्हारी सहायता से हम क्या नहीं कर सकते ? अब हमारी कमी क्या है ? इस संक्रमण काल में प्रभु को द्दढता से पकड़ लो। **3001**</td></tr>
<tr><td>कण्डाये नॆञ्जे⋆ करुमङ्गळ् वाय्क्किन्रु⋆ ओर्
एण् तानुम् इन्रिये⋆ वन्दियलुमारु⋆
उण्डानै⋆ उलगेळुम् ओर् मूवडि
कॊण्डानै⋆ क्कण्डु कॊण्डनै नीयुमे॥५॥</td><td>हे हृदय ! तुमने भी प्रभु को देखा है। आपने सात लोकों को निगल लिया तथा उन्हें तीन कदमों में माप दिया। बिना पंचायती के हमारे कृत्य अब फल देने लगे हैं। **3002**</td></tr>
<tr><td>नीयुम् नानुम्⋆ इन्नेर् निर्गिल्⋆ मेल् मट्रोर्
नोयुम् शार्कॊडान्⋆ नॆञ्जमे शॊन्नेन्⋆
तायुम् तन्दैयुमाय्⋆ इव्वुलगिनिल्⋆
वायुम् ईशन्⋆ मणिवण्णन् एन्दैये॥६॥</td><td>हे हृदय ! मणिवर्ण वाले प्रभु सबकी माता पिता की तरह रक्षा करते हैं। देखो, जब तू एवं हम उनके सामने इस तरह से खड़े होंगे तो वे रोग को कभी भी प्रवेश नहीं करने देंगे। **3003**</td></tr>
</table>

एन्दैये एन्रुम्★ एम् पॆरुमान् एन्रुम्★ शिन्दैयुळ् वैप्पन्★ शॊल्लुवन् पावियेन्★ एन्दै एम् पॆरुमान् एन्रु★ वानवर्★ शिन्दैयुळ् वैत्तु★ च्चॊल्लुम् शॆल्वनैये॥७॥	हे कितना पापी हूं मैं ! मैंने प्रभु से प्रेम करने का दुस्सहस किया एवं आपको पिता से संबोधित किया जिन्हें स्वर्गिक गन ध्यान करते हुए सौभाग्य से पिता एवं नाथ कहते हैं। **3004**
शॆल्व नारणन् एन्र★ शॊल् केट्टलुम्★ मल्गुम् कण् पनि★ नाडुवन् मायमे★ अल्लुम् नन् पगलुम्★ इडै वीडिन्रि★ नल्गि एन्नै विडान्★ नम्बि नम्बिये॥८॥	जब मैं 'श्री नारायण' शब्द सुनता हूं हमारी आंखों से अश्रुधार झरते हैं और पूछता हूं 'कहां ?' कितना आश्चर्य! रात दिन लगातार आप मेरे साथ मित्रवत रहते हैं। **3005**
नम्बियै★ तॆन् कुरुङ्गुडि निन्र★ अ- च्चॆम्पॊने तिगळुम्★ तिरु मूर्त्तियै★ उम्बर् वानवर्★ आदियञ्जोदियै★ एम् पिरानै★ एन् शॊल्लि मरप्पनो॥९॥	तेजोमय प्रभु ऊपर के स्वर्गिकों के कारण हैं। स्वर्ण की तरह प्रदीप्त हो आप दक्षिण कुरूंगुडी में अपनी विशेष पहचान की तरह रहते हैं। ओह किन शब्दों से मैं आपको भूल सकता हू ? **3006**
मरप्पुम् ञानमुम्★ नान् ऒन्रुणर्न्दिलन्★ मरक्कुम् एन्रु★ शॆन्दामरै क्कण्णॊडु★ मरप्पर एन्नुळ्ळे★ मन्निनान् तन्नै★ मरप्पनो इनि★ यान् एन् मणियैये॥१०॥	क्या स्मरण रखना चाहिये तथा क्या विस्मृत हो जाना चाहिए हमें नहीं पता है। और ऐसा न कि मैं भूल जाउं, आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये हैं। **3007**
मणियै वानवर् कण्णनै★ त्तन्नदोर् अणियै★ तॆन् कुरुगूर् च्चडगोपन्★ शॊल् पणि शॆय् आयिरत्तुळ्★ इवै पत्तुडन्★ तणिविलर् कर्परेल्★ कल्वि वायुमे॥११॥	हजार पद का यह दशक कुरूगुर के शडगोपन द्वारा मणिवर्ण के अद्वितीय प्रभु की सेवा में समर्पित किये गये हैं। जो इसे याद करलेंगे वे शुद्ध ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। **3008** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

11 वायुम् तिरै (3009 – 3019)

पिरिवाट्रामैक्कु वरून्दल्

कारण स्वरूप प्रभु से ही मोक्ष मिलता है

नायिकी भाव में

वायुम् तिरैयुगळुम्⋆ कानल् मड नाराय्⋆ आयुम् अमर् उलगुम्⋆ तुञ्जिलुम् नी तुञ्जायाल्⋆ नोयुम् पयलैमैयुम्⋆ मीदूर एम्मेपोल्⋆ नीयुम् तिरुमालाल्⋆ नैञ्जम् कोळ् पट्टाये॥१॥	लवण घुले जल पर फुदकने वाली मछली खाने वाली हे श्वेत पक्षी ! यद्यपि कि हमारी मां एवं ईश्वरीय जगत सो रहे हैं तुम सोने नहीं गयी हो।क्या तुम भी मेरी तरह लक्ष्मी के दूल्हा प्रभु से तिरस्कृत होकर वेदनाग्रस्त एवं मुर्झाने के लिये छोड़ दी गयी हो ? **3009**
कोळ् पट्ट शिन्दैयाय्⋆ क्कूर्वाय अन्रिले⋆ शेळ् पट्ट यामङ्गळ्⋆ शेरादिरङ्गुदियाल्⋆ आळ् पट्ट एम्मेपोल्⋆ नीयुम् अरवणैयान्⋆ ताळ् पट्ट तण् तुळाय्⋆ त्तामम् कामुट्राये॥२॥	हे दुखी पक्षी ! क्या तुम भी मेरी तरह प्रभु के जाल में पड़ गयी हो? देर रात जागकर एवं कर्कश चीख से पुकारती हुई क्या तू भी शेषशायी प्रभु के चरणों की शीतल तुलसी माला चाह रही है ? **3010**
कामुट्र कैयरवोडु⋆ एल्ले इराप्पगल्⋆ नी मुट्र क्कण् तुयिलाय्⋆ नैञ्जुरुगि एङ्गुदियाल्⋆ ती मुट्र त्तेन् इलङ्गै⋆ ऊट्टिनान् ताळ् नयन्द⋆ याम् उट्रदुट्रायो⋆ वाऴि कनै कडले॥३॥	गर्जनभरी बहन सागर ! क्या तुम्हें नींद नहीं आती ? तुम रात दिन हृदय विदारक लहरों से पुकारती रहती हो।दक्षिण लंका को जलाकर भस्म कर देने वाले प्रभु का मैं चरण चाहती थी। क्या तुम्हारी भी मेरी तरह वेदना है ? **3011**
कडलुम् मलैयुम्⋆ विशुम्बुम् तुळाय् एम्पोल्⋆ शुडर् कोळ् इराप्पगल्⋆ तुञ्जायाल् तण् वाडाय्⋆ अडल् कोळ् पडैयाऴि⋆ अम्मानै क्काण्बान् नी⋆ उडलम् नोय् उट्रायो⋆ ऊऴि तोरुऴिये॥४॥	सागर पर्वत एवं आकाश से बहने वाली शीतल वायु! मेरी तरह उज्जवल दिन या रात में तुम्हें चैन नहीं है। क्या युग युगान्तर से चक्रधारी प्रभु के दर्शन की प्रतीक्षा करती हुई वेदनाग्रस्त हो गयी हो ? **3012**
ऊऴि तोरुऴि⋆ उलगुक्कु नीर् कोण्डु⋆ तोऴियरुम् यामुम् पोल्⋆ नीराय् नैगिऴिान्र⋆ वाऴिय वानमे⋆ नीयुम् मदुशूदन्⋆ पाऴिमैयिल् पट्टवन् कण्⋆ पाशत्ताल् नैवाये॥५॥	जगत को जल देने वाले भाग्यशाली मेघ ! युग युगान्तर से मेरी एवं मेरी बहन की तरह तू भी पिघल रही है। क्या मधुसूदन के चक्रव्यूह में पड़कर तू प्रेमरोग से ग्रस्त हो गयी हो ? **3013**
नैवाय एम्मे पोल्⋆ नाण्मदिये नी इन्नाळ्⋆ मै वान् इरुळ् अगट्राय्⋆ माळान्दु तेम्बुदियाल्⋆ ऐ वाय् अरवणै मेल्⋆ आऴि प्पेरुमानार्⋆ मैय् वाशगम् केट्टु⋆ उन् मैय्न् नीर्मै तोट्राये॥६॥	हे अर्द्धचंद्र ! आज तू अंधकार नहीं भगा रही हो। मेरी जैसी अभागिनी की तरह तू भी दिन दिन क्षीण होती जा रही है। शेषशायी चक्रधारी प्रभु की प्रतिज्ञा को क्या तू सच मान ली थी ? **3014**

तोट्टोम् मड नॆञ्जम्⋆ एम् पॆरुमान् नारणर्कु⋆ एम् आट्टामै शॊल्लि⋆ अळुवोमै नी नडुवे⋆ वेट्टोर् वगैयिल्⋆ कॊडिदाय् एनै ऊळि⋆ माट्टाण्मै निट्रियो⋆ वाळि कनै इरुळे॥७॥	हे बढ़ती हुई अंधकार ! अपने क्षीण हृदय को प्रभु के पास गंवाकर मैं अपने असह्य दुर्भाग्य पर रोती हूं एवं शोकग्रस्त हूं। हाय ! तू मेरे प्रवलतम शत्रु से भी अधिक कठोर हो। हो सकता है तू जीत जाओगी, कितनी देर तू मुझे प्रताड़ित करोगी ? **3015**
इरुळिन् तिणि वण्णम्⋆ मा नीर् क्कळिये पोय्⋆ मरुळुट्रिराप्पगल्⋆ तुञ्जिलुम् नी तुञ्जायाल्⋆ उरुळुम् शगडम्⋆ उदैत्त पॆरुमानार्⋆ अरुळिन् पॆरु नशैयाल्⋆ आळान्दु नॊन्दाये॥८॥	पिघलती हुई अंधकार की तरह हे नमकीन जल प्रवाह ! यद्यपि कि रात एवं दिन का भी अंत होता है लेकिन तू कभी भी चैन से नहीं रहती। क्या विछुड़न की वेदना से त ूग्रस्त है ? क्या तू गाड़ी तोड़ने वाले प्रभु की कृपाकांक्षी बन गयी थी ? **3016**
नॊन्दारा क्कादल् नोय्⋆ मॆल् आवियुळ् उलर्त्त⋆ नन्दा विळक्कमे⋆ नीयुम् अळियत्ताय्⋆ शॆन्दामरै त्तडङ्गण्⋆ शॆङ्गनि वाय् एम् पॆरुमान्⋆ अन्दाम त्तण् तुळाय्⋆ आशैयाल् वेवाये॥९॥	मेरी दुखी प्रिया शाश्वत ज्योति! प्रेमोन्माद के कारण तुम्हारा हृदय सूख रहा है एवं शरीर जल रहा है। क्या तू भी बड़ी कमल जैसी आंखें एवं मूंगा जैसी होंठ वाले प्रभु की धारण की हुई तुलसी माला की चाहने वाली थी ? **3017**
वेवारा वेट्कै नोय्⋆ मॆल् आवियुळ् उलर्त्त⋆ ओवादिराप्पगल्⋆ उन्वाले वीळ्त्तॊळिन्दाय्⋆ मावाय् पिळन्दु⋆ मरुदिडै पोय् मण् अळन्द⋆ मूवा मुदल्वा⋆ इनियॆम्मै च्चोरेले॥१०॥	हे युवापूर्ण प्रभु ! आपने घोड़े के जबड़े को चीर दिया।अनेकों वृक्षों को वेध डाले एवं धरा को माप डाला। रात दिन की अनवरत प्रज्वलित प्रेमोन्माद की अग्नि से मेरी क्षीण आत्मा के अन्तः को जला डाला है और मुझे अपने चरणों पर डाल लिये हैं। विनती है, अब मेरा और अधिक तिरस्कार न करें। **3018**
‡शोराद एप्पॊरुट्कुम्⋆ आदियाम् शोदिक्के⋆ आराद कादल्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ ओर् आयिरम् शॊन्न⋆ अवट्टुळ् इवै प्पत्तुम्⋆ शोरार् विडार् कण्डीर्⋆ वैगुन्दम् तिण्णॆनवे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक महान प्रभु के वारे में है जो सबों के तेजोमय कारण हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे कभी भी वैकुंठ से प्रस्थान नहीं करेंगे। **3019** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><th colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
12 तिण्णन वीडु (3020 -3030)
तिरूमाल परत्तुवत्तै अवतारत्तिलै एडुत्तु क्काट्टल्</th></tr>
<tr><td>तिण्णन् वीडु⋆ मुदल् मुळुदुमाय्⋆
एण्णिन् मीदियन्⋆ एम् पॆरुमायन्⋆
मण्णुम् विण्णुम् एल्लाम्⋆ उडन् उण्ड⋆ नम्
कण्णन कण्णल्लद⋆ इल्लैयोर कण्णे॥१॥</td><td>स्वर्ग एवं अन्य सबकुछ देने वाले हमारे प्रभु ने धरा एवं आकाश को निगल लिया। आप समझ के परे हैं। आप हमारी आंखों की तरह प्रिय हमारे कृष्ण हैं। यह निश्चित है कि आप के अतिरिक्त कोई कर्ता नहीं है। **3020**</td></tr>
<tr><td>ए पावम् परमे⋆ एळ् उलगुम्⋆
ई पावम् शॆय्दु⋆ अरुळाल् अळिप्पारार्⋆
मा पावम् विड⋆ अरर्कु प्पिच्चै पॆय्⋆
गोपाल कोळरि⋆ एऱन् अन्ऱिये॥२॥</td><td>स्वर्ग एवं अन्य सबकुछ देने वाले हमारे प्रभु ने धरा एवं आकाश को निगल लिया। आप समझ के परे हैं। आप हमारी आंखों की तरह प्रिय हमारे कृष्ण हैं। यह निश्चित है कि आप के अतिरिक्त कोई कर्ता नहीं है। **3021**</td></tr>
<tr><td>एऱनै प्पूवनै⋆ प्पूमगळ् तन्नै⋆
वेऱिन्ऱि विण् तॊळ⋆ तन्नुळ् वैत्तु⋆
मेल् तन्नै मीदिड⋆ निमिर्न्दु मण् कॊण्ड⋆
माल् तनिल् मिक्कुम् ओर्⋆ तेवुम् उळदे॥३॥</td><td>वृषभारोही शिव, पद्मयोनि ब्रह्मा, पद्मश्री लक्ष्मी आपके शरीर पर साथ रहते हैं। देवगन आपकी पूजा करते हैं। आकाश में उठकर आपने धरा को ले लिया।आप से बड़ा कोई अन्य हो सकता है क्या ? **3022**</td></tr>
<tr><td>तेवुम् एप्पॊरुळुम् पडैक्क⋆
पूविल् नान् मुगनै प्पडैत्त⋆
तेवन् एम् पॆरुमानुक्कल्लाल्⋆
पूवुम् पूशनैयुम् तगुमे॥४॥</td><td>प्रभु ने ब्रह्मा को अपने नाभि कमल पर उत्पन्न किया जिन्होंने आगे देवगन एवं विश्व के प्राणियों की सृष्टि की। हमारे कृष्ण के अतिरिक्त कोई अन्य फूल से पूजने योग्य है क्या ? **3023**</td></tr>
<tr><td>तगुम् शीर्⋆ त्तन्दनि मुदलिनुळ्ळे⋆
मिगुम् तेवुम्⋆ एप्पॊरुळुम् पडैक्क⋆
तगुम् कोल⋆ त्तामरै क्कण्णन् एम्मान्⋆
मिगुम् शोदि⋆ मेल् अऱिवार् यवरे॥५॥</td><td>राजीवनयन श्रीसंपन्न प्रभु ने स्वयं की इच्छा से उच्चस्थ देवों की तथा अन्य वस्तुओं एवं प्राणियों की रचना की। कौन इनसे महान गौरव वाले की प्रशस्ति गायी जा सकती है ? **3024**</td></tr>
<tr><td>यवरुम् यावैयुम्⋆ एल्ला प्पॊरुळुम्⋆
कवर्विन्ऱि⋆ तन्नुळ् ऒडुङ्ग निन्ऱ⋆
पवर् कॊळ् ञान⋆ वॆळ्ळ च्चुडर् मूर्त्ति⋆
अवर् एम्माळि⋆ अम् पळ्ळियारे॥६॥</td><td>सभी वस्तु, सभी प्राणी, एवं सभी लोक आप अपने भीतर बड़ी सरलता से रख लेते हैं। शाश्वत आभा से पूर्ण एक अलौकिक प्रतीक, आप सागरशायी हैं।आप हमारे एकमात्र प्रभु हैं। **3025**</td></tr>
<tr><td>पळ्ळियालिलै⋆ एळ् उलगुम् कॊळ्ळुम्⋆
वळ्ळल्⋆ वल् वयिट्रु प्पॆरुमान्⋆
उळ्ळुळार् अऱिवार्⋆ अवन् तन्⋆
कळ्ळ माय⋆ मनक्करुत्ते॥७॥</td><td>हमारे प्रभु एक महान उदर वाले हैं। सात लोक को खा कर आप बटपत्र पर सो गये। क्या आपकी अपरिमित ईच्छा को हम समझ सकते हैं ? **3026**</td></tr>
</table>

करुत्तिल् तेवुम्⋆ एल्ला प्पॉरुळुम्⋆ वरुत्तित्त⋆ माय प्पिरानै अन्रि⋆ आरे तिरुत्ति⋆ त्तिण् निलै मूवुलगुम्⋆ तम्मुळ् इरुत्ति⋆ क्काक्कुम् इयल्विनारे॥८॥	अपनी ईच्छा से आपने देवों एवं सब चीजों का निर्माण किया। आप तीन लोक को धारण करते हैं, उनकी रक्षा करते हैं, तथा अपने जैसा उन्हें शाश्वत बनाये हुये हैं। हमारे आश्चर्यमय प्रभु के अतिरिक्त कौन यह कर सकता है ? **3027**
काक्कुम् इयल्विनन्⋆ कण्ण पॅरुमान्⋆ शेरक्कै शॅय्दु⋆ तन् उन्दियुळ्ळे⋆ वाय्त्त तिशैमुगन्⋆ इन्दिरन् वानवर्⋆ आक्किनान्⋆ दॅय्व उलगुगळे॥९॥	आपने ब्रह्मांड में अपने को मिलाकर विलीन कर दिया। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को आपने नाभिकमल से बनाया। आपने इन्द्र देवगन तथा सब लोक को बनाया। आप सर्वरक्षक हमारे प्रभु कृष्ण हैं।**3028**
कळ्वा एम्मैयुम्⋆ एळ् उलगुम्⋆ निन् उळ्ळे तोट्रिय⋆ इरैव ! एन्रु⋆ वॅळ्ळेरन् नान्मुगन्⋆ इन्दिरन् वानवर्⋆ पुळ्ळूर्ति⋆ कळल् पणिन्देत्तुवरे॥१०॥	वृषभारोही शिव, चतुर्मुख ब्रह्मा इन्द्र एवं अन्य सब देवगन पक्षी की सवारी करने वाले प्रभु की ओर देखते हैं तथा उनके चरण की पूजा करते हैं एवं कहते हैं 'कीड़ा करने वाले प्रभु ! आपने सात लोक बनाये एवं हमलोग सब आप में ही दिखते हैं।' **3029**
‡एत्त एळ् उलगुम् कॉण्ड⋆ कोल कूत्तनै⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन् शॉल्⋆ वाय्त्त आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुडन्⋆ एत्त वल्लवरक्कु⋆ इल्लैयोर् ऊनमे॥११।	धरा को धारण करने वाले नर्तक प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक कुरूगुर शठगोपन के शब्दों में हैं।जो भक्ति से इसका पाठ करेंगे वे ईच्छा विहीन हो जायेंगे। **3030** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

13 ऊनिल् वाळ् (3031 - 3041)

अडियार कुळात्तै क्कूडुम् आशैयुट्र उरैत्तल्

( )

</td></tr>
<tr><td>ऊनिल् वाळ् उयिरे॰ नल्लै पो उन्नै प्पॆट्रु॰
वान् उळार् पॆरुमान्॰ मदुशूदन् एन् अम्मान्॰
तानुम् यानुम् एल्लाम्॰ तन्नुळ्ळे कलन्दॊळिन्दोम्॰
तेनुम् पालुम् नॆय्युम्॰ कन्नलुम् अमुदुम् ऒत्ते॥१॥</td><td>इस शरीर में बसने वाले प्राण ! अच्छा है तुम्हारे लिये। तुम्हारे कारण हम अपने प्रभु मधुसूदन में विलीन हो गये हैं जैसे दूध में मधु गन्ना का रस एवं घी। 3031</td></tr>
<tr><td>ऒत्तार् मिक्कारै॰ इलैयाय मा माया॰
ऒत्ताय्॰ एप्पॊरुट्कुम् उयिराय्॰ एन्नै प्पॆट्र
अ त्ताय् तन्दैयाय्॰ अरियादन अरिवित्त॰
अत्ता नी शॆय्दन॰ अडियेन् अरियेने॥२॥</td><td>महान आश्चर्यमय प्रभु ! न तो कोई आपके समान है और न कोई आपसे अच्छा है।सभी वस्तुओं एवं प्राणियों से आप ही हमारे नजदीकी हैं। आप हमारे माता पिता एवं मित्र हैं। आप हमें वे सब पढ़ाते हैं जो हम नहीं जानते हैं।आपने कितना हमारे लिये किया है हम कभी नहीं जान पायेंगे।3032</td></tr>
<tr><td>अरिया क्कालत्तुळ्ळे॰ अडिमैक्कण् अन्बु शॆय्वित्तु॰
अरिया मा मायत्तु॰ अडियेनै वैत्तायाल्॰
अरियामै क्कुरळाय्॰ निलम् मावलि मूवडि एन्रु॰
अरियामै वञ्जित्ताय्॰ एनदावियुळ् कलन्दे॥३॥</td><td>हमारी अज्ञानता की अवधि माया के भ्रम में पड़ी हुई थी। आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये एवं भक्ति के लिये प्रेम का अंकुरारोपण किया। सरल चित्त शिशु की तरह आपने आकर पूछा 'महान बली ! तीन पग भूमि' एवं उसके साथ छल किया। 3033</td></tr>
<tr><td>एनदावियुळ् कलन्द॰ पॆरु नल्लुदवि क्कैम्मारु॰
एनदावि तन्दॊळिन्देन्॰ इनि मीळ्वदॆन्वदुण्डे॰
एनदावि आवियुम् नी॰ पॊळिल् एळुम् उण्ड एन्दाय्॰
एनदावियार् यान् आर्॰ तन्द नी कॊण्डाक्किनैये॥४॥</td><td>हम पर महान कृपा कर आपने हमें अपने में मिला लिया एवं इसकी कृतज्ञता में हमने अपना हृदय आपको दे दिया। अब कैसे कभी इसे हम पुनः वापस पा सकेंगे ? सात लोक को निगलने वाले प्रभु ! आप हमारे हृदय में आत्मा हैं। मैं कौन हूं ? मेरा क्या है ? आपने दिया एवं जो आपका था उसे ले लिया। 3034</td></tr>
</table>

इनियार् ञानङ्गळाल्* ऎडुक्कल् ऎळाद ऎन्दाय्* कनिवार् वीट्टिन्बमे* ऎन् कडल् पडा अमुदे* तनियेन् वाऴ् मुदले* पॊऴिल् ऎऴुम् ऎनम् ऒन्ऱाय्* नुनियार् कोट्टिल् वैत्ताय्* उन् पादम् शेर्न्देने॥५॥	बुद्धि के परे, मधुर मुक्ति, अमृत, सागर से अछूते रहकर दयालु हृदय वालों के लिये आप सूकर रूप में आये एवं दाढ़ों पर धरा को उठा लिया। **3035**
शेर्न्दार् तीविनैगट्कु* अरु नञ्जै त्तिण् मदियै* तीर्न्दार् तम् मनत्तु* प्पिरियादवर् उयिरै* शोर्न्दे पोगल् कॊडा च्चुडरै* अरक्कियै मूक्कु ईर्न्दायै* अडियेन् अडैन्देन्* मुदल् मुन्नमे॥६॥	कर्म के लिये असाधारण औषध ! भक्ति की औषध ! ऋषियों के हृदय से अलग नहीं होने वाले ! ज्योति जो उनकी आत्मा को प्रकाशित करती है ! मैंने प्रभु को बहुत पहले पा लिया था। आपने शूर्पनखा की नाक काटी है। **3036**
मुन्नल् याऴ् पयिल् नूल्* नरम्बिन् मुदिर् शुवैये* पन्नलार् पयिलुम्* परने पवित्तिरने* कन्नले अमुदे* कार् मुगिले ऎन् कण्णा* निन्नलाल् इलेन्गाण्* ऎन्नै नी कुऱिक्कॊळ्ळे॥७॥	वाद्य यंत्र की ध्वनि, ऋषियों को प्राप्त शुद्ध आनन्द, गन्ना के रस, अमृत, श्यामल प्रभु ! हमारे कृष्ण ! आपके बिना हम कुछ नहीं हैं। विनती है, आप हमें अपनी आवश्यकता के लिये उपयोग में लायें। **3037**
कुऱिक्कॊळ् ञानङ्गळाल्* ऎनै ऊऴि शॆय् तवमुम्* किऱिक्कॊण्डि प्पिऱप्पे* शिल नाळिल् ऎय्दिनन् यान्* उऱिक्कॊण्ड वॆण्णॆय् पाल्* ऒळित्तुण्णुम् अम्मान् पिन्* नॆऱिक्कॊण्ड नॆञ्जनाय्* पिऱवि त्तुयर् कडिन्दे॥८॥	युगों तक इन्द्रियों को संयमित रखते हुए जो तपस्या से प्राप्त होता है हम कुछ ही दिनों में बच्चों का खेल की तरह पा गये। जीवन की यातना को पार करते हुए, रस्सी के छींके पर रखे दूध एवं मक्खन चुराने वाले प्रभु के, हम प्रेमी हो गये हैं। **3038**
कडि वार् तण्णन् तुऴाय्* कण्णन् विण्णवर् पॆरुमान्* पडि वानम् इऱन्द* परमन् पवित्तिरन् शीर्* शॆडियार् नोय्गाळ् कॆड* प्पडिन्दु कुडैन्दाडि* अडियेन् वाय्मडुत्तु* प्परुगि क्कळित्तेने॥९॥	महान एवं शुद्ध, हमारे कृष्ण स्वर्गिकों के एक मात्र प्रभु हैं। आप अमृतमयी शीतल तुलसी धारण करते हैं। आपके भलेपन के सागर में गहरे डुबकी लगाकर हमने छक कर पिया एवं आनन्द मनाया तथा अपने कर्मों को घास की तरह निकाल दिया। **3039**
कळिप्पुम् कवर्वुम् अट्ऱु* प्पिऱप्पु प्पिणि मूप्पिऱप्पट्ऱु* ऒळि क्कॊण्ड शोदियुमाय्* उडन् कूडुवदॆन्ऱु कॊलो* तुळिक्किन्ऱ वान् इन्निलम्* शुडर् आऴि शङ्गेन्दि* अळिक्किन्ऱ माय प्पिरान्* अडियार्गळ् कुऴाङ्गळैये॥१०॥	आप आभापूर्ण ज्योतिपुंज हैं। धरा एवं गगन आपका है। आप तेजोमय शंख एवं चक्र धारण करके हमारी रक्षा करते हैं। आनंद, दुःख, एवं चार तरह के दुर्गुण प्रस्थान कर गये हैं। कब हम आपके भक्तों की पंक्ति में बैठेंगे ? **3040**

‡कुळाङ्गॊळ् पेर् अरक्कन्⋆ कुलम् वीय मुनिन्दवनै⋆ कुळाङ्गॊळ् तॆन् कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् तॆरिन्दुरैत्त⋆ कुळाङ्गॊळ् आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुम् उडन् पाडि⋆ कुळाङ्गळाय् अडियीर् उडन्⋆ कूडि निन्राडुमिने॥११॥	कुरूगुर शडगोपन से सुविरचित मधुर हजार पद का यह दशक लंका का गुस्सा से नाश करने वाले प्रभु के बारे में भावनापूर्ण शब्दों में बोले गये हैं। भक्तों, पंक्ति में आंख मिला कर बैठो, एवं हमारे साथ गाओ तथा नाचो। **3041** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

14 आडियाडि (3042 - 3052)

तलिवियन् आट्रामै कण्ड ताय् तलिवने नोक्कि क्कूरल्

नायिकी भाव में ः मां अपने बेटी के लिये चिंतित

‡आडियाडि⋆ अगम् करैन्दु⋆ इशै पाडि प्पाडि⋆ क्कण्णीर् मल्गि⋆ एङ्गुम् नाडि नाडि⋆ नरशिङ्गा ! एन्रु⋆ वाडि वाडुम्⋆ इव्वाळ् नुदले॥१॥	लगातार गाती एवं नाचती चमकते ललाट वाली यह किशोरी बोलती है 'नरसिंह' एवं चारो तरफ देखती है। आंसू बहाते हुए अचेत हो जाती है। **3042**
वाळ् नुदल्⋆ इम्मडवरल्⋆ उम्मै काणुम् आशैयुळ्⋆ नैगिन्राळ्⋆ विरल् वाणन्⋆ आयिरम् तोळ् तुणित्तीर्⋆ उम्मै काण⋆ नीर् इरक्कम् इलीरे॥२॥	आपके दर्शन की इच्छा से यह मेधावी किशोरी अचेत हो जा रही है। बाणा के बाहों को नष्ट करने वाले प्रभु ! ओह ! आप सच में हृदयहीन हैं। **3043**
इरक्क मनत्तोडु⋆ एरियणै⋆ अरक्कुम् मेंळुगुम्⋆ ऑक्कुम् इवळ्⋆ इरक्कम् एळीर्⋆ इदर्कैन् शेय्गेन्⋆ अरक्कन् इलङ्गै⋆ शेंट्रीरुक्के॥३॥	आप के लिये यह आग में मोम की तरह पिघल रही है। राक्षसों के गढ़ लंका का नाश करने वाले प्रभु ! आप अपनी दया को जागृत नहीं होने दे रहे हैं। हाय ! मैं क्या कर सकती हूं ? **3044**
इलङ्गै शेंट्रवने एन्नुम्⋆ पिन्नुम् वलङ्गोंळ्⋆ पुळ्ळुयर्त्ताय् एन्नुम्⋆ उळ्ळम् मलङ्ग⋆ वेंव्वुयिर्क्कुम्⋆ कण्णीर् मिग कलङ्गि⋆ क्कैदोंळुम् निन्रिवळे॥४॥	इसकी सांस गर्म है, हृदय वेदनाग्रस्त है, आंसू के साथ हाथ जोड़ कर यह पुकारती है 'लंका के नष्टकर्ता', फिर धीरे से कहती है 'पक्षी की सवारी वाले'। **3045**
इवळ् इराप्पगल्⋆ वाय्वेरी इ⋆ तन कुवळैयोंण्⋆ कण्ण नीर् कोंण्डाळ्⋆ वण्डु तिवळुम्⋆ तण्णन् तुळाय् कोंडीर्⋆ एन तवळ वण्णर्⋆ तगवुगळे॥५॥	रात दिन उन्मत्त की तरह बड़बड़ाती है। इसकी सुन्दर आंखें आंसू से भरी हैं। आप इसे अपनी तुलसी नहीं देते। हे महान प्रभु ! यह तो आपकी करूणा है ! **3046**

तगवुडैयवने एन्नुम्⋆ पिन्नुम् मिग विरुम्पुम्⋆ पिरान् एन्नुम्⋆ एन– दगवुयिरक्कु⋆ अमुदे एन्नुम्⋆ उळ्ळम् उगवुरुगि⋆ निन्रुळ्ळुळे॥६॥	'हे ! करूणानिधान' पुकारती है, फिर धीरे से कहती है 'सर्वप्रिय प्रभु'। उसांसों के साथ 'हे ! मेरे आत्मामृत' कहती खड़ी होकर अश्रुमय हो जाती है। **3047**
उळ्ळुळ् आवि⋆ उलरन्दुलरन्दु⋆ एन् वळ्ळले⋆ कण्णने एन्नुम्⋆ पिन्नुम् वॆळ्ळ नीर्⋆ क्किडन्दाय् एन्नुम्⋆ एन् कळ्वि तान्⋆ पट्ट वञ्जनैये॥७॥	इसका हृदय सूख गया है, इसकी आत्मा शुष्क हो गयी है।पुकारती है 'आंख की तरह प्रिय प्रभु !' फिर 'सागरशायी प्रभु'। हाय ! हमारी प्यारी कितनी छली गयी है! **3048**
वञ्जने एन्नुम्⋆ कै तॊळुम्⋆ तन नॆञ्जम् वेव⋆ नॆडिदुयिरक्कुम्⋆ विरल् कञ्जनै⋆ वञ्जनै शॆय्दीर्⋆ उम्मै तञ्जम् एन्रु⋆ इवळ् पट्टनवे॥८॥	'हे छलिया ! ' पुकारती है एवं फिर हाथ जोड़ लेती है। गर्म उसांसे लेती है तथा भारी मन से चिल्लाती है 'शक्तिशाली कंश के नाश करने वाले !' हाय ! आपके दर्शन के लिये कितना वेदनाग्रस्त है ! **3049**
पट्ट पोदु⋆ एळु पोदरियाळ्⋆ विरै मट्टलर्⋆ तण् तुळाय् एन्नुम्⋆ शुडर् वट्ट वाय्⋆ नुदि नेमियीर्⋆ नुम– दिट्टम् एन्गॊल्⋆ इव्वेळैक्के॥९॥	रात या दिन कब होता है यह नहीं जानती। कहती है 'ओस वाली तुलसी'। हे शक्तिशाली तेजोमय चक्र वाले प्रभु ! क्या होगा इसका ? **3050**
एळै पेदै⋆ इरा प्पगल्⋆ तन केळिल् ऒण्⋆ कण्ण नीर् कॊण्डाळ्⋆ वाळ्वै वेव⋆ इलङ्गै शॆट्टीर्⋆ इवळ् माळै नोक्कॊन्रुम्⋆ वाट्टन्मिने॥१०॥	यह बेचारी किशोरी रात दिन अश्रुपूरित आंखों से खड़ी रहती है।लंका के अपार धन को नष्ट करने वाले प्रभु ! कम से कम इस पर एक बार करूणा दृष्टि तो डाल दीजिये। **3051**
वाट्टमिल् पुगळ्⋆ वामननै⋆ इशै कूट्टि⋆ वण् शडगोपन् शॊल्⋆ अमै पाट्टु⋆ ओर् आयिरत्ति प्पत्ताल्⋆ अडि शूट्टलागुम्⋆ अन्दाममे॥११॥	उदार शडगोपन से गाये हुए हजार पद का यह दशक शाश्वत वामन प्रभु के चरणों की सुयोग्य माला है। **3052** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

15 अन्दामत्तन्बु (3053-3063)

इ़रैवन् आबरणादिगळुडन् वन्दु कलक्क आळवार मगिऴदल्

‡अन्दामत्तन्बु शॅय्दु⋆ एन्नावि शेर् अम्मानुक्कु⋆ अन्दाम वाळ् मुडि शङ्गु⋆ आळि नूल् आरम् उळ⋆ शॅन् तामरै त्तडम् कण्⋆ शॅङ्गनि वाय् शॅङ्गमलम्⋆ शॅन् तामरै अडिगळ्⋆ शॅम् पॅान् तिरुवुडम्पे॥१॥	हमारे प्रभु माला, मुकुट, शंख एवं चक्र, यज्ञोपवीत एवं हार धारण करते हैं। सुन्दर स्थान पर आपने हमसे प्रेम किया एवं हमारे प्राण में मिल गये। आपकी बड़ी आंखें कमल की पंखुड़ी की तरह है आपका मूंगा की तरह होंठ कमल फूल जैसी हैं आपका शरीर लाल सुवर्ण की तरह दीप्तमान है। **3053**
तिरुवुडम्बु वान् शुडर्⋆ शॅन् तामरै कण् कै कमलम्⋆ तिरुविडमे मार्वम्⋆ अयन् इडमे कॅाप्पूळ्⋆ ऑरुविडमुम्⋆ एन्दै पॅरुमार्करनेयो⋆ ऑरुविडम् ऑन्ऱिन्ऱि⋆ एन्नुळ् कलन्दानुक्के॥२॥	कोई भी स्थान ऐसा नहीं था जो आपने स्पर्श न किया हो, इस तरह से आपने प्रेम किया। आपका वदन आभापूर्ण है एवं पद्म लक्ष्मी आपके वक्ष पर रहती है। ब्रह्मा नाभि कमल पर बैठते हैं तथा शिव भी एक कोने में रहते हैं। आपकी आंखें लाल कमल की तरह हैं एवं हाथ कमल फूल जैसे हैं। **3054**
एन्नुळ् कलन्दवन्⋆ शॅङ्गनि वाय् शॅङ्गमलम्⋆ मिन्नुम् शुडर् मलैक्कु⋆ कण् पादम् कै कमलम्⋆ मन्नु मुळुवेळ् उलगुम्⋆ वयिट्रिनुळ⋆ तन्नुळ् कलवाददु⋆ एप्पॅारुळुम् तान् इलैये॥३॥	हमसे प्रेम करने वाले प्रभु का रूवरूप एक ज्योतिर्मय पर्वत की तरह है। आपका मूंगावत होंठ, लाल आंख,हाथ एवं चरण कमल की तरह हैं। सभी सात लोक आपके स्वरूप में समाहित हैं एवं इसके बाहर एक भी चीज नहीं है। **3055**
एप्पॅारुळुम् तानाय्⋆ मरगद क्कुन्ऱम् ऑक्कुम्⋆ अप्पॅाळुदै त्तामरै प्पू⋆ क्कण् पादम् कै कमलम्⋆ एप्पॅाळुदुम् नाळ् तिङ्गळ्⋆ आण्डूळि ऊळिदॅारुम्⋆ अप्पॅाळुदैक्कप्पॅाळुदु⋆ एन् आरावमुदमे॥४॥	प्रभु स्वयं सबकुछ हैं आपका स्वरूप एक वृहत मणि की तरह है। आपकी आंख चरण हाथ नूतन प्रस्फुटित कमल की तरह हैं। हमारे हमेशा अतृप्त रखने वाले अमृत, हर क्षण हर दिन हर मास हए वर्ष हर युग एवं युग युगांतर से नूतन फल के ताजे रस की तरह बहते रहते हैं। **3056**
आरावमुदमाय्⋆ अल्लावियुळ् कलन्द⋆ कारार् करुमुगिल् पोल्⋆ एन्नम्मान् कण्णनुक्कु⋆ नेरा वाय् शॅम् पवळम्⋆ कण् पादम् कै कमलम्⋆ पेर् आर नीळ् मुडि नाण्⋆ पिन्नुम् इ़ळै पल्वे॥५॥	हमारे श्याम मणि के समान कृष्ण, अमृत समान लंबी माला, प्रदीप्त ऊंचा मुकुट, जनेऊ एवं अनेकों सुन्दर आभूषण धारण करते हैं। हमारे जैसे तुच्छ से आपने प्रेम किया। लाल मूंगा आपके होंठ की बराबरी नहीं कर सकता और न तो कमल ही आपकी आंख हाथ एवं पैर की छटा को चुरा सकता है। **3057**

पल्पल्वे आबरणम्⋆ पेरुम् पल्पल्वे⋆ पल्पल्वे शोदि⋆ वडिवु पण्बॆण्णिल⋆ पल्पल कण्डुण्डु⋆ केट्टुट्टुमोन्दिन्बम्⋆ पल्पल्वे ञानमुम्⋆ पाम्पणै मेलार्केयो॥६॥	हमारे प्रभु शेषशायी हैं। चलें हम आपकी रीति की गिनती करें ः आपके अनेक आभूषण हैं, आपके अनेक नाम हैं, आपके अनेक छटापूर्ण स्वरूप हैं, उनकी संवेदनायें भी अनेक हैं। देखने खाने स्पर्श करने सुनने एवं सुंघने से आप हमें आनंद प्रदान करते हैं। **3058**
पाम्पणैमेल् पार्कडलुळ्⋆ पळ्ळि अमर्न्ददुवुम्⋆ काम्पणै तोळ् पिन्नैक्का⋆ एरुडन् एळ् शॆट्रदुवुम्⋆ तेम् पणैय शोलै⋆ मरामरम् एळ् एय्ददुवुम्⋆ पूम् पिणैय तण् तुळाय्⋆ पॊन् मुडियुम् पोर् एरे॥७॥	गुस्सैल वृषभ ! शीतल प्रस्फुटित तुलसी की माला वाले प्रभु मुकुट धारण करते हैं। आप फनधारी शेष पर क्षीर सागर में शयन करते हैं।बांस सी सुघड़ बाहों वाली नप्पिनाय को जीतने के लिये आपने सात वृषभों का अंत किया। आपने ओस टपकते सात वृक्षों को सीता के प्रेम के कारण वेध डाला। **3059**
पॊन् मुडियम् पोर् एट्रै⋆ एम्मानै नाल् तडम् तोळ्⋆ तन् मुडिवॊन्रिल्लाद⋆ तन् तुळाय् मालैयनै⋆ एन् मुडिवु काणादे⋆ एन्नुळ् कलन्दानै⋆ शॊल् मुडिवु काणेन् नान्⋆ शॊल्लुवदॆन् शॊल्लीरे॥८॥	गुस्सैल वृषभ हमारे प्रभु अपने सुवर्ण मुकुट पर तुलसी की माला धारण करते हैं। आपके चार सुन्दर बांहें हैं एवं अनगिनत सदगुण हैं। हमारी नीचता को विस्मृत कर आपने हमसे प्रेम किया।आपके वर्णन के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं। बताओ, हम क्या बोलें ? **3060**
शॊल्लीर् एन्नम्मानै⋆ एन्नावि आविदनै⋆ एल्लैयिल् शीर्⋆ एन् करुमाणिक्क च्चुडरै⋆ नल्लवमुदम्⋆ पॆर्करिय वीडुमाय्⋆ अल्लि मलर् विरैयॊत्तु⋆ आण् अल्लन् पॆण् अल्लने॥९।	अनंत श्रेय वाले हमारे अमृत! आप मुक्ति के अनोखा आनंद हैं तथा सुगंधित कमल के समान मृदु हैं।श्याम मणि की छटा वाले प्रभु हमारी आत्मा के आरामगाह, न नर हैं न मादा हैं। अहा ! कैसे हम आपके बारे में बोलें ? **3061**
आण् अल्लन् पॆण् अल्लन्⋆ अल्ला अलियुम् अल्लन्⋆ काणलुम् आगान्⋆ उळन् अल्लन् इल्लै अल्लन्⋆ पेणुङ्गाल् पेणुम्⋆ उरुवागुम् अल्लनुमाम्⋆ कोणै पॆरिदुडैत्तु⋆ एम् पॆम्मानै क्कूरुदले॥१०॥	प्रभु न नर हैं न मादा हैं और न नपुंसक हैं। प्रभु देखे नहीं जा सकते । आपकी स्थिति नहीं है, ऐसा भी नहीं है। आप वही स्वरूप धारण कर लेते हैं जिसमें आपको देखना चाहते हैं परंतु मात्र वही स्वरूप नहीं हैं। प्रभु का वर्णन एक अनोखी पहेली है। **3062**

‡कूऱुदल् ऑन्ऱारा⋆ क्कुड क्कूत्त अम्मानै⋆ क्कूऱुदले मेवि⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ कूऱिन अन्दादि⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ कूऱुदल् वल्लार् उळरेल्⋆ कूडुवर् वैगुन्दमे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन से विरचित पूर्ण अन्दादि हजार पद का यह दशक गोपाल प्रभु की प्रशस्ति है जो वर्णनातीत हैं एवं पात्रों के साथ नृत्य करने वाले हैं। जो इसे याद कर लेंगे उन्हें वैकुंठ मिल जायेगा। **3063** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

16 वैगुन्दा (3064 - 3074)

आळवार ईरैवने च्चिक्केन प्पिडित्तल्

वैगुन्दा मणिवण्णने॰ एन् पॉल्ला त्तिरुक्कुरळा एन्नुळ् मन्नि॰ वैगुम् वैगल् तोरुम्॰ अमुदाय वान् एरे॰ शॅय् कुन्दा अरुम् तीमै॰ उन् अडियार्क्कुत्तीर्त्तु॰ अशुरर्क्कु तीमैगळ् शॅय् कुन्दा॰ उन्नै नान् पिडित्तेन् कोळ् शिक्कॅनवे॥१॥	मणि समान रंग वाले वैकुंठ प्रभु ! मेरे शरारत पूर्ण सुन्दर वामन ! सब समय में सर्वदा हमारे भीतर सुख से रहने वाले शाश्वत प्रभु ! भक्तों को राहत एवं असुरों को यातना देने वाले हे प्रस्फुटित कुन्द ! यह जान लीजिये कि हमने दृढ़ता से आपको अपने में रख लिया है। **3064**
शिक्कॅन च्चिरिदोर् इडमुम्॰ पुरप्पडा त्तन्नुळ्ळे॰ उलगुगळ् ऑक्कवे विळुङ्गि॰ प्पुगुन्दान् पुगुन्ददर्पिन्॰ मिक्क ज्ञान वेळ्ळ च्चुडर् विळक्काय्॰ तुळक्कट्रमुदमाय्॰ एङ्गुम् पक्कम् नोक्करियान्॰ एन् पैन् तामरै क्कण्णने॥२॥	क्षण भर में सबको निगलजाने वाले राजीवनयन प्रभु ! समस्त विश्व को अपने में समाहित करने वाले हमारे भीतर प्रवेश कर गये हैं। प्रदीप्त ज्ञान के स्थिर प्रकाश शिखा आप हमारे भीतर बंद हमारे अमृत हैं। **3065**
तामरै क्कण्णनै॰ विण्णोर् परवुम् तलैमगनै॰ तुळाय् विरै प्पू मरुवु कण्णि॰ एम् पिरानै प्पॉन्मलैयै॰ ना मरुवि नन्नोत्ति॰ उळ्ळि वणङ्गि नाम् मगिळ्न्दाड॰ नावलर् पा मरुवि निर्क तन्द॰ पान्मैयेय् वळ्ळले॥३॥	हमारे राजीवनयन प्रभु जो मृदु सुगंध की तुलसी फूल यानी तुलसी मंजर की माला पहनते हैं स्वर्गिकों से प्रशंसित सुवर्ण के पर्वत हैं। प्रशस्ति से हम आप तक पहुंच सकते हैं तथा गीत से आपकी पूजा कर सकते हैं। आप हमलोगों को ध्यान करके आनंद से नाचने देते हैं। आप कितने उदार हैं ! **3066**
वळ्ळले मदुशूदना॰ एन् मरदग मलैये॰ उनै निनै- न्दॅळ्गाल् तन्द एन्दाय्॰ उन्नै एङ्ङनम् विडुगेन्॰ वॅळ्ळमे पुरै निन् पुगळ् कुडैन्दाडि प्पाडि॰ कळित्तुगन्दुगन्दु॰ उळ्ळ नोय्गळ् एल्लाम् तुरन्दु॰ उयन्दु पोन्दिरुन्दे॥४॥	हमारे उदार प्रभु ! हमारे पिता ! हे पन्ना के पर्वत ! आपको सोच कर हम गाते हैं एवं आनन्द में नाचते हैं। आपकी धवल गौरव गाथा हमारे रोग को दूर कर दिया है। अब जब हमारी रक्षा हो गयी है हम कैसे आपको कभी भी जाने देंगे ? **3067**
उयन्दु पोन्दॅन् उलप्पिलाद॰ वॅन्दी विनैगळै नाशम् शॅय्दु॰ उन दन्दम् इल् अडिमै॰ अडैन्देन् विडुवेनो॰ ऐन्दु पैन्दलै आड अरवणै मेवि॰ प्पार्कडल् योग नित्तिरै॰ शिन्दै शॅय्द एन्दाय्॰ उन्नै च्चिन्दै शॅय्दु शॅय्दे॥५॥	क्षीर सागर में फनवाले शेष पर सोने वाले प्रभु योगनिद्रा में रहते हैं। निरंतर आपको सोचकर हमने युगों के कर्म को नष्ट कर दिया है एवं अपने आपको बचा लिया है। अब जबकि हम आपकी सेवा में हैं कभी भी आपको जाने देंगे ? **3068**

उन्नै च्चिन्दै शेय्दु शेय्दु* उन् नेडु मा मोळि इशै पाडि आडि* एन् मुन्नै त्तीविनैगळ्* मुळु वेर् अरिन्दनन् यान्* उन्नै च्चिन्दैयिनाल् इगळ्न्द* इरणियन् अगल् मार्वम् कीण्ड* एन् मुन्नै क्कोळरिये* मुडियादर्देन् एनक्के॥६॥	हे हमारे स्फूर्त नरसिंह ! आपने दुष्ट विचार वाले हिरण्य की भारी छाती चीर कर अलग कर दी। आपकी प्रशस्ति करते हुए मैने अपनी ऊंची अवस्था वाला गीत गाकर इसके साथ नृत्य किया। अब हमारे युगपुराने कर्म जड़ से नष्ट हो गये हैं। मैं क्या नहीं कर सकता हूं ? **3069**
मुडियादर्देन् एनक्केल् इनि* मुळुवेळ् उलगुम् उण्डान्* उगन्दु वन्दु अडियेन् उळ् पुगुन्दान्* अगल्वानुम् अल्लन् इनि* शेडियार् नोय्गळ् एल्लाम् तुरन्दु* एमर् कीळ् मेल् एळु पिरप्पुम्* विडिया वेन्नरगत्तेन्रुम्* शेर्दल् मारिनरे॥७॥	हमारे नियंत्रण के बाहर कौन सी चीज है ? सात लोक को निगलने वाले प्रभु प्रसन्नचित्त हमारे नीच हृदय में प्रवेश किये और अब छोड़कर नहीं जाते। हमारे सारे संबंधी सात जन्म पीछे एवं सात जन्म आगे अंतहीन नरक की यातना से बच गये हैं। **3070**
मारि मारि प्पल पिरप्पुम् पिरन्दु* अडियै अडैन्दुळ्ळम् तेरि* ईरिल् इन्ब त्तिरु वेळ्ळम्* यान् मूळ्गिनन्* पारि प्पारि अशुरर् तम्* पल् कुळाङ्गळ् नीर् एळ* पाय् परवैयोन्रु एरि वीट्रिरुन्दाय्* उन्नै एन्नुळ् नीक्केल् एन्दाय्॥८॥	असुरों को खदेड़ते हुए गरूड़ की सवारी से धूल का बादल बनाने वाले प्रभु ! जन्म एवं मरण की अनगिनत आवृति से हम आपके चरणकमल प्राप्त किये हैं। मेरा हृदय अब आश्वस्त है एवं आनंद की अंतहीन बाढ़ में नहाया है। विनती है, हमसे अलग नहीं होंगे। **3071**
एन्दाय्! तण् तिरुवेङ्गडत्तुळ् निन्राय्* इलङ्गै शेट्राय्* मरामरम् पैन्दाळ् एळ् उरुव* ओरु वाळि कोत्त विल्ला* कोन्दार् तण्णन् तुळायिनाय् अमुदे* उन्नै एन्नुळ्ळे कुळैत्त एम् मैन्दा* वान् एरे* इनि एङ्गु प्पोगिन्रदे॥९॥	शीतल वेंकटम पर्वत पर खड़े हमारे प्रभु लंका को नष्ट करने वाले हैं। आप ने एक महान बाण से सात वृक्षों का मूलोच्छेदन कर दिया। हमारे प्रभु स्वर्गिकों के नाथ हैं, हमारे अमृत हैं, एवं शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। हमारे राजकुमार ! आप हममें मिल गये हैं अब कैसे जायेंगे ? **3072**
पोगिन्र कालङ्गळ् पोय कालङ्गळ्* पोगु कालङ्गळ्* ताय् तन्दै उयिर् आगिन्राय्* उन्नै नान् अडैन्देन् विडुवेनो पागिन्र तोल् पुगळ् मूवुलगुक्कुम्* नादने! परमा* तण् वेङ्गडम् मेगिन्राय्* तण् तुळाय् विरै नारु कण्णियने॥१०॥	शाश्वत गौरव के प्रभु तीन लोकों के महान प्रभु हैं। शीतल सुगंधित तुलसी के फूल यानी मंजर वाले प्रभु शीतल वेंकटम के स्वामी हैं। आप हमारा पूर्व वर्तमान एवं भविष्य तथा पिता माता एवं प्राण हैं। अब जबकि हम आपको पा गये हैं क्या कभी आपको जाने देंगे ? **3073**
कण्णि त्तण्णन् तुळाय् मुडि* क्कमल त्तडम् पेरुम् कण्णनै* पुगळ् नण्णि त्तेन् कुरुगूर्* च्चडगोपन् मारन् शोन्न* एण्णिल् शोर्विल् अन्दादि* आयिरत्तुळ् इवैयुम् ओर् पत्तिशैयोडुम्* पण्णिल् पाड वल्लार् अवर्* केशवन् तमरे॥११॥	राजीवनयन सुगंधित माला धारण करने वाले प्रभु की प्रशंसा में दक्षिण कुरूगुर नगर के मारन शडगोपन के ये सुविचारित हजार पद के दशक को जो गायेंगे वे केशव के भक्त हो जायेंगे। **3074** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

17 केशवन् तमर् (3075 - 3087)

पन्निरूनाम् प्पाट्टु

(प्रभु कृष्ण के केशवादि बारह नाम)

<table>
<tr><td>केशवन् तमर्* कीऴ् मेल् ऎमर् एऴ् ऎऴु पिऱप्पुम्*
मा शदिर् इदु पॆट्टु* नम्मुडै वाऴ्वु वाय्क्किन्ऱवा*
ईशन् ऎन् करुमाणिक्कम् ऎन् शॆङ्गोल क्कण्णन्* विण्णोर्
नायगन्* ऎम् पिरान् ऎम्मान्* नारायणनाले॥१॥</td><td>मेरे नाथ एवं प्रभु, स्वर्गिकों के प्रभु, मेरे राजीवनयन कृष्ण, मेरे मणिवर्ण नारायण ! 'केशव' नाम लेने से हमसे सात पीढ़ी आगे एवं सात पीढ़ी पीछे आपके भक्त हो गये हैं। क्या आश्चर्य ! क्या ही उपलब्धि ! **3075**</td></tr>
<tr><td>नारणन् मुऴुवेऴ् उलगुक्कुम्* नादन् वेद मयन्*
कारणम् किरिशै करुमम् इवै* मुदल्वन् ऎन्दै*
शीर् अणङ्गमरर् पिऱर् पलरुम्* तॊऴुदेत्त निन्ऱु*
वारणत्तै मरुप्पॊशित्त पिरान्* ऎन् मादवने॥२॥</td><td>वेदों से प्रशंसित 'नारायण' ही सभी लोक के नाथ हैं। मेरे नाथ ! आप ही कारण, उपलब्धि, एवं कृत्य हैं। लक्ष्मी एवं सभी स्वर्गिक आपकी पूजा करते हैं। हाथी के दांत तोड़ने वाले माधव मेरे प्रभु हैं। **3076**</td></tr>
<tr><td>मादवन् ऎन्ऱदे कॊण्डु* ऎन्नै इनि इप्पाल् पट्टदु*
यादवङ्गळुम् शेर्गॊडेन् ऎन्ऱु* ऎन्नुळ् पुगुन्दिरुन्दु*
तीदवम् कॆडुक्कुम् अमुदम्* शॆन् तामरै क्कण् कुन्ऱम्*
कोदवमिल् ऎन् कन्नल् कट्टि* ऎम्मान् ऎन् गोविन्दने॥३॥</td><td>'माधव' मात्र कहने से ही आप हमारे भीतर प्रवेश कर गये एवं बताया 'अबसे सदा के लिये हम यहीं रहेंगे तथा तुम्हारी रक्षा करेंगे।' पर्वत के रंग के राजीवनयन, मेरे अमृत, मेरे नाथ, एवं मेरे गोविंद सभी अंतहीन कर्म को नाश करने वाले हैं। **3077**</td></tr>
<tr><td>गोविन्दन् कुड क्कूत्तन्* कोवलन् ऎन्ऱॆन्ऱे कुनित्तु*
तेवुम् तन्नैयुम्* पाडि आड त्तिरुत्ति* ऎन्नै क्कॊण्डॆन्
पावम् तन्नैयुम्* पार् क्कैत्तमर् एऴ् ऎऴु पिऱप्पुम्*
मेवुम् तन्मैयम् आक्किनान्* वल्लन् ऎम् पिरान् विट्टुवे॥४॥</td><td>'गोविंद' गोपाल एवं अनेक ऐसे नाम के गाने एवं नृत्य करने से आपने हमें निर्मल करके अपनी सेवा में ले ली। चतुर नाथ विष्णु ने हमें पूर्व के दुष्कर्म से निवृत किया। तब आपने मुझमें संप्रति एवं सात जन्मों से प्रेम उत्पन्न किया। **3078**</td></tr>
<tr><td>विट्टिलङ्गु शॆञ्जोदि* त्तामरै पादम् कैगळ् कण्गळ्*
विट्टिलङ्गु करुञ्शुडर्* मलैये तिरुवुडम्बु*
विट्टिलङ्गु मदियम् शीर्* शङ्गु चक्करम् परिदि*
विट्टिलङ्गु मुडियम्मान्* मदुशूदनन् तनक्के॥५॥</td><td>मेरे 'विष्णु' प्रभु तेजोमय मुकुट पहनते हैं। मधु के शत्रु हमारे प्रभु के चरणारविंद लाल हैं तथा हाथ एवं आंख आभा संपन्न हैं। सुन्दर पर्वत की तरह आपका श्याम स्वरूप आकर्षक है। आपके शंख एवं चक्र चांद एवं सूर्य की तरह प्रदीप्त हैं। **3079**</td></tr>
<tr><td>मदुशूदनै अन्ऱि मट्रिलेन् ऎन्ऱु* ऎत्तालुम् करुमम् इन्ऱि*
तुदि शूऴ्न्द पाडल्गळ् पाडि आड* निन्ऱुऴि ऊऴिदॊरुम्*
ऎदिर् शूऴल् पुक्कॆनैत्तोर् पिऱप्पुम्* ऎनक्के अरुळ्गळ् शॆय्य*
विदि शूऴ्न्ददाल् ऎनक्केल् अम्मान्* तिरिविक्किरमनैये॥६॥</td><td>मैंने कहा 'मधुसूदन' हमारे एकमात्र आधार हैं एवं कृत्य से निवृत हो केवल गान एवं नृत्य से पूजा की। सभी युग के अनेक जन्मों में आपने दर्शन देकर हम पर दया की। त्रिविकम प्रभु से हमें यही आशीष मिला। **3080**</td></tr>
</table>

तिरिविक्किरमन् शॆन् तामरै क्कण्* एम्मान् एन् शॆङ्गनि वाय्* उरुविल् पॊलिन्द वॆळ्ळै प्पळिङ्गु* निऱत्तनन् एन्ऱॆन्ऱु* उळ्ळि प्परवि प्पणिन्दु* पल्लूळि ऊळि निन् पाद पङ्गयमे* मरुवि त्तॊळुम् मनमे तन्दाय्* वल्लैगाण् एन् वामनने॥७॥	‘त्रिविक्रम’ एवं अन्य नाम का उच्चारण करने से हमने अरूणाभ राजीवनयन के मूंगा सा होंठ एवं आभापूर्ण वर्ण की कल्पना की। वामन स्वरूप वाले प्रभु ने हमारे अनगिनत जन्मों से चरणारविंद की सेवा एवं पूजा के लिये हमारे को हृदय को उत्प्रेरित किया। **3081**
वामनन् एन् मरदग वण्णण्* तामरै क्कण्णिनन् कामनै प्पयन्दाय्* एन्ऱॆन्ऱुन् कळल् पाडिये पणिन्दु* तू मनत्तननाय्* प्पिऱवि त्तुळदि नीङ्ग* एन्नै त्ती मनम् कॆडुत्ताय्* उनक्कॆन् शॆय्गेन् एन् शिरीदरने॥८॥	मणिवर्ण के प्रभु एवं काम के जनक ! ‘वामन’ एवं ऐसे अनेक नाम के गान से हमने आपकी पूजा की। आपने हमारे हृदय को निर्मल कर हमें जन्म की यातना से मुक्त की। हे मेरे श्रीधर ! हम आपके लिये क्या कर सकते हैं ? **3082**
शिरीइदरन् शॆय्य तामरै क्कण्णन्* एन्ऱॆन्ऱिरा प्पगल् वाय् वॆरि ई* अलमन्दु कण्गळ् नीर् मल्गि* वॆव्वुयिर्त्तुयिर्त्तु* मरि ईय तीविनै माळ इन्बम् वळर* वैगल् वैगल् इरि ई* उन्नै एन्नुळ् वैत्तनै* एन् इरुडीकेशने॥९॥	आंखों में आंसू एवं गर्म सांस के साथ हमने ‘श्रीधर कमल नयन प्रभु’ एवं ऐसे अनेक नाम से कीर्तन की। हमारे कर्मो के भंडार को समाप्त कर आपने हमें अपने आप को प्राप्त करा दिया। मेरे हृषीकेश ! तब आपने अपने को मेरे हृदय में सर्वदा के लिये स्थित कर दिया। **3083**
इरुडीकेशन् एम् पिरान्* इलङ्गै अरक्कर् कुलम्* मुरुडु तीर्त्त पिरान् एम्मान्* अमरर् पॆम्मान् एन्ऱॆन्ऱु* तॆरुडियागिल् नॆञ्जे वणङ्गु* तिण्णम् अऱि अऱिन्दु* मरुडियेलुम् विडेल् कण्डाय्* नम्बि पर्पनाबनैये॥१०॥	हे हृदय ! सुबुद्धि से रह। सीखकर आपकी पूजा ठीक से करो। हृषीकेश का कीर्तन करो ‘राक्षसों के लंका को जलाने वाले प्रभु, मेरे नाथ एवं प्रभु, स्वर्गिकों के नाथ, पद्मनाभ’ एवं ऐसे नामों से।प्रभु नहीं भी देंखें तो कभी कीर्तन बंद नहीं करो। **3084**
पर्पनाबन् उयर्वर् उयरुम्* पॆरुम् तिऱलोन्* एर्परन् एन्नै आक्कि क्कॊण्डु* एनक्के तन्नै त्तन्द कर्पगम्* एन्नमुदम् कार् मुगिल् पोलुम्* वेङ्गड नल् वॆर्पन्* विशुम्बोर् पिरान्* एन्दै दामोदरने॥११॥	अतिमहान पद्मनाभ उच्चतम से भी ऊंचा हैं। आप हमारे कल्पवृक्ष हैं। आपने हमें अपना बनाया तथा अपने को हमारा बना दिया। मेघ जैसे श्याम आप हमारे वेंकटम के अमृत हैं।हमारे प्रभु ‘दामोदर’ ऊंचे स्वर्गिकों के प्रभु हैं। **3085**
दामोदरनै त्तनि मुदल्वनै* ञालम् उण्डवनै* आमो दरम् अऱिय* ऒरुवर्क्कॆन्ऱे तॊळुम् अवर्गळ्* दामोदरन् उरुवागिय* शिवर्कुम् तिशैमुगर्कुम्* आमो दरम् अऱिय* एम्मानै एन् आळि वण्णनैये॥१२॥	जो दामोदर की पूजा करते हैं क्या वे आपकी महानता को जान सकते हैं ? आप जगत के प्रथम कारण तथा इसके निगल जाने वाले हैं। यद्यपि कि ब्रह्मा एवं शिव आपके एक अंश हैं क्या ये लोग भी आपका स्थिर ध्यान करके आपकी महानता को माप सकते हैं ? **3086**

‡वण्ण मा मणि च्चोदियै⋆ अमरर् तलैमगनै⋆ कण्णनै नॆंडुमालै⋆ त्तॆन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ पण्णिय तमिळ् मालै⋆ आयिरत्तुळ् इवै पन्निरण्डुम्⋆ पण्णिल् पन्निरु नाम प्पाट्टु⋆ अण्णल् ताळ् अणैविक्कुमे॥१३॥	कुरूगुर के शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह गीतों के गुच्छा का दशक स्वर्गिकों के प्रभु मणिवर्ण वाले कृष्ण के बारह नामों का यशोगान है। जो इसे गा सकेंगे वे प्रभु के चरणों को पायेंगे। **3087** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

18 अणैवदु (3088 - 3098)

एम्बेरूमानदु वीडळिक्कुम् तन्मै ()

‡अणैवदरवणैमेल्⋆ पूम्पावै आगम् पुणर्वदु⋆ इरुवरवर् मुदलुम् ताने⋆ इणैवनाम्⋆ ए प्पॊरुट्कुम् वीडु मुदलाम्⋆ पुणैवन्⋆ पिऱविक्कडल् नीन्दुवार्क्के॥१॥	सभी वस्तुओं में विराजमान प्रभु पूर्णतया समान पद्मश्री लक्ष्मी के साथ शेष शय्या पर शयन करते हैं। हमारे प्रभु शीतल तुलसी धारण करते हैं, गरूड़ की सवारी करते हैं, एवं शाश्वतों के साथ रहते हैं। **3088**
नीन्दुम् तुयर् प्पिऱवि⋆ उट्पड मट्रॆव्वैयुम्⋆ नीन्दुम् तुयर् इल्ला⋆ वीडु मुदलाम्⋆ पून् तण् पुनल् पॊय्गै⋆ यानै इडर् कडिन्द⋆ पून् तण् तुळाय्⋆ एन् तनि नायगन् पुणर्प्पे॥२॥	शीतल तुलसी फूल यानी मंजर की माला पहनने वाले प्रभु आपदग्रस्त हाथी के रक्षक हैं। आपके साथ विलीन होना ही जन्म एवं अन्य यातना से मुक्ति है। **3089**
पुणर्क्कुम् अयनाम्⋆ अळिक्कुम् अरनाम्⋆ पुणरत्त तन्नुन्दियोडु⋆ आगत्तु मन्नि⋆ पुणरत्त तिरुवागि⋆ त्तन् मार्विल् तान् शेर्⋆ पुणर्प्पन् पॆरुम् पुणर्प्पु⋆ एङ्गुम् पुलने॥३॥	आपके नाभि से उत्पन्न कमल पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा आये एवं तब संहारक शिव आये। लक्ष्मी मर्यादित रूप से आपके वक्ष पर बैठी हैं। आप क्षीर सागर में स्थित हैं। **3090**
पुलन् ऐन्दुमेयुम्⋆ पॊऱि ऐन्दुम् नीक्कि⋆ नलम् अन्दम् इल्लदोर्⋆ नाडु पुगुवीर्⋆ अलमन्दु वीय⋆ अशुरर्रै च्चॆट्रान्⋆ पल मुन्दु शीरिल्⋆ पडिमिन् ओवादे॥४॥	अगर पांच इन्द्रियों के क्षेत्र से बाहर निकलकर अक्षय श्रेय को प्राप्त करना है तो असुर समूह के संहारक प्रभु की गाथा गाना सीखो। **3091**
ओवा त्तुयर् प्पिऱवि⋆ उट्पड मट्रॆव्वैयुम्⋆ मूवा त्तनि मुदलाय्⋆ मूवुलगुम् कावलोन्⋆ मावागि आमैयाय्⋆ मीनागि मानिडमाम्⋆ देवादि देव पॆरुमान्⋆ एन् तीर्त्तने॥५॥	देवों के नाथ पावन प्रभु जन्म की यातना से परे हैं एवं आप कच्छप मत्स्य तथा नर स्वरूप में आये। आप कल्कि की तरह भी आयेंगे। **3092**
तीर्त्तन् उलगळन्द⋆ शेवडिमेल् पून्दामम्⋆ शेर्त्ति अवैये⋆ शिवन् मुडिमेल् तान् कण्डु⋆ पार्त्तन् तॆळिन्दॊळिन्द⋆ पैन् तुळायान् पॆरुमै⋆ पेर्त्तुम् ऒरुवराल्⋆ पेश क्किडन्ददे॥६॥	जब अर्जुन ने प्रभु के चरणों पर फूल अर्पित किया तो उन फूलों को उन्होंने शिव को अपने शिर पर धारण किये देखा। धरा को मापने वाले प्रभु की गाथा हमें अवश्य गानी है । **3093**

किडन्दिरुन्दु निन्ऱळन्दु⋆ केळलाय् क्कीळ् पु– क्किडन्दिडुम्⋆ तन्नुळ् करक्कुम् उमिळुम्⋆ तडम् पॆरुन् तोळ् आर त्तळुवुम्⋆ पार् एन्नुम् मडन्दैयै⋆ माल् शॆय्गिन्ऱ⋆ मालार् काण्बारे॥७॥	शयन, बैठे, एवं खड़े अवस्था वाले प्रभु सूकर रूप में आये एवं आप गहरे जाकर भू देवी को अपने कंधे पर सुरक्षित लाये। आप विश्व को निगल कर पुनः उसे बाहर निकालते हैं। आपकी इस लीला को कौन समझ सकता है ? **3094**
काण्बारार् एम् ईशन्⋆ कण्णनै एन् काणुमाऱु⋆ ऊण् पेशिल् एल्ला⋆ उलगुम् ओर् तुट्राट्रा⋆ शेण् पाल वीडो⋆ उयिरो मट्रॆ प्पॊरुट्कुम्⋆ एण् पालुम् शोरान्⋆ परन्दुळनाम् एङ्गुमे॥८॥	हमारे कृष्ण प्रभु को कौन कैसे समझ सकता है ? आपने संपूर्ण विश्व को एक कौर में निगल लिया। समस्त वस्तुओं एवं प्राणियों तथा आठ दिशाओं में आप सर्वत्र विराजमान हैं, यहां तक कि ऊंचे स्वर्ग में। **3095**
एङ्गुम् उळन् कण्णन् एन्ऱ⋆ मगनै क्कायन्दु⋆ इङ्गिल्लैयाल् एन्ऱु⋆ इरणियन् तूण् पुडैप्प⋆ अङ्गप्पॊळुदे⋆ अवन् वीय त्तोन्ऱिय⋆ एन् शिङ्ग प्पिरान् पॆरुमै⋆ आरायुम् शीमैत्ते॥९॥	जब किशोर युवक ने कहा कृष्ण सर्वत्र हैं तो पिता ने खंभे पर आघात करते हुए बोला 'यहां नहीं'। प्रभु उसी क्षण वहां भयानक नरसिंह रूप में प्रकट हुए एवं राजा का वध किया। क्या आश्चर्य ! **3096**
शीमै कॊळ् वीडु⋆ शुवर्क्कम् नरगीरा⋆ ईमै कॊळ् देवर्⋆ नडुवा मट्रॆ प्पॊरुट्कुम्⋆ वेर् मुदलाय् मुत्ताय्⋆ प्परन्दु तनि निन्ऱ⋆ कार् मुगिल् पोल् वण्णन्⋆ एन् कण्णनै नान् कण्डेने॥१०॥	स्वर्ग नरक एवं पृथ्वी मे व्याप्त सब के मूल एवं कारण आप ही हैं। आप ऊंचे आसन, देवगन, तथा मर्त्यों में व्याप्त हैं। **3097**
कण् तलङ्गळ् शॆय्य⋆ करु मेनि अम्मानै⋆ वण्डलम्बुम् शोलै⋆ वळुदि वळ नाडन्⋆ पण् तलैयिल् शॊन्न तमिळ्⋆ आयिरत्तिप्पत्तुम् वल्लार्⋆ विण् तलैयिल् वीट्रिरुन्दाळ्वर्⋆ एम्मा वीडे॥११॥	मधुमक्खी मंड़राते बागों के वलुद के नायका के हजार गीतों का यह दशक राजीव नयन कृष्ण की गाथा है। जो इसे गा सकेंगे वे धरा एवं स्वर्ग पर शासन करेंगे। **3098** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

19 एम्मावीडु (3099 - 3109)

वेण्डि प्पेरूदल् ईदेनल्

(ा)

</td></tr>
<tr><td>एम्मा वीट्टु⋆ त्तिऱमुम् शॆप्पम्⋆ निन्
शॆम् मा पाद पर्पु⋆ त्तलै शेर्त्तु⋆ ऑल्लै
कैम्मा तुन्बम्⋆ कडिन्द पिराने⋆
अम्मा अडियेन्⋆ वेण्डुवदीदे॥१॥</td><td>प्रभु ! आपने गजेन्द्र की आपदा का अंत किया। हम अपने लिये स्वर्ग नहीं मांगते हैं। शीघ्रता से आप अपने अरूणाभ चरणकमल को हमारे सिर पर रख दीजिये।3099</td></tr>
<tr><td>इदे यान् उन्नै⋆ क्कॊळ्वदॆञ्ञान्ऱुम्⋆ एन्
मै तोय् शोदि⋆ मणिवण्ण एन्दाय्⋆
एय्दा निन् कळल्⋆ यान् एय्द⋆ ञान
कै ता⋆ काल क्कळिवु शॆय्येले॥२॥</td><td>श्याम आभा वाले प्रभु ! हम सर्वदा यही मांगते हैं कि हमें आपके चरणारविंद को पकडे रखने के लिये सम्यक ज्ञान दीजिये। 3100</td></tr>
<tr><td>शॆय्येल् तीविनै एन्ऱु⋆ अरुळ शॆय्युम्⋆ एन्
कैयार् च्चक्कर⋆ क्कण्ण पिराने⋆
ऐयार् कण्डम् अडैक्किलुम्⋆ निन् कळल्
एय्यादेत्त⋆ अरुळ शॆय् एनक्के॥३॥</td><td>चकधारी कृष्ण प्रभु ! आप हमें दुष्ट कर्मो से रक्षा करते हैं। सर्वदा आपके चरण की प्रशस्ति गाने का हमें सौभाग्य प्रदान कीजिये यहां तक कि उस समय भी जब कफ हमारे फेफड़ा को बन्द कर दे। 3101</td></tr>
<tr><td>एनक्के आट्शॆय्⋆ ए क्कालत्तुम् एन्ऱु⋆ एन्
मनक्के वन्दु⋆ इडैवीडिन्ऱि मन्नि⋆
तनक्के आग⋆ एनै क्कॊळ्ळुम् ईदे⋆
एनक्के कण्णनै⋆ यान् कॊळ शिऱप्पे॥४॥</td><td>हमारे हृदय में हमारे प्रभु यह कहते हुए स्थित हैं 'सर्वदा हमारी सेवा करो'। यह हमारे लिये सच में सौभाग्यपूर्ण है कि आपने मुझे अपना बना लिया है। 3102</td></tr>
<tr><td>शिऱप्पिल् वीडु⋆ शुवर्क्कम् नरगम्⋆
इऱप्पिल् एय्दुग⋆ एय्दर्क⋆ यानुम्
पिऱप्पिल्⋆ पल् पिऱवि प्पॆरुमानै⋆
मऱप्पॊन्ऱिन्ऱि⋆ एन्ऱुम् मगिळ्वेने॥५॥</td><td>हमें मुक्ति मिले या नहीं, मरने के पश्चात् हम स्वर्ग जायें या नरक, हम अजन्मा प्रभु को आनंद से स्मरण करेंगे जो धरा पर विभिन्न स्वरूपों में आये। 3103</td></tr>
</table>

मगिळ् कॉळ् दॆय्वम्* उलोगम् अलोगम्* मगिळ् कॉळ् शोदि* मलरन्द अम्माने !* मगिळ् कॉळ् शिन्दै* शॊल् शॆय्गै कॉण्डु* एन्ऱुम् मगिळ्वुट्टु* उन्नै वणङ्ग वाराये॥६॥	स्वर्गिकों मर्त्यों एवं वस्तुओं में धवल प्रस्फुटित आनन्द के रूप में स्थित रहने वाले प्रभु ! आइये जिससे कि हम मन वचन एवं कर्म से आपकी पूजा आनंदचित्त हो करें। **3104**
वाराय्* उन् तिरु प्पाद मलरक्कीळ्* प्पेरादे यान् वन्दु* अडैयुम् पडि तारादाय्* उन्नै एन्नुळ्* वैप्पिल् एन्ऱुम् आरादाय्* एनक्कॆन्ऱुम् एक्काले॥७॥	प्रभु आप हमारे हृदय के लिये अतिशय प्रिय हैं। पर्याप्त रूप से आपने हमें अपने को प्राप्त नहीं कराया है। आइये जिससे कि हम आपके चरणारविंद से दृढ़ता से बंध जायें। **3105**
एक्कालत्तॆन्दैयाय्* एन्नुळ् मन्निल्* मट्टु एक्कालत्तिलुम्* यादॊन्ऱुम् वेण्डेन्* मिक्कार् वेद* विमलर् विळुङ्गुम्* एन् अक्कार क्कनिये* उन्नै याने॥८॥	वैदिक ऋषियों को आनंद देने वाले मधुर फल ! अगर आप हमारे नाथ होकर सदा के लिये हममें विलीन हो जायें तो हम और कुछ नहीं चाहेंगे। **3106**
याने एन्नै* अऱियगिलादे* याने एन् तनदे* एन्ऱिरुन्देन्* याने नी* एन्नुडैमैयुम् नीये* वाने एत्तुम्* एम् वानवर् एऱे॥९॥	अपने वास्तविक स्वरूप को न जानते हुए मैंने सोचा हम स्वयं ही हैं। हे स्वर्गिकों से पूजित तेजोमय प्रभु ! हम एवं हमारा सबकुछ आपका है। **3107**
एऱेल् एळुम्* वॆन्ऱेर् कॉळ् इलङ्गैयै* नीऱे शॆय्द* नॆडुञ्जुडर् च्चोदि* तेऱेल् एन्नै* उन् पॊन्नडि च्चेरत्तु* ऑल्लै वेऱे पोग* एञ्ञान्ऱुम् विडले॥१०॥	सात वृषभों एवं सुन्दर लंका को नाश करने वाले प्रभु ! स्थायी रूप से अपने दिव्य चरणों से हमें जोड़ लीजिये अन्यथा मैं जीवित नहीं रहूंगा। **3108**
‡विडल्लिल् शक्करत्तु* अण्णलै मेवल्* विडल्लिल् वण् कुरुगूर्* च्चडगोपन् शॊल्* कॆडल्लिल् आयिरत्तुळ्* इवै पत्तुम्* कॆडल्लिल् वीडु शॆय्युम्* किळर्वार्क्के॥११॥	कुरूगुर नगर के उत्सुक शडगोपन से विरचित अक्षय हजार पद का यह दशक अजेय चक्रधारी प्रभु की गाथा है जो गाने वाले को मुक्ति प्रदान करता है। **3109** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **20 किळरोळि (3110 - 3120)** **तिरूमालिरूञ्जोलै मलैयै वणङ्गुग एनल्**	
‡किळर् ऑळि इळमै⋆ कॅडुवदन् मुन्नम्⋆ वळर् ऑळि मायोन्⋆ मरुविय कोयिल्⋆ वळर् इळम् पॉळिल् शूळ्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ तळर् विलरागिल्⋆ शार्वदु शदिरे॥१॥	इसके पहले कि युवावस्था का रंग फीका पड़े उपजाऊ बागों से घिरे तेजोमय प्रभु के मालिरूञ्शोलै मंदिर में बिना श्रांत हुए जाना श्रेयस्कर है। **3110**
शदिर् इळ मडवार्⋆ ताळ्च्चियै मदियादु⋆ अदिर् कुरल् शङ्गत्तु⋆ अळगर् तम् कोयिल्⋆ मदि तवळ् कुडुमि⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ पदियदुवेत्ति⋆ एळुवदु पयने॥२॥	युवतियों के मधुर वचनों का तिरस्कार कर गर्जन करते चक के धारण करने वाले प्रभु का चांद को चूमते मालिरूञ्शोलै के मंदिर में पूजा करना श्रेयस्कर है। **3111**
पयन् अल्ल शॅय्दु⋆ पयन् इल्लै नॅञ्जे !⋆ पुयल् मळै वण्णर्⋆ पुरिन्दुरै कोयिल्⋆ मयल् मिगु पॉळिल् शूळ्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ अयन्मलै अडैवदु⋆ अदु करुममे॥३॥	हे मन ! ये कर्म भी निरर्थक हैं। मनमोहक बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै पर्वत के मंदिर में जाओ जहां मेघ समान श्याम प्रभु गौरव के साथ स्थित हैं। **3112**
करुम वन् पाशम्⋆ कळित्तुळन्रुय्यवे⋆ पॅरुमलै एडुत्तान्⋆ पीडुरै कोयिल्⋆ वरु मळै तवळुम्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ तिरुमलै अदुवे⋆ अडैवदु तिरमे॥४॥	पर्वत को उठाने वाले प्रभु मालिरूञ्शोलै में गौरव के साथ स्थित हैं जहां वर्षा का मेघ घुटने पर नीचे झुका रहता है। आप कर्म के धागे को तोड़ देते हैं अतः वहां जाओ। **3113**
तिरम् उडै वलत्ताल्⋆ तीविनै पॅरुक्कादु⋆ अरम् उयल् आळि⋆ प्पडैयवन् कोयिल्⋆ मरुविल् वण् शुनै शूळ्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ पुरमलै शार⋆ प्पोवदु किरियै॥५॥	बागों एवं मीठे पानी के सरोवरों से घिरे मालिरूञ्शोलै के चकधारी प्रभु अपनी इच्छाशक्ति से याताना का अंत कर देते हैं। उस पर्वत पर पहुचना ही हमारा एकमात्र कृत्य है। **3114**
किरियॅन निनैमिन्⋆ कीळ्मै शॅय्यादे⋆ उरियमर् वॅण्णॅय्⋆ उण्डवन् कोयिल्⋆ मरियॉडु पिणै शेर्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ नॅरि पड अदुवे⋆ निनैवदु नलमे॥६॥	सोचो, नीच काम में मत लगे रहो। मक्खन चुराने वाले प्रभु कीड़ारत मृग के बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी पूजा के वारे में सोचना ही श्रेयस्कर होता है। **3115**
नलम् एन निनैमिन्⋆ नरगळुन्दादे⋆ निल मुनम् इडन्दान्⋆ नीडुरै कोयिल्⋆ मलम् अरुमदि शेर्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ वल मुरै एय्दि⋆ मरुवुदल् वलमे॥७॥	ठीक से सोचो, नरकगामी मत बनो। धरा को जल से उठाने वाले प्रभु शांत भाव से मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं। आपकी पूजा ही श्रेयस्कर है। **3116**

वल्लम् शॅय्दु वैगल्⋆ वल्लम् कळियादे⋆ वल्लम् शॅय्युम् आय⋆ मायवन् कोयिल्⋆ वल्लम् शॅय्युम् वानोर्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ वल्लम् शॅय्दु नाळुम्⋆ मरुवुदल् वळक्के॥८॥	घूमते हुये जीवन बर्वाद करने से अच्छा है कि ठहरो एवं चरती गायों के पीछे घूमने वाले प्रभु की पूजा करो जो मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं एवं स्वर्गिक जन जिनकी पूजा करते हैं। **3117**
वळक्कॅन निनैमिन्⋆ वल्विनै मूळ्गादु⋆ अळक्कॉडि अट्टान्⋆ अमर् पॅरुङ्गोयिल्⋆ मळ क्कळिट्रिनम् शेर्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ तॉळु क्करुदुवदे⋆ तुणिवदु शूदे॥९॥	श्रेय को देखो एवं दुष्टता में मत लिप्त हो। पूतना के स्तन को चूसने वाले प्रभु युवा हाथी के बागों से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं।आपकी वहां पूजा करना ही श्रेयस्कर है। **3118**
शूदॅन्रु कळवुम्⋆ शूदुम् शॅय्यादे⋆ वेदमुन् विरित्तान्⋆ विरुम्बिय कोयिल्⋆ मादुरु मयिल् शेर्⋆ मालिरुञ्जोलै⋆ पोदविळ् मलैये⋆ पुगुवदु पॅारुळे॥१०॥	श्रेय को देखो एवं आडंवर पूर्ण धूर्तता को त्याग दो। वेदों को प्रकट वाले प्रभु फूलों एवं मोर से घिरे मालिरूञ्शोलै में स्थित हैं।आपकी पूजा के लिये प्रवेश करना ही श्रेयस्कर है। **3119**
‡पॅारुळ् एन्रिव्वुलगम्⋆ पडैत्तवन् पुगळ्मेल्⋆ मरुळिल् वण् कुरुगूर्⋆ वण् शडगोबन्⋆ तॅरुळ् कॉळ्ळ च्चॅान्न⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तु⋆ अरुळुडैयवन् ताळ्⋆ अणैविक्कुम् मुडित्ते॥११॥	हजार पद का यह दशक कुरूगुर शडगोपन के शुद्ध हृदय का परामर्श है जो जगत के परम स्वतंत्र नियंता के बारे में है। जब अंत आता है तो यह प्रभु के चरण को निश्चित रूप से प्राप्त कराता है। **3120** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

21 मुडिच्चोदि (3121 – 3131)

अऴगरदु वडिविल् ईडुपडल्

मुडि च्चोदियाय्⋆ उनदु मुग च्चोदि मलर्न्ददुवो⋆ अडि च्चोदि नी निन्र्⋆ तामरैयाय् अलर्न्ददुवो⋆ पडि च्चोदि आडैयॊडुम्⋆ पल् कलनाय्⋆ निन् पैम् पॊन् कडि च्चोदि कलन्ददुवो⋆ तिरुमाले ! कट्टुरैये ॥१॥	क्या आपके मुखड़े का लावण्य आपके मुकुट में प्रस्फुटित हुआ ? क्या आपका चरण का लावण्य आपके चरण के नीचे सिंहासन में पस्फुटित हुआ ? क्या आपके दिव्य वदन का लावण्य आपके वस्त्र एवं सारे आभूषणों में प्रकट हुआ ? बताइये प्रभु ! **3121**
कट्टुरैक्किल् तामरै⋆ निन् कण् पादम् कैयॊव्वा⋆ शुट्टुरैत्त नन् पॊन्⋆ उळ् तिरुमेनि ऒळि ऒव्वादु⋆ ऒट्टुरैत्तिव्वुलगुन्नै⋆ पुगळ्वॆल्लाम् पॆरुम्पालुम्⋆ पट्टुरैयाय् प्पुऱ्कॆन्रे⋆ काट्टुमाल् परञ्जोदी ! ॥२॥	कमल का फूल आपकी आंख आपके हाथ एवं चरण की समानता नहीं कर सकता। चमकाया हुआ सोना आपके मुखड़े की तुलना में नहीं आ सकता। आपके प्रति सोर लोकों की की गयी सारी प्रशस्ति आपकी करूणा की प्रशस्ति के लिये शून्य है। **3122**
परञ्जोदि ! नी परमाय्⋆ निन्निगळ्न्दु पिन्⋆ मट्रोर् परञ्जोदि इन्मैयिल्⋆ पडि ओवि निगळ्गिन्र्⋆ परञ्जोदि निन्नुळ्ळे⋆ पडर् उलगम् पडैत्त⋆ एम् परञ्जोदि गोविन्दा !⋆ पण्पुरैक्क माट्टेने ॥३॥	उच्चतम ज्योतिर्मय प्रभु ! आपने ब्रह्मांड बनाया। आपके जैसा तेजोमय अन्य प्रभु हम नहीं पाते। अतः कोई चीज से आपकी तुलना नहीं किये जाने के कारण हम मूक रह जाते हैं। हे गोविन्दा ! मेरे प्रभु । **3123**
माट्टादे आगिलुम्⋆ इम्मलर् तलै मा ञालम्⋆ निन् माट्टाय मलर् पुरैयुम्⋆ तिरुवुरुवुम् मनम् वैक्क⋆ माट्टाद पल शमय⋆ मदि कॊडुत्ताय् मलर्त्तुळाय्⋆ माट्टे नी मनम् वैत्ताय्⋆ मा ञालम् वरुन्दादे ॥४॥	यह जगत आपके वदन की दीप्ति को नहीं देख पाता। आपने लोगों को ध्यान बांट दिया जिससे वे घूमते रहते हैं एवं आप शीतल तुलसी के ध्यान में आनंदित रहते हैं। हे प्रभु ! क्या विश्व को इससे हानि नहीं हुई है ? **3124**
वरुन्दाद अरुम् तवत्त⋆ मलर् कदिरिन् शुडर् उडम्बाय्⋆ वरुन्दाद ञानमाय्⋆ वरम्बिन्रि मुळुदियन्राय्⋆ वरुङ्गालम् निगळ् कालम्⋆ कळि कालमाय्⋆ उलगै ऒरुङ्गाग अळिप्पाय् शीर्⋆ एङ्गुलक्क ओदुवने ॥५॥	भूत वर्तमान एवं भविष्य के स्वाभाविक तेज के प्रभु ! कठिनतम तपस्या से प्राप्त तेज से कहीं ज्यादा तेज वाले आप जगत की रक्षा करते हैं। कैसे मैं आपकी पूरी प्रशंसा कर सकता हूं ? **3125**
ओदुवार् ओत्तॆल्लाम्⋆ एव्वुलगत्तॆव्वैयुम्⋆ शादुवाय् निन् पुगळिन्⋆ तगै अल्लाल् पिरिदिल्लै⋆ पोदु वाळ् पुनम् तुळाय्⋆ मुडियिनाय्⋆ पूविन्मेल् मादु वाळ् मार्बिनाय् !⋆ एन् शॊल्लि यान् वाळ्त्तुवने ॥६॥	संसार जो शास्त्र या अन्य चीज पढ़ता है वे केवल आपकी आंशिक ही गाथा वाले हैं। तुलसी की मुकुट एवं कमल वक्ष वाले प्रभु ! कैसे अधिक से अधिक आपकी प्रशस्ति मैं गाउं ? **3126**
वाळ्त्तुवार् पलराग⋆ निन्नुळ्ळे नान्मुगनै⋆ मूळ्त्त नीर् उलगॆल्लाम्⋆ पडैयॆन्रु मुदल् पडैत्ताय्⋆ केळ्त्त शीरान् मुदला⋆ क्किळर् दॆय्वमाय् क्किळर्न्दु⋆ शूळ्त्तमरर् तुदित्ताल्⋆ उन् तॊल् पुगळ् माशूणादे ॥७॥	सृष्टिकर्ता ब्रह्मा एवं शिव को इच्छा से बनाने वाले प्रभु ! क्या होगा कितने भी आपके यश के गाने वाले हों? वे सभी एवं सारे देवगन एकसाथ भी आपका यशगान करें तो आपका धवल यश का अंत नहीं पा सकते। **3127**

माशूणा च्चुडर् उडम्बाय्⋆ मलरादु कुवियादु⋆ माशूणा ज्ञानमाय्⋆ मुळुदुमाय् मुळुदियन्राय्⋆ माशूणा वान् कोलत्तु⋆ अमरर् कोन् वळिपट्टाल्⋆ माशूणा उन् पाद⋆ मलर् शोदि मळुङ्गादे॥८॥	स्वरूप का शुद्ध तेज वाले शाश्वत प्रभु ! पूर्ण ज्ञान वाले प्रभु ! हे पूर्ण आत्मा ! अगर स्वर्गिकों के स्वामी भी आपका यशगान करें तो आपके चरण कमल के तेज को भी पूरा नहीं गा सकते। **3128**
मळुङ्गाद वैन् नुदिय⋆ शक्करनल् वलत्तैयाय्⋆ तॊळुङ्गादल् कळिरळिप्पान्⋆ पुळ्ळूर्न्दु तोन्रिनैये⋆ मळुङ्गाद ज्ञानमे⋆ पडैयाग मलर् उलगिल्⋆ तॊळुम्बायारक्कळित्ताल्⋆ उन् शुडर् च्चोदि मरैयादे॥९॥	हे प्रभु ! आप गरूड़ पक्षी पर आये एवं भक्त हाथी की चक से रक्षा की। अगर आपके सारे भक्त प्रबुद्ध हो जायें तो क्या वे आपके यशगान का अंत पा सकेंगे ? **3129**
मरैयाय नाल् वेदत्तुळ् निन्र⋆ मलर् शुडरे⋆ मुरैयाल् इव्वुलगॆल्लाम्⋆ पडैत्तिडन्दुण्डुमिळ्न्दळन्दाय्⋆ पिरैयेरु शडैयानुम्⋆ नान्मुगनुम् इन्दिरनुम्⋆ इरैयादल् अरिन्देत्त⋆ वीट्रिरुत्तल् इदु वियप्पे॥१०॥	वेद से प्रशंसित तेजोमय पद्म प्रभु ! आपने धरा को बनाया, खाया, पुनः बनाया, उठाया, एवं मापा। अगर शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र खड़े हों तथा आपकी पूजा करें तो क्या आपके आश्चर्य कभी समाप्त होंगे ? **3130**
वियप्पाय वियप्पिल्ला⋆ मॆय्ञ्ज्ञान वेदियनै⋆ शय प्पुगळार् पलर् वाळुम्⋆ तडम् कुरुगूर् शडगोपन्⋆ तुयक्किन्रि तॊळुदुरैत्त⋆ आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ उयक्कॊण्डु पिरप्परुक्कुम्⋆ ऒलि मुन्नीर् ज्ञालत्ते॥११॥	ईश्वरीय लोगों के रहने वाले कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक वेदों से प्रशंसित विस्मयकारी प्रभु का यशगान करता है। जो इसे गा सकेंगे वे जन्म के बंधन को काटकर स्वर्ग जायेंगे। **3131** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

22 मुन्नीर् ञालम् (3132 -3142)

अळगरै मुट्रुम अनुबविक्क एलादु आळवार कलङ्ग

मुन्नीर् ञालम् पडैत्त⋆ एम् मुगिल् वण्णने !⋆ अन्नाळ् नी तन्द⋆ आक्कैयिन् वळि उळल्वेन्⋆ वॆन्नाळ् नोय् वीय⋆ विनैगळै वेर् अऱ्प्पायन्दु⋆ एन्नाळ् यान् उन्नै⋆ इनि वन्दु कूडुवने॥१॥	मेघ समान श्यामल प्रभु ! आपने धरा एवं सागर बनाया। आपने जो यह शरीर दिया है यातनाग्रस्त होकर समय काट कर रहा है। कब मैं कर्म को मूल से काट सकूंगा एवं इस दरिद्र शरीर को त्याग कर आपसे मिल सकूंगा ? **3132**
वन् मा वैयम् अळन्द⋆ एम् वामना⋆ निन् पन् मा माय⋆ प्पल् पिऱवियिल् पडिगिन्ऱ यान्⋆ तॊल् मा वल्विनै⋆ त्तॊडर्गळै मुदलरिन्दु⋆ निन् मा ताळ् शेर्न्दु⋆ निर्पदॆञ्ञान्ऱु कॊलो॥२॥	विस्तृत धरा को मापने वाले वामन प्रभु ! माया से जकड़े जाकर हम अनगिनत जन्म से गुजर चुके। अंतहीन कर्म जो हमारी पीछा नहीं छोड़ता कब इसे हम काट कर आपके प्रिय चरणारविंद को पा सकेंगे ? **3133**
कॊल्ला माक्कोल्⋆ कॊलै शॆय्दु बारद प्पोर्⋆ एल्ला च्चेनैयुम्⋆ इरु निलत्तवित्त एन्दाय्⋆ पॊल्ला वाक्कैयिन्⋆ पुणर्विनै अऱुक्कल् अऱा⋆ शॊल्लाय् यान् उन्नै⋆ च्चार्वदोर् शूळ्च्चिये॥३॥	युद्धक्षेत्र में रथ चलाकर दुष्टों को भारत युद्ध में मृत्यदंड देने वाले प्रभु ! विनती है, बताइये कि हम कैसे अधम मार्ग को त्यागकर आपके चरणारविंद से जुड़ सकें ? **3134**
शूळ्च्चि ञान⋆ च्चुडरॊळि यागि⋆ एन्ऱुम् एळ्च्चि क्केडिन्ऱि⋆ एङ्गणुम् निऱैन्द एन्दाय्⋆ ताळ्च्चि मट्रॆङ्गुम् तविर्न्दु⋆ निन् ताळ् इणक्कीळ् वाळ्च्चि⋆ यान् शेरुम्⋆ वगै अरुळाय् वन्दे॥४॥	बिना क्षय एवं वृद्धि के सर्वव्याप्त, अनंत प्रभा के प्रभु ! विनती है, बताइये कि हम कैसे अधम मार्ग को त्याग कर आपके चरणारविंद से जुड़ सकें ? **3135**
वन्दाय् पोले⋆ वन्दुम् एन् मनत्तिनै नी⋆ शिन्दामल् शॆय्याय्⋆ इदुवे इदुवागिल्⋆ कॊन्दार् कायाविन्⋆ कॊळु मलर् त्तिरु निऱत्त एन्दाय्⋆ यान् उन्नै⋆ एङ्गु वन्दणुगिर्पने॥५॥	काया फूल के रंग वाले प्रभु ! आप का आगमन हम अनुभव करते हैं परंतु आप ठहरते नहीं हैं। अगर आप ठहर कर हमें शक्ति नहीं देंगे तो कैसे हम आप से जुड़ सकेंगे ? **3136**

किर्पन् किल्लेन्⋆ एन्रिलन् मुन नाळाल्⋆ अर्प शारङ्गळ अवै⋆ शुवै त्तगन्रॉळिन्देन्⋆ पर्पल् आयिरम्⋆ उयिर् शॅय्द परमा⋆ निन् नर् पॅान् शोदित्ताळ⋆ नणुगुवदॅञ् ञान्रे॥६॥	सम्यक चयन करने की बुद्धि से रहित हम क्षुद्र भौतिक सुख में लगे रहे। प्रभु ! आपने अनगिनत आत्मा को बनाया है।कब हम आपके दिव्य चरण को पा सकेंगे ? **3137**
एञ्ञान्रु नाम् इरुन्दिरुन्दु⋆ इरङ्गि नॅञ्जे !⋆ मॅय्ञ् ञानम् इन्रि⋆ विनैयियल् पिरप्पळुन्दि⋆ एञ्ञान्रुम् एङ्गुम्⋆ ऑळिवर निरैन्दु निन्र⋆ मॅय्ञ् ञान च्चोदि⋆ क्कण्णनै मेवुदुमे॥७॥	हे मेरा हृदय ! ज्ञान के अभाव में हम कर्मजनित जन्म की यातना में रहे। कब हम ज्ञानमय कृष्ण प्रभु से जुड़ सकेंगे जो सबों में सर्वदा विराजते हैं ? **3138**
मेवु तुन्ब विनैगळै⋆ विडुत्तुमिलेन्⋆ ओवुदल् इन्रि⋆ उन् कळल् वणङ्गिट्रिलेन्⋆ पावु तॅाल् शीर् क्कण्णा !⋆ एन् परञ्जुडरे⋆ कूवुगिन्रेन् काण्बान्⋆ एङ्गॅय्द क्कूवुवने॥८॥	हे मेरे प्रभु कृष्ण, हमारे शाश्वत गौरव की बाढ़ ! हाय न तो हमने अधम कर्म को रोका और न अनवरत आपके चरणारविंद की पूजा की। मैं आपको पुकारता हूं 'कृष्ण' ! कहां आपका दर्शन मिलेगा ? **3139**
कूवि क्कूवि⋆ क्कॉडुविनै त्तूट्रुळ निन्रु⋆ पावियेन् पल कालम्⋆ वळि तिगैत्तलमर्गिन्रेन्⋆ मेवियन्रा निरै कात्तवन्⋆ उलगम् एल्लाम्⋆ ताविय अम्मानै⋆ एङ्गिनि त्तलैप्पॅय्वने॥९॥	खड़े होकर कर्म की गह्वर से आपको पुकारता हूं परंतु क्षुद्र मार्ग में फंस जाता हूं। हमारे प्रभु ने गायों पर कृपा की एवं धरा पर घूमे। ओह ! कहां हम आपको खोजे ? **3140**
तलैप्पॅय् कालम्⋆ नमन् तमर् पाशम् विट्टाल्⋆ अलैप्पूण् उण्णुम्⋆ अव्वल्लल् एल्लाम् अगल⋆ कलैप्पल् ञानत्तु⋆ एन् कण्णनै क्कण्डु कॅाण्डु⋆ निलैप्पॅट्रेन् नॅञ्जम् पॅट्रदु⋆ नीडुयिरे॥१०॥	यातना की घनी छाया से हम ऐसे ग्रस्त थे मानो यमराज ने अपने पाश में हमें बांध रखा था परंतु कृष्ण के हृदय मे रहने के कारण ये सब अब समाप्त हो गये। आप ज्ञान एवं शाश्वत जीवन के प्रभु हैं। **3141**
‡उयिर्गळ् एल्ला⋆ उलगमुम् उडैयवनै⋆ कुयिल् कॅाळ शोलै⋆ त्तॅन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॅयिरिल् शॅाल् इशै मालै⋆ आयिरत्तुळ इप्पत्तुम्⋆ उयिरिन्मेल् आक्कै⋆ ऊनिडै ऑळिविक्कुमे॥११॥	समस्त लोक एवं आत्मा को अपने में रखने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक मीठे कंठ के कोयल से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के शब्दों में हैं।जो इसका पाठ करेंगे वे आत्मा को मांस के देह से मुक्त कर लेंगे। **3142** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

23 ओऴिविल् कालम् (3143 – 3153)

तिरूवेंङ्गडत्तानुक्कु अडिमै शेय्य वेण्डुम् एनल्

(श्रीनिवास प्रभु के चरणारविंद की अनवरत निर्मल सेवा)

‡ऒऴिविल् कालम् एल्लाम्⋆ उडनाय् मन्नि⋆ वऴुविला⋆ अडिमै शॆय्य वेण्डुम् नाम्⋆ तॆऴि कुरल् अरुवि⋆ त्तिरुवेङ्गडत्तु⋆ एऴिल् कॊळ् शोदि⋆ एन्दै तन्दै तन्दैक्के॥१॥	हमें जल के झरनों वाले वेंकटम गिरि के तेजोमय प्रभु की निष्ठा से प्रत्येक समय एवं सर्वदा पार्श्व भाग में रहकर सेवा अवश्य करनी है। आप हमारे पिता के पिता हैं। **3143**
एन्दै तन्दै तन्दै⋆ तन्दै तन्दैक्कुम् मुन्दै⋆ वानवर्⋆ वानवर् कोनॊडुम्⋆ शिन्दु पू मगिऴुम्⋆ तिरुवेङ्गडत्तु⋆ अन्द मिल् पुगऴ्⋆ क्कार् एऴिल् अण्णले॥२॥	मेघ जैसे श्याम एवं शाश्वत यश वाले वेंकटम गिरि के प्रभु की फूल से सेवा इन्द्र एवं अन्य स्वर्गिकजन करते हैं। **3144**
अण्णल् मायन्⋆ अणि कॊळ् शॆन्दामरै– क्कण्णन्⋆ शॆङ्गनि वाय्⋆ क्करुमाणिक्कम्⋆ तॆण्णिऱै च्चुनै नीर्⋆ त्तिरुवेङ्गडत्तु⋆ एण्णिल् तॊल् पुगऴ्⋆ वानवर् ईशने॥३॥	शीतल झरनों वाले अनंत यश के वेंकटम गिरि के प्रभु की सुन्दर कमल सी आंखें हैं, वदन मणि के रंग का है, एवं होंठ मूंगा जैसे हैं। **3145**
ईशन् वानवर्क्कु⋆ एन्बन् एन्ऱाल्⋆ अदु तेशमो⋆ तिरुवेङ्गड त्तानुक्कु⋆ नीशनेन्⋆ निऱैवॊन्ऱुमिलेन्⋆ एन्गण् पाशम् वैत्त⋆ परञ्जुडर् च्चोदिक्के॥४॥	आपकी गाथा का गान मुझ जैसा नीच एवं मूर्ख के लिये उचित है क्या ? तद्यपि हमें आपका प्रेम प्राप्त है। **3146**
शोदियागि⋆ एल्लावुलगुम् तॊऴुम्⋆ आदि मूर्त्ति एन्ऱाल्⋆ अळवागुमो⋆ वेदियर्⋆ मुऴु वेदत्तमुदत्तै⋆ तीदिल् शीर्⋆ त्तिरुवेङ्गड त्तानैये॥५॥	गौरवपूर्ण वेंकटम प्रभु वेद के अमृत हैं।सबों के प्रथम कारण हैं। क्या आपका यशगान करना संभव है ? **3147**

वेङ्गडङ्गळ्⋆ मॆय्मेल् विनै मुट्रवुम्⋆ ताङ्गळ् तङ्गट्कु⋆ नल्लनवे शॆय्वार्⋆ वेङ्गडत्तुरै वार्क्कु⋆ नमवॆन्न– लाम् कडमै⋆ अदुशुमन्दार्गट्के॥६॥	जो केवल वचन से ही आपकी सेवा करते हैं वे पूर्व तथा भविष्य के कर्म से मुक्त हो जाते हैं। **3148**
शुमन्दु मामलर्⋆ नीर् शुडर् तीबम् कॊण्डु⋆ अमरन्दु वानवर्⋆ वानवर् कोनॊडुम्⋆ नमन्रॆळुम्⋆ तिरुवेङ्गडम् नङ्गट्कु⋆ शमन् कॊळ् वीडुदरुम्⋆ तडङ्गुन्रमे॥७॥	श्याम वेंकटम प्रभु की पूजा इन्द्र एवं स्वर्गिकगन फूल, अगरबत्ती, दीप, एवं जल से करते हैं। आप शांत मुक्ति देते हैं। **3149**
‡कुन्रम् एन्दि⋆ क्कुळिर् मळै कात्तवन्⋆ अन्रु ञालम्⋆ अळन्द पिरान्⋆ परन् शॆन्रु शेर्⋆ तिरुवेङ्गड मा मलै⋆ ऑन्रुमे तॊळ⋆ नम् विनै ओयुमे॥८॥	वर्षा रोकने वाले एवं धरा को मापने वाले प्रभु वेंकटम में निवास करते हैं।आपकी पूजा से हमारे कर्म का क्षय होता है। **3150**
ओयुम् मूप्पु⋆ प्पिरप्पिरप्पुप्पिणि⋆ वीयुमारु शॆय्वान्⋆ तिरुवेङ्गड– त्तायन्⋆ नाळ् मलराम्⋆ अडि त्तामरै⋆ वायुळ्ळुम् मनत्तुळ्ळुम्⋆ वैप्पार्गट्के॥९॥	जो अपने प्रत्येक कर्म में गोपकुमार वेंकटम प्रभु के चरणारविंद का स्मरण करते हैं उनके चारों यातना का अंत हो जाता है। **3151**
वैत्त नाळ् वरै⋆ एल्लै कुरुगि च्चॆन्रु⋆ एय्त्तिळैप्पदन्⋆ मुन्नम् अडैमिनो !⋆ पैत्त पाम्बणैयान्⋆ तिरुवेङ्गडम्⋆ मॊय्त्त शोलै⋆ मॊय् पून्दडम् ताळ्वरे॥१०॥	इसके पहले कि तुम्हारा सीमित जीवन का अंत हो जाये एवं बुढ़ापा अशक्त बना दे फनधारी शेषशायी वेंकटम प्रभु के चरणारविंद को पकड़ो। **3152**
‡ताळ् परप्पि⋆ मण् ताविय ईशनै⋆ नीळ् पॊळिल्⋆ कुरुगूर् च्चडगोबन् शॊल्⋆ केळिल् आयिरत्तु⋆ इप्पत्तुम् वल्लवर्⋆ वाळ्वर् वाळ्वॆय्दि⋆ ञालम् पुगळवे॥११॥	पृथ्वी को मापने वाले प्रभु के यशगान में कुरूगुर शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक का गान सबों से प्रशंसा का पात्र बना देता है। **3153** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

24 पुगऴनल् ओरूवन् (3154 - 3164)

आन्माक्कळ् अनैत्तुम् अवने

‡पुगळुनल् ऑरुवन् एन्गो !* पॅारुविल् शीर् प्पूमि एन्गो* तिगळुम् तण् परवै एन्गो !* तीयॅन्गो ! वायुवॅन्गो* निगळुम् आगाशम् एन्गो !* नीळ् शुडर् इरण्डुम् एन्गो* इगळिवल् इव्वनैत्तुम् एन्गो* कण्णनै क्कूवुम् आरे ! ॥१॥	अपने कृष्ण को हम कैसे संबोधित करें ? पूजा के सुयोग्य ? अद्वितीय पृथ्वी या विस्तृत शीतल सागर ? अग्नि हवा एवं फैला हुआ आकाश ? सूर्य, चांद या सर्वव्याप्त सार्वभौम ? **3154**
कूवुम् आररिय माट्टेन्* कुन्रङ्गळ् अनैत्तुम् एन्गो* मेवुशीर् मारि एन्गो !* विळङ्गु तारगैगळ् एन्गो* नावियल् कलैगळ् एन्गो !* ञान नल्लावि एन्गो* पावु शीर् क्कण्णन् एम्मान्* पङ्गय क्कण्णनैये ! ॥२॥	हमें नहीं पता पूजा के सुयोग्य कृष्ण को हम कैसे संबोधित करें ? अनेकों पर्वत से, अच्छी वर्षा से, धवल तारा से, या कवितावली से ? **3155**
पङ्गय क्कण्णन् एन्गो !* पवळ च्चॅव्वायन् एन्गो* अङ्गदिर् अडियन् एन्गो !* अञ्जन वण्णन् एन्गो* शॅङ्गदिर् मुडियन् एन्गो !* तिरुमरु मार्वन् एन्गो* शङ्गु चक्करत्तन् एन्गो !* शादि माणिक्कत्तैये ! ॥३॥	या हम आपको निर्मल मणि समान राजीवनयन कहें ? या मूंगा जैसे होंठ वाले, या दिव्य चरण वाले प्रभु, या श्यामल वर्ण के लाल प्रदीप्त मुकुट वाले, या चक्र शंख धारी या वक्ष पर लक्ष्मी वाला कहें ? **3156**
शादि माणिक्कम् एन्गो !* शवि कोळ् पॅान् मुत्तम् एन्गो* शादि नल् वयिरम् एन्गो* तविविल् शीर् विळक्कम् एन्गो* आदियञ्जोदि एन्गो !* आदियम् पुरुडन् एन्गो* आदुमिल् कालत्तॅन्दै* अच्चुतन् अमलनैये ! ॥४॥	जब सर्वत्र शून्य था हमारे निर्मल प्रभु विराजमान थे। क्या हम आपको निर्मल मणि कहें या चमकते सोना एवं मोती या उज्जवल हीरा या शाश्वत यश का दीप या प्रदीप्त प्रथम कारण तथा प्रथम प्राणि कहें ? **3157**
अच्चुतन् अमलन् एन्गो* अडियवर् विनै कॅडुक्कुम्* नच्चुमा मरुन्दम् एन्गो !* नलङ्गडल् अमुदम् एन्गो* अच्चुवै क्कट्टि एन्गो !* अरुशुवै अडिशिल् एन्गो* नॅय्च्चुवै त्तेरल् एन्गो !* कनियॅन्गो ! पाल् एन्गोनो ! ॥५॥	क्या हम आपको निर्दोष महान प्रभु अच्युत कहें ? या अमृत सागर तथा भक्तों के दुख की औषधि ? या मधुर मिश्री या छःरस वाले भोज्य पदार्थ या मधुर दूध, मक्खन, फल, या मधु कहें ? **3158**

पाल् एन्गो !⋆ नान्गु वेद प्पयन् एन्गो⋆ शमय नीदि नूल् एन्गो !⋆ नुडङ्गु केळ्वि इशैयैन्गो !⋆ इवट्रुळ् नल्ल मेल् एन्गो⋆ विनैयिन् मिक्क पयन् एन्गो⋆ कण्णन् एन्गो ! माल् एन्गो ! मायन् एन्गो⋆ वानवर् आदियैये ! ॥६॥	क्या हम अपने कृष्ण को आश्चर्यमय देव कहें ? या स्वर्गिकों के प्रभु कहें ? या दूध या चारो वेद का सार कहें ? या शास्त्र का सत्य कहें या उपनिषद का गीत या महान कर्म के फल कहें ? या इन सबों से अधिक कहें ? **3159**
वानवर् आदि एन्गो !⋆ वानवर् दैव्वम् एन्गो⋆ वानवर् पोगम् एन्गो !⋆ वानवर् मुट्रुम् एन्गो⋆ ऊनमिल् शैल्वम् एन्गो !⋆ ऊनमिल् शुवर्क्कम् एन्गो⋆ ऊनमिल् मोक्कम् एन्गो !⋆ ऑळि मणि वण्णनैये ! ॥७।	क्या हम आपको मणि समान तेजोमय प्रभु कहें या स्वर्गिकों के प्रभु कहें या उनके उत्सुक आनन्द कहें या उनके साध्य या अक्षय निधि कहें ? या शाश्वत स्वर्ग या कालातीत मुक्ति कहें ? **3160**
ऑळि मणि वण्णन् एन्गो !⋆ ऑरुवन् एन्रेत्त निन्र⋆ नळिर् मदि च्चडैयन् एन्गो !⋆ नान्मुग क्कडवुळ् एन्गो⋆ अळि मगिळ्न्दुलगम् एल्लाम्⋆ पडैत्तवै एत्त निन्र⋆ कळि मलर् तुळवन् एम्मान्⋆ कण्णनै मायनैये ! ॥८॥	क्या हम अपने कृष्ण को अलौकिक तेज का मणि कहें ? या शशिभूषण शिव या चतुरानन ब्रह्मा या उनलोगों द्वारा पूजित प्रभु कहें या जिसने उनलोगों को बनाया वह प्रभु कहें ? गौरव एवं आनंद के प्रभु अमृतमयी तुलसी माला पहनते हैं। **3161**
कण्णनै मायन् तन्नै⋆ क्कडल् कडैन्दमुदम् कॉण्ड⋆ अण्णलै अच्चुतनै⋆ अनन्दनै अनन्दन् तन्मेल्⋆ नण्णि नन्गुरैगिन्रानै⋆ ञालम् उण्डुमिळ्न्द मालै⋆ एण्णुम् आररिय माट्रेन्⋆ यावैयुम् यवरुम् ताने॥९॥	हमारे प्रभु सब चीजों में हैं एवं सभी प्राणियों में हैं तथा समझ के परे हैं। आप कृष्ण हैं जिन्होंने खेल की तरह सब को निगला एवं सबको फिर से बनाया। आपने सागर से अमृत मथकर देवों को दे दिया। आप शेषशायी अच्युत अनंत एवं गोविंद हैं। **3162**
यावैयुम् यवरुम् तानाय्⋆ अवरवर् शमयन् तोरुम्⋆ तोय्विलन् पुलन् ऐन्दुक्कुम्⋆ शॉलप्पडान् उणर्विन् मूर्त्ति⋆ आविशेर् उयिरिन् उळ्ळाल्⋆ आदुमोर् पट्रिलाद⋆ पावनै अदनै क्कूडिल्⋆ अवनैयुम् कूडलामे॥१०॥	आप इन्द्रियों से परे चेतनराशि हैं। सभी वस्तुओं एवं प्राणियों के सर्वत्र तथा सर्वदा आप ही स्वरूप हैं तब भी सबों से पृथक हैं। अगर कोई अपने को निःस्पृह बनाले तो वह आप तक जा सकता है। **3163**
कूडि वण्डरैयुम् तण् तार्⋆ क्कॉण्डल् पोल् वण्णन् तन्नै⋆ माडलर् पॉळिल्⋆ कुरुगूर् वण् शडगोपन् शॉन्न⋆ पाडलोर् आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुमोर् पत्तुम् वल्लार्⋆ वीडिल पोग मॅय्दि⋆ विरुम्बुवर् अमरर् मॉय्त्ते॥११॥	तुलसी की माला वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये मधुर हजार पदों वाली रचना का यह दशक बागों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के हैं।जो इसको याद करलेंगे वे मुक्तात्मा होकर स्वर्गिकों की संगत में रहेंगे। **3164** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

25 मोयम्माम् (3165 - 3175)

तिरूमालक्कु अन्बु चेय्बवरै आदरित्तलुम् अन्बिलादारै निन्दित्तलुम्

मॊय्म् माम् पूम् पॊळिल् पॊय्गै⋆ मुदलै च्चिरैप्पट्टु निन्र⋆ कैम्मावुक्करुळ् शॆय्द⋆ कार् मुगिल् पोल् वण्णन् कण्णन्⋆ एम्मानै च्चॊल्लि प्पाडि⋆ एळुन्दुम् परन्दुम् तुळ्ळादार्⋆ तम्माल् करुमम् एन् शॊल्लीर्⋆ तण् कडल् वट्टत्तुळ्ळीरे ! ॥१॥	विनती है, हे सागर से घिरे धरा के लोगों ! बताओ वे किस काम के हैं जो कमल सरोवर में ग्राह के जबड़े से हाथी की रक्षा करने वाले श्याम वदन प्रभु का न तो यशगान करते और न साथ में नाचते ? **3165**
तण् कडल् वट्टत्तुळ्ळारै⋆ तमक्किरैया त्तडिन्दुण्णुम्⋆ तिण् कळल् काल् अशुरर्क्कु⋆ त्तीङ्गिळैक्कुम् तिरुमालै⋆ पण्गळ् तलैक्कॊळ्ळ प्पाडि⋆ प्परन्दुम् कुनित्तुळलादार्⋆ मण् कॊळ् उलगिल् पिरप्पार्⋆ वल्विनै मोद मलैन्दे॥२॥	नर मांस भक्षक असुरों को पीड़ा देने वाले प्रभु का जो अपने गले की ऊंची आवाज में यशगान करते हुए आनन्दातिरेक में नाचता नहीं वह कर्मजनित जन्म की यातना से छूट नहीं सकता। **3166**
मलैयै एडुत्तु क्कल् मारि कात्तु⋆ प्पशुनिरै तन्नै⋆ तॊलैवु तविर्त्त पिरानै⋆ च्चॊल्लि च्चॊल्लि निन्रॆप्पोदुम्⋆ तलैयिनोडादनम् तट्ट⋆ त्तडुगुट्टमाय् प्परवादार्⋆ अलै कॊळ् नरगत्तळुन्दि⋆ क्किडन्दुळैक्किन्र वम्बरे॥३॥	जो पर्वत से तूफान को रोकने वाले प्रभु का यशगान करते नाच कर अपने सिर को पृथ्वी पर बार बार स्पर्श नहीं कराते वे अवश्य हीं तूफानग्रस्त नरक में जायेंगे। **3167**
वम्पविळ् कोदै पॊरुट्टा⋆ माल् विडैयेळुम् अडर्त्त⋆ शॆम् पवळ त्तिरळ् वायन्⋆ शिरीदरन् तॊल् पुगळ् पाडि⋆ कुम्बिडु नट्टम् इट्टाडि⋆ क्कोगुकट्टुण्डुळलादार्⋆ तम् पिरप्पाल् पयन् एन्ने⋆ शादु शनङ्गळिडैये॥४॥	नप्पिनाय के प्रेम में सात वृषभों को नष्ट करने वाले मूंगा जैसे होंठ के श्रीधर प्रभु का यशोगान करो। अपने हाथ को सिर पर रख के नाचो जिससे कि प्रभु के गौरव की हवा लग सके नहीं तो संत जनों के बीच जन्म का क्या लाभ ? **3168**
शादु शनत्तै नलियुम्⋆ कञ्जनै च्चादिप्पदर्कु⋆ आदियञ्जोदियुरुवै⋆ अङ्गु वैत्तिङ्गु प्पिरन्द⋆ वेद मुदल्वनै प्पाडि⋆ वीदिगळ् तोरुम् तुळ्ळादार्⋆ ओदियुणर्न्दवर् मुन्ना⋆ एन् शविप्पार् मनिशरे॥५॥	वेद के प्रभु दिव्य वैकुंठ को छोड़कर मर्त्य लोक में कंस के अत्याचार से निर्दोष लोगों को बचाने के लिये नरदेह में पधारे। वीथियों में प्रभु का यशगान करते हुए नाचने के सिवा विद्वानों को सीखने के लिये क्या बचा रहता है, क्या वे नर कहा सकते हैं ? **3169**

मनिशरुम् मट्रुम् मुट्रुमाय्⋆ माय प्पिऱवि पिऱन्द⋆ तनियन् पिऱप्पिलि तन्नै⋆ त्तडङ्गडल् शेरन्द पिरानै⋆ कनियै क्करुम्बिन् इन् शाट्रै⋆ क्कट्टियै त्तेनै अमुदै⋆ मुनिविन्ऱि एत्ति क्कुनिप्पार्⋆ मुळुदुणर् नीर्मैयिनारे॥६॥	अजन्मा प्रभु जो अवतार लेते हैं सागर में शयन करने वाले हैं। आप फल अमृत शक्कर एवं शहद के समान मधुर हैं एवं हमारे अमृत हैं। आप चेतन जड़ एवं सभी कुछ हैं। जो गीत एवं नृत्य के साथ आपकी प्रशस्ति गाते हैं वे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं। **3170**
नीर्मैयिल् नूट्रुवर् वीय⋆ ऐवर्क्करुळ् शेय्दु निन्ऱु⋆ पार्मल्गु शेनै अवित्त⋆ परञ्जुडरै निनैन्दाडि⋆ नीर्मल्गु कण्णिनर् आगि⋆ नेञ्जम् कुळैन्दु नैयादे⋆ ऊर्मल्गि मोडु परुप्पार्⋆ उत्तमर्कॆन् शेय्वारे॥७॥	तेजोमय प्रभु ने वैमनस्य की भावना से ग्रस्त सौ जनों के विरूद्ध भयानक सेना से आक्रमण कर पांच जनों को विजय दिलायी। इस भले संसार में बाहों को मांसल बनाये रहने वाले लोगों से क्या लाभ अगर वे प्रभुगाथा गान के साथ हृदय को द्रवित करते हुए आनंद में नाचते नहीं ? **3171**
वार्पुनल् अन्दण्णरुवि⋆ वड तिरुवेङ्गडत्तॆन्दै⋆ पेर्पल शोल्लि प्पिदट्रि⋆ प्पित्तर् एन्ऱे पिऱर् कूऱ⋆ ऊर् पल पुक्कुम् पुगादुम्⋆ उलोगर् शिरिक्क निन्ऱाडि⋆ आर्वम् पेरुगि क्कुनिप्पार्⋆ अमरर् तॊळप्पडुवारे॥८॥	शीतल जल के झरने वाले वेंकटम में प्रभु स्थित हैं। गांव या नगर कहीं भी आपके नाम उतावले होकर अनवरत उन्मादग्रस्त जैसा गाओ।लोगों को उपहास करने दो। आनन्दातिरेक में कूदते हुए गाओ स्वर्गिक तुम्हारी पूजा करेंगे। **3172**
अमरर् तॊळप्पडुवानै⋆ अनैत्तुलगुक्कुम् पिरानै⋆ अमरर् मनत्तिनुळ् योगु पुणर्न्दु⋆ अवन् तन्नोडॊन्ऱाग⋆ अमर त्तुणिय वल्लार्गळ् ऒळिय⋆ अल्लादवर् एल्लाम्⋆ अमर निनैन्दॆळुन्दाडि⋆ अलट्रुवदे करुमम्मे॥९॥	स्वर्गिकों से पूजे जाने वाले प्रभु समस्त सृष्टि के नाथ हैं। जो योग से तप साधना करते हैं वे आपको सर्वदा अपने हृदय में पाते हैं। अन्य लोगों के लिये आपका यशगान एवं नृत्य ही कर्म यानी कृत्य है। **3173**
करुममुम् करुम पलनुम् आगिय⋆ कारणन् तन्नै⋆ तिरुमणि वण्णनै च्चॆङ्गण् मालिनै⋆ त्तेव पिरानै⋆ ऒरुमै मनत्तिनुळ् वैत्तु⋆ उळ्ळम् कुळैन्दॆळुन्दाडि⋆ पॆरुमैयुम् नाणुम् तविर्न्दु⋆ पिदट्रुमिन् पेदमै तीर्न्दे॥१०॥	मणि वर्ण एवं राजीव नयन स्वर्गिकों के प्रभु ही कर्म हैं, फल हैं, तथा कारण हैं। अपने को भीतर में द्रवित करते हुए हृदय से गाओ एवं नाचो।अपना अभिमान एवं लाज छोड़कर उन्मत्त की भांति प्रभु की प्रशस्ति गाओ। **3174**

‡तीर्न्द अडियवर् तम्मै⋆ त्तिरुत्ति प्पणिकॉळ्ळ वल्ल⋆ आर्न्द पुगऴ् अच्चुतनै⋆ अमरर् पिरानै ऍम्मानै⋆ वाय्न्द वळ वयल् शूऴ्⋆ तण् वळन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ नेर्न्द ओरायिरत्तिप्पत्तु⋆ अरुविनै नीरु शॅय्युमे॥११॥	उपजाऊ क्षेत्र के कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक अच्युत प्रभु की प्रशस्ति है जो भक्त की भूल सुधारकर उसे अपनाते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे अपने घोर कर्म पर विजय पायेंगे। **3175** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

26 शेय्यतामरै (3176 - 3186)

अरच्चावतारमे एळिदेन अरूळि च्चेय्दल्

शॅय्य तामरै क्कण्णनाय्* उलगेळुम् उण्ड अवन् कण्डीर्* वैयम् वानम् मनिशर् दॅय्वम्* मट्रुम् मट्रुम् मट्रुम् मुट्रुमाय्* शॅय्य शूळ् शुडर् ञानमाय्* वॅळि प्पट्टिवै पडैत्तान्* पिन्नुम् मॉय् कॉळ् शोदियोडायिनान्* ऑरु मूवर् आगिय मूर्त्तिये॥१॥	ब्रह्मांड के निगलने वाले राजीव नयन प्रभु के बारे में सुनिये। आप प्रभापूर्ण ज्ञान हो गये एवं उसके माध्यम से धरा आकाश आदमी देवगन एवं अन्य सबों की सृष्टि की। और तब आप तीनमुख वाले यानी दत्तात्रेय के प्रभापूर्ण प्रभु हो गये। **3176**
मूवर् आगिय मूर्त्तियै* मुदल् मूवरक्कुम् मुदल्वन् तन्नै* शावम् उळ्ळन नीक्कुवानै* तडङ्गडल् किडन्दान् तन्नैत्* देव देवनै त्तॅन्निलङ्गै* एरियॅळ च्चॅट्र विल्लियै* पाव नाशनै प्पङ्गय त्तडं गण्णनै* प्परवुमिनो॥२॥	कर्म से उद्धार करने वाले कमलनयन प्रभु की प्रशस्ति गाओ। स्वर्गिकों से पूजित आप गहरे सागर में रहते हैं। आप शिव ब्रह्मा इन्द्र के प्रभु हैं एवं हमारे कर्म का क्षय करते हैं। आपने महान धनुष से लंका को धूल में मिला दिया। **3177**
परवि वानवर् एत्त निन्र* परमनै प्परञ्जोदियै* कुरवै कोत्त कुळगनै* मणि वण्णनै क्कुड क्कूत्तनै* अरवम् एरि अलै कडल् अमरुम्* तुयिल् कॉण्ड अण्णलै* इरवुम् नन् पगलुम् विडादु* एन्रुम् एत्तुदल् मनम् वैम्मिनो॥३॥	मणि वर्ण के प्रभु गहरे सागर में शेष शय्या पर शयन करते हैं। आप की अहोरात्र प्रशस्ति में हृदय को दृढ़ता से लगाओ। स्वर्गिकों से पूजित आप तेजोमय प्रभु हैं। आप पात्र पर सुन्दर नृत्य करते हैं जो गोपियों के साथ रास रचाये। **3178**
वैम्मिन् नुम् मनत्तॅन्रु* यान् उरैक्किन्र मायवन् शीमैयै* एम् मनोर्गळ् उरैप्पदॅन्* अदु निर्क नाळ्दॉरुम्* वानवर् तम्मै आळुम् अवनुम्* नान्मुगनुम् शडैमुडि अण्णलुम्* शॅम्मैयाल् अवन् पाद पङ्गयम्* शिन्दित्तेत्ति तिरिवरे॥४॥	जब महान इन्द्र स्वयं तथा ब्रह्मा शिव आपके चरणारविंद का ध्यान करते भ्रमण करते हैं तो हमारे जैसा प्राणी प्रभु की करूणा के बारे में क्या बतायेगा ? जैसा भी हो। **3179**
तिरियुम् काट्रोडगल् विशुम्बु* तिणिन्द मण् किडन्द कडल्* एरियुम् तीयोडिरु शुडर् दॅय्वम्* मट्रुम् मट्रुम् मुट्रुमाय्* करिय मेनियन् शॅय्य तामरै क्कण्णन्* कण्णन् विण्णोर् इरै* शुरियुम् पल् करुङ्गुञ्चि* एङ्गळ् शुडर् मुडियण्णल् तोट्रमे॥५॥	श्याम रंग, कमल नयन, काली लटें एवं प्रदीप्त मुकुट के हमारे कृष्ण बहती हवा हैं, आकाश हैं एवं कड़ी धरती हैं। आप लहरों वाले लुघड़ते सागर हैं, जलती अग्नि हैं तथा ज्योति पुंज यानी सूर्य, चांद तथा देवगन हैं। देवों के प्रभु ही सर्वत्र मर्त्यजन तथा सभी वस्तु हैं। **3180**
तोट्र क्केडवै इल्लवन् उडैयान्* अवन् ऑरु मूर्त्तियाय्* शीट्रत्तोडरुळ् पॅट्रवन् अडिक्कीळ्* प्पुग निन्र शॅङ्कणमाल्* नाट्र त्तोट्र च्चुवैयॅलि* ऊरल् आगि निन्र* एम् वानवर् एट्रैये अन्रि* मट्रॉरुवरै यान् इलेन् एळुमैक्कुमे॥६॥	सात जन्मों से हमारे अन्य कोई नहीं एकमात्र कृष्ण हैं। आप हमारे घ्राणशक्ति, स्वरूप, स्वाद, आवाज, एवं स्पर्श हैं। अजन्मा अमर्त्य हमारे प्रभु विशाल नरसिंह रूप में आकर शिशु भक्त प्रह्लाद को चरणों में शरण दिया। **3181**

एऴुमैक्कुम् एनदाविक्कु॰ इन् अमुदत्तिनै एनदार् उयिर्॰ कॆऴुमिय कदिर् च्चोदियै॰ मणि वण्णनै क्कुड क्कूत्तनै॰ विऴुमिय अमरर् मुनिवर् विऴुङ्गुम्॰ कन्नल् कनियिनै॰ तॊऴुमिन् तूय मनत्तराय्॰ इऱैयुम् निल्ला तुयरङ्गळे॥७॥	सात जन्मों से आप मेरे हृदय के अमृत, मेरी आत्मा के सखा, मेरीप्रदीप्त ज्योति, मेरे श्याम मणि हैं। हे मेरे पात्र नर्तक ! आप स्वर्गिकों एवं ऋषियों को आनन्दित करने वाले फल हैं। शुद्ध हृदय से प्रभु की पूजा करने से सारे कष्ट शीघ्र ही लुप्त हो जायेंगे। **3182**
तुयरमे तरु तुन्ब इन्ब विनैगळाय्॰ अवै अल्लनाय्॰ उयर निन्ऱदोर् शोदियाय्॰ उलगेऴुम् उण्डुमिऴ्न्दान् तन्नै॰ अयर आङ्गु नमन् तमर्क्कु॰ अरु नञ्जिनै अच्चुतन् तन्नै॰ दयरदर्कु मगन् तन्नै अन्ऱि॰ मट्रिलेन् तञ्जमागवे॥८॥	आप दुख सुख के दुष्ट कर्म हैं तथा उससे ऊपर भी हैं।आप तेजोमय प्रभु के रूप में ऊपर खड़ा होते हैं तथा सभी लोक को बनाते हैं और निगल जाते हैं। यमदूतों के विरूद्ध आप प्रभावकारी औषध हैं। आप दशरथ के पुत्र के रूप में आये और आपके सिवा हमारा कोई आश्रय नहीं है। **3183**
तञ्जम् आगिय तन्दै तायॊडु॰ तानुमाय् अवै अल्लनाय्॰ एञ्जलिल् अमरर् कुलमुदल्॰ मूवर् तम्मुळ्ळुम् आदियै॰ अञ्चि नीर् उलगत्तुळ्ळीर्गळ्!॰ अवन् इवन् एन्ऱु कूऴेन्मिन्॰ नॆञ्जिनाल् निनैप्पान् यवन्॰ अवन् आगुम् नीळ् कडल् वण्णने॥९॥	आभामय देवों के प्रभु इन्द्र ब्रह्मा शिव से पूजित आप ही पिता माता तथा आत्मा हैं तथा सबसे पृथक भी हैं। हे लोगों ! भय एवं भ्रम से 'इस' और 'उस' देवता के चक्कर में मत पड़ो। मेरे श्यामल प्रभु उसी स्वरूप में दिखते हैं जो हृदय की चाह रहती है। **3184**
कडल् वण्णन् कण्णन्॰ विण्णवर् करु माणिक्कम् एनदार् उयिर्॰ पडवरविन् अणैक्किडन्द॰ परञ्जुडर् पण्डु नूट्रुवर्॰ अडवरुम् पडै मङ्ग॰ ऐवर्गट्कागि वॆञ्जमत्तु॰ अन्ऱु तेर् कडविय पॆरुमान्॰ कनै कऴल् काण्बदॆन्ऱुगॊल् कण्गळे॥१०॥	सागर सा सलोने कृष्ण, स्वर्गिकों के श्याम मणि, हमारी अपनी आत्मा, फनधारी शेष पर शयन करने वाले तेजोमय प्रभु हैं।सौ के विरूद्ध पांच की लड़ाई में आपने रथ हांकने का काम किया। ओह ! कब हमारी आंखें आपके विजयी चरण का दर्शन पायेंगी ? **3185**
कण्गळ् काण्डर्करियनाय्॰ क्करुत्तुक्कु नन्ऱुम् एळियनाय्॰ मण् कॊळ् ञालत्तुयिर्क्कॆल्लाम् अरुळ् शॆय्युम्॰ वानवर् ईशनै॰ पण् कॊळ् शोलै वऴुदि नाडन्॰ कुरुगैक्कोन् शडगोपन् शॊल्॰ पण् कॊळ् आयिरत्तिप्पत्ताल्॰ पत्तराग क्कूडुम् पयिन्मिने॥११॥	मधुर बागों के वालुदी क्षेत्र के कुरूगुर के शडगोपन से विरचित पन्न आधारित हजार पद का यह दशक अदृश्यमान प्रभु की प्रशस्ति है जो हृदय के प्रियहैं। हे लोगों ! इसे यादकर भक्त बनो। **3186** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **27 पयिलुम् शुडरोळि (3187 - 3197)** **अडियार्गळिन् अडियारक्कु त्ताम अडियवर् एनल्**	
‡पयिल्लुम् शुडरॊळि मूर्त्तियै॰ प्पङ्गय क्कण्णनै॰ पयिल्ल इनिय॰ नम् पार्कडल् शेर्न्द परमनै॰ पयिल्लुम् तिरुवुडैयार्॰ यवरेल्लुम् अवर् कण्डीर्॰ पयिलुम् पिऱप्पिडैदोऱु॰ एम्मै आळुम् परमरे॥१॥	हृदय के अतिप्रिय कमलनयन तेजोमय प्रभु क्षीरसागर में शयन करते हैं। सुनिये! जो भी आपकी पूजा करते हैं, वे कोई भी हों, हमारे सात जन्म से स्वामी हैं। **3187**
आळुम् परमनै क्कण्णनै॰ आळि प्पिरान् तन्नै॰ तोळुम् ओर् नान्गुडै॰ तूमणि वण्णन् एम्मान् तन्नै॰ ताळुम् तड क्कैयुम् कूप्पि॰ प्पणियुम् अवर् कण्डीर्॰ नाळुम् पिऱप्पिडै तोऱु॰ एम्मै आळुडै नादरे॥२॥	मणिवर्ण के चक्रधारी प्रभु हमारे नाथ की चार शक्तिशाली भुजायें हैं। सुनिये! जो भी आपके चरणकमल की पूजा अपने हाथों से करते हैं, वे हमारे सर्वदा के लिये स्वामी हैं। **3188**
नादनै ञालमुम् वानमुम् एत्तुम्॰ नऱुम् तुळाय् प्पोदनै॰ पॊन् नॆडुम् शक्करत्तु॰ एन्दै पिरान् तन्नै॰ पादम् पणिय वल्लारै॰ प्पणियुम् अवर् कण्डीर्॰ ओदुम् पिऱप्पिडै तोऱु॰ एम्मै आळुडैयार्गळे॥३॥	तुलसी की माला एवं दिव्य चक्र धारण करने वाले प्रभु स्वर्गिकों एवं मर्त्यो के नाथ हैं। सुनिये! जो आपके भक्तों की सेवा करते हैं,वे हमारे हर सौभाग्यशाली जीवन के नाथ हैं। **3189**
उडै आर्न्द आडैयन्॰ कण्डिगैयन् उडै नाणिनन्॰ पुडैयार् पॊन् नूलिनन्॰ पॊन् मुडियन् मट्रुम् पल्गलन्॰ नडैया उडै त्तिरुनारणन्॰ तॊण्डर् तॊण्डर् कण्डीर्॰ इडैयार् पिऱप्पिडैदोऱु॰ एमक्कॆम् पॆरुमक्कळे॥४॥	हमारे प्रभु गले का हार, कमरबंद, दिव्य जनेऊ, सुनहला मुकुट तथा अनेकों आभूषण धारण करते हैं। सुनिये! जो आपके भक्तों के सेवकों की सेवा करते हैं,वे हमारे हर जीवन के नाथ हैं। **3190**
पॆरुमक्कळ् उळ्ळवर् तम् पॆरुमानै॰ अमरर्गट्कु॰ अरुमै ऒऴिय॰ अन्ऱार् अमुदूट्टिय अप्पनै॰ पॆरुमै पिदट्र वल्लारै॰ प्पिदट्रुम् अवर् कण्डीर्॰ वरुमैयुम् इम्मैयुम्॰ नम्मैयळिक्कुम् पिराक्कळे॥५॥	हमारे प्रभु स्वर्गिकों की सहायता के लिये आये एवं उन्हें क्षीर सागर से अमृत दिया। सुनिये! जो आपकी प्रशस्ति गानों वालों की प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे इस जीवन तथा सारे जीवन के नाथ हैं। **3191**

अळिक्कुम् परमनै कण्णनै⋆ आळि प्पिरान् तन्नै⋆ तुळिक्कुम् नरुम् कण्णि⋆ त्तू मणि वण्णन् एम्मान् तन्नै⋆ ऑळि क्कॉण्ड शोदियै⋆ उळ्ळत्तु क्कॉळ्ळुम् अवर् कण्डीर्⋆ शलिप्पिन्रि आण्डॆम्मै⋆ च्चन्म शन्मान्तरम् काप्परे॥६॥	मणिवर्ण एवं अमृतमयी तुलसी तथा हाथ में चक्रधारण करने वाले हमारे तेजोमय प्रभु सबकी रक्षा करते हैं। सुनिये! जो आपको अपने हृदय में रखते हैं वे हमारे समस्त जीवन के नाथ हैं। **3192**
शन्म शन्मान्तरम् कात्तु⋆ अडियार्गळै क्कॉण्डु पोय्⋆ तन्मै पॆरुत्ति त्तन् ताळिणै क्कीळ्⋆ कॉळ्ळुम् अप्पनै⋆ तॊन्मै पिदट्ट् वल्लारै⋆ प्पिदट्टुम् अवर् कण्डीर्⋆ नम्मै पॆरुत्तु एम्मै⋆ नाळ् उय्यक्कॉळ्ळिन्र् नम्बरे॥७॥	आप भक्तों की सहायता के लिये एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में आते हैं। आप अपना स्वभाव देकर उन्हें अपने चरणों में शरण देते हैं। सुनिये! जो आपके शाश्वत गौरव की गाथा गाते हैं वे हमारे सदा के लिये विश्वासी नाथ हैं। **3193**
नम्बनै ञालम् पडैत्तवनै⋆ त्तिरु मार्बनै⋆ उम्बर् उलगिनिल् यार्क्कुम्⋆ उणर्वरियान् तन्नै⋆ क्कुम्बि नरकर्गळ् एत्तुवरेलुम्⋆ अवर् कण्डीर्⋆ एम् पल् पिरप्पिडै तोरु⋆ एम् तॊळुगुलम् ताङ्गळे॥८॥	विश्वासी प्रभु जो लक्ष्मी एवं जगत स्रष्टा ब्रह्मा को धारण करते हैं स्वर्गिकों के लिये भी अगम्य है। सुनिये! अगर कोई कुंभी नरक से भी आपकी प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे हरेक जीवन के नाथ हैं। **3194**
कुलम् ताङ्गु शादिगळ्⋆ नालिलुम् कीळ् इळिन्दु⋆ एत्तनै नलम् तान् इलाद⋆ चण्डाळ चण्डाळर्गळ् आगिलुम्⋆ वलम् ताङ्गु चक्करत्तण्णल्⋆ मणिवण्णर्कॉळ् एन्रुळ् कलन्दार्⋆ अडियार् तम् अडियार् एम् अडिगळे॥९॥	नीची जाति का अगर कोई चांडाल में भी अधम चांडाल हमारे चक्रधारी प्रभु के भक्त हों तो उनके सेवक का सेवक हमारे नाथ होंगे। **3195**
अडियार्न्द वैयम् उण्डु⋆ आलिलै अन्न वशम् शॆय्युम्⋆ पडि यादुमिल् कुळविप्पडि⋆ एन्दै पिरान् तनक्कु⋆ अडियार् अडियार् तम्⋆ अडियार् अडियार् तमक्कु⋆ अडियार् अडियार् तम्⋆ अडियार् अडियोङ्गळे॥१०॥	धरा को निगल कर हमारे प्रभु एक शिशु की तरह बाढ़ के तैरते बट पत्र पर सो गये। आपके भक्त के सेवक का सेवक भी हमारे नाथ होंगे। **3196**
‡अडियोङ्गु नूट्टवर् वीय⋆ अन्रैवरुक्करुळ् शॆय्द नॆडियोनै⋆ तॆन् कुरुगूर् शडगोपन् कुट्टवल्गळ्⋆ अडियार्न्द आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तवन् तॊण्डर्मेल् मुडिवु⋆ आर क्कर्किल्⋆ शन्मम् शॆय्यामै मुडियुमे॥११॥	कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार पद का यह दशक सौ के विरोध में पांच जनों की सहायता करने वाले प्रभु के भक्तों की प्रशस्ति है। जो इसे गा सकेंगे वे अपने कर्म के जीवन का अंत कर लेंगे। **3197**

श्रीमते रामानुजाय नमः

28 मुडियाने (3198 - 3208)

आळवार् करणङ्गळुम तामुम पेरूविडाय् प्पट्टु प्पेशुदल् ()

मुडियाने ! मूवुलगुम् तॊळुदेत्तुम्⋆ शीर् अडियाने⋆ आळ् कडलै क्कडैन्दाय् !⋆ पुळ्ळूर् कॊडियाने⋆ कॊण्डल् वण्णा !⋆ अण्डत्तुम्बरिल् नॆडियाने !⋆ एन्रु किडक्कुम् एन् नॆञ्जमे॥१॥	स्वर्गिकों से ऊंचे प्रभु ! आपने सागर मथा। पर्वत के रंगवाले प्रभु ! आपका गरूड़ चिह्नित ध्वज है। आपके चरणारविंद तीनों जगत में पूजे जाते हैं। मेरा हृदय आपही के लिये उतावला है। **3198**
नॆञ्जमे ! नीळ् नगराग⋆ इरुन्द एन् तञ्जने⋆ तण् इलङ्गैक्किरैयै च्चॆट्र नञ्जने⋆ ञालम् कॊळ्वान्⋆ कुरळ् आगिय वञ्जने⋆ एन्नुम् एप्पोदुम्⋆ एन् वाशगमे॥२॥	हमारे हृदय के किला में रहने वाले मेरे आश्रय! लंकेश के वध करने वाले प्रभु ! वामन के रूप में आकर धरा के लेने वाले प्रभु ! हमारी जीभ अनवरत आपकी प्रशंसा करती है। **3199**
वाशगमे एत्त अरुळ् शॆय्युम्⋆ वानवर् तम् नायगने⋆ नाळ् इळम् तिङ्गळै⋆ क्कोळ् विडुत्तु⋆ वेय् अगम् पाल् वॆण्णॆय्⋆ तॊडुवुण्ड आन् आयर् तायवने⋆ एन्रु तडवुम्⋆ एन् कैगळे॥३॥	इस जीभ को शब्द प्रदान करने वाले स्वर्गिकों के प्रभु! गोपवंश के रक्षक प्रभु ! गोपी के घर से मक्खन चुराकर आपने खाया एवं अर्द्धकार चांद सी मुस्कान का प्रदर्शन किया। **3200**
कैगळाल् आर⋆ तॊळुदु तॊळुदुन्नै⋆ वैगलुम् मात्तिरैं⋆ प्पोदुम् ओर् वीडिन्रि⋆ पै कॊळ् पाम्बेरि⋆ उरै परने⋆ उन्नै मॆय्कॊळ्ळ क्काण⋆ विरुम्बुम् एन् कण्गळे॥४॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले प्रभु ! बिना रूके हम दोनों हाथों से आपकी पूजा करते हैं। हमारी आंख आपके दर्शन एवं उसको अपनी दृष्टि में सदा बनाये रखने को उत्सुक रहती है। **3201**
कण्गळाल् काण⋆ वरुङ्गॊल् एन्राशैयाल्⋆ मण् कॊण्ड वामनन्⋆ एर् मगिळ्न्दु शॆल्⋆ पण् कॊण्ड पुळ्ळिन्⋆ शिरगॊलि पावित्तु⋆ तिण् कॊळ्ळ ओर्क्कुम्⋆ किडन्दॆन् शॆविगळे॥५॥	उत्सुक नयनों की ईर्ष्या में हमारे कान गरूड़ पंख की आवाज सुनने को तड़पते हैं। क्या धरा के स्वामी वामन को वे यहां लायेंगे ? **3202**
शॆविगळाल् आर⋆ निन् कीर्त्ति क्कनियॆन्नुम् कविगळे⋆ काल प्पण् तेन्⋆ उरैप्प त्तुट्र⋆ पुवियिन्मेल्⋆ पॊन् नॆडुम् चक्कर त्तुन्नैये⋆ अविविन्रि आदरिक्कुम्⋆ एनदावियॆ॥६॥	दिव्य चक्र धारण करने वाले प्रभु! जबकि हमारे कान संगीत के रस से सरोबोर आपकी प्रशस्ति गीत को सुन रहे हैं मेरा हृदय आपके सहवास के लिये उत्सुक हो रहा है। **3203**

आविये ! आरमुदे !⋆ एन्नै आळुडै⋆ तूवियम् पुळ्ळुडैयाय् !⋆ शुडर् नेमियाय्⋆ पावियेन् नॆञ्जम्⋆ पुलम्ब प्पलगालुम्⋆ कूवियुम् काणप्पॆरेन्⋆ उन कोलमे ॥ ७ ॥	हमारे हृदय के अमृत, हमारे नाथ! अपने वेदनाग्रस्त हृदय से हम आपको सदा बुलाते हैं। तेजोमय चक्र धारण करने वाले प्रभु! गरूड़ पर सवार हो आप आइये। हाय दुष्ट मैं ! आप अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन नहीं देते। **3204**
कोलमे ! तामरै क्कण्णदोर्⋆ अञ्जन नीलमे⋆ निन्रॆनदावियै⋆ ईर्गिन्र शीलमे⋆ शॆन्ऱ शॆल्लादन⋆ मुन्निलाम् कालमे⋆ उन्नै एन्नाळ् कण्डु कॊळ्वने ॥ ८ ॥	सुन्दर कमल सी आंखों एवं काजल के समान काले रंग वाले प्रभु! हे हमारे हृदय को तोड़ने वाले श्रेयवान प्रभु ! भूत वर्तमान एवं भविष्य को धारण करने वाले प्रभु! कब हम आपको जी भर कर देखेंगे। **3205**
कॊळ्वन् नान् मावलि⋆ मूवडि ता एन्र कळ्वने⋆ कञ्जनै वञ्जित्तु⋆ वाणनै उळ् वन्मै तीर⋆ ओर् आयिरम् तोळ् तुणित्त⋆ पुळ् वल्लाय्⋆ उन्नै एञ्ञान्ऱ पॊरुन्दुवने ॥ ९ ॥	तीन पग मांगकर सारी धरा को ले लेने वाले छलिया प्रभु! कंस का नाश करने वाले तथा गरूड़ पर सवारी करने वाले प्रभु ! बाणासुर के हजार हाथ को काटने वाले प्रभु! कब हम आपसे मिलेंगे। **3206**
पॊरुन्दिय मा मरुदिन् इडै पोय⋆ एम् पॆरुन्दगाय्⋆ उन् कळल्⋆ काणिय पेदुट्टु⋆ वरुन्दि नान्⋆ वाशग मालै कॊण्डु⋆ उन्नैये इरुन्दिरुन्दु⋆ एत्तनै कालम् पुलम्बुवने ॥ १० ॥	दो घने मरूदु के वृक्ष में घुसने वाले प्रभु ! अपनी गीत से आपकी प्रशस्ति गाते हुये हम आपके मात्र चरणारविंद के दर्शन के लिये अश्रुधारा बहा रहे हैं।हाय ! कबतक हम यहां रहें ? **3207**
‡पुलम्बु शीर्⋆ प्पूमि अळन्द पॆरुमानै⋆ नलम् कॊळ् शीर्⋆ नन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॊल् वलम् कॊण्ड आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् ओर्पत्तु इलङ्गु वान्⋆ यावरुम् एऱुवर् शॊन्नाले ॥ ११ ॥	समृद्ध कुरूगुर नगर के शडगोपन के सुविचारित हजार गीतों का यह दशक धरा को मापने वाले प्रभु की प्रशस्ति गान है।इसे गाने वाले स्वर्गारोही होंगे। **3208** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **29 शोन्नाल् (3209 - 3219)** **मानिडरै प्पाडादु मादवनै एत्तुम् एनल्** (ा)	
‡शॊन्नाल् विरोदम् इदु⋆ आगिलुम् शॊल्लुवन् केण्मिनो⋆ एन् नाविल् इन् कवि⋆ यान् ऒरुवरक्कुम् कॊडुक्किलेन्⋆ तॆन्ना तॆनावॆन्रु⋆ वण्डु मुरल् तिरुवेङ्गडत्तु⋆ एन्नानै एन्नप्पन्⋆ एम् पॆरुमान् उळनागवे॥१॥	यह कहना तो कठिन है परंतु मैं कहूंगा। सुनिये! वेंकटम पर्वत के प्रभु हमारे प्रभु, माता एवं पिता हैं, अतः हम अपनी मधुर गीत अन्य किसी की प्रशस्ति में नहीं गा सकते । **3209**
उळनागवे एण्णि⋆ तन्नै ऒन्राग तन् शॆल्वत्तै⋆ वळना मदिक्कुम्⋆ इम् मानिडत्तै क्कवि पाडियॆन्⋆ कुळनार् कळनि शूळ्⋆ कण्णन् कुरुङ्गुडि मॆय्म्मैये⋆ उळनाय एन्दैयै⋆ एन्दै पॆम्मानै ऒऴियवे॥२॥	इन मर्त्यों की प्रशस्ति का क्या लाभ जो अपनी संपत्ति एवं अपने आप को ऊंची श्रेणी का मानते हैं जबकि हमारे प्रभु एवं पिता उपजाऊ क्षेत्रों से घिरे कुरूंगुडी में रहते हैं ? **3210**
ऒऴिवॊन्रिल्लाद⋆ पल्लूऴिदोरुऴि निलाव⋆ प्पोम् वऴियै त्तरुम् नङ्गळ्⋆ वानवर् ईशनै निर्क प्पोय्⋆ कऴिय मिग नल्ल वान्⋆ कवि कॊण्डु पुलवीर्गाळ्⋆ इऴिय क्करुदि⋆ ओर् मानिडम् पाडल् एन्नावदे॥३॥	हे नैसर्गिक दक्षता वाले कविगन ! जब स्वर्गिकों के देव, हमारे प्रभु, मार्ग को प्रशस्त करने हेतु वहां विराजमान हैं, तो तुम झुककर इन मर्त्यों की प्रशस्ति गाते हो, इसका क्या लाभ ? **3211**
एन्नावदॆत्तनै नाळैक्कु प्पोदुम्⋆ पुलवीर्गाळ्⋆ मन्ना मनिशरै प्पाडि⋆ प्पडैक्कुम् पॆरुम् पॊरुळ्⋆ मिन्नार् मणि मुडि⋆ विण्णवर् तादैयै प्पाडिनाल्⋆ तन्नागवे कॊण्डु⋆ शन्मम् शॆय्यामै कॊळ्ळुमे॥४॥	क्षणभंगुर लोगों की प्रशंसा गान करने वाले कविगन ! कितना तुम्हें मिलता है एवं कितने दिनों तक वह काम आता है ? तेजोमय मुकुट वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ। वे तुम्हें अपना बना लेंगे एवं सर्वदा के लिये पुरस्कृत करेंगे। **3212**
कॊळ्ळुम् पयन् इल्लै⋆ क्कुप्पै किळरत्तन्न शॆल्वत्तै⋆ वळ्ळल् पुगऴ्न्दु⋆ नुम् वाय्मै इऴक्कुम् पुलवीर्गाळ्⋆ कॊळ्ळ क्कुरैविलन्⋆ वेण्डिट्टॆल्लाम् तरुम् कोदिल्⋆ एन् वळ्ळल् मणिवण्णन् तन्नै⋆ क्कवि शॊल्ल वम्मिनो॥५॥	शब्दरचना में दक्ष कविगन ! निरर्थक कचरा को अपना धन समझते हो। आओ और परम उदार सर्वसुयोग्य प्रभु की प्रशस्ति गाओ। आप ही तुम्हारी आवश्यकताओं की अक्षय पूर्ति करेंगे। **3213**

वम्मिन् पुलवीर् !⋆ नुम् मेय् वरुत्ति क्कै शेय्दुयम्मिनो⋆ इम् मन्नुलगिल्⋆ शेल्वर् इप्पोदिल्लै नोक्किनोम्⋆ नुम् इन् कवि कोण्डु⋆ नुम् नुम् इट्टा देय्वम् एत्तिनाल्⋆ शेम् मिन् शुडर् मुडि⋆ एण् तिरुमाल्लुक्कु च्चेरुमे ॥६॥	आओ कविगन ! अपने शरीर के अवयवों से अभ्यास करते हुए हमने देखा है इस महान धरा पर कोई भी संपन्न नहीं है। उन्हें अपने देव की प्रशस्ति गान करने दो अंततः सब तेजोमय मुकुट वाले हमारे तिरूमल प्रभु के पास ही आयेगा। **3214**
शेरुम् कोंडै पुगळ्⋆ एल्लै इलानै⋆ ओरायिरम् पेरुम् उडैय पिरानै अल्लाल्⋆ मट्रु यान् किलेन्⋆ मारि अनैय कै⋆ माल् वरै ओक्कुम् तिण् तोळ् एन्रु⋆ पारिल् ओर् पट्रैयै⋆ प्पच्चै प्पशुम् पोय्गाळ् पेशवे ॥७॥	असीम एवं परमउदार प्रभु के हजारों नाम हैं। एक मात्र आप ही हमारी प्रशस्ति के लिये सुयोग्य हैं। हम मर्त्यो के लिये मिथ्यावादन नहीं कर सकते, जैसे कि, 'भुजायें पर्वतनुमा हैं' 'हाथ मेघ की तरह है'। **3215**
वेयिन् मल्लिपुरै तोळि⋆ पिन्नैक्कु मणाळनै⋆ आय पेरुम् पुगळ्⋆ एल्लै इलादन पाडिप्पोय्⋆ कायम् कळित्तु⋆ अवन् ताळ् इणैक्कीळ् प्पुगुम् कादलन्⋆ माय मनिशरै⋆ एन् शोल्ल वल्लेन् एन् वाय्कोण्डे ॥८॥	असीम गौरव के प्रभु बांस समान सुघड़ बाहों वाली नप्पिनाय के दुलहा हैं। हमारा हृदय आपके वदन का दर्शन कर चरणारविंद को पकड़ना चाहता है। मरणशील मनुष्य की कैसे मैं प्रशंसा कर सकता हूं ? **3216**
वाय् कोण्डु मानिडम् पाड वन्द⋆ कवियेन् अल्लेन्⋆ आय् कोण्ड शीर् वळ्ळल्⋆ आळि प्पिरान् एनक्के उळन्⋆ शाय् कोण्ड इम्मैयुम् शादित्तु⋆ वानवर् नाट्टैयुम्⋆ नी कण्डु कोळ् एन्रु⋆ वीडुम् तरुम् निन्रु निन्रे ॥९॥	मरणशील मनुष्य की प्रशिस्त गाने के लिये हमारा जन्म नहीं हुआ है। महान सदगुण वाले उदार चक्रधारी प्रभु हमारे विषय वस्तु हैं। आप हमारे जीवन का साधन इहलोक में तथा परलोक में प्रदान करते हैं। यहां तक कि इन्द्र का प्रभार भी हमें ही सौंप देते हैं। **3217**
निन्रु निन्रु पल नाळ् उय्क्कुम्⋆ इव्वुडल् नीङ्गिप्पोय्⋆ शेन्रु शेन्रागिलुम् कण्डु⋆ शन्मम् कळिप्पान् एण्णि⋆ ऑन्रि ऑन्रि उलगम् पडैत्तान्⋆ कवि आयिनेर्कु⋆ एन्रुम् एन्रुम् इनि⋆ मट्रोरुवर् कवि एर्कुमे ॥१०॥	इस लंबी जीवनयात्रा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आप मध्य के सुखद विश्रामस्थलों का प्रावधान करते हैं। सर्वदा के लिये आपका कवि होकर क्या मैं दूसरे के लिये कभी गा सकता हूं ? **3218**
‡एर्कुम् पेरुम् पुगळ्⋆ वानवर् ईशन् कण्णन् तनक्कु⋆ एर्कुम् पेरुम् पुगळ्⋆ वण् कुरुगूर् च्चडगोपन् शोल्⋆ एर्कुम् पेरुम् पुगळ्⋆ आयिरत्तुळ् इवैयुम् ओर् पत्तु⋆ एर्कुम् पेरुम् पुगळ्⋆ शोल्ल वल्लार्क्किल्लै शन्ममे ॥११॥	कुरूगुर नगर के प्रसिद्ध शडगोपन से विरचित त्रुटीहीन हजार पद का यह दशक स्वर्गिकों के गौरवशाली कृष्ण प्रभु की यशगाथा है जिसके गान से पुनर्जन्म से छुटकारा मिल जाता है। **3219** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

30 जन्मम् पलपल (3220 - 3230)

तिरूमाल्शीर परवप्पेट्र एनक्कु ओरू कुरैयुम् इल्लै एनल्

जन्मम् पल पल शॆय्दु वॆळिप्पट्टु★ श्शङ्गॊडु चक्करम् विल्★ ऑण्मै उडैय उलक्कै ऑळ वाळ्★ तण्डु कॊण्डु पुळ्ळूर्न्दु★ उलगिल् वन्मै उडैय अरक्कर्★ अशुररै माळ प्पडै पॊरुद★ नन्मै उडैयवन् शीर् परव प्पॆट्★ नान् ओर् कुरैविल्लने॥१॥	असुर कुल की प्रताड़ना से मुक्ति के लिये गरूड़ारोही चक्र शंख गदा धनुष एवं खड्ग धारण करने वाले प्रभु ने इस जगत में कई अवतार लिये। आपकी प्रशस्तिगान हमारा सौभाग्य है एवं हमें किसी चीज की कोई कमी नहीं है। **3220**
कुरैविल् तडङ्गडल् कोळ् अरवेरि★ तन् कोल च्चॆन्तामरैक्कण्★ उरैववन् पोल ओर् योगु पुणर्न्द★ ऑळि मणि वण्णन् कण्णन्★ करैयणि मूक्कुडै प्पुळ्ळि क्कडावि★ अशुररैक्कायन्द अम्मान्★ निरै पुगळ् एत्तियुम् पाडियुम् आडियुम्★ यान् ऑरु मुट्टिल्लने॥२॥	तेजोमय मणि के रंग के कृष्ण प्रभु गहरे समुद्र में शेष शय्या पर अर्द्धनिलमित आंख से विश्राम करते हुए योग रत रहते हैं। लाल चोंच वाले गरूड़ पर सवार हो आपने अनेकों शत्रुओं का नाश किया। आपकी प्रशस्ति गाते एवं नाचते हुए हम सभी आवश्यकता से मुक्त हो गये हैं। **3221**
मुट्टिल् पल् पोगत्तॊरु तनि नायगन्★ मूवुलगुक्कुरिय★ कट्टियै त्तेनै अमुदै★ नन् पालैक्कनियै क्करुम्बु तन्नै★ मट्टविळ् तण्णम् तुळाय् मुडियानै वणङ्गि★ अवन् तिरत्तु प्पट्ट पिन्नै★ इरैयागिलुम्★ यान् एन् मनत्तु प्परिविल्लने॥३॥	तीनों जगत के प्रभु शक्कर का ढ़ेला, दूध, शहद, फल, गन्ना तथा अमृत के समान मीठे हैं। सदा एवं सभी समय में आप अपनी सृष्टि से आनन्द लेते हैं। आपके भक्त बनने से हमारी कोई चिन्ता नहीं बच गयी। **3222**
परिविन्रि वाणनै क्कात्तुम्★ एन्रन्रु पडैयॊडुम् वन्दॆदिर्न्द★ तिरिपुरम् शॆट्रवनुम् मगनुम्★ पिन्नुम् अङ्गियुम् पोर् तॊलैय★ पॊरु शिरै प्पुळ्ळै क्कडाविय मायनै★ आयनै प्पॊर् चक्कर- त्तरियिनै★ अच्चुतनै प्पट्रि★ यान् इरैयेनुम् इडर् इलने॥४॥	गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु दिव्य चक्र धारण करते हैं। शक्तिशाली बाणासुर से आपने कई लड़ाईयां लड़ी एवं शिव, कुमार, तथा अग्नि की रक्षा की। आपकी प्रशस्ति 'हे अच्युत, हरि, गोपाल' गाने से हमें कोई यातना नहीं सताती। **3223**
इडर् इन्रिये ऑरु नाळ् ऑरु पोळ्दिल्★ एल्ला उलगुम् कळिय★ पडर्पुगळ् प्पार्त्तनुम् वैदिगनुम्★ उडन् एरत्तिण् तेर् कडवि★ शुडर् ऑळियाय् निन्र तन्नुडै च्चोदियिल्★ वैदिगन् पिळ्ळैगळै★ उडलॊडुम् कॊण्डु कॊडुत्तवनै प्पट्रि★ ऑन्रुम् तुयर् इलने॥५॥	अर्जुन तथा ब्राह्मण के साथ उसी दिन उसी क्षण सरलता के साथ रथ चलाकर यहां से बाहर अपने गौरवशाली लोक में गये एवं ब्राह्मण को उसका पुत्र वापस ला दिया। अतः हम चिंता छोड़ आपकी प्रशस्ति गाते हैं। **3224**

तुयरिल् शुडर् ऑळि तन्नुडै च्चोदि⋆ निन्र् वण्णम् निर्कवे⋆ तुयरिल् मलियुम् मनिशर् पिरवियिल्⋆ तोन्रि कण् काण वन्दु⋆ तुयरङ्गळ् शेय्दु नन् देय्वनिलै उलगिल्⋆ पुग उयक्कुम् अम्मान्⋆ तुयरम् इल् शीर् क्कण्णन् मायन् पुगळ् यान् ओर् तुन्बम् इलने॥६॥	अपने नैसर्गिक तेज को अक्षुण्ण रखते हुए आप इस अधम धरा पर नाशवान शरीर से अवतार लिये एवं अनेकों महान कार्य करते हुए अपनी ईश्वरीय प्रभुता स्थापित की। पर्वतनुमा गौरवगाथा के कृष्ण की प्रशस्ति गाकर हम चिंतामुक्त हो गये हैं। **3225**
तुन्बमुम् इन्बमुम् आगिय⋆ शेय्विनैयाय् उलगङ्गळुमाय्⋆ इन्बमिल् वेन्नरगागि⋆ इनिय नल् वान् शुवर्क्कङ्गळुमाय्⋆ मन्बल् उयिर्गळुम् आगि⋆ प्पल पल माय मयक्कुगळाल्⋆ इन्बुरुम् इव्विळैयाट्टुडैयानै प्पेट्रु⋆ एदुम् अल्लल् इलने॥७॥	माया के अनेक प्रयोगों से आपने सुख एवं दुख के कर्म, अनगिनत जीव, नीच नरक, एवं सुखद स्वर्ग की रचना की। ये सारे आपके नैसर्गिक लीला हैं।सभी चिंता छोड़कर हम आपकी प्रशस्ति गाते हैं। **3226**
अल्ललिल् इन्बम् अळविरन्देङ्गुम्⋆ अळगमर् शूळ् ऑळियन्⋆ अल्लि मलर् मगळ् पोग मयक्कुगळ्⋆ आगियुम् निर्कुम् अम्मान्⋆ एल्लैयिल् ञानत्तन् ञानम् अग्ते कोण्डु⋆ एल्ला क्करुमङ्गळुम् शेय्⋆ एल्लैयिल् मायनै क्कण्णनै त्ताळ् पट्रि⋆ यान् ओर् तुक्कम् इलने॥८॥	सभी कार्यों के कर्ता कृष्ण लक्ष्मी को देखकर आनंदित होते हैं। शुद्ध अप्रमेय आनंद, प्रभापूर्ण छटा से आच्छादित, असीमित ज्ञान वाले प्रभु आप स्वतः प्रवुद्ध हैं। आपके चरणारविंद की प्रशस्ति करने के फलस्वरूप हम चिंता से मुक्त हैं। **3227**
तुक्कमिल् ञान च्चुडर् ऑळि मूर्त्ति⋆ तुळाय् अलङ्गल् पेरुमान्⋆ मिक्क पल् मायङ्गळाल् विगिर्दम् शेय्दु⋆ वेण्डुम् उरुवु कोण्डु⋆ नक्क पिरानोडयन् मुदलाग⋆ एल्लारुम् एवैयुम्⋆ तन्नुळ् ऑक्क वोडुङ्ग विळुङ्ग वल्लानै प्पेट्रु⋆ ऑन्रुम् तळर्विलने॥९॥	तुलसी माला धारण करने वाले तेजोमय ज्ञान के स्वरूप प्रभु अपने आश्चर्यमय कृत्यों से अनेकों स्थल पर तथा कीड़ाओं में प्रकट हुए हैं।एक क्षण में आपने शिव ब्रह्मा एवं अन्यों को निगल लिया। आपके चरणारविंद की प्रशस्ति करने के फलस्वरूप हम चिंता से मुक्त हैं। **3228**
तळर्विन्रिये एन्रुम् एङ्गुम् परन्द⋆ तनिमुदल् ञानम् ऑन्राय्⋆ अळवुडै ऐम्पुलन्गाळ् अरियावगैयाल्⋆ अरुवागि निर्कुम्⋆ वळर् ऑळि ईशनै मूर्त्तियै⋆ प्पूदङ्गळ् ऐन्दै इरु शुडरै⋆ किळर् ऑळि मायनै क्कण्णनै त्ताळ् पट्रि⋆ यान् एन्रुम् केडिलने॥१०॥	तेजोमय ज्ञान के प्रथम कारण प्रभु स्वरूपविहीन इन्द्रियातीत होकर स्थित हैं। आप तेजोमय कृष्ण, प्रभापूर्ण पहचान, ज्योतिपुंज एवं तत्व हैं। आपकी सेवा कर हम यातना से मुक्त हुए हैं। **3229**
केडिल् विळु प्पुगळ् क्केशवनै⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शोन्न⋆ पाडल् ओर् आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुम् पयिट्र वल्लार्गट्कु⋆ अवन् नाडुम् नगरमुम् नन्गुडन् काण⋆ नलनिडै ऊर्दि पण्णि⋆ वीडुम् पेरुत्तित्तन् मूवुलगुक्कुम् तरुम्⋆ ऑरु नायगमे॥११॥	हजार पद का यह दशक, नगर एवं देश प्रसिद्ध, कुरूगुर शडगोपन के हैं जो केशव की गौरव गाथा है एवं मुक्ति का साधन है तथा यह सर्वदा के लिये विश्व की सार्वभौमता प्रदान करता है।**3230** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

31 ओरू नायगम् (3231 – 3241)

शेलवम् निलैयामैयुम् तिरूमालडिमैयिन् निलैपेरूम्

धनसंपत्ति क्षणिक हैं एवं आत्मज्ञान भी निम्नवर्ग का है, अतः नारायण की सेवा में लगो।

‡ऑरु नायगमाय्⋆ ओड उलगुडन् आण्डवर्⋆ करु नाय् कवरन्द कालर्⋆ शिदैगिय पानैयर्⋆ पॅरु नाडु काण⋆ इम्मैयिल्ले पिच्चै ताम् कॉळ्वर्⋆ तिरुनारणन् ताळ्⋆ कालम्पॅर च्चिन्दित्तुय्म्मिनो॥१॥	तिरूनारायण के चरणाविंद का ध्यान कर शीघ्र जागो। विश्व के एकछत्र राजा एक दिन भिक्षा में गये। काली जादू से पैर आहत हो गया, पात्र टूट गया तथा लज्जित होकर संसार से तिरस्कृत हुए। **3231**
उय्म्मिन् तिरै कॉणरन्दु⋆ एन्रुलगाण्डवर्⋆ इम्मैये तम् इन्शुवै मडवारै⋆ प्पिरर् कॉळ्ळ त्ताम् विट्टु⋆ वॅम्मिन् ऑळि वॅयिल्⋆ कानगम् पोय् क्कुमै तिन्बर्गळ्⋆ शॅम्मिन् मुडि त्तिरुमालै⋆ विरैन्दडि शेर्मिनो॥२॥	शीघ्र आकर तेजोमय मुकुटवाले प्रभु के चरणारविंद को पकड़ो। जो प्रजा पर शासन करते हैं और जिन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है अब दूसरों के लिये महल को छोड रहे हैं जो रानी का आनंद लेंगे। ये अब जंगल के तप्त धूप में यातना का जीवन बितायेंगे। **3232**
अडिशेर् मुडियिनर् आगि⋆ अरशर्गळ् ताम् तॉळ⋆ इडिशेर् मुरशङ्गळ्⋆ मुट्रत्तियम्ब इरुन्दवर्⋆ पॉडिशेर् तुगळाय् पोवर्गळ्⋆ आदलिन् नॉक्कॅन⋆ क्कडिशेर् तुळाय् मुडि⋆ क्कण्णन् कळल्गळ् निनैमिनो॥३॥	शीघ्र सुगंधित तुलसी की माला वाले कृष्ण के चरणारविंद का ध्यान करो। वे जो अन्य राजा पर शासन किये जिन्होंने इनके चरण छूये सामने के प्रवेश द्वार में बड़े नगाड़े की आवाज के साथ धूल में मिल गये। **3233**
निनैप्पान् पुगिल् कडल् एक्कलिन्⋆ नुण्मणलिल् पलर्⋆ एनैत्तोर् उगङ्गळुम्⋆ इव्वुलगाण्डु कळिन्दवर्⋆ मनैप्पाल् मरुङ्गर्⋆ माय्दल् अल्लाल् मट्रु क्कण्डिलम्⋆ पनै त्ताळ् मद गळिट्रुवन्⋆ पादम् पणिमिनो॥४॥	गिनना शुरू करो।बालू के ढ़ेर में बालू कण से ज्यादा राजागण धरा पर शासन करके चले गये। जिनके महल धराशायी हो गये उनके बारे में आगे की जानकारी नहीं है। मदमत्त हाथी की हत्या करने वाले प्रभु के चरणारविंद की पूजा करो। **3234**
पणिमिन् तिरुवरुळ् एन्नुम्⋆ अञ्जीद प्पैम् पूम् पळ्ळि⋆ अणि मॅन् कुळलार्⋆ इन्ब क्कलवि अमुदुण्डार्⋆ तुणि मुन्बुनाल⋆ प्पल्लेळैयर् ताम् इळिप्प शॅल्वर्⋆ मणि मिन्नु मेनि⋆ नम् मायवन् पेर् शॉल्लि वाळ्मिनो॥५॥	जिन्होंने जूड़े वाली के साथ सुखद समय बिताये एवं जिनके यहां नारियां अच्छे सुगंधित फूल की शय्या तैयार करने की प्रतियोगिता में रहती थीं अब एक कटि वस्त्र पहने घूमते हैं जिनका सबलोग तिरस्कार एवं उपहास करते हैं। मणि वर्ण के प्रभु के नाम का गान कर जीवन बिताओ। **3235**
वाळ्न्दार्गळ् वाळ्न्ददु⋆ मा मळै मॉक्कुळिन् मायन्दु मायन्दु⋆ आळ्न्दार् एन्रल्लाल्⋆ अन्रु मुदल् इन्ऱुरुदिया⋆ वाळ्न्दार्गळ् वाळ्न्दे निर्पर्⋆ एन्बदिल्लै निर्कुरिल्⋆ आळ्न्दार् कडर्पळ्ळि⋆ अण्णल् अडियवर् आमिनो॥६॥	जो सुखद जीवन बिताये वे बड़े झरना के बुदबुदे की तरह थे। जो सर्वदा के लिये जीवित रहे वे शून्य हो गये। अगर तुम ठीक से जीवित रहते हुए अपनी स्थिति बनाये रहना चाहते हो तो गहरे सागर में शयन करने वाले प्रभु की सेवा करो। **3236**
आमिन् शुवैयवै⋆ आरॊडडिशिल् उण्डारन्दपिन्⋆ तू मॅन् मॉळि मडवार्⋆ इरक्क प्पिन्नुम् तुट्रुवार्⋆ ईमिन् एमक्कॉरु तुट्रेन्रु⋆ इडरुवर् आदलिन्⋆ कोमिन् तुळाय् मुडि⋆ आदियञ्जोदि गुणङ्गळे॥७॥	छः रस के भोजन का आनंद लेने वाले जो मृदु भाषी किशोरियों के साथ पुनः भोजन का आनंद लेते अब दर दर में अन्न के एक दाना के लिये तरसते घूम रहे हैं।तुलसी की माला वाले प्रभु के गौरव का स्मरण करो। **3237**

गुणम् कॊळ् निरै पुगळ् मन्नर्★ कॊडैक्कडन् पूण्डिरुन्दु★ इणङ्गि उलगुडन् आक्किलुम्★ आङ्गवनै इल्लार्★ मणम् कॊण्ड गोपत्तु मन्नियुम्★ मीळ्वर्गळ् मीळ्विल्लै★ पणम् कॊळ् अरवणैयान्★ तिरुनामम् पडिमिनो॥८॥	दयावान छत्रधारी राजा जो उदार होकर धनराशि बांटते हैं विश्वासभाजन बन सुखद शासन को भोग सकते हैं परंतु वे भी एकदिन धराशायी हो जाते हैं। स्थायित्व की प्राप्ति के लिये शेषशायी प्रभु का नाम स्मरण करना सीखो। **3238**
पडि मन्नु पल् कलन् पट्टोडरुत्तु★ ऐम्बुलन् वॆन्रु★ शॆडि मन्नु कायम् शॆट्टार्गळुम्★ आङ्गवनै इल्लार्★ कुडि मन्नुम् इन् शुवर्ग्गम् एय्दियुम्★ मीळ्वर्गळ् मीळ्विल्लै★ कॊडि मन्नु पुळ्ळुडै★ अण्णल् कळल्गळ् कुरुगुमिनो॥९॥	जिन्होंने तृष्णा का तिरस्कार कर दिया है एवं शरीर को सुख से इसतरह वंचित रखा है कि उसपर घास उगने लगे ये लोग भी लक्ष्यहीन दिखते हैं। स्वर्ग की एक सुखद अवधि का आनंद ले वे वापस आ जाते हैं। गरूड़ध्वज प्रभु के शरण में आओ और फिर कभी नहीं लौटेगे। **3239**
कुरुग मिगवुणर्वत्तॊडु नोक्कि★ एल्लाम् विट्ट★ इरुगल् इरप्पॆन्नुम्★ ञानिक्कुम् अप्पयन् इल्लैयेल्★ शिरुग निनैवदोर् पाशम् उण्डाम्★ पिन्नुम् वीडिल्लै★ मरुपगलिल् ईशनै प्पट्रि★ विडाविडिल् वीडग्दे॥१०॥	सबकुछ त्याग कर चेतन इन्द्रियों पर ध्यान करने वाले ऋषिगन आत्मा के स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। लेकिन स्मृति बनी रहती है जो उन्हें खीचकर वासना पर ले आती है एवं तब वे मुक्ति विहीन रहते हैं। अविनाशी प्रभु के चरण को पकड़े रहो क्योंकि यही एकमात्र मुक्ति है। **3240**
अग्दे उय्य प्पुगुम् आरॆन्रु★ कण्णन् कळल्गळ्मेल्★ कॊय् पूम् पॊळिल् शूळ्★ कुरुगूर् च्चडगोपन् कुट्रेवल्★ शॆय् कोलत्तायिरम्★ शीर् त्तॊडै प्पाडल् इवै पत्तुम्★ अग्कामल् कर्पवर्★ आळ् तुयर् पोय् उय्यर् पाल्रे॥११॥	फूल के घने बाग वाले कुरूगुर के शडगोपन से विरचित सुन्दर हजार पद का यह दशक एकमात्र आश्रय कृष्ण के चरणाविंद की यशगाथा है। जो इसे सीख लेंगे वे चिंता की गह्वर से निकलकर ऊंचे पद प्राप्त करेंगे। **3241** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

32 पालनाय् (3242 -3252)

तलैमगळ् निलैकण्डु ताय् इरङ्गल्

नायकी की मां की भूमिका में - 1

‡बालनाय्⋆ एऴ् उलगुण्डु परिविन्रि⋆ आल् इलै⋆ अन्न वशम् शॆय्युम् अण्णलार्⋆ ताळ् इणैमेल् अणि⋆ तण्णन् तुळाय् एन्रे मालुमाल्⋆ वल्विनैयेन्⋆ मड वल्लियॆ॥१॥	हाय ! सात लोक को सरलता से निगलकर बटपत्र पर एक शिशु की तरह सोने वाले प्रभु के चरणाविंद की शीतल तुलसी मांगते हुए हमारी क्षीणकाय बेटी अचेत हो जाती है। **3242**
वल्लि शेर् नुण्णिडै⋆ आयच्चियर् तम्मॊडुम्⋆ कॊल्लैमै शॆय्दु⋆ कुरवै पिणैन्दवर्⋆ नल् अडिमेल् अणि⋆ नारु तुळाय् एन्रे शॊल्लुमाल्⋆ शूऴ् विनैयाट्टियेन्⋆ पावैयॆ॥२॥	मेरी बेटी एक दुखदायी चक्रीय आवृति में पड़ गयी है। प्रभु के श्रीचरण से सुगंधित तुलसी मांगती है जिन्होंने लोक लाज खोकर लता सी पतली कमरवाली गोपियों के साथ दैहिक आनंद की क्रीड़ा में प्रवृत हुये। **3243**
पावियल् वेद⋆ नल् मालै पल कॊण्डु⋆ देवर्गळ् मा मुनिवर्⋆ इरैञ्ज निन्र⋆ शेवडि मेल् अणि⋆ शॆम् पॊन् तुळाय् एन्रे कूवुमाल्⋆ कोळ् विनै आट्टियेन्⋆ कोदैयॆ॥३॥	हे वेदना की घनी छाया! वैदिक ऋषि एवं स्वर्गिकों से प्रशंसित प्रभु के चरण को सुशोभित करने वाली सुनहली तुलसी की माला के लिये हमारी बेटी विलाप कर रही है। **3244**
कोदिल वण् पुगऴ्⋆ कॊण्डु शमयिगळ्⋆ पेदङ्गळ् शॊल्लि⋆ प्पिदट्टुम् पिरान् परन्⋆ पादङ्गळ् मेल् अणि⋆ पैम् पॊन् तुळाय् एन्रे ओदुमाल्⋆ ऊऴ्विनैयेन्⋆ तडन् तोळियॆ॥४॥	उच्चाभिलाषी दार्शनिकों से प्रशंसित प्रभु के चरण को सुशोभित करने वाली सुनहली तुलसी की माला के लिये मेरी पापिनी बेटी बड़बड़ाती रहती है। **3245**
तोळि शेर् पिन्नै पॊरुट्टु⋆ एरुदेऴ् तऴी इ- क्कोळियार्⋆ कोवलनार्⋆ कुड क्कूत्तनार्⋆ ताळ् इणै मेल् अणि⋆ तण्णन् तुळाय् एन्रे नाळु नाळ्⋆ नैगिन्रदाल्⋆ एन्रन् मादरे॥५॥	प्रभु ने गोपकिशोर के रूप में पात्र के साथ नृत्य किया तथा नप्पिनाय के हाथ के लिये सात वृषभों का वध किया। उस प्रभु के चरण की शीतल तुलसी माला का स्मरण कर मेरी सुन्दर बेटी हर दिन क्षीण होती जा रही है। **3246**

मादर् मा मण्मडन्दै पॅारुट्टु⋆ एनम् आय्⋆ आदियङ्गालत्तु⋆ अगल् इडम् कीण्डवर्⋆ पादङ्गळ् मेल् अणि⋆ पैम् पॅान् तुळाय् एन्रे ओदुम्माल्⋆ एय्दिनळ्⋆ एन्रन् मडन्दैये॥६॥	सृष्टि के प्रारंभ में प्रभु ने सूकर के रूप में धरा देवी को प्रलय जल से बाहर निकाला। उस प्रभु के चरण की सुनहली तुलसी माला की चाह को बार बार दुहराते हुए मेरी बेटी विक्षिप्त हो गयी है। **3247**
मडन्दैयै⋆ वण् कमल त्तिरुमादिनै⋆ तडम् कॅाळ् तार् मार्बिनिल्⋆ वैत्तवर् ताळिन्मेल्⋆ वडम् कॅाळ् पूम् तण्णन् तुळाय् मलरक्के⋆ इवळ् मडङ्गुमाल्⋆ वाणुदलीर्!⋆ एन् मडक्कॅाम्बे॥७॥	हे चमकते ललाट वाली नारियों! मेरी बेटी उस प्रभु के चरण की शीतल सुगंधित तुलसी की माला के लिये उतावली है जो अपने वक्षस्थल पर कमलनिवासिनी लक्ष्मी को रखते हैं। **3248**
कॅाम्बु पोल् शीदै पॅारुट्टु⋆ इलङ्गै नगर्⋆ अम्बॅरि उयत्तवर्⋆ ताळ् इणैमेल् अणि⋆ वम्बविळ् तण्णन् तुळाय्⋆ मलरक्के इवळ् नम्बुमाल्⋆ नान् इदरॅकॅन् शॅय्गेन्⋆ नङ्गैमीर्!॥८॥	हे नारियों! मैं क्या करूं ? मेरी बेटी उस प्रभु के चरण की सुगंध विखेरती तुलसी की माला के लिये उत्कट है जिन्होंने अपनी प्रेयसी सीता के प्रेम के लिये बाणों से लंका को जला दिया। **3249**
नङ्गैमीर्! नीरुम्⋆ ओर् पॅण् पॅट्रु नल्गिनीर्⋆ एङ्ङने शॅाल्लुगेन्⋆ यान् पॅट्र एळैयै⋆ शङ्गेन्नुम् चक्करम् एन्नुम्⋆ तुळाय् एन्नुम्⋆ इङ्ङने शॅाल्लुम्⋆ इरा प्पगल् एन् शॅय्गेन्॥९॥	हे नारियों! आप लोग भी बेटी वाली हैं और उन्हें प्यार से पाला है।कैसे मैं अपनी दुखी बेटी की वेदना को बताऊं ? रात दिन वह शंख, चक, एवं तुलसी बड़बड़ाती रहती है। हाय ! मैं क्या करूं ? **3250**
एन् शॅय्गेन् एन्नुडै प्पेदै⋆ एन् कोमळम्⋆ एन् शॅाल्लुम्⋆ एन् वशमुम् अल्लळ् नङ्गैमीर्⋆ मिन् शॅय् पूण् मार्बिनन्⋆ कण्णन् कळल् तुळाय्⋆ पॅान् शॅय् पूण्⋆ मॅन् मुलैक्कॅन्रु मॅलियुमे॥१०॥	हे नारियों! मैं क्या करूं ? मेरी मूर्खा सुकोमल बेटी हमारी सलाह नहीं सुनती और न तो हमारा आदेश मानती है। आभूषणों से सुशोभित कृष्ण के चरणों की तुलसी माला के लिये क्षीण होती जा रही है जो कि उसके सुवर्ण से ढ़के उरोज के लिये एक मात्र आभूषण है। **3251**
मॅलियुम् नोय् तीरक्कुम्⋆ नम् कण्णन् कळल्गळ्मेल्⋆ मलि पुगळ् वण् कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् शॅाल्⋆ ऑलि पुगळ् आयिरत्तु⋆ इप्पत्तुम् वल्लवर्⋆ मलि पुगळ् वानवरक्कावर्⋆ नल् कोवैये॥११॥	प्रेमरोग की औषध कृष्ण के चरण की प्रशस्ति में कहे गये सुन्दर हजार पदों वाली रचना का यह दशक सौंदर्यपूर्ण नगर कुरूगुर के शठगोपन के शब्दों में हैं।जो इसका गान कर सकेंगे वे स्वर्गिकों के साथ मित्रवत रहेंगे। **3252** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

33 कोवै वायाळ् (3253 – 3263)

एम्बिरानदु शेरक्कैयाल् एय्दिय इन्बम्

(ग)

कोवै वायाळ् पॊरुट्टु* एट्रिन् एरुत्तम् इरुत्ताय्* मदिळ् इलङ्गै कोवै वीय च्चिलै कुनित्ताय्!* कुल नल् यानै मरुप्पॊशित्ताय्* पूवै वीया नीर् तूवि* प्पोदाल् वणङ्गेनेलुम्* निन् पूवै वीयाम् मेनिक्कु* प्पूशुम् शान्दॆन् नॆञ्जमे॥१॥	प्रभु ! आपने मूंगा से होंठवाली नप्पिनाय के लिये वृषभों के समूह से युद्ध किया। आपने लंकेश का वध अपने बाणों से किया एवं मदमत्त हाथी का नाश उसी के दांत से किया। क्या हुआ अगर हमने आपकी पूजा सुगंधित जल एवं पुष्प से नहीं की ? हमारा हृदय आपके सुमन समान मुखमंडल के लिये चंदन का लेप है। **3253**
पूशुम् शान्दॆन् नॆञ्जमे* पुनैयुम् कण्णि एनदुडैय* वाशगम् शॆय् मालैये* वान् पट्टाडैयुम् अग्ते* देशम् आन अणिगलनुम्* एन् कै कूप्पु च्चॆय्गैये* ईशन् ञालम् उण्डुमिळ्न्द* एन्दै एक मूर्त्तिक्के॥२॥	हमारे प्रभु के लिये जिन्होंने ब्रह्मांड को निगल कर फिर से बनाया हमारा हृदय चंदन का लेप है तथा गाथा के पद माला और आभापूर्ण वस्त्राभरण हैं। हमारा करबद्ध हाथ आपका बड़ा सा ज्योतिर्मय आभूषण है। **3254**
एक मूर्त्ति इरु मूर्त्ति* मून्रु मूर्त्ति पल मूर्त्ति आगि* ऐन्दु बूदमाय् इरण्डु शुडराय्* अरुवागि* नागम् एरि नडु क्कडलुळ् तुयिन्र* नारायणने* उन् आगम् मुट्रम् अगत्तडक्कि* आवियल्लल् माय्त्तदे॥३॥	हे नारायण ! आप एक हुए, दो हुए, तीन हुए और अनेको हो गये। पुनः पांच तत्व, दो ज्योति पुंज, एवं समस्त जीव बन गये। आप एक नाग के ऊपर चढ़ गये एवं सागर में शयन किया। आपकी उपस्थिति को हम अपने शरीर में भरकर अपनी आत्मा की यातना को जीत गये हैं। **3255**
माय्त्तल् एण्णि वाय् मुलै तन्द* माय प्पेय् उयिर् माय्त्त* आय मायने!* वामनने मादवा* पू त्तण् मालै कॊण्डु* उन्नै प्पोदाल् वणङ्गेनेलुम्* निन् पू त्तण् मालै नॆडु मुडिक्कु* प्पुनैयुम् कण्णि एनदुयिरे॥४॥	गोपकुल के प्रमुख! माधव, वामन, विषैले स्तनवाली पूतना राक्षसी के विनाशक ! मैं दिन में तीन बार फूल माला से आप की पूजा नहीं करता। मेरा शरीर ही आपके मुकुट पर माला की तरह लपेटे जाने के योग्य है। **3256**
कण्णि एनदुयिर्* कादल् कनग च्चोदि मुडि मुदला* एण्णिल् पल् कलन्गळुम्* एलुम् आडैयुम् अग्ते* नण्णि मूवुलगुम्* नविट्रुम् कीर्त्तियुम् अग्ते* कण्णन् एम् पिरान् एम्मान्* काल शक्कर त्तानुक्के॥५॥	समय के चक्र को धारण करने वाले हमारे कृष्ण प्रभु के लिये हमारा शरीर ही माला है एवं हमारा प्रेम मुकुट है। हमारा प्रेम ही आपका अनगिनत आभूषण एवं वस्त्राभरण है। तीनो लोक द्वारा गायी जाने वाली प्रशस्ति भी मेरा प्रेम ही है। **3257**

काल शक्करत्तोडु* वॆण् शङ्गम् कैयेन्दिनाय्* ञाल मुट्रुम् उण्डुमिळ्न्द* नारायणने ! ऎन्ऱॆन्ऱु* ओलम् इट्टु नान् अळैत्ताल्* ऒन्ऱुम् वारायागिलुम्* कोलमाम् ऎन् शॆन्निक्कु* उन् कमलम् अन्न कुरै कळले ॥६॥	हे **नारायण** ! आपने जगत को निगल लिया एवं पुनः बना दिया। मैं चीखते हए पुकारता हूं 'समय के चक्र एवं श्वेत शंख को धारण करने वाले' । यद्यपि इससे कुछ होता नहीं परंतु आपके नुपूर वाले चरण हमारे सिर के आभूषण हैं। **3258**
कुरै कळल्गळ् नीट्टि* मण् कॊण्ड कोल वामना* कुरै कळल् कै कूप्पुवार्गळ्* कूड निन्ऱ मायने* विरै कॊळ् पूवुम् नीरुम् कॊण्डु* एत्त माट्टेनेलुम्* उन् उरै कॊळ् शोदि त्तिरुवुरुवम्* ऎन्नदावि मेलदे ॥७॥	हे प्यारे वामन प्रभु ! आपने नुपूर वाले पैर को बढ़ाया एवं धरा पर अधिकार कर लिया। करबद्ध हो कर आने वाले को शरण देने वाले प्रभु ! मैं सुगंधित फूल एवं जल से आपकी पूजा नहीं करता फिर भी आपका रहस्यमयी तेज हमारी आत्मा की रखवाली करता है। **3259**
ऎन्नदावि मेलैयाय्* एर् कॊळ् एळ् उलगमुम्* तुन्नि मुट्रुम् आगि निन्ऱ* शोदि ञान मूर्त्तियाय्* उन्नदॆन्नदावियुम्* ऎन्नदुन्नदावियुम्* इन्न वण्णमे निन्ऱाय्* ऎन्ऱुरैक्क वल्लेने ॥८॥	सात लोक को भरकर आप सर्वत्र वही हो गये। हमारे हृदय से धारण किये जाने वाले हे ज्ञान के प्रदीप्त प्रतीक ! मेरी जीवात्मा आपकी है एवं आप हमारे हैं। कैसे यह हुआ मैं कैसे बताऊं ? **3260**
उरैक्क वल्लेन् अल्लेन्* उन् उलप्पिल् कीर्त्ति वॆळ्ळत्तिन् करैक्कण् ऎन्ऱु शॆल्वन् नान्* कादल् मैयल् एरिनेन्* पुरैप्पिलाद परम् परने !* पॊय्यिलाद परञ्जुडरे* इरैत्तु नल्ल मेन्मक्कळ् एत्त* यानुम् एत्तिनेन् ॥९॥	मैं आपके गौरव की बाढ़ को वर्णन करने योग्य नहीं हूं। कब मैं इसके किनारों को पहुचूंगा ? हाय ! मैं प्रेम में अचेत हो जाता हूं। निष्कलंक तेज के प्रभु ! आप हमारे प्रति उदासीन हैं। महान स्वर्गिकगन आपकी प्रशस्ति गाते हैं। मैंने भी इसे गाया। **3261**
यानुम् एत्ति* एळ् उलगुम् मुट्रुम् एत्ति* पिन्नैयुम् तानुम् एत्तिलुम्* तन्नै एत्तवेत्त एन्ङ्गॆय्दुम्* तेनुम् पालुम् कन्नलुम्* अमुदुम् आगि त्तित्तिप्प* यानुम् एम् पिरानैये एत्तिनेन्* यान् उय्वाने ॥१०॥	अगर मैं आपकी प्रशस्ति गाऊं एवं सातो लोक मिलकर गाने लगे तथा प्रभु स्वयं भी गाने लगें तो क्या हम लोग इसका अंत पा सकेंगे ? दूध शहद शक्कर एवं अमृत के समान मधुर प्रभु ! मैंने तो केवल आनंद मनाने के लिये गाया। **3262**
‡उय्वु पायम् मट्रिन्मै तेरि* क्कण्णन् ऒण् कळल्मेल्* शॆय्य तामरै प्पळन* तॆन्नन् कुरुगूर् च्चडगोपन्* पॊय्यिल् पाडल् आयिरत्तुळ्* इवैयुम् पत्तुम् वल्लार्गळ्* वैयम् मन्नि वीट्रिरुन्दु* विण्णुम् आळ्वर् मण्णूडे ॥११॥	एक मात्र आश्रय कृष्ण के चरण की प्रशंसा में कमल क्षेत्र से घिरे कुरूगुर शडगोपन से विरचित निष्कलंक हजार पद का यह दशक का गान जो कर सकेंगे वे यहां आनंद मनाते हुए स्वर्ग पर शासन करेंगे। **3263** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

34 मण्णै (3264 - 3274)

पिरिवाट्रादु पोलि प्पोरूळगळै कन्डु वरून्दुम् तलैवियिन् निलैय त्ताय् उरैत्तल्

नायकी की मां की भूमिका में - 2

मण्णै इरुन्दु तुळावि* वामनन् मण्णिदेन्नुम्* विण्णै त्तॊळुदवन् मेवु* वैगुन्दम् एन्ऱु कै काट्टुम्* कण्णैयुण्णीर् मल्ग निन्ऱु* कडल् वण्णन् एन्नुम् अन्ने !* एन् पॆण्णै प्पॆरुमयल् शॆय्दार्कु* एन्शॆय्गेन् पॆय् वळैयीरे॥१॥	कंगन वाली नारियों ! मेरी बेटी को प्रेमरोग से पीड़ित करने वाले प्रभु का मैं क्या कर सकती हूं ? पृथ्वी पर अपना स्नेह दिखाते हुए कहती है ‘यह उनकी पृथ्वी है।’ आकाश की ओर ध्यान कर बोलती है ‘यह उनका बैकुंठ है।’ इसकी आंखों से हृदय की पीड़ा बह कर निकलती है और उसांसे लेकर कहती है ‘सागर सा सलोने प्रभु !’ **3264**
पॆय्वळै क्कैगळै क्कूप्पि* प्पिरान् किडक्कुम् कडल् एन्नुम्* शॆय्यदोर् ञायिट्रै क्काट्टि* श्शिरीदरन् मूर्त्ति ईदॆन्नुम्* नैयुम् कण्णीर् मल्ग निन्ऱु* नारणन् एन्नुम् अन्ने* एन् दॆय्व उरुविल् शिऱुमान्* शॆय्गिन्ऱदॊन्ऱरियेने॥२॥	अपने कंगन वाली हाथ को मोड़कर कहती है ‘प्रभु सागर में शयन करते हैं।’ लालिमा लिये सूर्य की ओर दिखाकर कहती है ‘यह श्रीधर का प्रतीक चिह्न है।’ अश्रुप्रवाह से अचेत हो कहेगी ‘नारायण’ । नारियों ! मैं अपनी दैविक मृगनयनी को समझ नहीं पाती। **3265**
अरियुम् शॆन्तीयै त्तळुवि* अच्चुतन् एन्नुम् मॆय् वेवाळ्* एरियुम् तण् काट्रै त्तळुवि* एन्नुडै क्कोविन्दन् एन्नुम्* वॆरि कॊळ् तुळाय् मलर् नाऱुम्* विनैयुडै याट्टियेन् पॆट्र* शॆरि वळै मुन् कै च्चिरुमान्* शॆय्गिन्ऱदॆन् कण्णुक्कॊन्ऱे॥३॥	लाल अंगारे को सावधानी से हटाते हुए कहेगी ‘यह अच्युत हैं’। ठंढ़ी हवा को धीरे से हाथ से चलाने का उपक्रम कर बोलेगी ‘गोविन्द आ गये’।यह मेरी पीड़ा है ‘तुलसी फूल को कस कर सूंघेगी’।यही सब मेरी कंगन वाली मृगनयनी आज कल करती है। **3266**
ऒन्रिय तिङ्गळै क्काट्टि* ऒळि मणि वण्णने एन्नुम्* निन्ऱ कुन्ऱत्तिनै नोक्कि* नॆडुमाले ! वा ! एन्ऱु कूवुम्* नन्ऱु पॆय्युम् मळै काणिल्* नारणन् वन्दान् एन्ऱालुम्* एन्ऱिन मैयल्गळ् शॆय्दार्* एन्नुडै क्कोमळत्तैये॥४॥	आभापूर्ण चांद को देखकर कहती है ‘मणिवर्ण के प्रभु’। अचल पर्वत की ओर देखकर कहती है ‘आइये हमारे प्रभु’। वर्षा को देखकर नाचती है ‘यह नारायण आ गये’। अहा ! कब वे हमारे सुकुमारी लाड़ली पर एक दृष्टि डालेंगे ? **3267**
कोमळ वान् कन्रै प्पुल्गि* क्कोविन्दन् मेय्त्तन एन्नुम्* पोम् इळ नागत्तिन् पिन् पोय्* अवन् किडक्कै ईदॆन्नुम्* आमळ ऒन्ऱुम् अरियेन्* अरुविनै आट्टियेन् पॆट्र* कोमळ वल्लियै मायोन्* माल् शॆय्दु शॆय्गिन्ऱ कूत्ते॥५॥	सुन्दर बछड़े को गले लगाकर कहती है ‘इनको गोविन्द चराये हैं’। छोटे सांप के पीछे जाकर कहती है ‘यह रहा गोविन्द की शय्या’। मैं पीड़ित हूं और नहीं जानती कब इसका अंत होगा, प्रभु ने जो हमारी लाड़ली बेटी पर जादू डाल रखा है। **3268**

कूत्तर् कुडम् एडुत्ताडिल्★ कोविन्दनाम् एना ओडुम्★ वायत्त कुळल् ओशै केट्किल्★ मायवन् एन्रु मैयाक्कुम्★ आयच्चियर् वैण्णैय्गाळ् काणिल्★ अवनुण्ड वैण्णैय् ईदेन्नुम्★ पेयच्चि मुलै शुवैत्तार्कु★ एन् पैण्कॉडि एरिय पित्ते॥६॥	किसी मदारी को पात्र पर नाचते देख दौड़ कर कहते जाती है 'अच्छा यह गोविन्द हैं'। कहीं से बांसुरी की धुन सुनकर कहते हुए दौड़ेती है 'गोविन्द आ गये'। ग्वालिन के मनमोहक मक्खन देख बोलती है 'अहा ! मक्खन उन्होंने खाया था'। पूतना के स्तन पीने वाले के बारे में ये सब इसके पागलपन हैं। **3269**
एरिय पित्तिनोडु★ एल्ला उलगुम् कण्णन् पडैप्पेन्नुम्★ नीरु शेव्वेयिड क्काणिल्★ नेडुमाल् अडियार् एन्रोडुम्★ नारु तुळाय् मलर् काणिल्★ नारणन् कण्णि ईदेन्नुम्★ तेरियुम् तेरादु मायोन्★ तिरत्तनळे इ त्तिरुवे॥७॥	इसका उन्माद बढ़ गया और बोलती है 'यह सृष्टि कृष्ण की रचना है'। लोगों के ललाट पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक देखकर कहती है 'प्रभु के भक्तगन'। सुगंधित तुलसी देखकर कहती है 'यह नारायण की माला है'। यह मेरी अमूल्य बेटी प्रभु के बारे में भावग्रस्त रहकर उन्माद पूर्ण बातें सोचती है। **3270**
तिरुवुडै मन्नरै क्काणिल्★ तिरुमालै क्कण्डेने एन्नुम्★ उरुवुडै वण्णङ्गळ् काणिल्★ उलगळन्दान् एन्रु तुळ्ळुम्★ करुवुडै त्तेविल्गळ् एल्लाम्★ कडल् वण्णन् कोयिले एन्नुम्★ वेरुविलुम् वीळ्विलुम् ओवा★ क्कण्णन् कळल्गळ् विरुम्बुमे॥८॥	संपन्न एवं सभ्य जन को देखकर कहेगी 'तिरूमल को मैंने देखा है'। इन्द्रधनुष को देखकर नाचते हुए कहेगी 'वामन ने पृथ्वी को मापा'। सभी शंख चक्र आदि चिह्नों वाला मंदिर इसके सागर सा सलोने कृष्ण का मंदिर है। प्रभु के चरण को जबतक थक नहीं जाती अनवरत खोजती है। **3271**
विरुम्बि प्पगैवरै क्काणिल्★ वियल् इडम् उण्डाने ! एन्नुम्★ करुम् पेरु मेगङ्गळ् काणिल्★ कण्णन् एन्रेर प्परक्कुम्★ पेरुम् पुल आनिरै काणिल्★ पिरानुळन् एन्रु पिन् शेल्लुम्★ अरुम् पेरल् पेण्णिनै मायोन्★ अलट्टि अयरप्पिक्किन्राने॥९॥	संतजनों को देखकर उतावला होकर कहेगी 'प्रभु ने विश्व को निगल लिया'। काले वर्षा के बादल देखकर कहेगी 'कृष्ण' एवं उड़ने का उपक्रम करेगी। पशुओं के समूह को देखकर कहेगी 'इनके बीच प्रभु हैं' एवं उनका पीछा करेगी। कठिनता से प्राप्त मेरी बेटी प्रभु से संतप्त रोती रहती है। **3272**
अयर्क्कुम् शुट्रुम् पट्रि नोक्कि★ अगलवे नीळ् नोक्कु क्कोळ्ळुम्★ वियर्क्कुम् मळैक्कण् तुळुम्ब★ वेव्वुयिर् क्कोळ्ळुम् मेय् शोरुम्★ पेयर्त्तुम् कण्णा ! एन्रु पेशुम्★ पेरुमाने ! वा ! एन्रु कूवुम्★ मयल् पेरुङ्गादल् एन् पेदैक्कु★ एन् शेय्गेन् वल्विनैयेने॥१०॥	शून्य में दूर देखते हुए पसीना से तरबतर हो अचेत हो जाती है। वर्षा की तरह अश्रु बहाती है। गर्म उसांसे ले धीरे से कहती है 'कृष्ण,आईये मेरे प्रभु'। मैं पीड़ित हूं, मैं क्या करूं ? मेरी बेटी उन्मादपूर्ण प्रेमरोग से ग्रस्त है। **3273**

‡वल्विनै तीर्क्कुम् कण्णनै⋆ वण् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॉल् विनैयाल् शॉन्न पाडल्⋆ आयिरत्तुळ् इवै पत्तुम्⋆ नल्विनै एन्रु कर्पार्गळ्⋆ नलनिडै वैगुन्दम् नण्णि⋆ तॉल्विनै तीर एल्लारुम्⋆ तॉळुदॅळ वीट्रिरुप्पारे॥११॥	उदार कृष्ण की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों वाली रचना का यह दशक कुरूगुर के शठगोपन के हैं।जो इसको याद करलेंगे वे अपनी यातना का अंत कर वैकुंठ में जायेंग एवं सबों से पूजित हो शासन करेंगे। **3274** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

35 वीट्रिरून्दु (3275 - 3285)

एम्बिरानुडैय इरूप्पै क्कण्डु इन्बुरल्

‡वीट्रिरुन्देळ् उलगुम्⋆ तनिक्कोल् शॆल्ल वीविल् शीर्⋆ आट्रल् मिक्काळुम् अम्मानै⋆ वॆम्मा पिळन्दान् तन्नै⋆ पोट्रियॆन्रे कैगळ् आर⋆ तॊळुदु शॊल् मालैगळ्⋆ एट्र नोट्रेर्कु⋆ इनियॆन्न कुरै एळुमैयुमे॥१॥	केशिन घोड़ा के जबड़ा फाड़ने वाले प्रभु शाश्वत श्रेयावस्था में शांति से सात लोकों पर शासन करते हैं। करबद्ध होकर प्रशस्ति में रचे गये मेरे पदों की माला आप अपने मुकुट पर पहनते हैं। अब हमें सात जन्म तक किस चीज की कमी है ? **3275**
मैय कण्णाळ् मलर् मेल् उरैवाळ्⋆ उरै मार्बिनन्⋆ शॆय्य कोल त्तडङ्गण्णन्⋆ विण्णोर् पॆरुमान् तन्नै⋆ मॊय्य शॊल्लाल् इशैमालैगळ् एत्ति⋆ उळ्ळ प्पॆट्रेन्⋆ वॆय्य नोय्गाळ् मुळुदुम्⋆ वियन् ञालत्तु वीयवे॥२॥	आप अपने वक्ष पर काली आंखों वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। आप स्वर्गिकों के नाथ हैं एवं आपकी अरूणाभ नयन वृहत तथा सुन्दर हैं। मृदु शब्दों से आपकी प्रशस्ति के पदों को रचकर गाने का हमें सौभाग्य मिला है जिसके फलस्वरूप विचित्र विश्व के हमारे घातक यातना का अंत हो गया है। **3276**
वीविल् इन्बमिग⋆ एल्लै निगळ्न्द नम् अच्चुतन्⋆ वीविल् शीरन् मलर् क्कण्णन्⋆ विण्णोर् पॆरुमान् तन्नै⋆ वीविल् कालम् इशैमालैगळ् एत्ति⋆ मेवप्पॆट्रेन्⋆ वीविल् इन्बमिग⋆ एल्लै निगळ्न्दनन् मेवियॆ॥३॥	स्वर्गिकों के नाथ, पुष्प सी आंखोंवाले, ऊच्चतम श्रेयप्रदान करने वाले हमारे अच्युत प्रभु शाश्वत आनंद की अधिकतम सीमा पर रहते हैं। हमने पदों के गायन से आपको प्राप्त कर लिया है। आपकी अंतहीन प्रशस्ति कर हम भी शाश्वत आनंद की अधिकतम सीमा प्राप्त कर गये हैं। **3277**
मेवि निन्रु तॊळुवार्⋆ विनै पोग मेवुम् पिरान्⋆ तूवियम् पुळ्ळुडैयान्⋆ अडल् आळि अम्मान् तन्नै नावियलाल् इशै मालैगळ् एत्ति⋆ नण्ण प्पॆट्रेन्⋆ आवि एन्नावियै⋆ यान् अरियेन् शॆय्द आट्रैये॥४॥	आप सुन्दर पंखोंवाले गरूड़ की सवारी करते हैं एवं शक्तिशाली चक्र धारण करते हैं। मेरे प्रभु भक्तों को प्रेम करते हैं तथा उनका ध्यान रखते हैं जो खड़ा होकर आपकी पूजा करते हैं। अपनी जिह्वा से आपकी प्रशस्ति गाकर हमने आपको प्राप्त किया है। मुझे यह समझ में नहीं आता कि किस तरह चेतन हमारी आत्मा का मार्ग निर्देश करता है ? **3278**
आट्र नल्ल वगै काट्टुम् अम्मानै⋆ अमरर् तम् एट्रै⋆ एल्ला प्पॊरुळुम् विरित्तानै एम्मान् तन्नै⋆ माट्र मालै पुनैन्देत्ति⋆ नाळुम् मगिळ्वॆय्दिनेन्⋆ काट्रिन् मुन्नम् कडुगि⋆ विनैनोय्गाळ् करियवे॥५॥	स्वर्गिकों के प्रभु, मेरे प्रभु, सबचीज का अर्थ स्वयं बताते हैं। आप धैर्यपूर्वक सुगम रास्तों को दिखाते हैं तथा सभी पाप एवं व्याधि को जलाकर भस्म बनाते हैं जैसे हवा छाई को उड़ाती है। शब्दों से पदों की रचना को गा कर हमने आप को पा लिया है। **3279**

करिय मेनिमिशै⋆ वॆळिय नीरु शिरिदे इडुम्⋆ पॆरिय कोल त्तडङ्गण्णन्⋆ विण्णोर् पॆरुमान् तन्नै⋆ उरिय शॊल्लाल् इशैमालैगळ् एत्ति⋆ उळ्ळ प्पॆट्रेर्कु⋆ अरियदुण्डो एनक्कु⋆ इन्रु तॊट्टुम इनियॆन्रुमे॥६॥	स्वर्गिकों के प्रभु, अपने ललाट पर श्वेत मिट्टी का तिलक लगाते हैं एवं आपकी आंखें सरोवर की तरह वृहत हैं। हमने प्रासंगिक शब्दों से पद की माला बना आपकी प्रशस्ति गायी है। अब से आगे भविष्य में कोई भी चीज ऐसी है जो हमारे पहुंच से बाहर है ? **3280**
एन्रुम् ऑन्रागि⋆ ऑत्तारुम् मिक्कार्गळुम्⋆ तन् तनक्कु इन्रि निन्रानै⋆ एल्ला उलगुम् उडैयान् तन्नै⋆ कुन्रम् ऑन्राल् मळै कात्त पिरानै⋆ च्चॊल् मालैगळ्⋆ नन्रु शूट्टुम् विदियॆय्दिनम्⋆ एन्न कुरै नमक्के॥७॥	आपके समान न कोई है और न आपसे अधिक बड़ा कोई है। आप समस्त विश्व को धारण करते हैं। आपने एक पर्वत से वर्षा रोक दी। पदों की माला से आपकी प्रशस्ति गाने का हमें सौभाग्य मिला है जिसे आप अपने मुकुट पर प्रेम से धारण करते हैं। इससे अधिक हमें क्या चाहिये ? **3281**
नमक्कुम् पूविन् मिशै नङ्गैक्कुम्⋆ इन्बनै⋆ ञालत्तार् तमक्कुम्⋆ वानत्तवर्क्कुम् पॆरुमानै⋆ तण् तामरै शुमक्कुम्⋆ पाद प्पॆरुमानै⋆ च्चॊल् मालैगळ् शॊल्लुमारु अमैक्क वल्लेर्कु⋆ इनि यावर् निगर् अगल् वानत्ते॥८॥	धरा के निवासियों एवं स्वर्गिकों के प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी के उतने ही प्रिय हैं जितने हमलोगों के हैं।आपके चरण कमल के फूल पर आधारित रहते हैं। आपकी प्रशस्ति हमने पदों से गायी है। इस महान संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? **3282**
वानत्तुम् वानत्तुळ् उम्बरुम्⋆ मण्णुळ्ळुम् मण्णिन् कीळ् त्तानत्तुम्⋆ एण् तिशैयुम् तविरादु⋆ निन्रान् तन्नै⋆ कूनल् शङ्ग त्तडक्कैयवनै⋆ क्कुडम् आडियै वान कोनै⋆ क्कवि शॊल्ल वल्लेर्कु⋆ इनि मारुण्डो॥९॥	स्वर्ग एवं ऊपर के लोकों में तथा पृथ्वी एवं नीचे के लोकों में आप सर्वव्याप्त होकर रहते हैं। आपका बलवान हाथ एक घुमावदार शंख को पकड़ता है। आप स्वर्गिकों के प्रभु हैं एवं पात्रों के साथ नृत्य करते हैं। हमने आपकी प्रशस्ति गायी है। क्या कभी भी कोई मेरी बराबरी कर सकता है ? **3283**
उण्डुम् उमिळ्न्दुम् कडन्दुम् इडन्दुम्⋆ किडन्दुम् निन्रुम्⋆ कॊण्ड कोलत्तॊडु वीट्रिरुन्दुम्⋆ मणम् कूडियुम्⋆ कण्ड आट्राल् तनक्के⋆ उलगॆन निन्रान् तन्नै⋆ वण् तमिळ् नूर्क नोट्रेन्⋆ अडियार्क्किन्ब मारिये॥१०॥	पृथक खड़े होकर सृष्टि का आनंद लेते हुए आपने विश्व को निगला तथा उगला, इसे मापा एवं ऊपर उठाया।आप यहां शयनावस्था, बैठने की मुद्रा तथा खड़े होने की मुद्रा में पूरी सार्व भौम शक्ति से रहते हैं। हमने जिन पदों से आपकी प्रशस्ति गायी है वे भक्तों के लिये अमृत हैं। **3284**

‡मारि माऱाद तण्णम्मलै⋆ वेङ्गडत्तण्णलै⋆ वारि माऱाद पैम् पूम् पॊ़ळिल् शूऴ्⋆ कुरुगूर् नगर्⋆ कारि माऱन् शडगोपन्⋆ शॊल् आयिरत्ति प्पत्ताल्⋆ वेरि माऱाद पूमेल् इरुप्पाळ्⋆ विनै तीर्क्कुमे॥११॥	शीतल बागों वाले नगर कुरूगुर के कारीमारन शडगोपन से विरचित मधुर हजार पद का यह दशक अनवरत वृष्टि वाले वेंकटम के प्रभु की प्रशस्ति है। जो इसे याद कर लेंगे वे सदा नूतन कमल में निवास करने वाली लक्ष्मी की कृपा से सारी चिंता से मुक्त हो जायेंगे। **3285** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><th colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
36 तिरप्पारै (3286 - 3296)
वेरिविलक्कु
नायकी की मां की भूमिका में - 3</th></tr>
<tr><td>तीर्प्पारैयाम् इनि⋆ एङ्ङनम् नाड्डुम् अन्नैमीर्⋆
ओर्प्पाल् इव्वॊण्णुदल्⋆ उट्र् नल् नोय् इदु तेरिनोम्⋆
पोर्प्पागु तान् शॆय्दु⋆ अन्रैवरै वॆल्वित्त⋆ मायप्पोर्
त्तेर्प्पागनारक्कु⋆ इवळ् शिन्दै तुळाय् त्तिशैक्किन्रदे॥१॥</td><td>नारियों ! इस उज्जवल ललाट की किशोरी के रोग को हमलोगों ने ठीक से जांच लिया है। इसका हृदय रथवाहे की चाह में है जिन्होनें भयानक युद्ध में सेना का संचालन कर पांच पांडवों को विजय दिलायी थी। अब हम कैसे इसकी औषधि पता करें ? 3286</td></tr>
<tr><td>तिशैक्किन्रदे इवळ् नोय्⋆ इदु मिक्क पॆरुन् दॆय्वम्⋆
इशैप्पिन्रि⋆ नीर् अणङ्गाडुम् इळन् दॆय्वम् अन्रिदु⋆
तिशैप्पिन्रिये⋆ शङ्गु शक्करम् एन्रिवळ् केट्क⋆ नीर्
इशैक्किट्रिरागिल्⋆ नन्रेइल् पॆरुम् इदु काण्मिने॥२॥</td><td>हाय ! तुमने इसकी बीमारी को समझा नहीं है। एक महान शक्ति ने इसे भावग्रस्त कर रखा है न कि एक छोटा देवता जिसके लिये तुम नाचती हो। उसके कान में प्रेम से स्पष्ट बोलो 'शंख एवं चक्र'। देखो वह शीघ्र ठीक हो जायेगी। 3287</td></tr>
<tr><td>इदु काण्मिन् अन्नैमीर्!⋆ इक्कट्टुविच्चि शॊल् कॊण्डु⋆ नीर्
एदुवानुम् शॆय्दु⋆ अङ्गोर् कळ्ळुम् इरैच्चियुम् तूवॆन्मिन्⋆
मदुवार् तुळाय् मुडि⋆ माय प्पिरान् कळल् वाळ्त्तिनाल्⋆
अदुवे इवळ् उट्र् नोय्क्कुम्⋆ अरु मरुन्दागुमे॥३॥</td><td>देखो सजनी ! मांस एवं ताड़ी फेंककर जंगली रीति से काम न करो।इस वनवासी भगत जादूगर के शब्दों पर ध्यान मत दो।तुलसी का मुकुट धारण करने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ, एकमात्र वही इसको ठीक कर सकते हैं। 3288</td></tr>
<tr><td>मरुन्दागुम् एन्रङ्गोर्⋆ माय वलवै शॊल् कॊण्डु⋆ नीर्
करुञ्जोरुम् मट्रै च्चॆञ्जोरुम्⋆ कळन् इळैत्तॆन् पयन्⋆
ऑरुङ्गागवे उलगेळुम्⋆ विळुङ्गि उमिळ्न्दिट्ट⋆
पॆरुन्देवन् पेर् शॊल्लगिर्किल्⋆ इवळै प्पॆरुदिरे॥४॥</td><td>जादूगर भगत की बात सुनकर वेदी पर लाल एवं काला पकाया हुआ चावल फेंकने से क्या लाभ ? प्रभु का नाम बोलो जिन्होंने क्षण भर में विश्व को निगल कर उसे पुनः बना दिया। तुम अवश्य अपनी बेटी को सामान्य अवस्था में पाओगी। 3289</td></tr>
<tr><td>इवळै प्पॆरुम् परिशु⋆ इव्वणङ्गाडुदल् अन्रन्दो⋆
कुवळै त्तडङ्गण्णुम्⋆ कोवै च्चॆव्वायुम् पयन्दनळ्⋆
कवळ क्कडा क्कळिरट्ट पिरान्⋆ तिरुनामत्ताल्⋆
तवळ प्पॊडि क्कॊण्डु⋆ नीर् इट्टिडुमिन् तणियुमे॥५॥</td><td>इसे ठीक करने का यह उन्मादी नृत्य उचित तरीका नहीं है। हाय ! इसकी बड़ी कमल सी आंखें एवं मूंगा से होंठ भय से श्वेत हो गये हैं। मदमत्त हाथी को मारने वाले प्रभु का नाम गाकर इसके ललाट पर श्वेत मिट्टी का तिलक करो, इसका ताप कम हो जायेगा। 3290</td></tr>
</table>

तणियुम् पॊळुदिल्लै* नीर् अणङ्गाडुदिर् अन्नैमीर्* पिणियुम् ऒळिगिन्ऱदिल्लै* पॆरुगुम् इदुवल्लाल्* मणियिन् अणि निऱ मायन्* तमर् अडि नीऱु कॊण्डु* अणिय मुयलिन्* मट्रिल्लै कण्डीर् इव्वणङ्गुक्के॥६॥	सजनी ! प्रेतात्मा से ग्रस्त की तरह नाचने से कोई लाभ नहीं। इससे इसका ताप बढ़ेगा घटेगा नहीं। भक्तों के चरण का धूल इस पर लगाओ। इसके अलावे इसे ठीक करने का कोई अन्य उपाय नहीं है। **3291**
अणङ्गुक्करु मरुन्दॆन्ऱु* अङ्गोर् आडुम् कळ्ळुम् पराय्* तुणङ्ग एरिन्दु* नुम् तोळ् कुलैक्कप्पडुम् अन्नैमीर्* उणङ्गल् कॆड* क्कळुदै उदडाट्टम् कण्डॆन् पयन्* वणङ्गीर्गळ् माय प्पिरान्* तमर् वेदम् वल्लारैये॥७॥	सजनी ! इसके उन्माद को ठीक करने के लिये बकरी की बली एवं ताड़ी चढ़ाते हो तथा अपने हाथ बजाकर कंधों को जोर से झकझोरते हो। इससे क्या लाभ ? यह गदहे को अन्न खाते देखने जैसा है। जाओ, वैदिक संतों एवं प्रभु के भक्तो से मिलो। **3292**
वेदम् वल्लार्गळै क्कॊण्डु* विण्णोर् पॆरुमान् तिरु प्पादम् पणिन्दु* इवळ् नोय्* इदु तीर्त्तु क्कॊळ्ळादु पोय्* एदम् परैन्दल्ल शॆय्दु* कळ्ळूडु कलाय् तूय्* कीद मुळविट्टु* नीर् अणङ्गाडुदल् कीळ्मैये॥८॥	नाहक शब्दों एवं पापमय कृत्यों के साथ ताड़ी चढा कर नगाड़े की धुन पर उन्मत्त सा नाचते हो। ओह ! यह नीच काम है। वैदिक संतों की सहायता से स्वर्गिकों के प्रभु के पावन चरण की पूजा करो। यही इस किशोरी के रोग को ठीक करेगा। **3293**
कीळ्मैयिनाल् अङ्गोर्* कीळ्मगन् इट्ट मुळविन् कीळ्* नाळ्मै पल शॊल्लि* नीर् अणङ्गाडुम् पॊय् काणिगिलेन्* एळ्मै प्पिरप्पुक्कुम् शेमम्* इन्नोयक्कुम् ईदे मरुन्दु* ऊळ्मैयिल् कण्ण पिरान्* कळल् वाळ्त्तुमिन् उन्नित्ते॥९॥	मैं खड़ी होकर निम्न स्तर के देवता के प्रति किये गये खोखली प्रशंसा एवं भोंडे संगीत पर किये गये नृत्य को हम नही सहन कर सकते। कृष्ण के चरण की प्रेमपूर्वक प्रशस्ति गाओ जो अकेले इस रोग का निदान होगा तथा आने वाले सात जन्म तक संजीवनी की तरह काम करेगा। **3294**
उन्नित्तु मट्रॊरु दॆय्वम् तॊळाळ्* अवनैयल्लाल्* नुम्मिच्चै शॊल्लि* नुम् तोळ् कुलैक्कप्पडुम् अन्नैमीर्* मन्न प्पडुम् मऱैवाणनै* वण् दुवरापदि मन्ननै* एत्तुमिन् एत्तुदलुम्* तॊळुदाडुमे॥१०॥	नारियों ! अपने उन्माद का प्रदर्शन कंधा हिलाकर मत करो। यह किशोरी कृष्ण को छोड़कर अन्य देवता का आदर नहीं करेगी। वेदों से सम्मानित द्वारका के राजा की प्रशस्ति गाओ। यह किशोरी सामान्य स्थिति को प्राप्त करेगी तथा प्रेमोन्माद से अर्चना में नृत्य करेगी। **3295**
‡तॊळुदाडि तू मणि वण्णनुक्कु* आट्शॆय्दु नोय् तीर्न्द* वळुवाद तॊल् पुगळ्* वण् कुरुगूर् च्चडगोपन्* शॊल् वळुवाद आयिरत्तुळ्* इवै पत्तु वॆरिगळुम्* तॊळुदाडि प्पाड वल्लार्* दुक्क शीलम् इलर्गळे॥११॥	जगप्रसिद्ध नगर कुरूगुर के शडगोपन से विरचित निष्कलंक हजार पद का यह दशक मणि वर्ण के प्रभु को देखकर पूजा करने तथा नाचने से उन्माद की स्थिति से मुक्त होने के उपाय को बताता है। जो इसे गाकर नाचेंगे वे चिंताग्रस्त मन से मुक्त होंगे। **3296** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

37 शीलम इल्ला (3297 - 3307)

तिरूमालै वन्दरूळुमारू तन् कुरैकूरि वरून्दि अळैत्तल्

शीलम् इल्ला च्चिऱियनेलुम्⋆ शॆय्विनैयो पॆरिदाल्⋆ ञालम् उण्डाय् ञान मूर्त्ति⋆ नारायणा ! ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ कालन्दोऱुम् यान् इरुन्दु⋆ कैदलै पूशल् इट्टाल्⋆ कोल मेनि काण वाराय्⋆ कूवियुम् कॊळ्ळाये ॥१॥	अपने सिर पर बंधे हाथ को रख खड़ा होकर लगातार बोलता हूं 'विश्व को निगलने वाले प्रभु' 'ज्ञान की प्रतीक प्रतिमा' 'नारायण' एवं अनेको अन्य नामों से संबोधित करते हुए कहता हूं 'न तो आप दर्शन देते हैं और न हमें अपने पास बुलाते हैं'। हाय ! मैं एक दरिद्र निम्न जन्म का हूं तथा हमारे कुकर्म सच में बहुतो हैं। **3297**
कॊळ्ळ माळा इन्ब वॆळ्ळम्⋆ कोदिल तन्दिडुम्⋆ ऎन् वळ्ळलेयो ! वैयम् कॊण्ड⋆ वामनावो ! ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ नळ्ळिरावुम् नन् पगलुम्⋆ नानिरुन्दोलम् इट्टाल्⋆ कळ्ळ माया ! उन्नै⋆ ऎन् कण् काण वन्दीयाये ॥२॥	खड़ा होकर रात दिन यह पुकारता हूं 'उदार प्रभु' 'निष्कलंक अप्रमेय आनन्द की बाढ़' 'धरा को मापने वाले प्रभु' एवं अनेकों अन्य नामों से संबोधित करता हूं। हाय ! आप आते नहीं। छलिया प्रभु ! हमारी आंखों को दर्शन दीजिये। **3298**
ईविलाद तीविनैगळ्⋆ ऎत्तनै शॆय्दनन्गॊल्⋆ तावि वैयम् कॊण्ड ऎन्दाय् !⋆ दामोदरा ! ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ कूवि क्कूवि नॆञ्जुरुगि⋆ क्कण्बनि शोर निन्ऱाल्⋆ पावि नी ऎन्ऱॊन्ऱु शॊल्लाय्⋆ पावियेन् काण वन्दे ॥३॥	अपने हृदय पर अश्रु बहाता हुआ पुकारता हूं 'मेरे प्रभु' 'धरा को एक पग में मापने वाले प्रभु' 'दामोदर' एवं अनेकों अन्य नामों से संबोधित करता हूं। हाय ! कितने क्रूर अमिट कर्म हम किये हैं ? जब मैं आपके दर्शन हेतु आता हूं तो आप 'पापी' भी नहीं कहते। **3299**
काण वन्दॆन् कण् मुगप्पे⋆ तामरै क्कण् पिऱळ⋆ आणि शॆम्पॊन् मेनियॆन्दाय् !⋆ निन्ऱरुळाय् ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ नाणम् इल्ला च्चिऱुदगैयेन्⋆ नान् इङ्गलट्टुवदॆन्⋆ पेणि वानोर् काणमाट्टा⋆ प्पीडुडै अप्पनैये ॥४॥	मैं यहां लाजविहीन होकर पुकारता हूं 'ऊच्चकोटि के सुनहले रंग वाले प्रभु' 'सर्वोत्तम' 'जिसे सभी तप के बाद देवता भी नहीं देख सकते' आदि आदि। यह किस काम का ? आप अपने कमल समान मुखड़े का दर्शन नहीं देते। हाय ! ठीक में मैं एक अधम श्रमिक हूं। **3300**
अप्पने ! अडल् आळियाने⋆ आळ् कडलै क्कडैन्द दुप्पने⋆ उन् तोळ्गाळ् नान्गुम्⋆ कण्डिड क्कूडुङ्गॊल् ऎन्ऱु⋆ ऎप्पॊऴुदुम् कण्ण नीर् कॊण्डु⋆ आवि तुवरन्दु तुवरन्दु⋆ इप्पोऴुदे वन्दिडाय् ऎन्ऱु⋆ एऴैयेन् नोक्कुवने ॥५॥	मेरे पिता, तीक्ष्ण चक्र को धारण करने वाले, सागर मंथन करनेवाले शक्तिशाली प्रभु! क्या कभी मैं आपको चतुर्भज रूप में देख सकूंगा ? सदा आंखों में आंसू भरे हम देखते रहते हैं जबकि हमारा जीवन धीरे धीरे सूखते जा रहा है। प्रभु ! इस भाग्यहीन के पास अभी आइये। **3301**

नोक्कि नोक्कि उन्नै क्काण्बान्⋆ यान् एनदावियुळ्ळे⋆ नाक्कु नीळ्वन् ज्ञानम् इल्लै⋆ नाळ्दोरुम् एन्नुडैय⋆ आक्कैयुळ्ळुम् आवियुळ्ळुम्⋆ अल्ल पुरत्तिनुळ्ळुम्⋆ नीक्कम् इन्रि एङ्गुम् निन्राय् !⋆ निन्नै अरिन्दरिन्दे ॥६॥	मेरे शरीर में, मेरी जीवात्मा में, तथा सभी वस्तुओं में बिना अपवाद के आप सब प्राणियों में सर्वदा सर्वत्र स्थित हैं। मैं ध्यान पर ध्यान करके आपके अपने जीवात्मा में खोजता हूं। हाय ! हमारे पास नाहक जीभ है परंतु ज्ञान नहीं है। **3302**
अरिन्दरिन्दु तेरि त्तेरि⋆ यान् एनदावियुळ्ळे⋆ निरैन्द ज्ञान मूर्त्तियायै⋆ निन्मलमाग वैत्तु⋆ पिरन्दुम् शैत्तुम् निन्रिडरुम्⋆ पेदैमै तीरन्दॊळिन्देन्⋆ नरुन् तुळायिन् कण्णियम्मा !⋆ नान् उन्नै क्कण्डु कॊण्डे ॥७॥	तुलसी माला के प्रभु ! हृदय के गह्वर में आपको ज्ञान की प्रतीक प्रतिमा के रूप में देखता हूं। जीवन एवं मरण के रास्ते बार बार ध्यान करके हमने आपको ऊंची स्थिति में रखकर अपनी चिंता से मुक्त हुये हैं। **3303**
कण्डु कॊण्डेन् कैगळ् आर⋆ निन् तिरुप्पादङ्गळ् मेल्⋆ एन् दिशैयुम् उळ्ळ पू क्कॊण्डु⋆ एत्ति उगन्दुगन्दु⋆ तॊण्डरोङ्गळ् पाडियाड⋆ च्चूळ् कडल् ज्ञालत्तुळ्ळे⋆ वण् तुळायिन् कण्णि वेन्दे !⋆ वन्दिडगिल्लाये ॥८॥	जब आपका दर्शन मिलेगा तो हम आपके चरणों पर अतिउत्साह से आठ दिशाओं से एकत्र किये हुए फूलों की वर्षा कर देंगे एवं बार बार प्रशस्ति गायेंगे। हम सभी भक्त गाकर आनंद में नाचेंगे। तुलसी माला के प्रभु ! क्या आप इस धरा धाम पर नहीं पधारेंगे ? **3304**
इड किलेन् ऑन्रट्ट किल्लेन्⋆ ऐम्बुलन् वॆल्ल किल्लेन्⋆ कडवन् आगि क्कालन्दोरुम्⋆ पू प्परित्तेत्त किल्लेन्⋆ मडवल् नॆञ्जम् कादल् कूर⋆ वल्विनैयेन् अयरप्पाय्⋆ तडवुगिन्रेन् एङ्गु क्काण्बन्⋆ शक्करत्तण्णलैये ॥९॥	मेरे पास विश्वास की थाती नहीं है, धन नहीं है, इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है, और न तो आपको फूल से पूजा करने का स्थिर मन है। हमारे पास केवल एक पापी हृदय है। हे पापी मैं! मैं देखता हूं कि कहां आपका दर्शन पा सकूं? हे शंक चक्रधारी प्रभु ! **3305**
शक्करत्तण्णले एन्रु⋆ ताळ्न्दु कण्णीर् तदुम्ब⋆ पक्कम् नोक्कि निन्रलन्देन्⋆ पावियेन् काण्गिन्रिलेन्⋆ मिक्क ज्ञान मूर्त्तियाय⋆ वेद विळक्किनै⋆ एन् तक्क ज्ञान क्कण्गळाले⋆ कण्डु तळुवुवने ॥१०॥	आंसू बहाते नीच मन से मैं सब जगह घूम कर देखता हूं। हाय ! शंख चक्रधारी प्रभु को आते नहीं देखता। बुद्धि की आंख से वेद की ज्योति एवं ज्ञान की महान प्रतीक प्रतिमा को देखकर आनंदमग्न रहता हूं। **3306**
तळुवि निन्र कादल् तन्नाल्⋆ तामरै क्कण्णन् तन्नै⋆ कुळुवु माड तॆन् कुरुगूर्⋆ मारन् शडगोपन्⋆ शॊल् वळुविलाद ऑण् तमिळ्माल्⋆ आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ तळुव प्पाडियाड वल्लार्⋆ वैगुन्दम् एरुवरे ॥११॥	ऊंचे महलों के नगर कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार तमिल पद का यह दशक कमलनयन कृष्ण को आलिंगन करने वाले प्रेम से सरोबोर है। जो इसे प्रेम से गा कर नाच सकेंगे वे स्वर्ग को प्राप्त होंगे। **3307**

श्रीमते रामानुजाय नमः

38 एऱाऴुम् (3308 - 3318)

एम्बिरान् विरूम्बादवैगळाल् तमक्कु प्पयन् इल्लै एन्रू तलैवि कूट्राग प्पेशुदल् (नायकी भाव में)

‡एऱाऴुम् इऱैयोनुम्★ दिशैमुगनुम् तिरुमगळुम्★ कूऱाऴुम् तनियुडम्बन्★ कुलम् कुलमा अशुरर्गळै★ नीऱागुम् पडियाग★ निरुमित्तु प्पडैदॊट्ट★ माऱाळन् कवराद★ मणि मामै कुऱैविल्मे॥१॥	शस्त्रों से सुसज्जित आक्रामक प्रभु ने असुर समूह के संहार के लिये योजना बना ली थी। वृषभारोही शिव, चतुरानन ब्रह्मा एवं कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके शरीर पर विराजते हैं। अगर हमारे निष्कलंक सौंदर्य की चाह प्रभु का नहीं है तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3308**
मणि मामै कुऱैविल्ला★ मलर्मादर् उऱै मार्वन्★ अणि मान त्तडवरै त्तोळ्★ अडल् आऴि त्तडक्कैयन्★ पणि मानम् पिळैयामे★ अडियेनै प्पणि कॊण्ड★ मणिमायन् कवराद★ मड नॆञ्जाल् कुऱैविल्मे॥२॥	मणिवर्ण के प्रभु पर्वत समान बाहों पर भयानक चक्र धारण करते हैं। अद्वितीय कमल निवासिनी लक्ष्मी आपके वक्ष पर रहती हैं। आपने हमें अपनी सेवा में पूर्णतया स्वीकार कर लिया है। अगर आप हमारे क्षीण हृदय की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3309**
मड नॆञ्जाल् कुऱैविल्ला★ मगळ् ताय् शॆय्दॊरु पेय्च्चि★ विड नञ्ज मुलै शुवैत्त★ मिगु ञान च्चिरु कुळवि★ पडनाग त्तणै क्किडन्द★ परु वरैत्तोळ् परम्पुरुडन्★ नॆडुमायन् कवराद★ निऱैयिनाल् कुऱैविल्मे॥३॥	फनधारी शेष की शय्या पर शयन करने वाले महान प्रभु की बाहें पर्वत के समान हैं। प्यारी मां के छद्म वेष में आनेवाली पूतना राक्षसी का स्तन पीने वाले आप आश्चर्यमय शिशु हैं। अगर आप हमारी मनहारी छटा की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3310**
निऱैयिनाल् कुऱैविल्ला★ नॆडुम् पणैत्तोळ् मड प्पिन्नै★ पॊऱैयिनाल् मुलैयणैवान्★ पॊरु विडै एऴ् अडर्त्तुगन्द★ कऱैयिनार् तुवर् उडुक्कै★ कडैयाविन् कऴि कोल् कै★ च्चऱैयिनार् कवराद★ तळिर् निऱत्ताल् कुऱैविल्मे॥४॥	प्रभु लाल वस्त्र एवं मोती का हार पहनते हैं। आप एक दूध का घड़ा एवं चराने वाली छड़ी धारण करते हैं। बांस सी सुघड़ बांह वाली आकर्षक नप्पिनाय के उरोजों के आलिंगन हेतु आपने सात वृषभों का दक्षता से शमन किया। अगर आप हमारी गुलाबी गाल की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3311**
तळिर्निऱत्ताल् कुऱैविल्ला★ तनि च्चिऱैयिल् विळप्पुट्र★ किळिमॊऴियाळ् कारणमा★ क्किळर् अरक्कन् नगर् एरित्त★ कळि मलर् तुळाय् अलङ्गल्★ कमळ् मुडियन् कडल् ञालत्तु★ अळिमिक्कान् कवराद★ अऱिविनाल् कुऱैविल्मे॥५॥	पूर्णता के प्रतीक प्रभु सुगंधित तुलसी का मुकुट धारण करते हैं।सुन्दर मृदुभाषिणी सीता को रोके रखने के कारण आपने समुद्र से घिरे भयानक असुर रावण के नगर को जला दिया। अगर आप हमारे मन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3312**

अरिविनाल् कुरैविल्ला॰ अगल् ञालत्तवर् अरिय॰ नॆरियॆल्लाम् एडुत्तुरैत्त॰ निरै ञानत्तॊरु मूर्त्ति॰ कुरिय माण् उरुवागि॰ क्कॊड्ङ्गोळाल् निलम् कॊण्ड॰ किरियम्मान् कवराद॰ किळर् ऑळियाल् कुरैविल्मे॥६॥	विश्व के विचारक लोग यह जान सकें कि ज्ञान के प्रतीक प्रभु ने सत्य का मार्ग स्थापित किया। चतुर वामन के रूप में पधार कर आपने धरा पर अधिकार कर लिया। अगर आप हमारे यौवन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3313**
किळर् ऑळियाल् कुरैविल्ला॰ अरियुरुवाय् क्किळर्न्दॆळुन्दु॰ किळर् ऑळिय इरणियनदु॰ अगल् मार्वम् किळित्तुगन्द॰ वळर् ऑळिय कनल् आळि॰ वलम्बुरियन् मणि नील॰ वळर् ऑळियान् कवराद॰ वरि वळैयाल् कुरैविल्मे॥७॥	आपका अतिशक्तिशाली भयानक सिंह के रूप में विस्फोट हुआ और आपने हिरण्य की चमकती छाती को बड़ी आसानी से चीर डाली। आप तेजोमय चक्र एवं शंख धारण करते हैं। अगर आप हमारे आभूषित कंगन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3314**
वरि वळैयाल् कुरैविल्ला॰ पॆरु मुळक्काल् अडङ्गारै॰ एरियळलम् पुगवूदि॰ इरु निलमुन् तुयर् तविरत्त॰ तॆरिवरिय शिवन् पिरमन्॰ अमरर् कोन् पणिन्देत्तुम्॰ विरि पुगळान् कवराद॰ मेगलैयाल् कुरैविल्मे॥८॥	महान यशस्वी प्रभु घुमावदार शंख धारण करते हैं। इसकी घोर ध्वनि ने विद्रोही कौरव का नाश कर दिया। तीन देवों ने स्वागत करते हुए कहा 'विश्व की यातना का अंत हो गया'। अगर आप हमारे आभूषित कमरधनी की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3315**
मेगलैयाल् कुरैविल्ला॰ मॆलिवुट्ट अगल् अल्गुल्॰ पोगमगळ् पुगळत्तन्दै॰ विरल् वाणन् पुयम् तुणित्तु॰ नागमिशै त्तुयिल्वान् पोल्॰ उलगॆल्लाम् नन्गॊडुङ्ग॰ योगणैवान् कवराद॰ उडम्बिनाल् कुरैविल्मे॥९॥	ऊषा के पिता बलवान बाणासुर की बांहों को काट गिराने वाले प्रभु विश्व के कल्याणार्थ योगनिद्रा में शेषशय्या पर विराजते हैं। अगर आप हमारे शरीर की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3316**
उडम्बिनाल् कुरैविल्ला॰ उयिर् पिरिन्द मलैत्तुण्डम्॰ किडन्दन पोल् तुणि पलवा॰ अशुरर् कुळाम् तुणित्तुगन्द॰ तडम् पुनल शडैमुडियन्॰ तनियॊरु कूरमर्न्दुरैयुम्॰ उडम्बुडैयान् कवराद॰ उयिरिनाल् कुरैविल्मे॥१०॥	बड़े उत्साह से आपने अनेकों विशाल असुरों को काटकर टुकड़े टुकड़े कर उन्हें निष्प्राण पत्थर की तरह ढ़ेर कर दिया। तेज प्रवाहपूर्ण गंगा के साथ जटाधारी शिव एकांत में आपके दाहिने अंश में स्थित हैं। अगर आप हमारे जीवन की चाह नहीं रखते हैं तो हमारी कोई क्षति नहीं होगी। **3317**
‡उयिरिनाल् कुरैविल्ला॰ उलगेळ् तन्नुळ् ऑडुक्कि॰ तयिर् वॆण्णॆय् उण्डानै॰ त्तडम् कुरुगूर् च्चडगोपन्॰ शॆयिरिल् शॊल् इशैमालै॰ आयिरत्तुळ् इप्पत्ताल्॰ वयिरम् शेर् पिरप्परुत्तु॰ वैगुन्दम् नण्णुवरे॥११॥	कुरूगुर नगर के शडगोपन के त्रुटिरहित हजार गीतों का यह दशक दही मक्खन खाने वाले जगत के नाथ का प्रशस्ति गान है।इसे गाने वाले जन्म के बंधन को काटकर स्वर्गारोही होंगे। **3318** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

39 नण्णादार (3319 - 3329)

उलगियर्गैयिल् वेरूप्पुट्र आळवार तिरूवडि शेरक्कुमारू एम्बेरूमानै वेण्डुदल्

(ா)

‡नण्णादार् मुऱुवलिप्प⋆ नल्लुट्रार् करैन्देङ्ग⋆ एण्णारा त्तुयर् विळैक्कुम्⋆ इवैयॆन्न उलगियकैं⋆ कण्णाळा ! कडल् कडैन्दाय् !⋆ उन् कळऱ्के वरुम् परिशु⋆ तण्णावादडियेनै⋆ प्पणि कण्डाय् शामाऱे॥१॥	जब यह संसार अनगिनत यातना देता है तब अजनवी लोग हंसते हैं और मित्र लोग शोक प्रकट करते हैं। क्या रीति है ? सुन्दर नयनों के सागर मथने वाले प्रभु ! शीघ्र अपने चरणारविंद का मार्ग बताइये या मौत बुला दीजिये। **3319**
शामाऱुम् कैडुमाऱुम्⋆ तमर् उट्रार् तलैत्तलैप्पॆय्दु⋆ एमारि क्किडन्दलट्टुम्⋆ इवैयॆन्न उलगियकैं⋆ आमारॊन्ऱरियेन् नान्⋆ अरवणैयाय् ! अम्माने⋆ कूमाऱे विरै कण्डाय्⋆ अडियेनै क्कुऱिक्कॊण्डे॥२॥	संवंधीजन विनाश एवं मृत्यु लाते हैं, एक दूसरे को ठगते हैं, और च्युत होने पर रोते हैं। क्या रीति है ? शेषशायी प्रभु ! हमारी प्रार्थना स्वीकार करें, कोई मार्ग बतायें एवं हमें अपने पास शीघ्र बुला लें। **3320**
कॊण्डाट्टुम् कुलम् पुनैवुम्⋆ तमर् उट्रार् विळु निदियुम्⋆ वण्डार् पूङ्गुळलाळुम्⋆ मनैयॊळिय उयिर् माय्दल्⋆ कण्डाट्रेन् उलगियकैं⋆ कडल् वण्णा ! अडियेनै⋆ पण्डे पोल् करुदादु⋆ उन्नडिक्के कूय्प्पणिगॊळ्ळे॥३॥	सुख, मित्रता, संबंधीजन, अपार संपत्ति, जूड़े वाली नारी एवं गृह सभी मृत्यु के समय पयान कर जाते हैं। हे सागर सा सलोने प्रभु! हम संसार का सहन नहीं कर सकते। क्या रीति है ? जैसा पूर्व में मेरे साथ व्यवहार किया था वैसा नहीं करें। प्रार्थना है कि अपनी सेवा में शीघ्र बुला लें। **3321**
कॊळ्ळॆन्ऱु किळर्न्दॆळुन्द⋆ पॆरुम् शॆल्वम् नॆरुप्पाग⋆ कॊळ्ळॆन्ऱु तम मूडुम्⋆ इवैयॆन्न उलगियकैं⋆ वळ्ळले ! मणिवण्णा !⋆ उन कळऱ्के वरुम्बरिशु⋆ वळ्ळल् शॆय्दडियेनै⋆ उनदरुळाल् वाङ्गाये॥४॥	अपार संपत्ति तृष्णा को प्रज्वलित करती है एवं संसार को चारो ओर से अंधकार की चादर में समेट लेती है। उदारमना मणिवर्ण के प्रभु! क्या रीति है ? अपनी दया से हमें इनचीजों से अलग कर दीजिये तथा अपने चरणारविंद का उपहार दीजिये। **3322**
वाङ्गु नीर् मलर् उलगिल्⋆ निर्पनवुम् तिरिवनवुम्⋆ आङ्गुयिर्गळ् पिऱप्पिऱप्पु⋆ प्पिणि मूप्पाल् तगर्प्पुण्णुम्⋆ ईङ्गिदन्मेल् वॆन्नरगम्⋆ इवैयॆन्न उलगियकैं⋆ वाङ्गॆनै नी मणिवण्णा !⋆ अडियेनै मऱुक्केल्॥५॥	प्रलय के जल से प्रस्फुटित होन वाले संसार में प्राणीजन जन्म, मरण, रोग, आयु का दुख भोगकर अंत में नरक का दुख भोगते हैं। क्या रीति है ? मणिवर्ण के प्रभु! मुझे छोड़िये नहीं, प्रार्थना है अपने पास रख लीजिये। **3323**

मऱुक्कि वल् वलैप्पडुत्ति⋆ क्कुमैत्तिट्टु क्कॊन्ऱुणबर्⋆ अऱ्प्पॊरुळै अऱिन्दोरार्⋆ इवैयॆन्न उलगियर्कै⋆ वॆऱि तुळव मुडियाने !⋆ विनैयेनै उनक्कडिमै⋆ अऱक्कॊण्डाय्⋆ इनि एन्नार् अमुदे !⋆ कूयरुळाये॥६॥	संसारीजन सत्य को बिना समझे हुए तिरस्कार करना, बांधना, पिटाई करना, वध करना, एवं भोजन करना आदि कृत्यों में लिप्त रहते हैं। क्या रीति है ? हमारे अमृत, तुलसी के मुकुट वाले प्रभु! कितना पापी हूं मैं! आपने मुझे परिवर्तित कर अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया, अब अपने चरण के पास बुला लीजिये। **3324**
आये ! इव्वुलगत्तु⋆ निर्पनवुम् तिरिवनवुम्⋆ नीये मट्रॊरु पॊरुळुम्⋆ इन्ऱि नी निन्ऱमैयाल्⋆ नोये मूप्पिऱप्पिऱप्पु⋆ प्पिणिये एन्ऱिवै ऒऴिय⋆ क्कूयॆगॊळ् अडियेनै⋆ क्कॊडुवुलगम् काट्टेले॥७॥	जब आप स्वयं जड़ एवं चेतन हैं, तथा आप अकारण विश्व में स्थित हैं। प्रार्थना है कि मुझे दुष्ट संसार का जन्म, मरण, रोग, आयु एवं यातना से अलग रखकर अपने पास अवश्य बुला लीजिये। **3325**
काट्टि नी करन्दुमिळुम्⋆ निल नीर् ती विशुम्बु काल्⋆ ईट्टी नी वैत्तमैत्त⋆ इमैयोर् वाऴ् तनि मुट्टै⋆ क्कोट्टैयिनिल् कऴित्तु⋆ एनै उन् कॊळुम् शोदि उयरत्तु⋆ कूट्टरिय तिरुवडिक्कळ्⋆ एञ्ञान्ऱु कूट्टुदिये॥८॥	आप अपने को प्रकट कर पुनः लुप्त हो जाते हैं। आप संसार को बनाकर इसके साथ पृथ्वी जल अग्नि वायु एवं आकाश बनाये। क्या मैं देवताओं के लोक को पारकर आपके दिव्य चरण तक पहुंच सकूंगा ? अहा ! यह कब होगा ? **3326**
कूट्टुदि निन् कुरै कऴल्गळ्⋆ इमैयोरुम् तॊऴावगै शॆय्दु⋆ आट्टुदि नी अरवणैयाय् !⋆ अडियेनुम् अग्दऱिवन्⋆ वेट्कैयॆल्लाम् विडुत्तु⋆ एनै उन् तिरुवडिये शुमन्दुऴल⋆ कूट्टरिय तिरुवडिक्कळ्⋆ कूट्टिनै नान् कण्डेने॥९॥	शेषशय्या के प्रभु ! आप देवताओं को भी बिना पुनरूद्धार के घुमाते रहते हैं।यह मैं जानता हूं।हमारी ईच्छा को दूर करते हुए आपने हमारे ऊपर अपना चरण देकर हमें घुमा रहे हैं। यह अब स्पष्ट है कि मैं आपके चरणारविंद से अलग नहीं हो सकता। **3327**
कण्डु केट्टुट्टु मोन्दुण्डुऴलुम्⋆ ऐङ्गरुवि कण्ड इन्बम्⋆ तॆरिवरिय अळविल्ला च्चिट्रिन्बम्⋆ ऒण् तॊडियाळ् तिरुमगळुम्⋆ नीयुमे निला निर्प⋆ कण्ड शदिर् कण्डॊऴिन्देन्⋆ अडैन्देन् उन् तिरुवडिये॥१०॥	हमने देखने, सुनने, छूने, सूंघने एवं खाने का आनंद लिया है तथा इन्द्रियों से परे स्वर्ग का सीमित सुख का भी अनुभव किया है। केवल आप एवं कंगनवाली गोरी लक्ष्मी ही स्थायी हैं। हमारे प्रभु ! क्या आश्चर्य है कि हमने आपका चरणारविंद प्राप्त कर लिया है । **3328**
‡तिरुवडियै नारणनै⋆ क्केशवनै प्परञ्जुडरै⋆ तिरुवडि शेर्वदु करुदि⋆ च्चॆऴुङ्गुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ तिरुवडिमेल् उरैत्त तमिळ्⋆ आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ तिरुवडिये अडैविक्कुम्⋆ तिरुवडि शेरन्दॊन्ऱमिने॥११॥	विकासशील कुरूगुर नगर के शडगोपन से विरचित त्रुटिरहित तमिल के हजार पद का यह दशक तेजोमय नारायण एवं केशव के चरणारविंद को समर्पित है। नम्रता के साथ इसका गान प्रभु के चरण को प्राप्त कराने वाला है। **3329** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><th colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः

40 ओन्रून्देवुम् (3330 - 3340)

एम्बेरूमान् एल्ला त्तेवर्गटकुम् मेम्बट्टवन् एनल्

अन्य देव की सेवा छोड़कर केवल नारायण की सेवा कर</th></tr>
<tr><td>ऑन्रुम् तेवुम् उलगुम् उयिरुम् मट्रुम्⋆ यादुम् इल्ला
अन्रु⋆ नान्मुगन् तन्नोंडु⋆ तेवर् उलगोडुयिर् पडैत्तान्⋆
कुन्रम् पोल् मणि माडम् नीडु⋆ तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्⋆
निन्र आदिप्पिरान् निर्क⋆ मट्रैत्तेय्वम् नाडुदिरे॥१॥</td><td>तब जबकि न तो कोई देवगन थे, न विश्व था, न प्राणी थे, और कुछ भी नहीं था, आपने ब्रह्मा को बनाकर उनके साथ देवगन, विश्व तथा अन्य प्राणियों को बनाया। आप आदिपिरान के रूप में रत्नाभूषित पर्वतनुमा महलों वाले कुरूगुर में खड़े हैं।तब अन्य किस देवता को तू खोजता है ? 3330</td></tr>
<tr><td>नाडि नीर् वणङ्गुम् दैय्वमुम्⋆ उम्मैयुम् मुन् पडैत्तान्⋆
वीडिल् शीर् प्पुगळ् आदिप्पिरान्⋆ अवन् मेवि उरै कोयिल्⋆
माड माळिगै शूळ्न्दळगाय⋆ तिरुक्कुरुगूर् अदनै⋆
पाडियाडि प्परवि च्चेन्मिन्गाळ्⋆ पल्लुलगीर्! परन्दे॥२॥</td><td>हे संसार के लोगों ! तब प्रभु ने तुम्हें तथा तुमसे पूजित देवों को बनाया। अंतहीन बड़प्पन एवं यश के साथ आप वरामदे से युक्त महलों वाले मंदिर नगर कुरूगुर में स्वेच्छा से स्थित हैं। सब जगह घूमते हुए आपकी प्रशस्ति गाकर नाचो। 3331</td></tr>
<tr><td>परन्द दैय्वमुम् पल्लुलगुम् पडैत्तु⋆ अन्रुडने विळुङ्गि⋆
करन्दुमिळ्न्दु कडन्दिडन्ददु⋆ कण्डुम् तेळियगिल्लीर्⋆
शिरङ्गळाल् अमरर् वणङ्गुम्⋆ तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्⋆
परन् तिरम् अन्रि प्पल्लुलगीर्!⋆ दैय्वम् मट्रिल्लै पेशुमिने॥३॥</td><td>आपने सब देव एवं लोक को रचा, तब एक क्षण में सबको निगल गये। तब छिप गये, प्रकट हुए, सबको मापा एवं स्थान बदल दिया।हे जगत के लोगों ! अब बताओ, यह सब जानते हुए तुम अभी भी नहीं समझते ? देवसबों से पूजित कुरूगुर के इस स्वरूप को छोड़कर अन्य कोई प्रभु नहीं है। 3332</td></tr>
<tr><td>पेश निन्र शिवनुक्कुम् पिरमन् तनक्कुम्⋆ पिरर्क्कुम्
नायगन् अवने⋆ कबालनन् मोक्कत्तु⋆ क्कण्डुगोंळ्मिन्⋆
तेश मा मदिळ् शूळ्न्दळगाय⋆ तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्⋆
ईशन्बाल् ओर् अवम् परैदल्⋆ एन्नावदिल्लिङ्गियर्क्के॥४॥</td><td>शिव ब्रह्मा एवं अन्य सभी देव, जिन्हें तुम जानते हो, सब के आप ही नाथ हैं।कपाल मोक्ष से शिव के उद्धार को समझ लो। लिंग की पूजा करने वाले द्वारा दीवालों से घिरे सुनहले कुरूगुर नगर में स्थित प्रभु के बारे में दुर्वचन बोलने से क्या लाभ ? 3333</td></tr>
<tr><td>इलिङ्गत्तिट्ट पुराणत्तीरुम्⋆ शमणरुम् शाक्कियरुम्⋆
वलिन्दु वादु शेय्वीर्गळुम्⋆ मट्रु नुम् दैय्वमुम् आगि निन्रान्⋆
मलिन्दु शेन्नेल् कवरि वीशुम्⋆ तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्⋆
पॉलिन्दु निन्र पिरान् कण्डीर्⋆ ऑन्रुम् पॉय्यिल्लै पोट्रुमिने॥५॥</td><td>जो लोग लिंग पुराण का संदर्भ देते हो, देखो। जैन एवं बौद्ध लोग ! अंतहीन विवाद करने से अच्छा है कुरूगुर में खड़े प्रभु की प्रशस्ति गाओ जहां धान की लंबी बालियां चवर की तरह हवा में धीरे धीरे झूमती हैं। प्रभु ही तू हैं, तथा प्रभु ही तुम्हारे सब देवगन हैं, यह मिथ्या नहीं है। 3334</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>पोट्रि मट्रोर् दैय्वम्* पेणप्पुरत्तिट्टु* उम्मैयिन्ने
तेट्रि वैत्तदु* एल्लीरुम् वीडु पेट्राल् उलगिल्लै एन्रे*
शेट्रिल् शेन्नेल् कमलम् ओङ्गु* तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्*
आट्र वल्लवन् मायम् कण्डीर्* अदरिन्दरिन्दोडुमिने॥६॥</td><td>तुमलोग जो निम्न श्रेणी के देवता की पूजा करते हो ऐसी स्थिति में आ गये हो ‘अगर सब को मुक्ति दे दी जाय तो संसार ही नहीं रहेगा’। सुनहले धान एवं कमल फूल से संपन्न कुरूगुर नगर के प्रभु की यह क्रीड़ा है। यह समझकर दौड़ो। 3335</td></tr>
<tr><td>ओडियोडि प्पल् पिरप्पुम् पिरन्दु* मट्रोर् दैय्वम्
पाडियाडि प्पणिन्दु* पल्पडिगाल् वळियेरि क्कण्डीर्*
कूडि वानवर् एत्त निन्र* तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्*
आडु पुट्कोडि आदि मूर्त्तिक्कु* अडिमै पुगुवदुवे॥७॥</td><td>लगातार चलकर अनेकों जन्म लेकर निम्न श्रेणी के देवता की पूजा कर तूने सच के अनेकों रास्तों को खोजने का प्रयास किये। अब कुरूगुर के आदिमूर्ति प्रभु का सेवक बन जाओ जिनकी स्वर्गिक जन समूह में खड़ा होकर पूजा करते हैं।आपके ध्वज पर सुन्दर गरूड़ नृत्य करते हैं। 3336</td></tr>
<tr><td>पुक्कडिमैयिनाल् तन्नै क्कण्ड* मार्क्कण्डेयन् अवनै*
नक्क पिरानुम् अन्रुय्यक्कोंण्डदु* नारायणन् अरुळे*
कोंक्कलर् तडन्दाळै वेलि* त्तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्*
मिक्क आदिप्पिरान् निर्क* मट्रैत्तेय्वम् विळम्बुदिरे॥८॥</td><td>नारायण की कृपा से माकण्डेय मुनि की रक्षा हुई जब वे नंगे देव शिव में शरण ले लिये। बगुला जैसा श्वेत पंडनस की झाड़ियों से घिरे कुरूगुर में जब महान आदिपिरान खड़े हैं तब किस अन्य देवता की तू प्रशंसा करेगा ? 3337</td></tr>
<tr><td>विळम्बुम् आरु शमयमुम्* अवैयागियुम् मट्रुम् तन्बाल्*
अळन्दु काण्डर्करियन् आगिय* आदिप्पिरान् अमरुम्*
वळङ्गोंळ् तण्बणै शूळ्न्दळगाय* तिरुक्कुरुगूर् अदनै*
उळङ्गोंळ् ञानत्तु वैम्मिन्* उम्मै उय्यक्कोंण्डु पोगुरिले॥९॥</td><td>दर्शन के छः सिद्धांत तथा अन्य इस तरह के मत प्रभु को माप नहीं सकते। सुन्दर खेतों से घिरे कुरूगुर में इस तरह से आप आदिपिरान की तरह स्थित हैं। अगर तू मुक्ति चाहता है तो आपको अपने हृदय में धारण कर। 3338</td></tr>
<tr><td>उरुवदावदेत्तेवुम्* एव्वुलगङ्गळुम् मट्रुम् तन्बाल्*
मरुविल् मूर्त्तियोडोत्तु* इत्तनैयुम् निन्र वण्णम् निर्कवे*
शेरुविल् शेन्नेल् करुम्बोडोङ्गु* तिरुक्कुरुगूर् अदनुळ्*
कुरिय माण् उरुवागिय* नीळ् कुडक्कूत्तनुक्काळ् शेय्वदे॥१०॥</td><td>आप अपने निष्कलंक स्वरूप में सब देवगन सब लोक तथा अन्य सब को धारण करते हैं। आप कुरूगुर में स्थित हैं जहां लंबे धान एवं गन्ना के पौधे होते हैं। आप वामन की तरह आये। आपने वर्तनों की समूह के साथ नृत्य किया। आपकी ही सेवा श्रेयस्कर एवं उपयुक्त है।3339</td></tr>
<tr><td>‡आट्चेय्दाळि प्पिरानै च्चेरन्दवन्* वण् कुरुगूर् नगरान्*
नाट्कमळ् मगिळ् मालै मार्बिनन्* मारन् शडगोबन्*
वेट्कैयाल् शोंन्न पाडल्* आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम् वल्लार्*
मीट्चि इन्रि वैगुन्द मानगर्* मट्रदु कैयदुवे॥११॥</td><td>त्रुटिरहित हजार पद का यह दशक, कुरूगुर के मारन शडगोपन की प्रेमपूर्ण रचना है जो चक्रधारी तथा वकुला फूल की माला वाले आदिपिरान की गौरवमयी गाथा का गान करती है।जो इसको याद करलेंगे वे उस वैकुंठ को जायेंगे जहां से लौटना नहीं पड़ता। 3340

नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्</td></tr>
</table>

41 कैयार (3341 – 3351)

उण्मैयान बक्ति इल्लाद निलैयिलुम् शिरन्द पेट्रै अरूळुम् एम्बेरूमान् करूणै त्तिऱम्

कैयार् शक्करत्तु⋆ एन् करुमाणिक्कमे ! एन्ऱेन्ऱु⋆ पोय्ये कैम्मै शोल्लि⋆ प्पुऱमे पुऱमे आडि⋆ मेय्ये पेट्रॊळिन्देन्⋆ विदिवाय्क्किन्ऱु काप्पारार्⋆ ऐयो कण्ण पिरान् !⋆ अऱैयो इनि प्पोनाल्ले॥१॥	यह बोलते हुए 'तेजोमय चक्र धारण करने वाले' 'मणिवर्ण के प्रभु' तथा अन्य छोटी प्रशस्ति को गाकर, नाचकर हमने सच को पा लिया। हमारा क्या सौभाग्य है? इसे कौन रोक सकता है ? हमारे कृष्ण प्रभु ! अगर हमें छोड़कर आप जाना चाहेंगे तो क्या हम आपको जाने देंगे ? **3341**
पोनाय् मा मरुदिन् नडुवे⋆ एन् पोल्ला मणिये⋆ तेने ! इन्नमुदे !⋆ एन्ऱेन्ऱे शिल कूट्टच्चोल्ल⋆ तानेल् एम् पेरुमान्⋆ अवन् एन्नागि ऒळिन्दान्⋆ वाने मा निलमे⋆ मट्रु मुट्रुम् एन्नुळ्ळनवे॥२॥	मैंने मिथ्या बातें बोलीं 'आप मरूदु वृक्षों में घुस गये' 'मेरे नैसर्गिक मणि' 'शहद की तरह मधुर हमारे अमृत' । आश्चर्य ! मेरे प्रभु स्वयं मुझमें आ गये। आकाश, पृथ्वी तथा सभी अन्य वस्तु हमारे भीतर आ गये। **3342**
उळ्ळन मट्रुळवा⋆ प्पुऱमे शिल मायम् शोल्लि⋆ वळ्ळल् मणिवण्णने !⋆ एन्ऱेन्ऱे उनैयुम् वञ्जिक्कुम्⋆ कळ्ळ मनम् तविर्न्दे⋆ उनै क्कण्डु कोण्डुय्न्दॊळिन्देन्⋆ वेळ्ळत्तणै क्किडन्दाय्⋆ इनि उन्नै विट्टेन्गोळ्वने॥३॥	दिखावटी कुछ बातें मैंने बोलीं जबकि भीतर सचाई कुछ और थी, मिथ्या बातें जैसे 'उदार प्रभु' 'मणि वर्ण के प्रभु' आदि। छलपूर्ण स्वभाव को त्यागने पर आपका दर्शन हुआ तथा मुक्ति मिली। सागर में शयन करने वाले प्रभु! कौन अन्य मेरा आश्रय हो सकता है? **3343**
एन् कोळ्वन् उन्नै विट्टेन्नुम्⋆ वाशगङ्गळ् शोल्लियुम्⋆ वन् कळ्वनेन् मनत्तै वलित्तु⋆ क्कण्ण नीर् करन्दु⋆ निन्कण् नेरुङ्ग वैत्त⋆ एनदावियै नीक्कगिल्लेन्⋆ एन्कण् मलिनम् अऱुत्तु⋆ एन्नै क्कूवि अरुळाय् कण्णने॥४॥	यद्दपि मैं इस तरह से बोलता हूं 'हमारा अन्य कौन आश्रय है' 'दुष्ट जो मैं हूं' । मुझमें आत्मा को संसार से पृथक करने की शक्ति नहीं है। न तो मैं अपने हृदय को सशक्त बना सका। न अपने आंसू को सुखाकर आपके पास जा सका। मेरे कृष्ण ! कचरे से हटाकर मुझे अपने पास रख लो। **3344**
कण्ण पिरानै⋆ विण्णोर् करु माणिक्कत्तै अमुदै⋆ नण्णियुम् नण्णगिल्लेन्⋆ नडुवेयोर् उडम्बिल् इट्टु⋆ तिण्णम् अळुन्द क्कट्टि⋆ प्पल शेय्विनै वन् कयिट्राल्⋆ पुण्णै मऱैय वरिन्दु⋆ एन्नै प्पोर वैत्ताय् पुऱमे॥५॥	हे कृष्ण, स्वर्गिकों के देव, श्याम मणि, अमृत, आनन्द ! आपके पास आ गया हूं परंतु आपको पा नहीं सका हूं। हम दोनों के बीच में आपने एक शरीर को कर्म की मजबूत रस्सी से कस कर बांध रखा है तथा घाव पर मरहम लगाकर इस धोखाभरे वृहत संसार में फेंक दिया है। **3345**
पुऱम् अऱ क्कट्टि क्कोण्डु⋆ इरु वल्विनैयार् कुमैक्कुम्⋆ मुऱै मुऱै याक्कै पुगल् ऒळिय⋆ क्कण्डु कोण्डॊळिन्देन्⋆ निऱम् उडै नाल् तडम् तोळ⋆ शेय्य वाय् शेय्य तामरै क्कण्⋆ अऱमुयल् आळियङ्गै⋆ क्करुमेनि अम्मान् तन्नैये॥६॥	हे श्याम वर्ण के प्रभु ! आपने हमें पूरी तरह आलिंगन पाश में ले लिया है। पुनर्जन्म के हमारे कर्म का क्षय हो गया है। आपके चार दिव्य हाथ, लाल होंठ, कमलनयन, एवं हाथ में कारण तथा परिणाम का चक्र जी भर कर हमने देखा है। **3346**

अम्मान् आळिप्पिरान्⋆ अवन् एव्विडत्तान् यानार्⋆ एम्मा पावियर्क्कुम्⋆ विदि वायक्किन्ऱ वायक्कुम् कण्डीर्⋆ कैम्मा तुन्बॊळित्ताय् ! एन्ऱ⋆ कै तलै पूशल् इट्टे⋆ मॆय्म् मालाय् ऑळिन्देन्⋆ एम्पिरानुम् एन् मेलाने॥७॥	चक्रधारी प्रभु ! हमारे शासक प्रभु ! आप कहां हैं और मैं कौन हूं ? हाथ को सिर पर रखकर मात्र यह कहते हुए 'हाथी के रक्षक', मैं आपका सच्चा प्रेमी बन गया हूं तथा आप भी मेरे हो गये हैं। कितना भी शक्तिशाली कर्म हो जब आपकी कृपा होती है तो होगी ही। **3347**
मेला त्तेवर्गळुम्⋆ निल त्तेवरुम् मेवि त्तॊळुम्⋆ मालार् वन्दिननाळ्⋆ अडियेन् मनत्ते मन्निनार्⋆ शेलेय् कण्णियरुम्⋆ पॆरुम् शॆल्वमुम् नन्मक्कळुम्⋆ मेला ताय् तन्दैयुम्⋆ अवरे इनि आवारे॥८॥	स्वर्गिकों एवं राजाओं से पूजित प्रभु आज पधारकर इस अधम हृदय में बस गये हैं। आज से आप हमारे माता, पिता, संतान, संपत्ति, मत्स्य नयना पत्नी, एवं सब कुछ हैं। **3348**
आवारार् तुणै एन्ऱ⋆ अलै नीर् क्कडलुळ् अळुन्दुम् नावाय् पोल्⋆ पिऱवि क्कडलुळ्⋆ निन्ऱ नान् तुळङ्ग⋆ तेवार् कोलत्तॊडुम्⋆ तिरुच्चक्करम् शङ्गिनॊडुम्⋆ आवा ! एन्ऱरुळ् शॆय्दु⋆ अडियेनॊडुम् आनाने॥९॥	समुद्री तूफान में फंसे जहाज की तरह आपातकाल का संकेत देते हुए जन्म के सागर में कांपते हुए खड़ा होकर मैंने पुकारा। अति उदारपन तथा करूणावश हमें सुनकर हाथ में शंख एवं चक्र लिये आप हमारे पास आये और हमारे साथ एक हो गये। **3349**
आनान् आळुडैयान् एन्ऱ⋆ अग्दे कॊण्डुगन्दु वन्दु⋆ ताने इन्नरुळ् शॆय्दु⋆ एन्नै मुट्रवुम् तान् आनान्⋆ मीनाय् आमैयुमाय्⋆ नरशिङ्गमुमाय् क्कुऱळाय्⋆ कानार् एनमुमाय्⋆ क्कर्कियाम् इन्नम् कार् वण्णने॥१०॥	हमारे भीतर एक विश्वासी सेवक की झलक देखकर आप उल्लसित होकर आये। अपनी करूणा एवं स्वेच्छा से आप हमारे साथ एक हो गये। देखो, श्याम प्रभु जो मत्स्य, कच्छप, नरसिंह, वामन, तथा सूकर स्वरूप में आये पुनः कल्कि स्वरूप में आयेंगे। **3350**
कार् वण्णन् कण्ण पिरान्⋆ कमल त्तडङ्गण्णन् तन्नै⋆ एर्वळ ऑण्कळनि⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ शीर् वण्ण ऑण् तमिळाळ्⋆ इवै आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ आर्वण्णत्ताल् उरैप्पार्⋆ अडिक्कीळ् पुगुवार् पॊलिन्दे॥११॥	बैल से जोते गये खेतों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित सुन्दर तमिल के हजार पद का यह दशक अरूणाभ राजीव नयन श्याम वदन प्रभु की प्रशस्ति गाता है। जो इसे गायेंगे वे सफल होकर प्रभु का चरणारविंद को पायेंगे। **3351** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

42 पोलिग (3352 -3362)

अडियार तिरूक्कूट्टत्तै क्कण्डु वाळ्त्तल्

<table>
<tr><td>पॅाल्गि पॅाल्गि पॅाल्गि ! ⋆ पोयिट्ट वल्लुयिर् च्चापम्⋆
नल्लियुम् नरगमुम् नैन्द⋆ नमनुक्किङ्गु यादॉन्ऱुम् इल्लै⋆
कल्लियुम् कॅडुम् कण्डु कॅाळ्ळिमन्⋆ कडल्वण्णन् बूदङ्गळ् मण्मेल्⋆
मल्लिय प्पुगुन्दिशै पाडि⋆ आडि उळिदर क्कण्डोम्॥१॥</td><td>जय हो,जय हो, जय हो! अस्तित्व का शाप क्षीण हुआ। नरक नरम पड़ गया है। यम को अब यहां कोई काम नहीं है। देखो यहां तक कि कलि का अन्त हो जायेगा। सागर सा सलोने प्रभु का चैतन्य धरा पर समूह में पधारा है। हमलोगों ने उन्हें सर्वत्र गाते नाचते देखा है। **3352**</td></tr>
<tr><td>कण्डोम् कण्डोम् कण्डोम्⋆ कण्णुक्किनियन कण्डोम्⋆
तॅाण्डीर् ! एल्लीरुम् वारीर्⋆ तॅाळुदु तॅाळुदु निन्ऱार्त्तुम्⋆
वण्डार् तण्णन् तुळायान्⋆ मादवन् बूदङ्गळ् मण्मेल्⋆
पण् तान् पाडि निन्ऱाडि⋆ प्परन्दु तिरिगिन्ऱनवे॥२॥</td><td>हमलोगों ने आंखों को प्रिय लगने वाला द्दश्य देखा है। हॉ देखा है हॉ देखा है। आओ भक्तों ! पूजा अर्पित करो तथा प्रशस्ति गाकर आनंद में चिल्लाओ। तुलसी माला वाले माधव के चैतन्य प्रतिनिधि पृथ्वी पर घूम रहे हैं। वे खड़े पन्न गाते तथा सर्वत्र नाचते दिखे हैं। **3353**</td></tr>
<tr><td>तिरियुम् कलियुगम् नीङ्गित्⋆ देवर्गळ् तामुम् पुगुन्दु⋆
पॅरिय किदयुगम् पट्रि⋆ प्पेरिन्ब वॅळ्ळम् पॅरुग⋆
करिय मुगिल्वण्णन् एम्मान्⋆ कडल्वण्णन् बूदङ्गळ् मण्मेल्⋆
इरिय प्पुगुन्दिशै पाडि⋆ एङ्गुम् इडम् कॅाण्डनवे॥३॥</td><td>कलि का लुढ़कता समय अंत को प्राप्त हो रहा है। देवगन भी प्रवेश पा गये हैं। सत्य युग का दिव्य समय शुरू हो गया है। धरा पर आनंद की बाढ़ आ गयी है। सागर सा सलोने प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि गीत गाते आ गये हैं। धरा के सभी स्थानों पर वे भर गये हैं। **3354**</td></tr>
<tr><td>इडम् कॅाळ् शमयत्तै एल्लाम्⋆ एडुत्तु क्कळैवन पोल⋆
तडम् कडल् पळ्ळि प्पॅरुमान्⋆ तन्नुडै प्पूदङ्गळेयाय्⋆
किडन्दुम् इरुन्दुम् एळुन्दुम्⋆ गीदम् पलपल पाडि⋆
नडन्दुम् परन्दुम् कुनित्तुम्⋆ नाडगम् शॅय्गिन्ऱनवे॥४॥</td><td>घास की तरह नास्तिकों का मत मूलोच्छेदित हो रहा है। सागर शयन करने वाले प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि बहुत सारे गीत गा रहे हैं।सोकर, बैठकर, खड़ा होकर, चलकर, उड़कर एवं नाचकर वे विस्मयकारी कीड़ा कर रहे हैं। **3355**</td></tr>
<tr><td>शॅय्गिन्ऱदॅन् कण्णुक्कॅान्ऱे⋆ ऑक्किन्ऱदिव्वुलगत्तु⋆
वैगुन्दन् बूदङ्गळेयाय्⋆ मायत्तिनाल् एङ्गुम् मन्नि⋆
ऐयम् ऑन्ऱिल्लै अरक्कर्⋆ अशुरर् पिऱन्दीर् उळ्ळीरेल्⋆
उय्युम् वगैयिल्लै तॅाण्डीर् !⋆ ऊळि पॅयर्त्तिडुम् कॅान्ऱे॥५॥</td><td>प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि विस्मयकारी तरीके से पृथ्वी पर पधार गये हैं। वे सर्वत्र खड़े हैं तथा उनके कृत्य ही हमें द्दष्टिगोचर होते हैं। भक्तों ! संशय छोड़ दो, अगर तुम्हारे बीच असुर या राक्षस होंगे तो वे बच नही सकेंगे एवं मृत्यु का दर्शन करेंगे। **3356**</td></tr>
</table>

कॊन्ऱयिर् उण्णुम् विशादि⋆ पगै पशि तीयन एल्लाम्⋆ निन्ऱिव्वुलगिल् कडिवान्⋆ नेमि प्पिरान् तमर् पोन्दार्⋆ नन्ऱिशै पाडियुम् तुळ्ळि आडियुम्⋆ ञालम् परन्दार्⋆ शॆन्ऱु तॊळुदुय्म्मिन् तॊण्डीर् !⋆ शिन्दैयै च्चॆन्निऱुत्तिये॥ ६॥	चक्रधारी प्रभु के भक्त यहां रूककर पृथ्वी को युद्ध, भूख, बुरे कार्य तथा रोग से मुक्त रखेंगे। उन्मत्त नृत्य तथा प्रेमपूर्ण गीत के साथ वे सर्वत्र फैल गये हैं। सोचना बंद करों भक्तों, जाओ उनकी पूजा कर अपनी रक्षा करो। **3357**
निऱुत्ति नुम् उळ्ळत्तु क्कॊळ्ळुम्⋆ दॆय्वङ्गळ् उम्मै उय्यक्कॊळ्⋆ मऱुत्तुम् अवनोडे कण्डीर्⋆ मार्क्कण्डेयनुम् करिये⋆ कऱुत्त मनम् ऒन्ऱुम् वेण्डा⋆ कण्णन् अल्लाल् दॆय्वम् इल्लै⋆ इऱुप्पदॆल्लाम् अवन् मूर्त्तियाय्⋆ अवर्क्के इऱुमिने॥ ७॥	जानलो कि तुम्हारे प्रिय देवगन तुम्हारी रक्षा केवल प्रभु की कृपा से कर सकेंगे। मार्कण्डेय इसके प्रमाण हैं। संशय मत रखो कृष्ण को छोड़कर कोई देवता नहीं है। जो स्थित है वह सब आपका स्वरूप है अतः आपकी ही एकमात्र पूजा करो। **3358**
इऱुक्कुम् इऱै इऱुत्तुण्ण⋆ एव्वुलगुक्कुम् तन् मूर्त्ति⋆ निऱुत्तिनान् दॆय्वङ्गळ् आग⋆ अत्तॆय्व नायगन् ताने⋆ मऱु त्तिरु मार्वन् अवन् तन्⋆ बूदङ्गळ् गीदङ्गळ् पाडि⋆ वॆऱुप्पिन्ऱि ञालत्तु मिक्कार्⋆ मेवि त्तॊळुदुय्म्मिन् नीरे॥ ८॥	आप देवों के नाथ हैं एवं सबलोकों में स्वयं ही देवगन हैं। जो भी तुम अपने देवों को अर्पित करते हो वो सब आपही स्वयं स्वीकार करते हैं। वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न वाले प्रभु के चैतन्य प्रतिनिधि धरा पर गीत गाते भर गये हैं। घृणा का तिरस्कार कर प्रेम का मार्ग चुनो। पूजा अर्पित कर अपने को मुक्त करो। **3359**
मेवि त्तॊळुदुय्म्मिनीर्गळ्⋆ वेद प्पुनिद इरुक्कै⋆ नाविल् कॊण्डच्चुतन् तन्नै⋆ ञान विदि पिळैयामे⋆ पूविल् पुगैयुम् विळक्कुम्⋆ शान्दमुम् नीरुम् मलिन्दु⋆ मेवि त्तॊळुम् अडियारुम्⋆ पगवरुम् मिक्कदुलगे॥ ९॥	संसार पावन जनों एवं भक्तों से भर गया है जो ज्ञान के मार्ग में बिना रूके अच्युत की पूजा खिले फूल, सुगंधित अग्नि, चंदन, जल, दीप तथा वैदिक मंत्रों से करते हैं।भक्तों ! प्रेमपूर्ण पूजा में भागलेकर अपने को मुक्त करो। **3360**
मिक्क उलगुगळ् तोऱुम्⋆ मेवि क्कण्णन् तिरु मूर्त्ति⋆ नक्क पिरानोडु⋆ अयनुम् इन्दिरनुम् मुदलाग⋆ तॊक्क अमरर् कुळाङ्गळ्⋆ एङ्गुम् परन्दन तॊण्डीर् !⋆ ऒक्क त्तॊळ किट्टिगिल्⋆ कलियुगम् ऒन्ऱुम् इल्लैये॥ १०॥	सभी महान लोकों में देवताओं का विशाल समूह शिव ब्रह्मा तथा इन्द्र के साथ खड़े होकर कृष्ण की पूजा करते हैं। भक्तों ! प्रेमपूर्ण पूजा में अगर तुम भाग ले सके तो कलि का प्रभाव नहीं रहेगा। **3361**
कलियुगम् ऒन्ऱुम् इन्ऱिक्के⋆ तन् अडियार्करुळ् शॆय्युम्⋆ मलियुम् शुडर् ऒळि मूर्त्ति⋆ माय प्पिरान् कण्णन् तन्नै⋆ कलिवयल् तॆन्नन् कुरुगूर्⋆ कारिमारन् शडगोपन्⋆ ऒलि पुगळ् आयिरत्तिप्पत्तु⋆ उळ्ळत्तै माशऱुक्कुमे॥ ११॥	कलि के विनाशक दिव्य कृष्ण आश्चर्यमय प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये प्रसिद्ध हजार पदों वाली रचना का यह दशक सुखदायी खेतों से घिरे नगर कुरूगुर के कारीमारन शठगोपन के शब्दों में हैं और भक्तों के हृदय को धो कर कज्जल करने वाले हैं। **3362** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

43 माशरू जोति (3363 – 3373)

तलैमगळ् कादल् कैमुक्कु मडलूर तूणिदल्

(ग)

माशरु शोदि⋆ एन् शॅय्यवाय् मणिक्कुन्रत्तै⋆ आशरु शीलनै⋆ आदि मूर्त्तियै नाडिये⋆ पाशरवॅय्दि⋆ अरिविळन्दॅनै नाळैयम्⋆ एशरु मूरवर् कव्वै⋆ तोळी ! एन् शॅय्युमे॥१॥	बहन ! सर्वदा दिव्य निष्कलंक प्रथम कारण एवं लाल होंठ के रत्न पर्वत प्रभु को मैंने खोजी। कितनी देर पहले मैं उतावली होकर उन्मादग्रस्त हो गयी थी ? संसार की निन्दा से अब क्या क्षति होगी ? **3363**
एन् शॅय्युम् ऊरवर् कव्वै⋆ तोळी ! इनि नम्मै⋆ एन् शॅय्य तामरै क्कणणन्⋆ एन्नै निरै कॊण्डान्⋆ मुन् शॅय्य मामै इळन्दु⋆ मेनि मॅलिवॅय्दि⋆ एन् शॅय्य वायुम् करुङ्गण्णुम्⋆ पयप्पूरन्दवे॥२॥	बहन ! हमारे अरूणाभ कमल नयन प्रभु ने हमें भावग्रस्त कर दिया है। हमारे गाल की लाली चली गयी मेरा वदन क्षीण हो गया है मेरे लाल होंठ एवं काली आंखों की रंग जाती रही हैं। लोकापवाद से अब क्या क्षति होगी ? **3364**
ऊरन्द शगडम्⋆ उदैत्त पादत्तन्⋆ पेय्मुलै शारन्दु शुवैत्त शॅव्वायन्⋆ एन्नै निरै कॊण्डान्⋆ पेरन्दुम् पॅयरन्दुम्⋆ अवनोडन्रि ओर् शॊल्लिलेन्⋆ तीरन्द एन् तोळी !⋆ एन्शॅय्युम् ऊरवर् कव्वैये॥३॥	बहन ! पूतना के स्तन से उसके प्राण चूसने वाले तथा भरी गाड़ी को पैरों से नष्ट करने वाले प्रभु ने हमें भावग्रस्त कर दिया है। रात दिन हम बड़बड़ाते रहते हैं परंतु प्रभु पर कोई असर नहीं। लोकापवाद से अब क्या क्षति होगी ? **3365**
ऊरवर् कव्वै एरुविट्टु⋆ अन्नै शॊल् नीर् मडुत्तु⋆ ईर नॆल् वित्ति मुळैत्त⋆ नॆञ्ज प्पॆरुञ्जॆय्युळ्⋆ पेरमर् कादल्⋆ कडल् पुरैय विळैवित्त⋆ कार् अमर् मेनि⋆ नम् कण्णन् तोळी ! कडियने॥४॥	बहन ! श्याम वदन प्रभु ने हृदय में प्रेम का बीज बो दिया है। लोकापवाद ने अच्छा उर्वरक का काम किया है तथा मां के शब्दों ने खेत को सिंचित किया है। मेरी ईच्छा समुद्र की तरह बढ़ रही है। बताओ, क्या कृष्ण संकीर्ण मन के हैं ? **3366**
कडियन् कॊडियन्⋆ नॆडियमाल् उलगम् कॊण्ड अडियन्⋆ अरिवरु मेनि मायत्तन्⋆ आगिलुम् कॊडिय एन् नॆञ्जम्⋆ अवन् एन्रे किडक्कुम् एल्ले⋆ तुडि कॊळिडै मडत्तोळी !⋆ अन्नै एन् शॅय्युमे॥५॥	बहन ! तुम्हारी कमर पतली है एवं हृदय क्षीण है। हो सकता है प्रभु धूर्त एवं स्वार्थी हों परंतु बहुत दूर हैं। हो सकता है प्रभु विश्व पर अधिकार करने वाले हों परंतु समझ के परे हैं। ओह ! मेरा दुष्ट मन अभी भी उनकी चाह रखता है। मेरी मां क्या कर सकती हैं ? **3367**

अन्नै एन् शॆय्यिल् एन्⋆ ऊर् एन् शॊल्लिल् एन् तोऴिमीर्⋆ एन्नै इनि उमक्काशै इल्लै⋆ अगप्पट्टेन्⋆ मुन्नै अमरर् मुदल्वन्⋆ वण् तुवरापदि मन्नन्⋆ मणिवण्णन् वाशुदेवन् वलैयुळे॥६॥	बहन ! मां जो भी करे, संसार जो भी कहे, अभी से हमसे कोई प्रेम की अपेक्षा न करे क्योंकि मणिवर्ण वासुदेव तथा स्वर्गिकों के प्राचीन नाथ द्वारिकाधीश की जाल में हम पकड़ लिये गये हैं। **3368**
वलैयुळ् अगप्पडुत्तु⋆ एन्नै नल् नॆञ्जम् कूवि क्कॊण्डु⋆ अलै कडल् पळ्ळियम्मानै⋆ आऴिप्पिरान् तन्नै⋆ कलै कॊळ् अगल् अल्गुल् तोऴी !⋆ नम् कण्गळाल् कण्डु⋆ तलैयिल् वणङ्ङवुम् आङ्गॊलो⋆ तैयलार् मुन्बे॥७॥	गहरे सागर में हाथ में चक्र लिये शयन करने वाले प्रभु ने अपने जाल में पकड़कर हमारे नेक हृदय को अपने पास बुलाया है। आभूषित चौड़ी अधोभाग वाली बहन ! क्या हम अपनी आंखों से कभी उनको देख सकेंगें तथा एकत्रित सजनियों की उपस्थिति में पूजा कर सकेंगे ? **3369**
पेय् मुलै उण्डु शगडम् पाय्न्दु⋆ मरुदिडै प्पोय् मुदल् शाय्त्तु⋆ पुळ्वाय् पिळन्दु कळिऱ्ट्र⋆ तू मुरुवल् तॊण्डै वाय् प्पिरानै⋆ एन्नाळ् कॊलो⋆ याम् उऱुगिन्ऱदु तोऴी !⋆ अन्नैयर् नाणवे॥८॥	प्रभु ने राक्षसी का स्तन पिया, गाड़ी नष्ट किया, मरूदु वृक्षों के बीच गये, पक्षी का चोंच चीरा, एवं मदमत्त हाथी का वध किया। आपकी मुस्कान मुक्तामय है तथा होंठ मूंगा जैसे हैं। अहा ! हम कब आपके पास पहुंच कर इन नारियों को लज्जित कर सकेंगे ? **3370**
नाणुम् निऱैयुम् कवर्न्दु⋆ एन्नै नल् नॆञ्जम् कूवि क्कॊण्डु⋆ शेण् उयर् वानत्तिरुक्कुम्⋆ देव पिरान् तन्नै⋆ आणै एन् तोऴी !⋆ उलगुदोऱल्लर् तूऱ्ट्रि⋆ आम् कोणैगळ् शॆय्दु⋆ कुदिरियाम् मडल् ऊर्दुमे॥९॥	प्रभु ने हमारी लाज को चुराकर हमारे हृदय को अपने पास बुला लिया है। स्वर्गिकों के साथ आप ऊंचे स्वर्ग में रहते हैं। संसार अपवाद करता रहे मैं शपथ लेती हूं कि अनियंत्रित रहकर नारियल वृक्ष के धड़ की सवारी कर मडल कर लूंगी। **3371**
याम् मडल् ऊर्न्दुम्⋆ एम् आऴियङ्गै प्पिरान् उडै⋆ तू मडल् तण्णन् तुऴाय्⋆ मलर् कॊण्डु शूडुवोम्⋆ याम् मडम् इन्ऱि⋆ तॆरुवुदोऱयल् तैयलार्⋆ ना मडङ्गा प्पऴि तूऱ्ट्रि⋆ नाडुम् इरैक्कवे॥१०॥	गलियों से नारियल वृक्ष के धड़ की सवारी करने पर, नारी की गरिमा का त्याग करने से संसार जो भी अपवाद करे, भद्दी बातें बोले, हमलोग चक्रधारी प्रभु की तुलसी फूल पहन कर अपने को शांत करेंगे। **3372**
इरैक्कुम् करुङ्गडल् वण्णन्⋆ कण्ण पिरान् तन्नै⋆ विरै क्कॊळ् पॊऴिल्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ निरै क्कॊळ् अन्दादि⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ उरैक्क वल्लारक्कु⋆ वैगुन्दम् आगुम् तम् ऊर् एल्लाम्॥११॥	गरजते सागर के समान श्यामल वर्ण वाले कृष्ण की प्रशंसा में सुगंधित फूल के बागों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित अंतादि से भरपूर हजार पद के इस दशक का जो गान कर सकेंगे वे जहां कहीं भी रहेंगे वैकुंठ प्राप्त करेंगे। **3373** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

44 ऊरेल्लाम् (3374 - 3384)

तलैवि इरवु नीट्टिप्पक्कु वरुन्दि कूरल्

ऊर् ऎल्लाम् तुञ्जि⋆ उलगॆल्लाम् नळ्ळिरुळाय्⋆ नीर् ऎल्लाम् तेरि⋆ ओर् नीळ् इरवाय् नीण्डदाल्⋆ पार् ऎल्लाम् उण्ड⋆ नम् पाम्बणैयान् वारानाल्⋆ आर् ऎल्ले ! वल्विनैयेन्⋆ आवि काप्पार् इनिये॥१॥	संसार सोता है एवं घना अंधकार छा गया है। जल शांत हो गया है। रात शाश्वतकालीन लंबी हो गयी है। धरा को निगलने वाले प्रभु शेषशय्या पर शयन करते हैं। हाय ! वे आते नहीं कौन हमारे पापी मन को बचायेगा ? **3374**
आवि काप्पार् इनि यार्⋆ आळ् कडल् मण् विण् मूडि मावि कारमाय्⋆ ओर् वल्लिरवाय् नीण्डदाल्⋆ कावि शेर् वण्णन्⋆ ऎन् कण्णनुम् वारानाल्⋆ पावियेन् नॆञ्जमे !⋆ नीयुम् पाङ्गल्लैये॥२॥	एक भयावनी छाया धरा सागर तथा आकाश को निगल कर डरावनी रात में बदल गयी है। मेरे दिव्य कृष्ण नहीं आते। हाय ! मेरा पापी हृदय भी मेरे साथ नहीं है, कौन हमें अब बचायेगा ? **3375**
नीयुम् पाङ्गल्लैगाण्⋆ नॆञ्जमे ! नीळ् इरवुम्⋆ ओयुम् पॊळुदिन्रि⋆ ऊळियाय् नीण्डदाल्⋆ कायुम् कडुम् शिलै⋆ ऎन् कागुत्तन् वारानाल्⋆ मायुम् वगै अऱियेन्⋆ वल् विनैयेन् पॆण् पिऱन्दे॥३॥	हे हृदय ! देखो, तुम हमारे साथ नहीं हो। लंबी रात एक युग में बदल गयी है। अग्नि समान धनुष चलाने वाले हमारे काकुत्स्थ प्रभु आते नहीं। पापिनी, एक नारी के रूप में जन्म लेने वाली ! कैसे अपना जीवन का अंत करूं मुझे नहीं पता। **3376**
पॆण् पिऱन्दार् ऎय्दुम्⋆ पॆरुम् तुयर् काण्गिलेन् ऎन्ऱु⋆ ऒण् शुडरोन्⋆ वारादॊळित्तान्⋆ इम्मण् अळन्द कण् पॆरिय शॆव्वाय्⋆ ऎम् कारेऱु वारानाल्⋆ ऎण् पॆरिय शिन्दै नोय्⋆ तीर्प्पारार् ऎन्नैये॥४॥	एक व्यथित किशोरी की स्थिति को देखने में असमर्थ तेजोमय सूर्य भी छिप गया है। मेरे काले वृषभ ! बड़ी आंखें एवं लाल होठ वाले प्रभु नहीं आते। हाय ! कौन हमारे प्रेमरोग को ठीक कर सकता है ? **3377**
आर् ऎन्नै आराय्वार्⋆ अन्नैयरुम् तोळियरुम्⋆ नीर् ऎन्ने ! ऎन्नादे⋆ नीळ् इरवुम् तुञ्जुवराल्⋆ कार् अन्न मेनि⋆ नम् कण्णनुम् वारानाल्⋆ पेर् ऎन्नै मायादाल्⋆ वल्विनैयेन् पिन् निन्ऱे॥५॥	कौन मेरी खबर लेगा ? बिना पूछे मुझे क्या हुआ है मेरी मां एवं मेरी सखी रात को सो गयी हैं। मेरे श्याम रंग के कृष्ण भी नहीं आते। धूर्ता मैं ! मेरा नाम मेरे बारे में कहानी बनायेगी परंतु मुझे मरने नहीं देगी। **3378**

पिन् निन्ऱ कादल् नोय्⋆ नॆञ्जम् पॆरिदडुमाल्⋆ मुन् निन्ऱिरा ऊळि⋆ कण् पुदैय मूडिट्टाल्⋆ मन् निन्ऱ शक्करत्तु⋆ एम् मायवनुम् वारानाल्⋆ इन्निन्ऱ नीळ् आवि⋆ काप्पार् आर् इव्विडत्ते॥६॥	असाध्य प्रेम रोग मेरे हृदय को व्यथित करता है। मेरी धंसी हुई आंखों पर युग कालीन अंधेरा छाया है। शाश्वत चक्रधारी प्रभु भी नहीं आते। इस प्राणी को पृथ्वी पर कौन रक्षा कर सकता है ? **3379**
काप्पार् आर् इव्विडत्तु⋆ कङ्गिरुळिन् नुण् तुळियाय्⋆ शेण् पाल्दूळियाय्⋆ च्चॆल्गिन्ऱ कङ्गुल्वाय्⋆ तू प्पाल वॆण् शङ्गु⋆ शक्करत्तन् तोन्ऱानाल्⋆ ती प्पाल वल्विनैयेन्⋆ दॆय्वङ्गाळ्! एन् शॆय्गोनो॥७॥	आकाश काली चूर्ण से घने रूप से भरा है।लंबी रात युग की तरह बड़ी हो गयी है। धवल शंख एवं चक्र के प्रभु प्रकट नहीं होते। हे देवगन ! हम क्या करें ? हमारे कृत्य अग्नि की तरह दुष्ट हैं। **3380**
दॆय्वङ्गाळ्! एन् शॆय्गोन्⋆ ओर् इरवेळ् ऊळियाय्⋆ मॆय् वन्दु निन्ऱु⋆ एनदावि मॆल्लिविक्कुम्⋆ कै वन्द शक्करत्तु⋆ एन् कण्णनुम् वारानाल्⋆ तै वन्द तण् तॆन्ऱल्⋆ वॆञ्जुडरिल् तान् अडुमे॥८॥	हे देवगन ! अकेली रात सात युग की तरह बड़ी हो गयी है तथा हम पर छा गयी है और मेरे हृदय को क्षीण कर रही है।हाय ! चक्रधारी कृष्ण नहीं आते। बसंत की शीतल हवा आग की तरह झुलस रही है। हम क्या करें ? **3381**
वॆञ्जुडरिल् तान् अडुमाल्⋆ वीङ्गिरुळिन् नुण् तुळियाय्⋆ अञ्जुडर वॆय्योन्⋆ अणि नॆडुम् तेर् तोन्ऱादाल्⋆ शॆञ्जुडर् त्तामरैक्कण्⋆ शॆल्वनुम् वारानाल्⋆ नॆञ्जिडर् तीर्प्पार् इनियार्⋆ निन्ऱुरुगुगिन्ऱेने ! ॥९॥	अंधकार सूक्ष्म कालिमा से घनीभूत हो आग की तरह जलाती है। सूर्य का सुन्दर रथ प्रकट नहीं होता। हाय ! कमल समान आंख वाले संपन्न प्रभु भी नहीं आते। कौन हमारे हृदय की व्याधि को ठीक कर सकता है ? हाय ! मैं खड़ी होकर पिघल रही हूं। **3382**
निन्ऱुरुगुगिन्ऱेने पोल⋆ नॆडु वानम्⋆ शॆन्ऱुरुगि नुण् तुळियाय्⋆ च्चॆल्गिन्ऱ कङ्गुल्वाय्⋆ अन्ऱॊरुगाल् वैयम्⋆ अळन्द पिरान् वारान् एन्ऱु⋆ ऑन्ऱॊरुगाल् शॊल्लादु⋆ उलगो उऱङ्गुमे॥१०॥	हमारी तरह रात में आकाश भी पिघलकर काली बूंदें बिखेर रहा है। संसार बेखबर सोया है, और हाय ! एक बार भी नहीं कहता कि तब धरा को मापने वाले प्रभु नहीं आयेंगे। **3383**
‡उऱङ्गुवान् पोल्⋆ योगु शॆय्द पॆरुमानै⋆ शिऱन्द पॊळिल् शूळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊल्⋆ निऱम् गिळरन्द अन्दादि⋆ आयिरत्तिप्पत्ताल्⋆ इऱन्दु पोय् वैगुन्दम्⋆ शेरावाऱ्ङ्नेयो॥११॥	शयनावस्था में योग निद्रा वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये चमकीले रंगीन अंतादि के हजार पदों वाली रचना का यह दशक उत्तम बागों से घिरे कुरूगुर के शठगोपन के हैं।इसे गाने से मृत्यु के पश्चात स्वर्ग मिलेगा। **3384** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

45 एङ्ङ्नेयो (3385 - 3395)

उरूवेळिप्पाडु कण्ड तलैवि तायै मरूत्तुरैत्तल्

नायकी भाव में तिरूक्कुरूंगुडी के प्रभु के भाव से

एङ्ङ्नेयो अन्नैमीर्गाळ् !★ एन्नै मुनिवदु नीर्★ नङ्गळ् कोल त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै★ नान् कण्डपिन्★ शङ्गिनोडुम् नेमियोडुम्★ तामरै क्कण्गळोडुम्★ शॆङ्गनि वाय् ऑन्ऱिनोडुम्★ शॆल्गिन्ऱदॆन् नॆञ्जमे॥१॥	तिरूकुरूंगुडी के आकर्षक प्रभु को देखने के बाद हमारा मन आपके शंख चक्र कमल जैसी आंखें तथा अद्वितीय मूंगा जैसे होंठ के लिये तरस रहा है। सजनी ! अब हमें कैसे दोष लगाओगी ? **3385**
एन् नॆञ्जिनाल् नोक्कि क्काणीर्★ एन्नै मुनियादे★ तॆन् नन् शोलै त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै★ नान् कण्डपिन्★ मिन्नुम् नूलुम् कुण्डलमुम्★ मार्विल् तिरुमरुवुम्★ मन्नु पूणुम् नान्गु तोळुम्★ वन्दॆङ्गुम् निन्ऱिडुमे॥२॥	हमें दोष न लगाओ, हमारे हृदय की आंखों से देखो।जबसे हमने नारियल बगान वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है आपका जनेऊ, कान का हीरा, श्रीवत्स, सुन्दर गहने, एवं चारो हाथ सर्व त्र हमारे सामने दिखते रहते हैं। **3386**
निन्ऱिडुम् तिशैक्कुम् नैयुम् एन्ऱु★ अन्नैयरुम् मुनिदिर्★ कुन्ऱ माड त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै★ नान् कण्डपिन्★ वॆन्ऱि विल्लुम् तण्डुम् वाळुम्★ शक्करमुम् शङ्गमुम्★ निन्ऱु तोन्ऱि क्कण्णुळ् नीङ्गा★ नॆञ्जुळ्ळुम् नीङ्गावे॥३॥	मां ! तुम हमें यह कह कर दोष लगाती हो 'यह खड़ी होती है, लड़खड़ाती है, एवं अचेत हो जाती है'। जबसे हमने ऊंचे महलो वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है आपका विजयी धनुष, गदा, खड्ग, चक्र एवं शंख हमारी आंखों एवं मन से विना विस्मृत हुए सर्वत्र दिखते रहते हैं। **3387**
नीङ्ग निल्ला क्कण्ण नीर्गळ् एन्ऱु★ अन्नैयरुम् मुनिदिर्★ तेन् कॊळ् शोलै त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै★ नान् कण्डपिन्★ पून् तण् मालै त्तण् तुळायुम्★ पॊन् मुडियुम् वडिवुम्★ पाङ्गु तोन्ऱुम् पट्टुम् नाणुम्★ पावियेन् पक्कत्तवे॥४॥	मां ! तुम हमारी आंखों से सर्वदा प्रवाहित आंसू देखकर हम पर दोष लगाती हो। जबसे हमने अमृतमय बाग वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपकी तुलसी फूल की सुन्दर माला, आपका सुनहला मुकुट, आपका मुखारविंद, रेशमी जनेऊ एवं कमरधनी हमारे क्षुद्र मन में कौंधते रहते हैं। **3388**
पक्कम् नोक्कि निर्कुम् नैयुम् एन्ऱु★ अन्नैयरुम् मुनिदिर्★ तक्क कीर्त्तिक् तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै★ नान् कण्डपिन्★ तॊक्कशोदि त्तॊण्डै वायुम्★ नीण्ड पुरुवङ्गळुम्★ तक्क तामरै क्कण्णुम्★ पावियेन् आवियिन् मेलनवे॥५॥	मां ! तुम हमें यह कह कर दोष लगाती हो 'यह खड़ी होती है, एकटक देखती है, एवं अचेत हो जाती है'। जबसे हमने महान यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपका दिव्य मूंगा जैसा होंठ लंबी भौंहें एवं सुन्दर कमल सी आंखें ने हमारे क्षुद्र मन को भावग्रस्त कर लिया है। **3389**

मेल्लुम् वन् पळि नङ्गुडिक्किवळ् एन्रु॰ अन्नै काण क्कॉडाळ्॰ शोलै शूळ् तण् तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै॰ नान् कण्डपिन्॰ कोल नीळ् कॉडि मूक्कुम्॰ तामरै क्कण्णुम् कनि वायुम्॰ नील मेनियुम् नान्गु तोळुम्॰ एन् नॅञ्जम् निरैन्दनवे॥६॥	जबसे हमने शांत बाग वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपकी पतली नाक, कमल सी आंखें, मूंगा जैसा होंठ, श्याम वदन एवं चार कंधों ने हमारे हृदय को पूरी तरह भर दिया है। मेरी मां यह कहते हुए दूसरों को हमसे मिलने नहीं देती 'हमलोगों के निर्मल यश को यह लड़की बदनाम करेगी'। **3390**
निरैन्द वन् पळि नम् कुडिक्किवळ् एन्रु॰ अन्नै काणक्कॉडाळ् शिरन्द कीरत्ति त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै॰ नान् कण्डपिन्॰ निरैन्द शोदि वॅळ्ळम् शूळ्न्द॰ नीण्ड पॉन् मेनियॉडुम्॰ निरैन्दॅन् उळ्ळेनिन्रॊळिन्दान्॰ नेमि अङ्गै उळदे॥७॥	जबसे हमने महान यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपका अतिसुन्दर एवं पूर्णतया तेजोमय दिव्य स्वरूप हमारे हृदय में घर कर गया है। आप सर्वत्र हाथ में चक्र लिये दिखते हैं। मेरी मां कहती है 'हमलोगों के निर्मल कुल की यह कलंक है'। **3391**
कैयुळ् नन् मुगम् वैक्कुम् नैयुम् एन्रु॰ अन्नैयरुम् मुनिदिर्॰ मै कॉळ् माड त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै॰ नान् कण्डपिन्॰ शॅय्य तामरै क्कण्णुम् अल्गुलुम्॰ शिट्टिडैयुम् वडिवुम्॰ मॉय्य नीळ् कुळल् ताळ्न्द तोळ्गळुम्॰ पावियेन् मुन्निर्कुमे॥८॥	सजनी ! हमें यह कर आपलोग दोष लगाती हैं 'यह अपने मुखड़ा को हाथ में छिपाकर अचेत हो जाती है'। जबसे हमने ऊचे महलों वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपकी अरूणाभ कमलनयन, अधोभाग, पतली कमर, मुखड़ा, लंबी काली लटें एवं विस्तृत कंधे हम पापिनी के समक्ष दिखते रहते हैं। **3392**
मुन् निन्राय् एन्रु तोळि मार्गळुम्॰ अन्नैयरुम् मुनिदिर्॰ मन्नु माड त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै॰ नान् कण्डपिन्॰ शॅन्नि नीळ् मुडि आदियाय॰ उलप्पिल्लणि कलत्तन्॰ कन्नल् पाल् अमुदागि वन्दु॰ एन् नॅञ्जम् कळियाने॥९॥	सजनी बहनें ! हमें यह कर आपलोग दोष लगाती हैं 'तुम कलंक हो'। जबसे हमने मजबूत महलों से घिरे तिरूकुरूंगुडी के दूध एवं शक्कर सा मृदु प्रभु को देखा है, आपकी ऊंचा मुकुट एवं अनगिनत गहनें कभी भी हमारे हृदय को नहीं छोड़ते। **3393**
कळिय मिक्कदोर् कादलळ् इवळ् एन्रु॰ अन्नै काणक्कॉडाळ्॰ वळुविल् कीरत्ति त्तिरुक्कुरुङ्गुडि नम्बियै॰ नान् कण्डपिन्॰ कुळुमि त्तेवर् कुळाङ्गळ्॰ कै तॉळ च्चोदि वॅळ्ळत्तिनुळ्ळे॰ एळुवदोर् उरुवॅन्नॅञ्जुळ् एळुम्॰ आरक्कुम् अरिवरिदे॥१०॥	हमारी मां किसी को हमसे यह कहते हुए नहीं मिलने देती 'यह दिनानुदिन कामी होती जा रही है'। जबसे हमने शाश्वत यश वाले तिरूकुरूंगुडी के प्रभु को देखा है, आपका तेजोमय आभा से उत्प्लावित वदन स्वर्गिकों के समूह से पूजित हमारे हृदय में प्रकट दिखता है जो कि दूसरों के समझ से परे है। **3394**

‡अऱिवरिय पिरानै⋆ आऴि अङ्गियनैये अलट्ऱि⋆ नऱिय नल् मलर् नाडि⋆ नन् कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ कुऱि कॊळ् आयिरत्तुळ् इवै पत्तुम्⋆ तिरुक्कुरुङ्कुडि अदन् मेल्⋆ अऱिय क्कट्ऱु वल्लार् वैट्टणवर्⋆ आळ् कडल् ञालत्तुळ्ळे॥११॥	कुरूगुर के गोरे वदन शडगोपन के चिरपरिचित हजार पद का यह दशक अगम्य चक्रधारी तिरूकुरूंगुडी के प्रभु की सेवा में फूल के साथ गाया जाता है। जो इसे समझकर गायेंगे वे इस धरा पर स्थित रहते हुए विष्णु से एकाकार हो जायेंगे। **3395** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

46 कडल् ञालम् (3396 - 3406)

तलैवन् तन्मैगळै त्तन्दाग क्कोण्डु पेशुम् तलैवियिन् निलैकण्डु ताय् आवेशमो एन्रू नोन्दु कूरल्

नायकी की मां की भूमिका में - 4

कडल् ञालम् शॅय्देनुम् याने एन्नुम्⋆ कडल् ञालम् आवेनुम् याने एन्नुम्⋆ कडल् ञालम् कॉण्डेनुम् याने एन्नुम्⋆ कडल् ञालम् कीण्डेनुम् याने एन्नुम्⋆ कडल् ञालम् उण्डेनुम् याने एन्नुम्⋆ कडल् ञालत्तीशन् वन्देर क्कॉलो⋆ कडल् ञालत्तीरक्किवै एन् शॉल्लुगेन्⋆ कडल् ञालत्तॅन् मगळ् कर्किन्रवे॥१॥	मेरी बेटी धरा पर यह गाते हुए घूमती है 'हमने धरा बनाया, हम ही धरा एवं सागर हैं, हमने ही धरा को अधिकार में लिया, हमने ही धरा को ऊपर उठाया, हमने ही धरा को निगल लिया।' क्या धरा एवं सागर के प्रभु ने इसे भावग्रस्त कर लिया है ? धरावासियों ! कैसे मैं आपको यह समझाऊं ? **3396**
कर्कुम् कल्विक्कॅल्लै इलने एन्नुम्⋆ कर्कुम् कल्वि आवेनुम् याने एन्नुम्⋆ कर्कुम् कल्वि शॅय्वेनुम् याने एन्नुम्⋆ कर्कुम् कल्वि तीरप्पेनुम् याने एन्नुम्⋆ कर्कुम् कल्वि च्चारमुम् याने एन्नुम्⋆ कर्कुम् कल्वि नादन् वन्देर क्कॉलो⋆ कर्कुम् कल्वियीरक्किवै एन् शॉल्लुगेन्⋆ कर्कुम् कल्वि एन् मगळ् काण्गिन्रनवे॥२॥	मेरी बेटी गाती है 'मैं ज्ञान की परिधि से बाहर हूं, मैं ही वह ज्ञान हूं, मैंने ही उस ज्ञान को उत्पन्न किया है'। क्या ज्ञान के प्रभु इस पर विराजमान हो गये हैं ? ज्ञानीजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3397**
काण्गिन्र निलम् एल्लाम् याने एन्नुम्⋆ काण्गिन्र विशुम्बॅल्लाम् याने एन्नुम्⋆ काण्गिन्र वॅन्ती एल्लाम् याने एन्नुम्⋆ काण्गिन्र इक्कार्टॅल्लाम् याने एन्नुम्⋆ काण्गिन्र कडल् एल्लाम् याने एन्नुम्⋆ काण्गिन्र कडल् वण्णन् एरक्कॉलो⋆ काण्गिन्र उलगत्तीरक्कॅन् शॉल्लुगेन्⋆ काण्गिन्र एन् कारिगै शॅय्गिन्रनवे॥३॥	भावग्रस्त बेटी जो करती है ! यह कहती है 'धरा मैं हूं। आकाश मैं हूं। अग्नि मैं हूं। वायु मैं हूं। सागर मैं हूं।' क्या सर्वद्दष्टा प्रभु इसमें प्रवेश कर गये हैं ? संसार के साक्षीगन ! मैं क्या बताऊं ? **3398**
शॅय्गिन्र किदि एल्लाम् याने एन्नुम्⋆ शॅय्वान् निन्रनगळुम् याने एन्नुम्⋆ शॅय्दु मुन् इरन्दवुम् याने एन्नुम्⋆ शॅय्गै प्पयन् उण्बेनुम् याने एन्नुम्⋆ शॅय्वार्गळै च्चॅय्वेनुम् याने एन्नुम्⋆ शॅय्य कमल क्कण्णन् एरक्कॉलो⋆ शॅय्य उलगत्तीरक्किवै एन् शॉल्लुगेन्⋆ शॅय्य कनिवाय् इळ मान् तिरत्ते॥४॥	लाल होंठवाली बेटी जो कहती है ! 'जो हो रहा है मैं हूं।जो बचा हुआ है वह मैं हूं। जो हो चुका है मैं ही हूं। मैं सभी कृत्यों के फल को चखता हूं।प्रेरणा मैं ही हूं।' क्या राजीवनयन प्रभु ने इसे भावग्रस्त कर लिया है ? संसार के श्रेयजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3399**

तिरम्बामल् मण् काक्किन्रेन् याने एन्नुम्⋆ तिरम्बामल् मलै एडुत्तेने एन्नुम्⋆ तिरम्बामल् अशुररै क्कॊन्रेने एन्नुम्⋆ तिरम् काट्टि अन्रैवरै क्कात्तेने एन्नुम्⋆ तिरम्बामल् कडल् कडैन्देने एन्नुम्⋆ तिरम्बाद कडल्वण्णन् एरक्कॊलो⋆ तिरम्बाद उलगत्तीर्क्कॆन् शॊल्लुगेन्⋆ तिरम्बादॆन् तिरुमगळ् एय्दिनवे॥५॥	मेरी बेटी कहती है 'बिना निष्फल हुए मैं संसार पर शासन करता हूं। अपनी शक्ति दिखाते हुए हमने पर्वत उठा लिया। असुरों का नाश किया एवं पांचजनों की रक्षा की। सागर हमने ही मथा। क्या सागर सा सलोने प्रभु ने इसे अधिकार में ले लिया है ? संसार के महानजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3400**
इन वेय् मलै एन्दिनेन् याने एन्नुम्⋆ इनवेरुगळ् शॆट्रेनुम् याने एन्नुम्⋆ इनवन् कन्रु मेयत्तेनुम् याने एन्नुम्⋆ इनवा निरै कात्तेनुम् याने एन्नुम्⋆ इनवायर् तलैवनुम् याने एन्नुम्⋆ इनत्तेवर् तलैवन् वन्देरक्कॊलो⋆ इनवेर्कण् नल्लीरक्किवै एन् शॊल्लुगेन्⋆ इनवेर्कण्णि एन्मगळ् उट्रनवे॥६॥	मेरी मत्स्य नयना बेटी बड़बड़ाती है 'गोप कुल का मैं प्रधान हूं। मैंने ही गायों को चराया। मैंने ही पर्वत उठा लिया। मैंने ही गायों की रक्षा की। मैंने ही सात वृषभों का नाश किया।' स्वर्गिकों के देव ने क्या इसे भावग्रस्त कर लिया है ? संसार के महानजनों ! मैं क्या बताऊं ? **3401**
उट्रार्गळ् एनक्किल्लै यारुम् एन्नुम्⋆ उट्रार्गळ् एनक्किङ्गॆल्लारुम् एन्नुम्⋆ उट्रार्गळै च्चॆय्वेनुम् याने एन्नुम्⋆ उट्रार्गळै अळिप्पेनुम् याने एन्नुम्⋆ उट्रार्गळुक्कुट्रेनुम् याने एन्नुम्⋆ उट्रार् इलि मायन् वन्देर क्कॊलो⋆ उट्रीर्गट्कॆन् शॊल्लि च्चॊल्लुगेन् यान्⋆ उट्रॆन्नुडै प्पेदै उरैक्किन्रनवे॥७॥	मेरी प्यारी बेटी बड़बड़ाती है 'मेरे कोई मित्र नहीं हैं'।तब कहती है 'यहां सभी हमारे मित्र हैं। मैं ही संबंध जोड़ता हूं। मैं ही संबंध विच्छेद करता हूं। मित्रों के बीच का बंधन मैं ही हूं।' अद्वितीय प्रभु ने क्या इसे भावग्रस्त कर लिया है ? संसार के मित्रभाव वाले लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3402**
उरैक्किन्र मुक्कण् पिरान् याने एन्नुम्⋆ उरैक्किन्र तिशैमुगन् याने एन्नुम्⋆ उरैक्किन्र अमररुम् याने एन्नुम्⋆ उरैक्किन्र अमरर् कोन् याने एन्नुम् उरैक्किन्र मुनिवरुम् याने एन्नुम् उरैक्किन्र मुगिल् वण्णन् एरक्कॊलो उरैक्किन्र उलगत्तीर्क्कॆन् शॊल्लुगेन् उरैक्किन्र एन् कोमळ ऒण् कॊडिक्के॥८॥	मेरी सुकुमारी लाड़ली कहती है 'तीन आंख वाले देव की बात करते हो? वह मैं ही हूं।चतुरानन मै हूं। स्वर्गिक जन मैं हूं। स्वर्गिकों का नाथ मैं हूं। संतजन भी मैं ही हूं।' क्या मेघ रंग वाले प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के बातकरने में दक्ष लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3403**

कॊडिय विनै यादुम् इलने एन्नुम्⋆ कॊडिय विनै आवेनुम् याने एन्नुम्⋆ कॊडिय विनै शॆय्वेनुम् याने एन्नुम्⋆ कॊडिय विनै तीरप्पेनुम् याने एन्नुम्⋆ कॊडियान् इलङ्गै शॆट्रेने एन्नुम्⋆ कॊडिय पुळ्ळुडैयवन् एरक्कॊलो⋆ कॊडिय उलगत्तीरक्किवै एन् शॊल्लुगेन्⋆ कॊडियेन् कॊडि एन् मगळ् कोलङ्गळे॥९॥	मेरी सुकुमारी लाड़ली धूर्त जैसी कहती है 'मैं किसी तरह का धूर्त नहीं हूं। तब कहती है 'कृत्यों की धूर्तता मैं ही हूं। मैं धूर्त का उद्धारक हूं। मैं धूर्त कृत्यों का कर्ता हूं। मैं धूर्त लंका का विनाशकर्ता हूं'। क्या गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के धूर्त लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3404**
कोलम् कॊळ् शुवरग्गमुम् याने एन्नुम्⋆ कोलम् इल् नरगमुम् याने एन्नुम्⋆ कोलम् तिगळ् मोक्कमुम् याने एन्नुम् कोलम् कॊळ् उयिर्गळुम् याने एन्नुम् कोलम् कॊळ् तनिमुदल् याने एन्नुम् कोलम् कॊळ् मुगिल्वण्णन् एरक्कॊलो कोलम् कॊळ् उलगत्तीरक्कॆन् शॊल्लुगेन् कोलम् तिगळ् कोदै एन् कून्तलुक्के॥१०॥	मेरी सुन्दर बेटी चिल्लाती है 'सुन्दर स्वर्ग मैं हूं। गंदा नरक मैं हूं। तेजोमय मुक्ति मैं हूं। सुन्दर आत्मा सब मैं ही हूं। सुन्दर प्रथम कारण मैं ही हूं। क्या मेघ रंग के प्रभु ने इसे अधिकार में कर लिया है ? संसार के धूर्त सन्दर लोगों ! मैं क्या बताऊं ? **3405**
कून्दल् मलर् मङ्गैक्कुम् मण् मडन्तैक्कुम्⋆ कुलवायर् कॊळुन्दुक्कुम् केळवन् तन्नै⋆ वायन्द वळुदि वळ नाडन्⋆ मन्नु कुरुगूर् च्चडगोपन् कुट्रेवल् शॆय्दु⋆ आयन्द तमिळ् मालै⋆ आयिरत्तुळ् इवैयुम् ओर् पत्तुम् वल्लार्⋆ उलगिल् एन्दु पॆरुम् शॆल्वत्तराय्⋆ त्तिरुमाल् अडियार्कळै प्पूशिक्क नोट्रार्गळे॥११॥	उपजाऊ वलुदी पांडया राज्य का नगर कुरूगुर के शडगोपन के चयन किये हुए तमिल के हजार पद की माला का यह दशक श्री देवी भूदेवी एवं नीला देवी के पतिदेव की प्रशस्ति है। जो इसे गा सकेंगे वे प्रभु के भक्तों की सेवा अपार संपति से करेंगे। **3406** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

47 नोट्र नोन्बु (3407 - 3417)

वानमामलै प्पेरूमानदु अरूळै वेण्डल्

शिरीवरमंगल नगर ः यह स्थान नांगुनेरी या वानमामलै या तोताद्री के नाम से प्रसिद्ध है। तिरूनेलवेली से करीब 40 कि मी पर सड़क मार्ग से आसानी से जुड़ा हुआ है। यहां मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा पार्श्व में दोनों लक्ष्मी विराजमान हैं। मूलावर को तोताद्री नाथ एवं उत्सव मूर्ति को देवनायक कहते हैं। यहां की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी शिरीवरमंगै के नाम से जानी जाती हैं। यह स्थान आठ स्वयं व्यक्त स्थानों में से एक है ः बदरी , शालग्राम, नैमिषारण्य, पुष्कर, तिरूमला, श्रीरंगम, श्रीमूषम तथा तोताद्री। यहां भगवान को तिल के तेल से स्नान कराया जाता है जो महान औषधि के रूप में लिया जाता है। मानवला मा मुनि यानी वरवर मुनि स्वामी द्वारा स्थापित आठ गद्दियों में से एक है जो वानमामलै जीयर के नाम से जाने जाते हैं। यहां मानवला मा मुनि की अंगूठी है जो इप्पसी माह में मूल नक्षत्र में उत्सव में दर्शनार्थ बाहर लायी जाती है। (Refer Ramesh vol. 4, pp 188)

नोट्र् नोन्पिल्लेन् नुण्णऱिविल्लेन्⋆ आगिलुम् इनि उन्नै विट्टु⋆ ऑन्ऱुम् आट्र् किन्ऱिल्लेन्⋆ अरविन् अणै अम्माने⋆ शेट्रु त्तामरै शॅन्नॆल् ऊडु मलर्⋆ शिरीवर मङ्गलनगर्⋆ वीट्रिरुन्द एन्दाय् !⋆ उनक्कु मिगै अल्लेन् अङ्गे⋆ ॥१॥	शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहने वाले प्रभु जहां लाल कमल एवं धान की बहुतायत है। मैंने तपस्या नहीं की है और न हमें सूक्ष्म मेधा प्राप्त है। तबभी हम एक क्षण के लिये भी आपसे अलग नहीं रहना चाहते हैं।क्या बहुतों में से मैं वहां एक हूं ? **3407**
अङ्गुट्रेन् अल्लेन् इङ्गुट्रेन् अल्लेन्⋆ उन्नै क्काणुम् अवाविल् वीऴ्न्दु⋆ नान् एङ्गुट्रेनुम् अल्लेन्⋆ इलङ्गै शॅट्र् अम्माने⋆ तिङ्गळ् शेर्मणि माड नीडु⋆ शिरीवर मङ्गलनगर् उरै⋆ शङ्गु शक्करत्ताय् !⋆ तमियेनुक्करुळाये॥२॥	लंका के नाशकरने वाले प्रभु ! मैं न तो यहां हूं और न वहां हूं। आपके दर्शन की इच्छा से ग्रस्त मैं कहीं नहीं हूं। चांद से रक्षित ऊंची महलों वाला शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहने वाले शंख चक्रधारी प्रभु ! विनती है, इस भूले प्राणी पर कृपा कीजिये। **3408**
करुळ पुट्कॊडि शक्कर प्पडै⋆ वान नाड ! एन् कार्मुगिल् वण्णा⋆ पॉरुळ् अल्लाद एन्नै प्पॉरुळाक्कि⋆ अडिमै कॊण्डाय्⋆ तॆरुळ् कॊळ् नान्मरै वल्लवर् पलर् वाऴ्⋆ शिरीवर मङ्गलनगर्क्कु⋆ अरुळ् शॆय्दङ्गिरुन्दाय् !⋆ अऱियेन् ऑरु कैम्मारे॥३॥	चक्र एवं गरूड़ ध्वज वाले वैकुंठ के श्यामल प्रभु ! इस तुच्छ प्राणी को बनाकर आपने अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया। अनेकों वैदिक ऋषियों वाला शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहने वाले प्रभु ! आपने वहीं से कृपा दिखायी है। मैं नहीं जानता कैसे इस उपकार का बदला चुकाऊं ? **3409**

मारु शेर् पडै नूट्टवर् मङ्ग⋆ ओर् ऐवर्– क्कायन्रु मायप्पोर् पण्णि⋆ नीरु शेय्द एन्दाय् !⋆ निलम् कीण्ड अम्माने⋆ तेरु ज्ञानत्तर् वेद वेळ्वियरा⋆ श्शिरीवर मङ्गलनगर्⋆ एरि वीट्रिरुन्दाय् !⋆ उन्नै एङ्ङेय्द क्कूवुवने॥ ४ ॥	पृथ्वी को उठाने वाले प्रभु ! पांच पांडवों के लिये आपने कौरवों से लड़ाई लड़कर उन्हें धूल में मिला दिया। आप वैदिक ऋषिगन से घिरे शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहने आये हैं जहां अनवरत वैदिक यज्ञ होता है। मैं आपसे वहीं मिलने के लिये पुकार रहा हूं। **3410**
एय्द क्कूवुदल् आवदे एनक्कु⋆ एव्व दैव्वत्तुळ् आयुमाय् निन्रु⋆ कै तवङ्गळ् शेय्युम्⋆ करुमेनि अम्माने⋆ शेय्द वेळ्वियर् वैय त्तेवररा⋆ श्शिरीवर मङ्गलनगर्⋆ कै तोळ इरुन्दाय्⋆ अदु नानुम् कण्डेने॥ ५ ॥	कण कण में व्याप्त रह कर विस्मयकारी कृत्यों को करने वाले श्यामल प्रभु ! क्या यह संभव है कि मैं आपको बुलाऊं ? शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) के प्रभु जहां ईश्वरीय जन वैदिक यज्ञ करते हैं। यह मैंने देखा है कि आप पूजा के लिये उपलब्ध हैं। **3411**
एनमाय् निलम् कीण्ड एन्नप्पने ! कण्णा !⋆ एन्रुम् एन्नै आळुडै⋆ वान नायगने !⋆ मणि माणिक्क च्चुडरे⋆ तेनमाम् पोळिल् तण् शिरीवर मङ्गलत्तवर्⋆ कै तोळवुरै⋆ वान मामलैये !⋆ अडियेन् तोळ वन्दरुळे॥ ६ ॥	वराह स्वरूप में आने वाले वैकुंठ के तेजोमय श्यामल प्रभु ! मेरे पिता, मेरे कृष्ण, महान स्वर्गीय पर्वत वानमामलै के हमारे सर्वदा के लिये नाथ, आप मधुर आम के बाग वाले शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) के लोगों से पूजित हैं। विनती है, मेरे पास आईये जिससे कि मैं आपकी पूजा कर सकूं। **3412**
वन्दरुळि एन् नेञ्जिडम् कोण्ड⋆ वानवर् कोळुन्दे !⋆ उलगुक्कोर् मुन्दै त्ताय् तन्दैये !⋆ मुळु एळुलगुम् उण्डाय् !⋆ शेन्दोळिलवर् वेद वेळ्वि अरा⋆ श्शिरीवर मङ्गलनगर्⋆ अन्दमिल् पुगळाय् !⋆ अडियेनै अगट्रेले॥ ७ ॥	अतृप्त अमृत ! प्रथम प्रभु ! मेरा शरीर आपके प्रेम में पिघलता है। आपने हमें रूलाकर अश्रांत जल की तरह तड़पन की स्थिति में रखा है।हमने आपके तेजोमय स्वरूप को तिरूकुडन्दै में देखा है जहां आप उपजाऊ जल में शयन करते हैं और धान के पौधे चवर की तरह हवा करते हैं। **3418**
अगट्र नी वैत्त माय वल्लै ऐम्बुलन्ग– ळाम् अवै⋆ नन्गारिन्दनन्⋆ अगट्रि एन्नैयुम् नी⋆ अरुम् शेट्रिल् वीळ्त्ति कण्डाय्⋆ पगल् कदिर् मणि माडम् नीडु⋆ शिरीवर मङ्ग वाणने⋆ एन्रुम् पुगर्करिय एन्दाय् !⋆ पुळ्ळिन् वाय् पिळन्दाने ! ॥ ८ ॥	भ्रम उत्पन्न करने वाले ये दुष्ट इन्द्रियां जो आपकी दी हुई हैं एक दिन मुझे छोड़ देंगे। यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। जरा देखिये, आपने भी मेरा त्याग कर मुझे कचरे के ढ़ेर में डाल दिया है। शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) के निवासी प्रभु जहां ऊंचे महल चमकते हैं। आपने पक्षी का चोंच चीर डाला एवं आपके पास पहुंचना कठिन है। **3414**

पुळ्ळिन् वाय् पिळन्दाय्! मरुदिडै पोयिनाय्!⋆ ए॒रुदेळ् अडर्त्त⋆ ए॒न् कळ्ळ मायवने!⋆ करु माणिक्क च्चुडरे⋆ तॆळ्ळियार् तिरु नान्मऱैगळ् वल्लार्⋆ मल्गि तण् शिरीवर मङ्गै⋆ उळ् इरुन्द ए॒न्दाय्!⋆ अरुळाय् उय्युमाऱॆनक्के॥९॥	पक्षी के चोंच चीरने वाले प्रभु मरूदु वृक्षों में घुस गये। आपने सात वृषभों का नाश किया। मणि वर्ण के तेजोमय धूर्त प्रभु! अनेको स्पष्ट मत वाले वेद के पूर्ण ज्ञाता शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहते हैं। मेरे प्रभु इनके मध्य में स्थित हैं। विनती है, मुक्ति का मार्ग बताईये। **3415**
आऱॆनक्कु निन् पादमे⋆ शरणाग त्तन्दॊळिन्दाय्⋆ उनक्कोर् कैम्माऱु नान् ऑन्ऱिलेन्⋆ ए॒नदावियुम् उनदे⋆ शेऱु कॊळ् करुम्बुम् पॆरुम् शॆन्नॆल्लुम्⋆ मल्गि तण् शिरीवर मङ्गै⋆ नाऱु पून् तण् तुळाय् मुडियाय्!⋆ दॆय्वनायगने! ॥१०॥	शीतल तुलसी की माला पहने स्वर्गिकों के नाथ! धान एवं गन्ना के ऊंचे पौधे वाले शिरीवरमंगल नगर (तोताद्री या नांगुनेरी या वानमामलै) में रहते हैं। आपने अपने चरण मुझे एकमात्र आश्रय के रूप में तथा मार्ग के रूप में दिया है। हमारे पास कृतज्ञता वश देने के लिये कुछ है भी नहीं। यहां तक कि मेरा हृदय भी आपका ही है। **3416**
दॆय्वनायगन् नारणन्⋆ तिरिविक्किरमन् अडियिणैमिशै⋆ कॊय् कॊळ् पूम् पॊळिल् शूळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॆय्द आयिरत्तुळ् इवै⋆ तण् शिरीवर मङ्गै मेय पत्तुडन्⋆ वैगल् पाड वल्लार्⋆ वानोर्क्कारावमुदे॥११॥	सुन्दर फूल के बागों से घिरे कुरूगुर के शडगोपन से विरचित हजार तमिल पद का यह दशक देवनायक, नारायण, एवं त्रिविक्रम प्रभु के चरण की प्रशस्ति में है। जो इसे गा सकेंगे वे स्वर्गिकों के सदा अमृत समान प्रिय बने रहेंगे। **3417** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

48 आरावमुदे (3418 - 3428)

अरावमुदावळार पेरूगळै त्तारामैयाल् आळवार तीराद आशैयुडन् आट्रामै पेशि अलमरूदल्

(नायकी भाव में)

आरावमुदे ! अडियेन् उडलम्⋆ निन्बाल् अन्बाये⋆ नीराय् अलैन्दु करैय⋆ उरुक्कुगिन्र नेंडुमाले⋆ शीरार् शेंन्नेल् कवरि वीशुम्⋆ शेंळु नीर् त्तिरुक्कुडन्दै⋆ एरार् कोलम् तिगळ क्किडन्दाय् !⋆ कण्डेन् एम्माने ! ॥१॥	अतृप्त अमृत ! प्रथम प्रभु ! मेरा शरीर आपके प्रेम में पिघलता है। आपने हमें रूलाकर अश्रांत जल की तरह तड़पन की स्थिति में रखा है।हमने आपके तेजोमय स्वरूप को तिरूकुडन्दै में देखा है जहां आप उपजाऊ जल में शयन करते हैं और धान के पौधे चवर की तरह हवा करते हैं। **3418**
एम्माने ! एन् वेंळ्ळै मूर्त्ति !⋆ एन्नै आळ्वाने⋆ एम्मा उरुवुम् वेण्डुम् आट्राल्⋆ आवाय् एळिल् एरे⋆ शेंम्मा कमलम् शेंळु नीर् मिशैक्कण् मलरुम्⋆ तिरुक्कुडन्दै⋆ अम्मा मलर्क्कण् वळर्गिन्राने !⋆ एन्नान् शेंय्गेने ! ॥२॥	मेरे प्रभु, मेरे शासक, मेरे शुद्ध प्रतीक चिह्न, मेरे सुन्दर काले वृषभ ! आप स्वेच्छा से कोई भी स्वरूप धारण करते हैं। आप तिरूकुडन्दै में कमल फूल से भरे जल में शयन करते हैं। आपकी स्वप्निल आंखें फूल के समान दिखती है। अहा ! मैं क्या कर सकती हूं ? **3419**
एन् नान् शेंय्गेन् ! यारे कळैगण्⋆ एन्नै एन् शेंय्गिन्राय्⋆ उन्नाल् अल्लाल् यावरालुम्⋆ ऑन्रुम् कुरै वेण्डेन्⋆ कन्नार् मदिळ् शूळ् कुडन्दै क्किडन्दाय् !⋆ अडियेन् अरुवाणाळ्⋆ शेंन्नाळ् एन्नाळ् अन्नाळ्⋆ उनदाळ् पिडित्ते शेंलक्काणे ॥३॥	मैं क्या कर सकती हूं ? आपने मेरे लिये क्या किया है ? कौन हमारी रक्षा कर सकता है ? पत्थर की दीवार से घिरे तिरूकुडन्दै में आप शयन करते हैं। आपके अतिरिक्त किसी अन्य से मैं रक्षा की पुकार नहीं करती। विनती है, हमारा बचा हुआ जीवन आपके चरणारविंद के आश्रय में बीते। **3420**
शेंल क्काण्गिर्पार् काणुम् अळवुम्⋆ शेंल्लुम् कीर्त्तियाय्⋆ उलप्पिलाने ! एल्ला उलगुम् उडैय⋆ ऑरु मूर्त्ति⋆ नलत्ताल् मिक्कार् कुडन्दै क्किडन्दाय् !⋆ उन्नै क्काण्बान्नान् अलप्पाय्⋆ आगाशत्तै नोक्कि⋆ अळुवन् तोंळुवने ॥४॥	सदा ज्ञान सीखने में रत ऋषियों से अगम्य प्रभु ! अनंत प्रभु ! आपके स्वरूप में सारा विश्व है। अत्यंत श्रेय जनों से घिरे तिरूकुडन्दै में आप शयन करते हैं। आपके दर्शन का आकांक्षी मैं अव्यवस्थित आकाश को देखकर रोती हूं तथा विनती करती हूं। **3421**
अळुवन् तोंळुवन् आडि क्काण्बन्⋆ पाडि अलट्रुवन्⋆ तळुवल् विनैयाल् पक्कम् नोक्कि⋆ नाणि क्कविळ्न्दिरुप्पन्⋆ शेंळुवोंण् पळन क्कुडन्दै क्किडन्दाय् !⋆ शेंन्दामरै क्कण्णा !⋆ तोंळुवनेनै उनदाळ् शेरुम्⋆ वगैये शूळ् कण्डाय् ॥५॥	मैं रोती हूं तथा विनती करती हूं। नाच गाकर आपकी सर्वदा प्रशस्ति गाती हूं। दूर देखकर अपने कृत्यों के लिये अपना सिर लज्जा से झुका लेती हूं। तिरूकुडन्दै के उपजाऊ खेतों में शयन करने वाले राजीव नयन प्रभु ! विनती है कि इस पश्चाताप करती आत्मा को अपने चरणारविंद का मार्ग दिखाइये। **3422**

शूळ् कण्डाय् एन् तॊल्लै विनैयै अरुत्तु⋆ उन् अडिशेरुम् ऊळ् कण्डिरुन्दे⋆ तूराक्कुळि तूर्त्तु⋆ एनै नाळ् अगन्रिरुप्पन्⋆ वाळ् तॊल् पुगळार् कुडन्दै क्किडन्दाय्!⋆ वानोर् कोमाने⋆ याळिन् इशैये! अमुदे!⋆ अरिविन् पयने! अरियेरे! ॥६॥	स्वर्गिकों के प्रभु ! चिरंतन गौरव वाले लोगों से घिरे तिरूकुडन्दै में शयन करने वाले पभु ! हे वीणा की ध्वनि, अमृत, प्रसन्नता, ज्ञान के फल, सिंहों के राजा, हमें कर्मो से मुक्त कर दीजिये। अवश्य मार्ग बताईये, हमें आप तक पहुंचानें की चाह है। कब तक मैं यहां बिना पेंदी के गडढ़े को भरती रहूंगी ? **3423**
अरियेरे! एन्नम् पॊन् शुडरे!⋆ शॆङ्कण् करु मुगिले!⋆ एरिये! पवळ क्कुन्रे!⋆ नाल् तोळ् एन्दाय्! उनदरुळे⋆ पिरिया अडिमै एन्नै क्कॊण्डाय्⋆ कुडन्दै त्तिरुमाले⋆ तरियेन् इनि उन् शरणम् तन्दु⋆ एन् शन्मम् कळैयाये॥७॥	सिंहों के राजा, सुनहला तेज, अरूणाभ नयन मेघ वदन प्रभु ! मूंगा के चमकते पर्वत, चार भुजाओं के प्रभु ! तिरूकुडन्दै के प्रभु ! अपनी करूणा से आपने हमें बंधुआ प्राणी बना लिया। अव अपना संरक्षण देकर हमें जन्म से मुक्त कीजिये। अव इससे ज्यादा हम नहीं सहन कर सकते। **3424**
कळैवाय् तुन्बम् कळैया तॊळिवाय्⋆ कळैगण् मट्रिलेन्⋆ वळै वाय् नेमि प्पडैयाय्!⋆ कुडन्दै क्किडन्द मा माया⋆ तळरा उडलम् एन्नदावि⋆ शरिन्दु पोम् पोदु⋆ इळैयादुन ताळ् ऑरुङ्ग प्पिडित्तु⋆ प्पोद इशैनीये॥८॥	तीक्ष्ण चक्र धारण किये तिरूकुडन्दै के शयन किये अति आश्चर्य मय प्रभु ! आप मेरी यातना का अंत करें या न करें आप ही मेरे एक मात्र आश्रय हैं। जब यह शरीर थक जाये एवं मेरा अंत आ जाये कृपा करके अपने चरण में स्थान प्रदान कीजिये। **3425**
इशैवित्तेन्नै उन् ताळ् इणैक्कीळ्⋆ इरुत्तुम् अम्माने⋆ अशैविल् अमरर् तलैवर् तलैवा⋆ आदि प्पॆरु मूर्त्ति⋆ तिशै विल् वीशुम् शॆळु मा मणिगळ् शेरुम्⋆ तिरुक्कुडन्दै⋆ अशैविल् उलगम् परव क्किडन्दाय्!⋆ काण वाराये॥९	प्यार से अपने चरण में बांधने वाले प्रभु, गतिहीन देवों के स्वामी, चमकते रत्न वाले तिरूकुडन्दै में शयन किये प्रभु ! प्रथम कारण, सभी लोकों से प्रशंसित प्रभु ! विनती है, आइये जिससे कि आपका दर्शन मिले। **3426**
वारावरुवाय् वरुमॆन् माया!⋆ माया मूर्त्तियाय्⋆ आरावमुदाय् अडियेन् आवि⋆ अगमे तित्तिप्पाय्⋆ तीरा विनैगळ् तीर एन्नै आण्डाय्!⋆ तिरुक्कुडन्दै ऊरा!⋆ उनक्काळ् पट्टुम्⋆ अडियेन् इन्नम् उळल्वेनो॥१०॥	बिना स्वरूप के प्रभु जो स्वेच्छा से मनचाहे स्वरूप धारण करते हैं। अतृप्त अमृत, हमारे हृदय के आनंद, तिरूकुडन्दै के निवासी ! हमारे अंतहीन कर्म का अंत कर हमें संरक्षण प्रदान करनेवाले ! आपके सेवक होने पर भी हमें यातनाग्रस्त रहना ही होगा ? **3427**
उळलै एन्बिन् पेय्च्चि मुलैयूडु⋆ अवळै उयिर् उण्डान्⋆ कळल्गळ् अवैये शरणाग क्कॊण्ड⋆ कुरुगूर् च्चडगोबन्⋆ कुळलिन् मलिय च्चॊन्न⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ मळलै तीर वल्लार्⋆ कामर् मानेय् नोक्कियर्क्के॥११॥	बांसुरी से भी मधुर हजार गीतों का यह दशक कुरूगुर शडगोपन से गाये हुए हैं जो पूतना राक्षसी का स्तन चूसते हुए उसके प्राण चूसने वाले कृष्ण के चरणाश्रित हैं। जो इसका त्रुटिरहित गान करेंगे वे मृगनयनी किशोरियों से पूजे जायेंगे। **3428** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

49 मानेय नोक्कु (3429 - 3439)

तिरूवल्लवाळ् शेल्लुदलै त्तडुक्कुम् तोऴियारक्कु त्तलैवि कूरूदल्

(नायकी भाव मे सखियों से वार्ता)

तिरूवल्लवाळ ः यह स्थान केरल में कोट्टायम शहर के वल्लभ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं और अतीव ही सुन्दर हैं।आपको कोलपिरान या तिरूवळमारवान या श्री वल्लभ कहा जाता है। यह प्राचीन नगर वैष्णवता के इतिहास में तिरूवल्ला के नाम से प्रसिद्ध है। कांचीपुरम के सातवीं शताब्दी के विद्वान दंडिन ने भी अपनी रचना में यहां के बारे में उल्लेख किया है। यहां गरूड़ स्तंभ करीब **2** फीट व्यास का जमीन से ऊपर **50** फीट ऊंचा एक ही भाग में ग्रेनाईट पत्थर से बना है। कहते हैं इतना हीं अंश जमीन के नीचे है।इसके ऊपर के पंचलोक भाग में गरूड़ की तीन फीट की प्रतिमा है। मंदिर की भीतरी प्रागंन में एक तालाब है जिसमें जल हमेशा वर्तमान रहता है।
गर्भगृह गोलाकार आकृति का है जिसमें पूरब अंश में मूलावर हैं तथा पश्चिम वाले अंश में सुदर्शन स्थापित हैं। मूलावर **5** फीट के चतुर्भज रूप में है। ऊपर के दो हाथ चक्र शंख से विभूषित हैं। नीचे का दायां कमल धारण किये है जबकि बायां कमर पर टिका हुआ है।श्रीवल्लभ सन्निधी में प्रसाद में चंदन मिलता है जबकि सुदर्शन सन्निधि में विभूती का प्रसाद मिलता है।भगवान को यहां कत्थकली की प्रस्तुती गायन एवं वाद्य के साथ बहुत ही प्रिय है। (Refer Ramesh vol. 7, pp 106)

मानेय् नोक्कु नल्लीर् !⋆ वैगलुम् विनैयेन् मॆलिय⋆ वानार् वण् कमुगुम्⋆ मदु मल्लिगैयुङ्गमळुम्⋆ तेनार् शोलैगळ् शूळ्⋆ तिरुवल्लवाळ् उरैयुम् कोनारै⋆ अडियेन् अडिकूडुवदॆन्ऱुगॊलो॥१॥	मृगनयनी सखियां ! यह क्षुद्र दिनानुदिन क्षीण हो रही है।प्रभु तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां गगनचुंबी अरेका वृक्ष सुगंध विखेरते चमेली के बाग तथा मधु टपकाते फल के बगानों के बीच हैं। हाय ! कब यह भक्तात्मा प्रभु के चरण को प्राप्त कर सकेगी ? **3429**
एन्ऱुगॊल् तोळिमीर्गाळ्⋆ एम्मै नीर् नलिन्दॆन्शॆय्दिरो⋆ पॊन् तिगळ् पुन्नै मगिळ्⋆ पुदु मादवि मीदणवि⋆ तॆन्ऱल् मणम् कमळुम्⋆ तिरुवल्लवाळ् नगरुळ् निन्ऱ पिरान्⋆ अडिनीऱडियोम् कॊण्डु शूडुवदे॥२॥	सखियां ! हमें इस तरह से पीड़ित क्यों करती हो ? प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां सुनहले पुन्ने मगिळ एवं माधवी फूलों की महक हवा मे व्याप्त है। हाय ! कब हमलोग आपके चरण रज हम अपने सिर पर धारण कर सकेंगे ? **3430**
शूडुम् मलर्क्कुळलीर् !⋆ तुयराट्टियेनै मॆलिय⋆ पाडुनल् वेदवॊलि⋆ परवै त्तिरै पोल् मुळङ्ग⋆ माडुयर्न्दोम प्पुगै कमळुम्⋆ तण् तिरुवल्लवाळ्⋆ नीडुऱैगिन्ऱ पिरान्⋆ कळल् काण्डुङ्गॊल् निच्चलुमे॥३॥	फूल के जूड़े वाली सखियां ! हम स्वयं वेदना हैं। हम क्षीण हो गये हैं। प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां वैदिक वेदी का सुगंधित धुंआ उठता है तथा शमन लोग सागर गर्जन की तरह पाठ करते हैं। हाय ! कब हमलोग आपके चरण बिना व्यवधान के देख सकेंगे ? **3431**

निच्चलुम् तोळिमीर्गाळ् !⋆ एम्मै नीर् नलिन्दैन् शैय्दिरो⋆ पच्चिलै नीळ् कमुगुम्⋆ पलवुम् तॆङ्गुम् वाळैगळुम्⋆ मच्चणि माडङ्गळ् मीदणवुम्⋆ तण् तिरुवल्लवाळ्⋆ नच्चरविन् अणैमेल्⋆ नम्पिरानदु नन्नलमे॥ ४ ॥	सखियां ! हमें इस तरह से सर्वदा पीड़ा क्यों देती हो ? फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु तिरूवल्लवाळ में खड़े हैं जहां पान, कटहल, अरेका, नारियल, एवं कदली के बागों से घिरे ऊंचे महल स्थित हैं। प्रभु की कुशलता हमारे लिये श्रेयस्कर है। **3432**
नन्नल तोळिमीर्गाळ् !⋆ नल्ल अन्दणर् वेळ्वि प्पुगै⋆ मैन्नलङ्गॊण्डुयर् विण् मरैक्कुम्⋆ तण् तिरुवल्लवाळ्⋆ कन्नलम् कट्टि तन्नै⋆ क्कनियै इन्नमुदम् तन्नै⋆ एन्नलम् कॊळ् शुडरै⋆ एन्ऱुगॊल् कण्गळ् काण्बदुवे॥ ५ ॥	अच्छे स्वभाव की सखियां ! वैदिक ऋषि के वेदी से यज्ञ का धुंआ तिरूवल्लवाळ में बादल की तरह छाये है। यहां मधुर अमृत, फल, एवं मिश्री जैसे प्रभु ने हमारी कुशलता चुरा ली है। हाय ! कब हमारी आंखें प्रभु के तेजोमय वदन को देखेंगी ? **3433**
काण्बदॆञ्ञान्ऱु कॊल्लो⋆ विनैयेन् कनिवाय् मडवीर्⋆ पाण् कुरल् वण्डिनॊडु⋆ पशुन् तॆन्ऱलुम् आगि एङ्गुम्⋆ शेण् शिनै ओङ्गु मर⋆ च्चॆळुङ्गानल् तिरुवल्लवाळ्⋆ माण् कुऱळ् कोल प्पिरान्⋆ मलर् त्तामरै प्पादङ्गळे॥ ६ ॥	वैर की तरह होठ वाली सखियां ! सुन्दर वामन की तरह आने वाले प्रभु उपजाऊ तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां ताजी हवा के घने बागों में ऊंचे वृक्ष हैं तथा मधुमक्खियां वीणा की धुन की तरह मंड़राती हैं। हाय ! कब यह अभागिन प्रस्फुटित कमल समान चरण देखेगी ? **3434**
पादङ्गळ् मेलणि⋆ पू त्तॊळ क्कूडुङ्गॊल् पावै नल्लीर्⋆ ओद नॆडुन्दडत्तुळ्⋆ उयर् तामरै शॆङ्गळुनीर्⋆ मादर्गळ् वाळ् मुगमुम्⋆ कण्णुम् एन्दुम् तिरुवल्लवाळ्⋆ नादन् इञ्ञालम् उण्ड⋆ नम् पिरान् तन्नै नाळ्दॊऱुमे॥ ७ ॥	नेक सखियां ! विश्व को निगलने वाले हमारे नाथ एवं प्रभु तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां कुमुद एवं कमल बड़े ताल में ऊंचे बढकर आभापूर्ण नारियों की आंख एवं मुखड़ा तक पहुंच जाती हैं। हाय ! कब हम आपके चरण फूल से हर दिन पूजेंगे ? **3435**
नाळ्दॊऱुम् वीडिन्ऱिये⋆ तॊळ क्कूडुङ्गॊल् नन्नुदलीर्⋆ आडुऱु तीङ्गरुम्पुम्⋆ विळै शॆन्नॆलुम् आगि एङ्गुम्⋆ माडुऱु पून्दडम् शेर्⋆ वयल् शूळ् तण् तिरुवल्लवाळ्⋆ नीडुरैगिन्ऱ पिरान्⋆ निलम् ताविय नीळ् कळले॥ ८ ॥	चमकते ललाट की सखियां ! विश्व को मापने वाले प्रभु फूलों से भरे अनेकों खेतों से घिरे तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां गन्ना धीरे से झूमते हैं तथा सभी दिशाओं में पके सुनहले धान भरे हैं। हाय ! कब हम आपके चरण हर दिन बिना व्यवधान के पूजेंगे ? **3436**
कळल् वळै पूरिप्प याम् कण्डु⋆ कैदॊळ क्कूडुङ्गॊलो⋆ कुळल् एन्न याळुम् एन्न⋆ क्कुळिर् शोलैयुळ् तेन् अरुन्दि⋆ मळलै वरि वण्डुगळ् इशै पाडुम्⋆ तिरुवल्लवाळ्⋆ शुळलिन् मलि शक्कर प्पॆरुमान्⋆ अदु तॊल्लरुळे॥ ९ ॥	शाश्वत करूणास्वरूप एवं घूमते चक्र को धारण करने वाले प्रभु शीतल बागों के बीच तिरूवल्लवाळ में रहते हैं जहां युवा भौंरे मधु पीकर बांसुरी एवं वीणा की तरह गुंजते हैं। कब हम आपके स्वरूप की पूजा कर अपने कंगन फिर से पहन सकेंगे ? **3437**

तॊल्लरुळ् नल् विनैयाल्⋆ शॊल्ल क्कूडुङ्गॊल् तोऴिमीर्गाळ्⋆ तॊल्लरुळ् मण्णुम् विण्णुम्⋆ तॊऴ निन्ऱ तिरुनगरम्⋆ नल्लरुळ् आयिरवर्⋆ नलन् एन्दुम् तिरुवल्लवाऴ्⋆ नल्लरुळ् नम् पॆरुमान्⋆ नारायणन् नामङ्गळे ॥१०॥	सखियां ! हमारे प्रभु अनेको हजार भक्तों से अति प्रशंसित हैं। धरा एवं स्वर्ग सुन्दर नगर तिरूवल्लवाळ में रहने वाले नारायण की चिरंतन करूणा से परिचित हैं। हमारा कब सौभाग्य होगा कि हम आपके नाम का गान प्रेम से कर सकेंगे ? **3438**
नामङ्गळ् आयिरम् उडैय⋆ नम् पॆरुमान् अडि मेल्⋆ शेमम् कॊळ् तॆन् कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् तॆरिन्दुरैत्त⋆ नामङ्गळ् आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुम् तिरुवल्लवाऴ्⋆ शेमम् कॊळ् तॆन् नगर्मेल्⋆ शॆप्पुवार् शिऱन्दार् पिऱन्दे ॥११॥	ज्ञानवान एवं समझदार कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक शांत तिरूवल्लवाळ के बारे में गाये हुए हैं और हजार नाम वाले प्रभु की प्रशस्ति में प्रस्तुत हैं। जो इसे गा सकेंगे वे इस जगत में सर्वोत्तम सफलता पायेंगे। **3439** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

50 पिऱन्दवारूम् (3440 - 3450)

आऴवार् ताम् शेरन्दनुबविक्कुम् निलैयै च्चेय एन एम्बेरूमानै वेण्डुदल्

पिऱन्दवाऱुम् वळर्न्दवाऱुम्* पॆरिय बारतम् कैशॆय्दु* ऐवर्क्कु त्तिऱङ्गळ् काट्टियिट्टु* श्शॆय्दु पोन मायङ्गळुम्* निऱम् तन् ऊडु पुक्कॆनदावियै* निन्ऱु निन्ऱुरुक्कि उण्गिन्ऱ* इच्चिऱन्द वान् शुडरे !* उन्नै एन्ऱु कॊल् शेर्वदुवे॥१॥	आपका जन्म, बालपन, महाभारत में पांच के पक्ष में आपकी शक्ति, ये सब आश्चर्यमयी घटनायें हमारे हृदय को बराबर कौंधती हुई हमारी जीवात्मा को आत्मसात कर ले रही हैं। सबसे ऊंचे, तेजोमय प्रभु ! कब आपसे हम मिल पायेंगे ? **3440**
वदुवै वार्त्तैयुळ् एरु पायन्ददुम्* माय माविनै वाय् पिळन्ददुम्* मदुवै वार् कुऴलार्* कुरवै पिणैन्द कुऴगुम्* अदुविदु उदुवॆन्नलावन अल्ल* एन्नै उन् शॆय्गै नैविक्कुम्* मुदु वैय मुदल्वा !* उन्नै एन्ऱु तलैप्पॆय्वने॥२॥	नप्पिनाय के हाथ के लिये वृषभों का शमन, भयानक घोड़ा का जबड़ा चीरना, जूड़े वाली प्रिय गोपियों के साथ रासलीला आदि को इस इस तरह से वर्णन करना कठिन है। आपके अनेकों कृत्यों के कारण हम क्षीण काय होते गये हैं। विश्व के प्रथम कारण प्रभु ! कब आपसे हम मिल पायेंगे ? **3441**
पॆय्युम् पूङ्गुऴल् पेय्मुलै उण्ड* पिळ्ळै त्तेट्रमुम्* पेरन्दोर् शाडिऱ शॆय्य पादम् ऒन्ऱाल्* शॆय्द निन् शिऱु च्चेवगमुम्* नॆय्युण् वार्त्तैयुळ् अन्नै कोल् कॊळ्ळ* नीयुन् तामरै क्कण्गळ् नीर् मल्ग* पैयवे निलैयुम् वन्दु* एन् नॆञ्जै उरुक्कुङ्गळे॥३॥	पूतना के स्तन पीते शिशु का तेज, चरणारविंद से गाड़ी को नष्ट करने का शौर्य, भय से आंखों में आंसू भरकर खड़ा होना जब मां छड़ी लेकर खड़ी हो गयी थी यह सुनकर कि आपने मक्खन चुराया है, ये सब हमारे हृदय को द्रवित करते हैं। **3442**
कळ्ळ वेडत्तै क्कॊण्डु पोय्* प्पुऱम् पुक्कवाऱुम्* कलन्दशुरर उळ्ळम् पेदम् शॆय्दिट्टु* उयिर् उण्ड उपायङ्गळुम्* वॆळ्ळ नीर् च्चडैयानुम्* निन्निडै वेऱलामै विळङ्ग निन्ऱदुम्* उळ्ळमुळ् कुडैन्दु* एन् उयिरै उरुक्कि उण्णुमे॥४॥	जटाधारी शिव का वेष बदल कर असुरों के नगर में चुपके से प्रवेश कर उनका समूह में नाश करना, तब आप प्रभु के वदन में विलीन हो जाना ये सब हमारे हृदय में घुसकर हमारी आत्मा को द्रवित करते हैं। **3443**
उण्ण वानवर् कोनुक्कु* आयर् ऒरुप्पडुत्त अडिशिल् उण्डदुम्* वण्ण माल् वरैयै एडुत्तु* मऴै कात्तदुम्* मण्णै मुन् पडैत्तुण्डुमिऴ्न्दु* कडन्दिडन्दु मणन्द मायङ्गळ्* एण्णुन्दोऱुम् एन् नॆञ्जु* एरिवाय् मॆऴुगॊक्कु निन्ऱे॥५॥	इन्द्र के लिये एकत्रित भोज्य पदार्थ को चमत्कारिक रूप से गटक जाना, तब पर्वत को उठाकर क्रुद्ध वर्षा को रोकना, आापका विश्व को बनाना, निगलना एवं फिर बाहर कर देना, आपका धरा को मापना एवं भूदेवी से व्याह रचाना ये सब हमारे हृदय को अग्नि में मोम की तरह द्रवित करते हैं। **3444**

निन्ऱवाऱुम् इरुन्द वाऱुम्⋆ किडन्द वाऱुम् निनैप्परियन⋆ ऑन्ऱला उरुवाय्⋆ अरुवाय निन् मायङ्गळ्⋆ निन्ऱु निन्ऱु निनैक्किन्ऱेन्⋆ उन्नै एङ्ङनम् निनैगिर्पन्⋆ पावियेऱ्– कॉन्ऱु नन्गुरैयाय्⋆ उलगम् उण्ड ऑण् शुडरे ! ॥६॥	आपके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विस्मयकारी कृत्य अनगिनत हैं। खड़े, बैठे एवं शयन के अवस्था वाले प्रभु ! सोचे सोच कर भी आपको समझ नहीं पाता। धरा को निगलने वाले तेजोमय प्रभु! इस पापी को मार्ग दिखाइये। **3445**
ऑण् शुडरोडिरुळुमाय्⋆ निन्ऱ वाऱुम् उण्मैयोडिन्मैयाय् वन्दु⋆ एन् कण् कॉळावगै⋆ नीगरन्दॅन्नै च्चॅय्गिन्ऱन⋆ एण् कॉळ् शिन्दैयुळ् नैगिन्ऱेन्⋆ एन् करिय माणिक्कमे !⋆ एन् कण्कट्कु त्तिण् कॉळ्ळ ऑरु नाळ्⋆ अरुळाय् उन् तिरुवुरुवे॥७॥	मेरे प्रति किये गये आपके कृत्यों को सोचकर मैं अचेत हो जाता हूं ः अंधकार के बीच तेज एवं मिथ्या के बीच सच। मेरे मणिवर्ण के प्रभु ! मात्र एक दिन पधारिये जिससे कि हमारी आंखे आपका स्वरूप देखकर तृप्त हों तथा मैं उसे अपने भीतर जी भरकर भर सकूं। **3446**
तिरुवुरुवु किडन्दवाऱुम्⋆ कॉप्पूळ् शॅन्दामरै मेल्⋆ तिशैमुगन् करुवुळ् वीट्रिरुन्दु⋆ पडैत्तिट्ट करुमङ्गळुम्⋆ पॉरुविल् उन् तनि नायगम् अवै केट्कुम्दोऱुम्⋆ एन् नॅञ्जम् निन्ऱु नॅक्कु⋆ अरुवि शोरुम् कण्णीर्⋆ एन् शॅय्गेन् अडियेने॥८॥	जब आपके शयन स्वरूप के बारे में, लाल नाभिकमल पर ब्रह्मा को बैठने के बारे में, सृष्टि के महान कार्य में आपका गर्भ में प्रवेश करने के बारे में, एवं सबके ऊपर आपका सार्वभौम सत्ता के बारे में सुनता हूं तो मेरा हृदय पिघल जाता है एवं आंखे आंसू से भर जाती हैं।ओह ! मैं क्या करूं ? **3447**
अडियै मून्ऱै इरन्दवाऱुम्⋆ अङ्ग निन्– ऱाम् कडलुम् मण्णुम् विण्णुम् मुडिय⋆ ईर् अडियाल्⋆ मुडित्तु क्कॉण्ड मुक्कियमुम्⋆ नॉडियुमाऱवै केट्कुम्दोऱुम्⋆ एन् नॅञ्जम् निन् तनक्के करैन्दुगुम्⋆ कॉडिय वल्विनैयेन्⋆ उन्नै एन्ऱुगॉल् कूडुवदे॥९॥	तीन पग जमीन की भिक्षा मांगकर अपना स्वरूप को बढ़ाते हुए दो पगो में धरा गगन एवं सागर को मापकर किस तरह आप अपना लक्ष्य साधते हैं ये सब सुनकर मेरा हृदय केवल आपके लिये द्रवित होता है। यह दुष्ट कार्मिक जीव कब आपसे मिलेगा ? **3448**
कूडि नीरै कडैन्द वाऱुम्⋆ अमुदम् देवर् उण्ण⋆ अशुररै वीडुम् वण्णङ्गळे⋆ शॅय्दु पोन वित्तगमुम्⋆ ऊडु पुक्कॅनदावियै⋆ उरुक्कि उण्डिडुगिन्ऱ⋆ निन् तन्नै नाडुम् वण्णम् शॉल्लाय्⋆ नच्चु नागणै याने ! ॥१०॥	जिस तरह से आपने अमृत के लिये समुद्र मंथन में हिस्सा लिया, असुरों को अकेले करने की युक्ति से देवों को सहायता की, ये सब हमारे हृदय मे प्रवेश कर हमारी आत्मा को पिघलाते हैं। विषैले शेष शय्या के प्रभु ! बताइये कैसे मैं आपको प्राप्त करूं? **3449**

‡नागणै मिशै नम् पिरान्⋆ शरणे शरण् नमक्कॆन्ऱु⋆ नाळ्दॊरुम् एग शिन्दैयनाय्⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् मारन्⋆ आग नूट्रवन्दादि⋆ आयिरत्तुळ् इवै ओर् पत्तुम् वल्लार्⋆ माग वैगुन्दत्तु⋆ मगिळ्वॆय्दुवर् वैगलुमे॥११॥	अंतादि सहित हजार पद का यह दशक, कुरूगुर शडगोपन की रचना है जो एकाग्र चित्त से शेषशायी प्रभु के चरणारविंद की एकमात्र आश्रय के रूप में अर्चना करने को बताती है। जो इसको याद करलेंगे वे सदा के लिये ऊंचे वैकुंठ में रहेंगे। **3450** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

51 वैगल् पूङ्गळि (3451 – 3461)

पऱ्वैकळै त्तूदुविडल्

तिरूवन वण्डूर ः यह स्थान केरल राज्य में है एवं पांच पांडवो से संबंधित हैं। कहते हैं पांडवों में सबसे सुन्दर नकुल ने इस स्थान का जीर्णोद्धार अज्ञातवास की अवधि में कराया था। यह चेंगान्नुर से **6** कि मी पर पंपा नदी के किनारे स्थित है। मूलावर खड़े मुद्रामें पश्चिमाभिमुख हैं। मलयालम में 'तिरूवन अंडू' का अर्थ है विष्णु। **108** दिव्य देश में तीन स्थान 'वन' शब्द से जुड़े हैंः दो अन्य हैं **1**। तिरूनांगूर क्षेत्र का तिरूवन पुरूषोत्तम जो तमिल नाडु में है। **2** केरल में ही तिरूवन परिशरम। तीनों जगह मूलावर खड़े मुद्रा में हैं। (Refer Ramesh vol. 7, pp 100)

वैगल् पूङ्गळिवाय्⋆ वन्दु मेयुम् कुरुगिनङ्गाळ्⋆ शॅय् कॉळ् शॅन्नॅल् उयर्⋆ तिरुवण्वण्डूर् उरैयुम्⋆ कै कॉळ् शक्करत्तु⋆ एन् कनिवाय् पॅरुमानै क्कण्डु⋆ कैगळ् कूप्पि च्चॉल्लीर्⋆ विनैयाट्टियेन् कादन्मैये॥१॥	फूल से भरे सदा नमीपूर्ण जमीन से कीड़ा चुनने वाले पक्षी ! बैर जैसे होंठ एवं हाथ में चक्र धारण करने वाले प्रभु सुन्दर विकासशील तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां धान का बड़ा बड़ा पौधा होता है। उन्हें जाकर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3451**
कादल् मॅन् पॅडैयोडु⋆ उडन् मेयुम् करु नाराय्⋆ वेद वेळ्वि ऑलि मुळङ्गुम्⋆ तण् तिरुवण्वण्डूर्⋆ नादन् ञालम् एल्लाम् उण्ड⋆ नम् पॅरुमानै क्कण्डु⋆ पादम् कै तॉळुदु पणियीर्⋆ अडियेन् तिऱमे॥२॥	अपने प्रिया के साथ कीड़ा चुनने वाले काला पक्षी ! समस्त विश्व को निगलने वाले प्रभु वैदिक उच्चारण से परिपूर्ण शीतल तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। जाओ और उनके चरणों पर गिरकर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3452**
तिऱङ्गळ् आगि एङ्गुम्⋆ शॅय्गाळ् ऊडुळल् पुळ्ळिनङ्गाळ्⋆ शिऱन्द शॅल्वम् मल्गु⋆ तिरुवण्वण्डूर् उरैयुम्⋆ कऱङ्गु शक्करक्कै⋆ क्कनिवाय् प्पॅरुमानै क्कण्डु⋆ इऱङ्गि नीर् तॉळुदु पणियीर्⋆ अडियेन् इडरे॥३॥	खेत से चुनने वाले पंख वाले मित्रों ! बैर जैसे होंठ एवं हाथ में घूमते चक्र धारण करने वाले प्रभु अतिश्रीसंपन्न तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। जाओ और उनका आदर से पूजा कर हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3453**
इडरिल् पोगम् मूळ्गि⋆ इणैन्दाडुम् मडवन्नङ्गाळ् !⋆ विडलिल् वेदवॉलि मुळङ्गुम्⋆ तण् तिरुवण्वण्डूर्⋆ कडलिन् मेनि प्पिरान्⋆ कण्णनै नॅडुमालै क्कण्डु⋆ उडलम् नैन्दॉरुत्ति⋆ उरुगुम् एन्ऱुणर्त्तुमिने॥४॥	सदा साथ स्नान करने वाले हंस की जोड़ी ! स्वर्गिकों के मूल प्रभु सागर सा सलोने कृष्ण वैदिक उच्चारण के बीच तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। विनती है उन्हें बताओ कि एक किशोरी उनकी चाह से संतप्त है। **3454**
उणर्त्तल् ऊडल् उणर्न्दु⋆ उडन् मेयुम् मडवन्नङ्गाळ्⋆ तिणर्त्त वण्डल्गाळ् मेल्⋆ शङ्गु शेरुम् तिरुवण्वण्डूर्⋆ पुणर्त्त पून्दण् तुळाय् मुडि⋆ नम् पॅरुमानै क्कण्डु⋆ पुणर्त्त कैयिनराय्⋆ अडियेनुक्कुम् पोट्रुमिने॥५॥	आपस में मनमुटाव के बाद शांति बनाने में प्रवीण हंस की जोड़ी ! मुकुट पर तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां बालू के ढेर में बहुत सारे शंख मिलते हैं। जाऔ और करबद्ध होकर दर्शन करो एवं मेरे बारे में भी विनती करो। **3455**
पोट्रि यान् इरन्देन्⋆ पुन्नै मेल् उऱै पूङ्गुयिल्गाळ्⋆ शेट्रिल् वाळै तुळ्ळुम्⋆ तिरुवण्वण्डूर् उरैयुम्⋆ आट्रल् आळियङ्गै⋆ अमरर् पॅरुमानै क्कण्डु⋆ माट्रम् कॉण्डरुळीर्⋆ मैयल् तीर्वदॊरु वण्णमे॥६॥	पुन्नै में वास करने वाले कोयल तुमसे निवेदन कर भीख मांगती हूं। दिव्य हाथ में चक्र धारण करने वाले स्वर्गिकों के प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां जल वाले खेत में मछलियां उछलती हैं। जाकर उनका संवाद लाओ एवं हमें अचेत होने से मुक्त करो। **3456**

ऑरुवण्णम् शॅन्ऱु पुक्कु॰ एनक्कॉन्ऱरै ऑण् किळिये॰ शॅरुवॉण् पूम् पॉळिल् शूळ्॰ शॅक्कर् वेलै तिरुवण्वण्डूर्॰ करु वण्णम् शॅय्य वाय्॰ शॅय्य कण् शॅय्य कै शॅय्य काल्॰ शॅरुवॉण् शक्करम् शङ्गु॰ अडैयाळम् तिरुन्द क्कण्डे॥७॥	सुन्दर सुग्गा ! शीघ्र जाकर अपने मीठे शब्दों से बोलो। तिरूवन वण्डूर फूलों का बाग एवं लाल तट से घिरा हुआ है। प्रभु श्याम हैं, लाल होंठ है, कमल समान आंख है, एवं कमल सा चरण है। चक्र एवं शंख आपके पहचान चिह्न हैं। **3457**
तिरुन्द क्कण्डॅनक्कॉन्ऱरैयाय्॰ ऑण् शिऱु पूवाय्॰ शॅरुन्दि ञाळल् मगिळ्॰ पुन्नै शूळ् तण् तिरुवण्वण्डूर्॰ पॅरुम् तण् तामरै क्कण्॰ पॅरु नीळ् मुडि नाल् तडन्तोळ्॰ करुम् तिण् मा मुगिल् पोल्॰ तिरुमेनि अडिगळैये॥८॥	सुन्दर पुवै पक्षी ! प्रभु से बात करके शीघ्र लौट आओ। आप पुन्नै शेरून्दि नलै कुरूक्कत्ती एवं मगिल फूलों से घिरे तिरूवन वण्डूर में रहते हैं। आपके कमल समान बड़ी बड़ी आंखें हैं, चार शक्तिशाली भुजायें हैं, एवं मेघ सा श्याम वदन है। आप ऊंचा तेजपूर्ण मुकुट पहनते हैं। **3458**
अडिगळ् कै तॉळुदु॰ अलर्मेल् अशैयुम् अन्नङ्गाळ्॰ विडिवै शङ्गॊलिक्कुम्॰ तिरुवण्वण्डूर् उऱैयुम्॰ कडिय मायन् तन्नै॰ क्कण्णनै नॅडुमालै क्कण्डु॰ कॉडिय वल्विनैयेन्॰ तिऱम् कूऱुमिन् वेऱु कॉण्डे॥९॥	फूल पर खेलने वाले सुन्दर हंस ! प्रभु तिरूवन वण्डूर में रहते हैं जहां दिन का प्रारंभ शंख वादन से होता है। मूल देव, हमारे कृष्ण शीघ्रगामी हैं। विनती है कि आपसे अकेले में मिलकर चरणों की पूजा करो एवं हमारी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3459**
वेऱु कॉण्डुम्मै यान् इरन्देन्॰ वॅरि वण्डिनङ्गाळ्॰ तेऱु नीर् प्पम्बै॰ वडपालै त्तिरुवण्वण्डूर्॰ माऱिल् पोर् अरक्कन्॰ मदिळ् नीऱॅळ च्चॅट्टगन्द॰ एऱु शेवगनार्क्कु॰ एन्नैयुम् उळळ् एन्मिन्गळे॥१०॥	सुगंधित मधुमक्खी ! तुम अपने स्वभाव में अलग हो अतः विनती करती हूं। तिरूवन वण्डूर पंपा नदी के उत्तर तट पर है। ऊंची दीवाल वाले लंका को जलाकर भस्म करने वाले प्रभु यहां रहते हैं। विनती है, मेरे बारे में उनसे बताओ कि मैं भी जीवित हूं। **3460**
मिन् कॉळ् शेर् पुरिनूल् कुऱळाय्॰ अगल् ञालम् कॉण्ड॰ वन् कळ्वन् अडिमेल्॰ कुरुगूर् च्चडगोपन् शॉन्न॰ पण् कॉळ् आयिरत्तुळ् इवै पत्तुम्॰ तिरुवण्वण्डूर्क्कु॰ इन्गॉळ् पाडल् वल्लार्॰ मदनर् मिन्निडै अवर्क्के॥११॥	धरा पर अधिकार करने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक किशोरियों के हृदय को जीतने वाला है। **3461** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **52 मिन्निडै मडवार् (3462 -3472)** **तलैवन् तामदित्तु वरक्कण्ड तलैवि ऊडल् कोण्डुरैत्तल्**	
मिन्निडै मडवार्गळ् निन्नरुळ् शूडुवार्⋆ मुन्बु नानदञ्जुवन्⋆ मन्नुडै इलङ्गै⋆ अरण् कायन्द मायवने⋆ उन्नुडैय शुण्डायम् नान् अरिवन्⋆ इनि अदु कॊण्डु शॆय्वदॆन्⋆ एन्नुडैय पन्दुम् कळलुम्⋆ तन्दु पोगु नम्बी ! ॥१॥	लंका की किला को ध्वस्त करने वाले प्रभु! पतली कमर की किशोरियां आपकी कृपा को पूजती हैं। मुझे भय है कि क्या होने वाला है। हम आपकी युक्ति को जानते हैं।अब उनलोगों का आप क्या करेंगे ? महाशय ! हमारा गेंद एवं डंडा वापस कर यहां से चले जाइये। **3462**
पोगु नम्बी ! उन् तामरै पुरै कण् इणैयुम्⋆ शॆव्वाय् मुरुवलुम्⋆ आगुलङ्गळ् शॆय्य⋆ अळिदर्के नोट्टोमे याम्⋆ तोगै मा मयिलार्गळ् निन्नरुळ् शूडुवार्⋆ शॆवियोशै वैत्तॆळ⋆ आगळ् पोग विट्टु⋆ कुळलूदु पोयिरुन्दे॥२॥	महाशय जाइये। आपकी कमल सी आंख एवं मूंगा सा होठ हमलोगों को आहत करता है एवं अचेत करता है। हाय ! हमारी तपस्या का यही फल है।मोर की तरह चलने वाली प्यारी युवती किशोरियां आपकी कृपा की पूजा करेंगी। गायों को उस रास्ते भेज कर अपनी बांसुरी इनके साथ बजाइये। **3463**
पोयिरुन्दुम् निन् पुळ्ळुवम् अरियादु⋆ अवरक्कुरै नम्बि !⋆ निन् शॆय्य वाय् इरुङ्गनियुम् कण्गळुम्⋆ विपरीतम् इन्नाळ्⋆ वेय् इरुम् तडम् तोळिनार्⋆ इत्तिरुवरुळ् पॆरुवार्यवर् कॊल्⋆ मा इरुम् कडलै क्कडैन्द⋆ पॆरुमानाले॥३॥	महाशय जाइये। अपनी कहानी सरल चित्त वालों को बताइये। आपकी कमल सी आंख एवं मूंगा सा होठ हमलोगों के लिये अभिशाप है। आज आपकी कृपा को जीतने वाली न जाने कौन सी सौभाग्यशाली किशोरी होगी ? **3464**
आलिनीळ् इलै एळ् उलगम् उण्डु⋆ अन्रु नी किडन्दाय्⋆ उन् मायङ्गळ् मेलै वानवरुम् अरियार्⋆ इनि एम् परमे⋆ वेलिनेर् तडम् कण्णिनार्⋆ विळैयाडु शूळलै च्चूळवे निन्रु⋆ कालि मेयक्क वल्लाय् !⋆ एम्मै नी कळरेले॥४॥	आपने विश्व को निगल लिया एवं सो गये। आपका रहस्य देवगन भी नहीं समझते तो हम कैसे समझेंगे। जहां मृगनयनी किशोरियां बालू के महलों से खेलती हैं आप वहीं पर गाय चराना जानते हैं। विनती है, हमें तंग न करें। **3465**

कऴेल् नम्बी !★ उन् कै तवम् मण्णुम् विण्णुम् नन्गारियुम्★ तिण् शक्कर निऴरु तोल् पडैयाय् !★ उनक्कोन्ऱुणरत्तुवन् नान्★ मऴरु तेन् मॊऴियार्गऴ् निन्नरुऴ् शूडुवार् मनम् वाडि निर्क★ एम् कुऴरु पूवैयोडुम्★ किऴियोडुम् कुऴगेल्ले॥५॥	महाशय ! झूठ मत बोलिये। नर एवं देव आपके छल से परिचित हैं। तेजोमय चकवाले प्रभु ! हम आपको कुछ शिक्षा देना चाहते हैं।मृदुभाषिणी उत्सुक किशोरियां सर्वदा आपकी कृपा की पूजा करेंगी। विनती है, हमारे गूंगे मैना एवं तोता से खेल न करें। **3466**
कुऴगि एङ्गऴ् कुऴमणन् कॊण्डु★ कोयिन्मै शॆय्दु कन्मम् ऑन्ऱिल्लै★ पऴगि याम् इरुप्पोम्★ परमे इत्तिरुवरुऴाल्★ अऴगियार् इव्वुलग मून्ऱुक्कुम्★ तेविमै तगुवार् पलर् उऴर्★ कऴगम् एरेल् नम्बी !★ उनक्कुम् इळैदे कन्ममे॥६॥	पश्चाताप का स्वांग भरने से कोई लाभ नहीं। विनती है, हमारी गुड़ियों से न खेलें। आपके कृत्य से हम अवगत हैं हम इसके योग्य हैं नहीं। अनेकों गोरी किशोयिां रानी बनने योग्य हैं। महाशय मेरा आलिंगन न करें, यह बचपना है एवं आपके लिये अमर्यादित है। **3467**
कन्मम् अन्ऱेङ्गऴ् कैयिल् पावै परिप्पदु★ कडल् ञालम् उण्डिट्ट★ निन्मला ! नॆडियाय् !★ उनक्केलुम् पिऴै पिऴैये★ वन्ममे शॊल्लि एम्मै नी विऴैयाडुदि★ अदु केट्किल् एन्नैमार्★ तन्म पावम् एन्नार्★ ऑरु नान्ऱु तडि पिणक्के॥७॥	धरा एवं सागर को अधिकार में लेने वाले पूर्ण ! विनती है, हमारी गुड़िय न छीनें। आप झूठ बोलकर हमारे साथ खेलते हैं। दोष तो दोष है चाहे वह आपका ही क्यों न हो।अगर हमारे भाई एक दिन सुनेंगे तो डंडा लेकर आपसे न्याय करना नहीं छोड़ेंगे। **3468**
पिणक्कि यावैयुम् यावरुम्★ पिऴैयामल् पेदित्तुम् पेदियाददोर्★ कणक्किल् कीर्त्ति वॆळ्ळ★ क्कदिर् ञान मूर्त्तियिनाय् इणक्कि एम्मै एम् तोऴिमार्★ विऴैयाड- प्पोदुमिन् एन्न प्पोन्दोमै★ उणक्कि नी वऴैत्ताल्★ एन् शॊल्लार् उगवाददवरे॥८।	दिव्य ज्ञान एवं अनगिनत गौरव के प्रभु ! सब वस्तु कितना भिन्न है केवल आपको छोड़कर। जब मित्र के बुलाने पर हम जाते हैं तो आप हमें रोककर शुष्क कर देते हैं। हाय ! जो मित्रवत नहीं हैं वे क्या कहेंगे ? **3469**

उगवैयाल् नॅञ्जम् उळ्ळुरुगि★ उन् तामरै त्तडम् कण् विळिगळिन्★ अग वलै प्पडुप्पान्★ अळित्ताय् उन् तिरुवडियाल्★ तगवु शॅय्दिलै एङ्गळ् शिट्रिलुम्★ याम् अडु शिरु शोरुम् कण्डु★ निन् मुगवॊळि तिगळ★ मुरुवल् शॅय्दु निन्रिलैये॥९॥	अपने कमल के पाश में हमें फंसाकर हमारे हृदय को द्रवित करने के लिये हमारे द्वारा बनाये गये बालू के महलों को कुचल कर वहां रखे भोजन को अधिकार में ले लिये हैं। अपने दिव्य मुस्कान के साथ खड़ा होकर आपने मात्र देखा नहीं। हाय ! हम भाग्यशाली नहीं हैं। **3470**
निन्रिलङ्गु मुडियिनाय्!★ इरुबत्तोर् काल् अरशु कळै कट्ट★ वॆन्रि नीळ् मळुवा!★ वियन् ञालम् मुन् पडैत्ताय्!★ इन्रिव्वायर् कुलत्तै वीडुय्य- त्तोन्रिय★ करुमाणिक्क च्चुडर्★ निन् तन्नाल् नलिवे पडुवोम्★ एन्रुम् आयच्चियोमे॥१०	तेजोमय मुकुट वाले प्रभु, राजाओं को नष्ट करने वाला फरसा चलाने वाले ! विश्व को बनाने वाले दिव्य वर्ण के प्रभु ! आज आपके आने से गोपकुल का सम्मान बढ़ा है। हाय ! गोपकिशोरियां पीड़ित हैं। **3471**
‡आय्च्चि आगिय अन्नैयाल्★ अन्रु वॆण्णॆय् वार्त्तैयुळ्★ शीट्र् मुण्डळु कूत्त अप्पन् तन्नै★ क्कुरुगूर् च्चडगोपन्★ एत्तिय तमिळ् मालै★ आयिरत्तुळ् इवैयुम् ओर् पत्तिशैयोडुम्★ नात्तन्नाल् नविल उरैप्पार्कु★ इल्लै नल्गुरवे॥११॥	मक्खन चुराने पर गोपमाता से दंडित होने वाले प्रभु की प्रशस्ति में कहे गये हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन ने संगीत के साथ गाया है। जो इसे याद करलेंगे वे गरीबी से मुक्त हो जायेंगे। **3472** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

53 नल्गुरवुम् (3473 – 3483)

तम्मै वशिगरित्तवन् शर्वेश्वरन् एनल्

(ग)

<table>
<tr><td>नल्गुरवुम् शॆल्वुम्⋆ नरगुम् शुवर्क्कमुमाय्⋆
वॆल्पगैयुम् नट्पुम्⋆ विडमुम् अमुदमुमाय्⋆
पल्वगैयुम् परन्द⋆ पॆरुमान् एन्नै आळ्वानै⋆
शॆल्वम् मल्गु कुडि⋆ तिरुविण्णगर् कण्डेने॥१॥</td><td>हम प्रभु को सर्वत्र देखते हैं। आप अनेकों तरह से प्रकट होते हैंः गरीबी एवं संपन्नता, स्वर्ग एवं नरक, शत्रुता एवं मित्रता, विष एवं औषध। आप हमारे नाथ हैं एवं संपन्न लोगों के साथ तिरू विन्नगर में रहते हैं। 3473</td></tr>
<tr><td>कण्ड इन्बम् तुन्बम्⋆ कलक्कङ्गळुम् तेट्रमुमाय्⋆
तण्डमुम् तण्मैयुम्⋆ तळलुम् निळलुमाय्⋆
कण्डु कोडर्करिय पॆरुमान् एन्नै आळ्वान् ऊर्
तॆन् तिरै प्पुनल् शूळ्⋆ तिरुविण्णगर् नन्नगरे॥२॥</td><td>सुख एवं दुख, भ्रम एवं स्पष्ट मत, दंड एवं क्षमा, प्रकाश एवं छाया, हमारे प्रभु समझ के परे हैं। आप शुद्ध जल से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। 3474</td></tr>
<tr><td>नगरमुम् नाडुगळुम्⋆ ञानमुम् मूडमुमाय्⋆
निगरिल् शूळ् शुडराय् इरुळाय्⋆ निलनाय् विशुम्बाय्⋆
शिगर माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेरन्द पिरान्⋆
पुगर्गॊळ् कीर्त्ति अल्लाल् इल्लै⋆ यावर्क्कुम् पुण्णियमे॥३॥</td><td>गांव एवं नगर, ज्ञान एवं अज्ञान, ज्योतिपुंज एवं अंधकार, धरा एवं विस्तृत आकाश, प्रभु महलों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। 3475</td></tr>
<tr><td>पुण्णियम् पावम्⋆ पुणर्च्चि पिरिवॆन्निर्वैयाय्⋆
एण्णमाय् मरप्पाय्⋆ उण्मैयाय् इन्मैयाय् अल्लनाय्⋆
तिण्ण माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेरन्द पिरान्⋆
कण्णन् इन् अरुळे⋆ कण्डु कॊण्मिन्गाळ् कैदवमे॥४॥</td><td>अच्छे एवं बुरे कर्म, मिलन एवं विछुड़न, स्मृति एवं विस्मृति, सच्चाई एवं भ्रम ः आप ये सब हैं और नहीं भी हैं। प्रभु महलों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं।आप को छोड़कर कोई कर्ता नहीं है, सभी साक्षी हैं। 3476</td></tr>
<tr><td>कै तवम् शॆम्मै⋆ करुमै वॆळुमैयुमाय्⋆
मॆय्पॊय् इळमै⋆ मुदुमै पुदुमै पळमैयुमाय्⋆
शॆय्द तिण् मदिळ् शूळ्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेरन्द पिरान्⋆
पॆय्द कावु कण्डीर्⋆ पॆरुम् देवुडै मूवुलगे॥५॥</td><td>कर्ता के रंग हैं गोरा, लाल, काला एवं श्वेत, सच एवं झूठ, युवापन एवं उम्रदार, नया एवं पुराना। प्रभु दीवारों से सुरक्षित घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं।आपने बागों का लोक बनाकर उसमें सारी अच्छाईयां रखीं। 3477</td></tr>
</table>

मूवुलगङ्गळुमाय्⋆ अल्लनाय् उगप्पाय् मुनिवाय्⋆ पूविल् वाळ् मगळाय्⋆ तव्वैयाय् प्पुगळाय् पळियाय्⋆ तेवर् मेवित्तॊळुम्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेर्न्द पिरान्⋆ पावियेन् मनत्ते⋆ उरैगिन्र् परञ्जुडरे॥६॥	इस संसार की तरह और नहीं भी, शांति एवं क्रोध, कमल वाली किशोरी एवं दरिद्रा किशोरी, प्रशंसा एवं उपहास। तिरू विन्नगर के प्रभु देवों से पूजे जाते हैं। आप दिव्य कमल स्वरूप में हमारे हृदय में रहते हैं। **3478**
परञ्जुडर् उडम्पाय्⋆ अळुक्कु पदित्त उडम्बाय्⋆ करन्दुम् तोन्रियुम् निन्रुम्⋆ कै तवङ्गळ् शैय्युम्⋆ विण्णोर् शिरङ्गळाल् वणङ्गुम्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेर्न्द पिरान्⋆ वरम्गॊळ् पादम् अल्लाल् इल्लै⋆ यावर्क्कुम् वन् शरणे॥७॥	अतिदिव्य एवं गंदा, अब छिपे हुए एवं तब प्रकट, विश्वासी एवं ठग। तिरू विन्नगर के प्रभु देवों से पूजे जाते हैं। आपके चरणारविंद के सिवा हमारा कोई आश्रय नहीं है। **3479**
वन् शरण् शुरर्क्काय्⋆ अशुरर्क्कु वॆम् कूट्रुमाय्⋆ तन् शरण् निळकीळ्⋆ उलगम् वैत्तुम् वैयादुम्⋆ तॆन् शरण् तिशैक्कु⋆ त्तिरुविण्णगर् च्चेर्न्द पिरान्⋆ एन् शरण् एन् कण्णन्⋆ एन्नै आळुडै एन् अप्पने॥८॥	देवों के स्थायी शरण, असुरों की दर्दनाक मृत्यु, सारे जगत को अपने चरण में संरक्षित रखना और नहीं भी, अब छिपे हुए एवं तब प्रकट, विश्वासी एवं ठग। तिरू विन्नगर के प्रभु दक्षिण दिशा के आश्रय मेरे भी आश्रय हैं। हे मेरे पिता, मेरे प्रभु, मेरे कृष्ण, मेरे नाथ ! **3480**
एन् अप्पन् एनक्काय् इगुळाय्⋆ एन्नै प्पॆट्रवळाय्⋆ पॊन्नप्पन् मणियप्पन्⋆ मुत्तप्पन् एन् अप्पनुमाय्⋆ मिन्न प्पॊन् मदिळ् शूळ्⋆ तिरुविण्णगर् च्चेर्न्दवप्पन्⋆ तन्नॊप्पार् इल्लप्पन्⋆ तन्दनन् तन ताळ् निळले॥९॥	मेरे प्रभु एवं पिता, हमारी मां एवं सौतेली मां हैं। सुनहले पिता, मणिवर्ण के पिता, मुक्तामय पिता, मेरे पिता ! आप सुनहले दीवारों से घिरे तिरू विन्नगर में रहते हैं। अद्वितीय प्रभु ! आपने अपने दिव्य चरण की साया प्रदान की। **3481**
निळल् वॆयिल् शिरुमै पॆरुमै⋆ कुरुमै नॆडुमैयुमाय्⋆ शुळल्वन निर्पन⋆ मट्रुमाय् अवै अल्लनुमाय्⋆ मळलै वाय् वण्डु वाळ्⋆ तिरुविण्णगर् मन्नु पिरान्⋆ कळल्गाळ् अन्रि⋆ मट्रोर् कळैगण् इलम् काण्मिन्गाळे॥१०॥	छाया एवं सूर्य प्रकाश, छोटा एवं बड़ा, लंबा एवं लघु, विचरते हुए एवं खड़ा, अन्य वस्तु एवं कुछ भी नहीं। प्रभु प्रिय मधुमक्खी से गुंजायमान तिरू विन्नगर में रहते हैं। आपके चरण ही हमारे संरक्षक हैं। इस सत्य को समझो। **3482**
‡काण्मिन्गाळ् उलगीर् ! एन्रु⋆ कण्मुगप्पे निमिर्न्द⋆ ताळ् इणैयन् तन्नै⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ आणै आयिरत्तु⋆ त्तिरुविण्णगर् प्पत्तुम् वल्लार्⋆ कोणैयिन्रि विण्णोर्क्कु⋆ एन्रुमावर् कुरवर्गळे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद यह दशक उस प्रभु के बारे में है जो हमारी आंखों के सामने अति विशाल रूप धारण कर लिये जबकि आपने एक सुन्दर भिक्षु छोकरे के रूप में आकर कहा था 'देखो बलि'। जो इसे याद कर गा सकेंगे वे देवों के गुरू बन जायेंगे। **3483** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **54 कुरवैयाय्च्चियर् (3484 - 3494)** **कण्णनदु अवतार च्चेयल्गळै प्पेश प्पेट्रमैक्कु क्कळित्तल्**	
कुरवै आयच्चियरोडु कोत्तदुम्⋆ कुन्रम् ऑन्रेन्दियदुम्⋆ उरवु नीर् प्पॉय्गै नागम् कायन्ददुम्⋆ उटपड मट्रुम् पल⋆ अरविल् पळ्ळि प्पिरान् तन्⋆ माय विनैगळैये अलट्रि⋆ इरवुम् नन् पगलुम् तविर्गिलम्⋆ एन्न कुरै एमक्के॥१॥	कृष्ण प्रभु की लीला हम दिन रात गाते रहे हैं ः आपका रास में गोपियों के साथ मिल जाना, पर्वत को उठाना, नाग के फन पर नृत्य करना एवं अनेकानेक इस तरह की लीला। अब हमें कमी किस चीज की है ? **3484**
केय त्तीङ्गुळल् ऊदिट्रुम् निरै मेयत्तदुम्⋆ कॅण्डै ऑण् कण्⋆ वाश प्पूङ्गुळल् पिन्नै तोळ्गळ् मणन्ददुम्⋆ मट्रुम् पल⋆ माय क्कोल प्पिरान् तन्⋆ शॅय्गै निनैन्दु मनम् कुळैन्दु⋆ नेयत्तोडु कळिन्द पोदु⋆ एनक्कॅव्वुलगम् निगरे॥२॥	मेरे कृष्ण मुरली का सुरीला स्वर बजाकर गाय चराते थे। आप सुन्दर जूड़े वाली नप्पिनाय के आलिंगन पाश में बंधे रहे।इन चमत्कारों के साथ अन्य को याद कर हमारा हृदय पिघलता है। मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? **3485**
निगरिल् मल्लरै च्चॅट्रदुम् निरै मेयत्तदुम्⋆ नीळ् नॅडुङ्गै⋆ शिगर मा कळिरट्रदुम्⋆ इवै पोल्वनवुम् पिरवुम्⋆ पुगर् कॊळ् शोदि प्पिरान् तन्⋆ शॅय्गै निनैन्दु पुलम्बि एन्रुम्⋆ नुगर वैगल् वैगप्पॅट्रेन्⋆ एनक्कॅन् इनि नोवदुवे॥३॥	प्रभु ने भारी मल्लयोद्धाओं एवं पर्वत समान मदमत्त हाथी का नाश किया। गायों को वन में चराने की कहानी याद कर अपने दिव्य मणि की चमत्कारिक लीला सुनकर मुझे रूलाई आती है। मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस धरा पर मुझे अब कैसी पीड़ा हो सकती है ? **3486**
नोव आयच्चि उरलोडारक्क⋆ इरङ्गिट्रुम् वञ्ज प्पॅण्णै⋆ शाव प्पालुण्डदुम्⋆ ऊर् शगडम् इर च्चाडियदुम्⋆ देव क्कोल पिरान् तन्⋆ शॅय्गै निनैन्दु मनम् कुळैन्दु⋆ मेव क्कालङ्गळ् कूडिनेन्⋆ एनक्कॅन् इनि वेण्डुवदे॥४॥	ओह ! जब यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी थी तो कैसे आप रोते थे।आपने पूतना के विषैले स्तन का पान कर उसके प्राण चूस लिये। गाड़ी को अपने चरण से ध्वस्त कर दिया।आपको सोचकर मेरा हृदय पिघलता है।मेरा समय बड़े प्रेम से गुजर रहा है। इस धरा पर मुझे अब क्या चाहिये ? **3487**
वेण्डि त्तेवरिरक्क वन्दु पिरन्ददुम्⋆ वीङ्गिरुळ्वाय् पूण्डु⋆ अन्रन्नै पुलम्ब प्पोय्⋆ अङ्गोर् आयक्कुलम् पुक्कदुम्⋆ काण्डल् इन्रि वळर्न्दु⋆ कञ्जनै त्तुञ्ज वञ्जम् शॅय्ददुम्⋆ ईण्डु नान् अलट्र प्पॅट्रेन्⋆ एनक्कॅन्न इगल् उळदे॥५॥	देवों की प्रार्थना पर आप देवकी की संतान बन कर आये। तब उसे रात के अंधेरे में रोते छोड़ आप नंद के घर आ गये। छिपे हुए बढकर आपने अनेकों चमत्कार किये एवं कंस का वध किया। आपकी प्रशस्ति गान करने का हमें सौभाग्य मिला है। कौन इस संसार में मेरा शत्रु होगा ? **3488**

इगल् कॉळ् पुळ्ळै प्पिळन्ददुम्* इमिल् एरुगळ् शॅट्ददुवुम्* उयर् कॉळ् शोलै क्कुरुन्दॉशित्तदुम्* उट्पड मट्रुम् पल* अगल् कॉळ् वैयम् अळन्द मायन्* एन् अप्पन् तन् मायङ्गळे* पगल् इरा प्परव प्पॅट्रेन्* एनक्कॅन्न मन प्परिप्पे॥६॥	बकासुर का चोंच चीरना, सात वृषभों का नाश करना, ऊंचे कुरून्दु वृक्ष को ध्वस्त करना। अन्य चमत्कारों के साथ जब आपने आकर धरा नापा रात दिन हम सौभाग्य से प्रभु के इन विस्मयकारी लीला का गान करते हैं।हमें कोई चिंता नहीं है। **3489**
मन प्परिप्पोडळुक्कु* मानिड शादियिल् तान् पिरन्दु* तनक्कु वेण्डुरु क्कॉण्डु* तान् तन शीट्रत्तिनै मुडिक्कुम्* पुन तुळाय् मुडि मालै मार्बन्* एन् अप्पन् तन् मायङ्गळे* निनैक्कुम् नॅञ्जुडैयेन्* एनक्किनि यार् निगर् नीळ् निलत्ते॥७॥	करूणावश आपने गंदे मर्त्यलोक में अवतार लिया।जो स्वरूप आपको अच्छा लगा उसे धारण कर आपने अपना गुस्सा निकाला। मेरे प्रभु एवं पिता तुलसी फूल का मुकुट पहनते हैं। मेरा हृदय विस्मय से आपको स्मरण करता है। इस संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? **3490**
नीळ् निलत्तॉडु वान् वियप्प* निरै पॅरुम् पोर्गळ् शॅय्दु* वाणन् आयिरम् तोळ् तुणित्तदुम्* उट्पड मट्रुम् पल* माणियाय् निलम् कॉण्ड मायन्* एन् अप्पन् तन् मायङ्गळे* काणुम् नॅञ्जुडैयेन्* एनक्किनि एन्न कलक्कम् उण्डे॥८॥	धरा एवं गगन महान युद्ध को देखकर विस्मित था। आपने तब महान बाणासुर के हजारों भुजाओं को काट डाला। वामन के रूप में तीन कदम चलकर आपने धरा को अधिकार में ले लिया। मेरा हृदय यह सब देख सकता है। अब क्या हमें कष्ट देगा ? **3491**
कलक्क एळ् कडल् एळ्* मलै उलगेळुम् कळिय क्कडाय्* उलक्क तेर्कॉडु शॅन्र मायमुम्* उट्पड मट्रुम् पल* वलक्कै आळि इडक्कै शङ्गम्* इवैयुडै माल् वण्णनै* मलक्कु नावुडैयेर्कु* मारुळदो इम् मण्णिन् मिशैये॥९॥	सात सागर एवं सात ऊंचे पर्वत को पार करने का एवं सात लोकों के अंत तक रथ चलाने का तथा अन्य इसी तरह का शंख चक्रधारी प्रभु का चमत्कार है।जो कोई इन सबों को मुझे सुनायेगा वह क्या हमारा शत्रु हो सकता है ? **3492**
मण्मिशै प्पॅरुम् पारम् नीङ्ग* ओर् बारद मा पॅरुम् पोर् पण्णि* मायङ्गळ् शॅय्दु शेनैयै प्पाळपड* नूट्रिट्टु प्पोय्* विण्मिशै त्तन तामम् पुग* मेविय शोदि तन् ताळ्* नण्णि नान् वणङ्ग प्पॅट्रेन्* एनक्कार् पिरर् नायगरे॥१०॥	विश्व को भार मुक्त करने के लिये आपने घोर युद्ध किया एवं सेनाओं को नष्ट करने का चमत्कार दिखाया। तब आप पयान कर अपने प्रिय आकाशीय आवास में स्थित हो गये। मात्र आपके चरण की पूजा कर हम अद्वितीय नाथ को पा गये हैं। **3493**

‡नायगन् मुळुवेळ् उलगुक्कुमाय्⋆ मुळुवेळ् उलगुम्⋆ तन् वायगम् पुग वैत्तुमिळ्न्दवैयाय्⋆ अवै अल्लनुमाम्⋆ केशवन् अडि इणैमिशै⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ तूय आयिरत्तिप्पत्ताल्⋆ पत्तर् आवर् तुवळ् इन्रिये॥११॥	कुरूगुर शठगोपन के हजार पदों यह दशक केशव प्रभु के चरण की प्रशस्ति है जो सात लोक के स्वामी हैं, तथा इसे उठाया, मापा, वही हो गये और नहीं भी हुए। जो इसे गाकर नाचेंगे वे निर्मल भक्त हो जायेंगे। **3494** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

55 तुवळिल् (3495 - 3505)

तोळि तायरै नोक्कि क्कूरूदल्

नायकी की मां की भूमिका में - 5

तुलैविल्ली मंगलम ः यह स्थान तमिल नाडु में आळवार तिरूनगरी के पास नवतिरूपति में से एक है। यहां दो दिव्य देश आस पास में हैं इसलिये इसे 'इरत्ता तिरूपति' यानी 'युगल तिरूपति' भी कहा जाता है। यहां मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं और देवापिरान देवेश पंकज कहे जाते हैं। पास के दूसरे मंदिर में मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं एवं अरविन्द लोचन कहे जाते हैं।

एक बार सुपर्पा ऋषि पास के हरित क्षेत्र से प्रभावित होकर यज्ञ करने का सोचे। जब जमीन तैयार कर रहे थे तो एक तुला एवं एक धनुष साथ साथ मिला। जैसे ही मुनि ने उसे उठाया तुला नारी हो गयी एवं धनुष पुरूष हो गया जो पूर्व के अपने कर्मवश शाप भोग रहे थे। इसी लिये इस स्थान को तुलै विल्ली मंगलम कहते हैं।

कहते हैं देवापिरान की पूजा मुनि नित्य पास के तालाब से कमल फूल लाकर माला बनाकर करते थे। भगवान प्रसन्न होकर मुनि के साथ तालाब देखने गये और इसके प्राकृतिक सौंदये से मुग्ध होकर बैठ गये।अतः बैठे मुद्रा वाले भगवान अरविन्द लोचन के नाम से जाने गये। यहां कमल फूल से पूजा की प्रधानता दी जाती है। (Refer Ramesh vol. 4, pp 48)

तुवळिल् मा मणि माडम् ओङ्गु* तॊलैविल्लि मङ्गलम् तॊळुम् इवळै* नीर् इनि अन्नै मीर्!* उमक्काशै इल्लै विडुमिनो* तवळ ऒण्शङ्गु शक्करम् एन्रुम्* तामरै त्तडङ्गण् एन्रुम्* कुवळै ऒण् मलर् क्कण्गळ् नीर् मल्गा* निन्रु निन्रु कुमुरुमे॥१॥	सजनी ! इस किशारी को अब अकेले छोड़ दीजिये। इसके लिये तुनलोगों में कोई स्नेह नहीं है।कमल सी इसकी काली आंखें आंसू से भरी हैं तथा रूक रूक कर यह कहती है 'सुन्दर शंख एवं चक्र' 'कमल सी बड़ी आंखें' 'तुलैविल्ली मंगलम के धवल महलें'। **3495**
कुमुरुम् ओशै विळवॊलि* तॊलैविल्लि मङ्गलम् कॊण्डु पुक्कु* अमुद मॆन् मॊळियाळै* नीर् उमक्काशै इन्रि अगट्रिनीर्* तिमिर् कॊण्डाल् ऒत्तु निर्कुम्* मट्रिवळ् देव देव पिरान् एन्रे* निमियुम् वायॊडु कण्गळ् नीर् मल्गा* नॆक्कॊशिन्दु करैयुमे॥२॥	आप इस मृदु भाषिणी प्रिय किशोरी को उत्सव की आवाज से गूंजते तुलैविल्ली मंगलम ले गये एवं इसे विना हृदय का छोड़ दिये।भावग्रस्त की नाई लेटी है तथा इसका होंठ 'देवदेवपिरान' कहता है तथा इसकी आंखे आंसू बहाती हैं। हाय ! यह गिरकर पिघल रही है। **3496**

करै कॉळ पैम् पॉळिल् तण् पणै॰ तॉलैविल्लि मङ्गलम् कॉण्डु पुक्कु॰ उरै कॉळ् इन् मॉळियाळै॰ नीर् उमक्काशै इन्रि अगट्रिनीर्॰ तिरै कॉळ् पौवत्तु च्चेरन्ददुम्॰ तिशै आलम् तावि अळन्ददुम्॰ निरैगळ् मेय्त्तदुमे पिदट्रि॰ नैडुम् कण्णीर् मल्ग निर्कुमे॥३॥	शीतल हरे बागों से भरे तुलैविल्ली मंगलम में इस चहकती चहेती किशोरी को ले जाकर हृदयहीन की तरह आपने छोड़ दिया। अश्रुपूरित नयनों के साथ खड़ी होकर धीरे से चरती गायों, धरा का मापना, एवं जल में शयन करने के बारे में प्रसंगहीन बात बोलती है। **3497**
निर्कुम् नान्मरै वाणर् वाळ्॰ तॉलैविल्लि मङ्गलम् कण्डपिन्॰ अर्कम् ऑन्रुम् अरिवुराळ्॰ मलिन्दाळ् कण्डीर् इवळ् अन्नैमीर्॰ कर्कुम् कल्वियॆल्लाम्॰ करुङ्गडल् वण्णन् कण्ण पिरान् एन्रे॰ ऑर्कम् ऑन्रुम् इलळ् उगन्दुगन्दु॰ उळ् मगिळ्न्दु कुळैयुमे॥४॥	वैदिक ऋषियों से भरे तुलैविल्ली मंगलम में जाकर यह अपना नियंत्रण खो बैठी तथा भावग्रस्त हो गयी। बढ़ते उत्साह से यह पुकारती रहती है 'श्याम वदन प्रभु' तब अति आनंदित होकर अचेत हो जाती है। **3498**
कुळैयुम् वाळ् मुगत्तेळैयै॰ तॉलैविल्लि मङ्गलम् कॉण्डु पुक्कु॰ इळै कॉळ् शोदि च्चेन्दामरै क्कण् पिरान्॰ इरुन्दमै काट्टिनीर्॰ मळै पॆय्दाल् ऑक्कुम् कण्ण नीरिनॊडु॰ अन्रु तॊट्टुम् मैयान्दु॰ इवळ् नुळैयुम् शिन्दैयळ् अन्नैमीर्!॰ तॊळुम् अत्तिशै उट्रु नोक्कियॆ॥५॥	सजनी तुमलोग इस मृदु एवं आभापूर्ण किशोरी को तुलैविल्ली मंगलम ले गयी तथा वहां कमलनयन एवं रत्नों की ज्योतिहरने वाले प्रभु का दर्शन करा दिया। तब से यह इस तरह से ध्यान मग्न रहती है। आंसू की वर्षा के साथ उस दिशा में देखकर सिर झुकाती है। **3499**
नोक्कुम् पक्कम् एल्लाम्॰ करुम्बॊडु शॆन्नॆल् ओङ्गु शॆन्दामरै॰ वाय्क्कुम् तण् पॊरुनल्॰ वडगरै वण् तॊलैविल्लि मङ्गलम्॰ नोक्कुमेल् अत्तिशै अल्लाल्॰ मरु नोक्किलळ् वैगल् नाळ्दॊरुम्॰ वाय्क्कॊळ् वाशगमुम्॰ मणिवण्णन् नाममे इवळ् अन्नैमीर्! ॥६॥	संपन्न तुलैविल्ली मंगलम शीतल पोरूनल के उत्तरी किनारा पर स्थित है जहां चारो ओर बड़े बड़े गन्ना, धान, एवं कमल होते हैं। उस महान दिन के बाद से उसी तरफ देखती हुई रात दिन मणिवर्ण वाले प्रभु के नाम बड़बड़ाती रहती है। **3500**
अन्नैमीर्! अणि मा मयिल्॰ शिरुमान् इवळ् नम्मै क्कैवलिन्दु॰ एन्न वार्त्तैयुम् केट्कुराळ्॰ तॊलैविल्लि मङ्गलम् एन्रल्लाल्॰ मुन्नम् नोट्र विदिगॊल्लो॰ मुगिल् वण्णन् मायम् कॊल्लो॰ अवन् शिन्नमुम् तिरुनाममुम्॰ इवळ् वायनगळ् तिरुन्दवे॥७॥	सजनी ! यह मृगनयनी मोरनी तुमलोगों के हाथ से निकल चुकी है। सिवाय तुलैविल्ली मंगलम के यह कुछ नहीं सुनती। उनके प्रतीक चिह्न तथा नाम इसके होठ पर निरंतर रहते हैं। हाय ! यह क्या इसके पूर्व के कर्म का फल है या प्रभु की मायापूर्ण युक्ति है ? **3501**
तिरुन्दु वेदमुम् वेळ्वियुम्॰ तिरु मा मगळिरुम् ताम्॰ मलि- न्दिरुन्दु वाळ् पॊरुनल्॰ वडगरै वण् तॊलैविल्लि मङ्गलम्॰ करुन् तडम् कण्णि कै तॊळुद॰ अन्नाळ् तॊडङ्गि इन्नाळ्दॊरुम्॰ इरुन्दिरुन्दरविन्द लोशन!॰ एन्रेन्रे नैन्दिरङ्गुमे॥८॥	प्रभु पोरूनल के श्रीसंपन्न उत्तरी किनारा पर स्थित विकासशील तुलैविल्ली मंगलम में वैदिक वाचकों एवं लक्ष्मी समान नारियों के बीच रहते हैं। जिस दिन से मृग समान काली आंख वाली इस लड़की ने उनकी पूजा की है हर दिन शांति से कहती है 'अरविंदलोचन' एवं तब गिरकर रोती है। **3502**

इरङ्गि नाळ्दोरुम्⋆ वाय्वॆरी इयिवळ् कण्ण नीर्गळ् अलमर⋆ मरङ्गळुम् इरङ्गु वगै⋆ मणिवण्णवो ! एन्रु कूवुमाल्⋆ तुरङ्गम् वाय् पिळन्दान् उरै⋆ तॊलैविल्लि मङ्गलम् एन्रु⋆ तन् करङ्गळ् कूप्पि तॊळुम्⋆ अव्वूर्त्तिरुनामम् कट्रदन् पिन्नैये॥९॥	जिस दिन से इस लड़की ने नगर का नाम जाना है रोकर अप्रासंगिक बात बोलती है 'हे मणिवण्णा'।इस तरह से चीखती है कि पेड़ भी पिघल जाये। बोलती है 'घोड़ा का जबड़ा चीरने वाले प्रभु तुलैविल्ली मंगलम में रहते हैं' एवं शांतिपूर्वक चुपचाप करबद्ध हो प्रार्थना रत हो जाती है। **3503**
पिन्नैगॊल् निल मा मगळ्कॊल्⋆ तिरुमगळ्कॊल् पिरन्दिट्टाळ्⋆ एन्न मायम् कॊलो⋆ इवळ् नॆडुमाल् एन्रे निन्रु कूवुमाल्⋆ मुन्नि वन्दवन् निन्रिरुन्दुरैयुम्⋆ तॊलैविल्लि मङ्गलम् शॆन्नियाल् वणङ्गुम्⋆ अव्वूर्त्तिरुनामम्⋆ केट्पदु शिन्दैये॥१०।	इस लड़की ने क्या ही चमत्कारिक जन्म पाया है ! पुकारती है 'प्रभु आप स्थायी रूप से तुलैविल्ली मंगलम में खड़े एवं बैठे मुद्रा में हैं।' अपना सिर झुका लेती है तथा केवल इस नगर का नाम सुनना चाहती है। क्या यह किशोरी नप्पिनाय है या भूदेवी है या लक्ष्मी है ? **3504**
शिन्दैयाल्लुम् शॊल्लाल्लुम् शॆय्गैयिनाल्लुम्⋆ देव पिरानैये⋆ तन्दै ताय् एन्रडैन्द⋆ वण् कुरुगूरवर् शडगोपन् शॊल्⋆ मुन्दै आयिरत्तुळ् इवै⋆ तॊलैविल्लि मङ्गलत्तै च्चॊन्न⋆ शॆन् तमिळ् पत्तुम् वल्लार्⋆ अडिमै शॆय्वार् तिरुमाल्लुक्के॥११॥	तुलैविल्ली मंगलम के प्रभु के बारे में शुद्ध तमिल हजार पद का यह दशक कुरूगुर शडगोपन के हैं जो विचार वचन एवं कर्म से प्रभु को अपनी मां एवं पिता के रूप में पा चुके हैं। जो इसे गायेंगे वे प्रभु की सेवा के अधिकारी होंगे। **3505** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

56 मालुक्कु (3506 - 3516)

तलैमगळै क्कुऱित्तु त्ताय् इरङ्गुदल्

नायकी की मां की भूमिका में - 6

मालुक्कु⋆ वैयम् अळन्द मणाळर्कु⋆ नील क्करु निऱ⋆ मेग नियायर्कु⋆ कोल च्चॅन्दामरै⋆ क्कण्णर्कु⋆ एन् कॉङ्गलरेल क्कुळलि⋆ इळन्ददु शङ्गे॥१॥	मेघ से श्याम दूल्हे प्रभु को जूड़े वाली हमारी गोरी बेटी ने अपना कंगना गंवा दी है, आपके सुन्दर अरूणाभ कमल के समान नयन हैं एवं आपने वामन रूप में धरा को मापा है। **3506**
शङ्गु विल् वाळ् तण्डु⋆ शक्कर क्कैयर्कु⋆ शॅङ्गनि वाय्⋆ च्चॅय्य तामरै कण्णर्कु⋆ कॉङ्गलर् तण्णन् तुळाय्⋆ मुडियानुक्कु⋆ एन् मङ्गै इळन्ददु⋆ मामैनिऱमे॥२॥	शंख चक्र गदा खड्ग धुनष धारी प्रभु को हमारी सुन्दर बेटी ने अपना गाल का गुलाबी रंग गंवा दी है, आपके सुन्दर अरूणाभ कमल के समान नयन हैं एवं मूंगा के समान होंठ हैं तथा आप अपने मुकुट पर मधु टपकते तुलसी फूल धारण करते हैं।**3507**
निऱम् करियानुक्कु⋆ नीडुलगुण्ड⋆ तिऱम् किळर् वाय्⋆ च्चिऱु क्कळ्ळन् कऱङ्गिय शक्कर⋆ क्कैयवनुक्कु⋆ एन् पिऱङ्गिरुम् कून्दल्⋆ इळन्ददु पीडे॥३।	हाथ में घूमते चक्र धारण करने वाले एवं छोटे मुंह से विश्व को निगलने वाले युक्तिविशारद श्याम प्रभु को जूड़े वाली हमारी बेटी ने अपनी मर्यादा गंवा दी है। **3508**
पीडुडै नान्मुगनै⋆ प्पडैत्तानुक्कु⋆ माडुडै वैयम् अळन्द⋆ मणाळर्कु⋆ नाडुडै मन्नरक्कु⋆ त्तूदु शॅल् नम्बिक्कु⋆ एन् पाडुडै अल्गुल्⋆ इळन्ददु पण्बे॥४॥	शक्तिशाली ब्रह्मा को बनाने वाले तथा धरा को मापने वाले अविवाहित प्रभु एवं शासक राजा के पास दूत बनकर जानेवाले को चौड़ी अधोभाग वाली हमारी बेटी ने अपने आचार व्यवहार गंवा दिये हैं।**3509**
पण्बुडै वेदम्⋆ पयन्द परनुक्कु⋆ मण् पुरै वैयम् इडन्द⋆ वरागर्कु⋆ तॅण् पुनल् पळ्ळि⋆ एम् देव पिरानुक्कु⋆ एन् कण्बुनै कोदै⋆ इळन्ददु कऱ्पे॥५॥	सुन्दर वेद प्रदान करने वाले एवं वराह के रूप में धरा को उठाने वाले तथा शुद्ध जल पर सोने वाले प्रभु को सुन्दर जूड़े वाली हमारी बेटी ने अपना मन गंवा दिया है ।**3510**
कर्पग क्कावन⋆ नर्पल तोळर्कु⋆ पॉन् शुडर् क्कुन्ऱन्न⋆ पून्दण् मुडियर्कु⋆ नर्पल तामरै⋆ नाण्मलर् क्कैयर्कु⋆ एन् विल् पुरुवक्कॉडि⋆ तोट्रदु मॅय्ये॥६॥	कल्पवृक्ष की तरह भुजाओं वाले एवं तेजोमय स्वर्ण के सुन्दर मुकुट वाले तथा नूतन प्रस्फुटित कमल समान हाथ वाले प्रभु को धनुष के समान भौंहे वाली हमारी सुकुमारी बेटी ने अपना तन गंवा दिया है ।**3511**

मॆय्यमर् पल् कलन्⋆ नन्गणिन्दानुक्कु⋆ पैयरविन् अणै⋆ प्पळ्ळियिनानुक्कु⋆ कैयॊडु काल् शॆय्य⋆ कण्ण पिरानुक्कु⋆ एन् तैयल् इळन्ददु⋆ तन्नुडै च्चाये॥७॥	अनेकों सुन्दर गहना वाले तथा फनधारी शय्या पर शयन करने वाले एवं अरूणाभ हाथ और चरण वाले कृष्ण प्रभु को हमारी गोरी सुन्दर बेटी ने अपना गहना गंवा दिया है । **3512**
शाय क्कुरुन्दम् ऑशित्त⋆ तमियर्कु⋆ माय च्चगडम् उदैत्त⋆ मणाळर्कु⋆ पेयै प्पिणम्पड⋆ प्पाल् उण् पिरानुक्कु⋆ एन् वाश क्कुळलि⋆ इळन्ददु माण्बे॥८॥	अकेले कुरून्दु पेड़ को उखाड़ने वाले एवं भरी गाड़ी को ध्वस्त करने वाले तथा शिशु रूप में राक्षसी का दूध पीकर उसके प्राण लेने वाले दूल्हा प्रभु को सुगंधित लटों वाली हमारी बेटी ने अपना सौंदर्य गंवा दिया है । **3513**
माण्बमै कोलत्तु⋆ एम् माय क्कुरळर्कु⋆ शेण् शुडर् क्कुन्रन्न⋆ शॆञ्जुडर् मूर्त्तिक्कु⋆ काण् पॆरुम् तोट्टत्तु⋆ एम् कागुत्त नम्बिक्कु⋆ एन् पूण्बुनै मॆन्मुलै⋆ तोट्रदु पॊर्पे॥९॥	सुन्दर दूलहा एवं काकुत्स्थ कुल भूषण तथा श्याम पर्वत की तरह ऊंचे प्रभु को आभूषित कोमल उरोज वाली हमारी बेटी ने अपना तेज गंवा दिया है । **3514**
पॊर्पमै नीळ् मुडि⋆ प्पून्दण् तुळायर्कु⋆ मर्पॊरु तोळ् उडै⋆ माय प्पिरानुक्कु⋆ निर्पन पल्लुरुवाय्⋆ निर्कु मायर्कु⋆ एन् कर्पुडैयाट्टि⋆ इळन्ददु कट्टे॥१०॥	सभी वस्तुओं में स्थित एवं मल्ल योद्धाओं को पराभव देने वाले चमत्कारी भुजाओं वाले ऊंचे मुकुट पर प्रस्फुटित तुलसी धारण किये प्रभु को हमारी मेधावी तीक्ष्ण बुद्धि की बेटी ने अपना सबकुछ गंवा दिया है । **3515**
कट्टॆळिल् शोलै⋆ नल् वेङ्गड वाणनै⋆ कट्टॆळिल् तॆन् कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् शॊल्⋆ कट्टॆळिल् आयिरत्तु⋆ इप्पत्तुम् वल्लवर्⋆ कट्टॆळिल् वानवर्⋆ पोगम् उण्बारे॥११॥	सुन्दर तेजोमय वेंकटम के प्रभु की प्रशस्ति में सुन्दर तेजोमय कुरूगुर के शडगोपन के सुन्दर तेजोमय हजार पद का यह दशक सुन्दर तेजोमय स्वर्गिक आनंद देता है। **3516** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

57 उण्णुज्जोरू (3517 - 3527)

तलैवनदु नगरनोक्कि च्चेन्र् मगळै क्कुरित्तु ताय् इरङ्गुदल्

नायकी की मां की भूमिका में - 7

तिरूक्कोलूर ः यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास नव तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपणी के दक्षिण में है। यह मधुराकवि आळवार का अवतार स्थल है। यहां भगवान भुजंग शयन मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। आपको 'वैयत्तामानिधि' पेरूमल भी कहते हैं। कहते हैं पार्वती के शाप से कुबेर नवनिधि गंवाकर कुरूप एवं एक आंख वाले हो गये। कुबेर को छोड़कर शापवस नवनिधि धरा पर आ गये एवं पेरूमाल से संरक्षण पाये। जब कुबेर आकर यहां तपस्या किये तो भगवान प्रसन्न होकर निधि का कुछ अंश ही उनको वापस लौटाये एवं शेष स्वयं रखे। इसी लिये भगवान यहां तौलने वाले साधन के साथ सोये हैं एवं वैयत्तमानिधि कहे जाते हैं।

रामानुज स्वामी एक बार दर्शन के लिये यहां पधारे तो स्वागत में एक महिला भी नगर की सीमा पर आयी। साष्टांग करने पर रामानुज स्वामी ने नम्माळवार के तिरूवायमोळी के 6।7।1 का उदाहरण देकर बोला कि सब कोई तिरूक्कोलूर जाता है और आप वहां से बाहर आयीं हैं। उत्तर में उस महिला ने बड़ी गूढ़ बात कही। दोनों के बीच बातचीत लंबी चली जो 80 प्रश्नों तथा उसके उत्तर के रूप में 'तिरूक्कोलूर पेन पिल्ले रहस्यम' के नाम से संकलित है।

(Refer Ramesh vol. 4, pp 59)

उण्णुम् शोरु परुगुनीर्⋆ तिन्नुम् वॅट्रिलैयुम् एल्लाम् कण्णन्⋆ एम् पॅरुमान् एन्रॅन्रे⋆ कण्गळ् नीर् मल्गि⋆ मण्णिनुळ् अवन् शीर्⋆ वळम् मिक्कवन् ऊर् विनवि⋆ तिण्णम् एन् इळमान् पुगुम् ऊर्⋆ तिरुक्कोळूरे॥१॥	अश्रुपूरित आंखो से हमारी सुकुमारी मृगी बतायेगी 'हमारा भोजन तथा पेय एवं जो पान हम चबाते हैं सभी कृष्ण हैं।' धरा पर प्रभु के संपन्न यशस्वी नगर के बारे में पता करने के कम में निश्चित रूप से इसने तिरूक्कोलूर का मार्ग जान लिया है। **3517**
ऊरुम् नाडुम् उलगुम्⋆ तन्नैप्पोल् अवनुडैय⋆ पेरुम् तार्गळुमे पिदट्⋆ क्कर्पु वान् इडरि⋆ शेरुनल् वळम् शेर्⋆ पळन त्तिरुक्कोळूर्क्के⋆ पोरुम् कॉल् उरैयीर्⋆ कॉडियेन् कॉडि पूवैगळे॥२॥	अपनी तरह नगर एवं देश को प्रभु का नाम एवं प्रतीक चिह्न के बारे में बोलते रहने के लिये इसने अपना मर्यादा खो दिया है। उपजाऊ खेतों वाले तिरूक्कोलूर में हमारी लाड़ली अवश्य पहुंच गयी होगी। हाय ! अभागिनी में ! हे मैना ! बताओ, क्या वह वापस आयेगी ? **3518**
पूवै पैङ्गिळिगळ्⋆ पन्दु तूदैपूम् पुट्टिल्कळ्⋆ यावैयुम् तिरुमाल्⋆ तिरुनामङ्गळे कूवियॅळुम्⋆ एन् पावै पोयिनि⋆ त्तण् पळन त्तिरुक्कोळूर्क्के⋆ कोवैवाय् तुडिप्प⋆ मळै क्कण्णॊडॆन् शॅय्युङ्गॊलो॥३॥	इसके मैना, तोता, गेंद, खिलौना, फूल का गमला, सभी प्रभु ही थे तथा सब को प्रभु के नाम से पुकारती थी। हाय ! मेरी गुड़िया अब उपजाऊ तिरूक्कोलूर में है। बरसती आंखें एवं फड़कते होंठ के साथ क्या करती होगी ? **3519**

कॉल्लै एन्बरगॉलो⋆ कुणम् मिक्कनळ् एन्बरगॉलो⋆ शिल्लै वाय् प्पॆण्डुगळ्⋆ अयल् शेरियुळ्ळारुम् एल्ले⋆ शॆल्वम् मल्गि अवन् किडन्द⋆ तिरुक्कोळूरक्के⋆ मॆल्लिडै नुडङ्ग⋆ इळमान् शॆल्ल मेविनळे॥ ४ ॥	अब क्या होगा ? पड़ोस की बातें क्या इसे मूर्खता की संज्ञा देंगी या ऊंचा कर्तव्य मानेगी ? हाय ! मेरी मृगी अपनी कमर हिलाते तिरूक्कोलूर जाने को निश्चित कर चुकी है जहां प्रभु अपार संपति के साथ रहते हैं। **3520**
मेवि नैन्दु नैन्दु विळैयाडलुऱाळ्⋆ एन् शिऱु त्तेवि पोय्⋆ इनि त्तन् तिरुमाल्⋆ तिरुक्कोळूरिल्⋆ पूवियल् पॊळिलुम्⋆ तडमुम् अवन् कोयिलुम् कण्डु⋆ आवियुळ् कुळिर⋆ एङ्ङने उगक्कुङ्गॊल् इन्ऱे॥ ५ ॥	मेरी छोटी देवी अपने खिलौनों को त्याग कर दिनानुदिन क्षीण होती गयी। अब अपने प्रभु के साथ तिरूक्कोलूर के मंदिर में होगी जहां चारो तरफ फूल के बाग एवं जल सरोवर वर्तमान हैं। आज पता नही वह कितना प्रसन्न होगी ? **3521**
इन्ऱॆनक्कुदवादगन्ऱ⋆ इळमान् इनिप्पोय्⋆ तॆन् दिशै त्तिलदम् अनैय⋆ तिरुक्कोळूरक्के शॆन्ऱु⋆ तन् तिरुमाल् तिरुक्कण्णुम्⋆ शॆव्वायुम् कण्डु⋆ निन्ऱु निन्ऱु नैयुम्⋆ नॆडुम् कण्गळ् पनि मल्गवे॥ ६ ॥	मेरी छोटी मृगी अब हमारे किसी काम की नहीं है। हमें छोड़कर वह तिरूक्कोलूर चली गयी है जहां प्रभु दक्षिण के तिलक के रूप में खड़े हैं। क्या प्रभु की अरूणाभ नयन एवं होंठ के दर्शन की प्रतीक्षा में अपनी आंखों में आंसू भरे अचेत खड़ी होगी ? **3522**
मल्गु नीर् कण्णोडु⋆ मैयल् उट्ऱ मनत्तनळाय्⋆ अल्लुनन् पगलुम्⋆ नॆडुमाल् एन्ऱळैत्तिनि प्पोय्⋆ शॆल्वम् मल्गि अवन् किडन्द⋆ तिरुक्कोळूरक्के⋆ ऑल्गि ऑल्गि नडन्दु⋆ एङ्ङने पुगुङ्गॊल् ओशिन्दे॥ ७ ॥	अश्रु बहते नेत्रों एवं चाह भरे हृदय से रात दिन वह बोलेगी 'मूल प्रभु'। अब वह तिरूक्कोलूर चली गयी है जहां प्रभु संपन्नता के बीच रहते हैं। हाय ! अपने लड़खड़ाते कदम एवं क्षीण वदन से कैसे वह वहां पहुंची होगी ? **3523**
ऑशिन्द नुण्णिडै मेल्⋆ कैयै वैत्तु नॊन्दु नॊन्दु⋆ कशिन्द नॆञ्जिनळाय्⋆ क्कण्ण नीर् तुळुम्ब च्चॆल्लुङ्गॊल्⋆ ऑशिन्द ऑण् मलराळ्⋆ कॊळुनन् तिरुक्कोळूरक्के⋆ कशिन्द नॆञ्जिनळाय्⋆ एम्मै नीत्त एम् कारिगैये॥ ८ ॥	कमर पर हाथ रखे, कष्ट से अपने कदमों को खींचते हुए, क्या वह उबलते हृदय तथा जलती आंखों के साथ कमलनिवासिनी लक्ष्मी के साथ रहने वाले तिरूक्कोलूर के प्रभु के पास गयी होगी ? हाय ! हमारी बेटी ने अपने प्रेम के कारण हमारा त्याग कर दिया है। **3524**
कारियम् नल्लनगळ्⋆ अवै काणिल् एन् कण्णनुक्कॆन्ऱु⋆ ईरियाय् इरुप्पाळ् इदॆल्लाम्⋆ किडक्क इनिप्पोय्⋆ शेरि पल् पळि तूयिरैप्प⋆ त्तिरुक्कोळूरक्के⋆ नेरिळै नडन्दाळ्⋆ एम्मै ऑन्ऱुम् निनैत्तिलळे॥ ९ ॥	जितनी अच्छी वस्तुयें होंगी वह अपने कृष्ण के लिये रखती थी। सब को पीछे छोड़कर सभी लोकापवाद को सुनते हुए वह तिरूक्कोलूर चली गयी है। हाय ! हम लोगों के लिये उसे कोई चिंता नहीं है। **3525**

निनैक्किल्लेन् देय्वङ्गाळ्⋆ नॆडुङ्गण् इळमान् इनिप्पोय्⋆ अनैत्तुलगुम् उडैय⋆ अरविन्द लोचननै⋆ तिनैत्तनैयुम् विडाळ्⋆ अवन् शेर् तिरुक्कोळूरक्के⋆ मनैक्कु वान् पळियुम् निनैयाळ्⋆ शॆल्ल वैत्तनळे॥१०॥	हे देवगन ! मैं समझ नहीं पाती कि कैसे हमारी मृगी सब कुछ छोड़कर स्वयं अकेली तिरूक्कोलूर चली गयी है। एक क्षण के लिये भी कभी वह अपने 'अरविंदलोचन' को नहीं छोड़ेगी। हाय ! उसने कभी नहीं सोचा कि कुल पर कितना धब्बा लगा है ? **3526**
‡वैत्त मा निदियाम्⋆ मदुशूदनैये अलट्रि⋆ कॊत्तलर् पॊळिल् शूळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ पत्तु नूट्रुळ् इप्पत्तु⋆ अवन् शेर् तिरुक्कोळूरक्के⋆ शित्तम् वैत्तुरैप्पार्⋆ तिगळ् पॊन् उलगाळ्वारे॥११।	तिरूक्कोलूर के प्रभु वैत्तामानिधि एवं मधुसूदन की प्रशस्ति में बाग वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक उनलोगों को दिव्य धरा का शासनाधिकार प्रदान करेगा जो इसे याद कर लेंगे। **3527** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

58 पोन्नुलगु (3528 - 3538)

तिरूनाडु मुदलियवट्रिल् तलैमगळ् परवैगळे तूदुविडल्

(नायकी भाव में)

पॊन्नुलगाळीरो⋆ पुवनि मुळुदाळीरो⋆ नन्नल प्पुळ्ळिनङ्गाळ् !⋆ विनैयाट्टियेन् नान् इरन्देन्⋆ मुन्नुलगङ्गळ् एल्लाम् पडैत्त⋆ मुगिल्वण्णन् कण्णन्⋆ एन् नलम् कॊण्ड पिरान् तनक्कु⋆ एन् निलैमै उरैत्ते॥१॥	एकत्रित श्रेय पक्षीगन ! तुम लोग सुनहले धरती एवं स्वर्ग पर राज्य करो। अभागा प्रेमी कृष्ण तुम्हें बुलाते हैं जिन्होंने विश्व का निर्माण किया एवं मेरी कुशलता चुरा ली है।जाओ एवं मेरी दयनीय स्थिति के बारे में बताओ। **3528**
मैयमर् वाळ् नॆडुङ्गण्⋆ मङ्गैमार् मुन्बॆन् कैयिरुन्दु⋆ नॆय्यमर् इन्नडिशिल्⋆ निच्चल् पालोडु मेवीरो⋆ कैयमर् शक्करत्तु⋆ एन् कनिवाय् पॆरुमानै क्कण्डु⋆ मॆय्यमर् कादल् शॊल्लि⋆ क्किळिगाळ् ! विरैन्दोडि वन्दे॥२॥	हमारे तोतागन ! इन मीननयनी के समक्ष मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि अपने हाथ से मक्खन मिश्रित खीर तुम्हें खिलाऊंगी। विनती है, वैर समान होंठ वाले चक्रधारी प्रभु को खोजो।उन्हें हमारे प्रेम के बारे में बताकर शीघ्र आ जाओ। **3529**
ओडिवन्दॆन् कुळल्मेल्⋆ ऒळि मा मलर् ऊदीरो⋆ कूडिय वण्डिनङ्गाळ् !⋆ कुरुनाडुडै ऐवर्गाय्⋆ आडिय मा नॆडुम् तेर्प्पडै⋆ नीर्ऎळ शॆट्ट पिरान्⋆ शूडिय तण् तुळवम् उण्ड⋆ तू मदु वाय्गाळ् कॊण्डे॥३॥	हे समूह प्रेमी मधुमक्खी गन ! जाओ और प्रभु द्वारा धारण किये तुलसी फूल से मधु का सेवन करो। उन्होंने पांडव के लिये महान सेना के विरूद्ध युद्ध में रथ चलाया। शीघ्र लौटकर हमारे जूड़े के फूल पर उनका सुगंध विखेरो। **3530**
तू मदु वाय्गाळ् कॊण्डुवन्दु⋆ एन् मुल्लैगळ्मेल् तुम्बिगाळ्⋆ पू मदुवुण्ण च्चॆल्लिल्⋆ विनैयेनै प्पॊय्ज्ञॆय्दगन्र्⋆ मा मदुवार् तण्डुळाय्मुडि⋆ वानवर् कोनै क्कण्डु⋆ याम् इदुवो तक्कवार्ऎन्नवेण्डुम्⋆ कण्डीर् नुङ्गट्के॥४॥	हे भौंरा गन ! अगर तुम हमारे मुल्लै फूल का अमृत पीना चाहते हो तो प्रभु को खोजो जिन्होंने हमारे साथ छल कर हमारा त्याग कर दिया। वे अपने मुकुट पर सुगंधित तुलसी धारण करते हैं। उन्हें बताओ कि प्रेमी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता। **3531**
नुङ्गट्कु यान् उरैक्केन् वम्मिन्⋆ यान् वळर्त्त किळिगाळ्⋆ वॆङ्गण् पुळ्ळूर्न्दु वन्दु⋆ विनैयेनै नॆञ्जम् कवर्न्द⋆ शॆङ्गण् करुमुगिलै⋆ च्चॆय्य वाय् च्चॆळुङ्गर्पगत्तै⋆ एङ्गु च्चॆन्रागिलुम् कण्डु⋆ इदुवो तक्कवार्ऎन्मिने॥५॥	हे तोतागन ! मैंने तेरा पालन पोसन किया है।हम तुम्हें कुछ सीख देते हैं। प्रभु गरूड़ की सवारी से आये और हमारे धूर्त हृदय को चुरा ले गये। उनकी आंखें एवं होठ लाल हैं, श्याम वर्ण के हैं तथा वे कल्पवृक्ष की तरह दिखते हैं। जाकर प्रभु को जहां कहीं हों खोजो एवं उन्हें बताओ 'यही उचित मार्ग है'। **3532**

<table>
<tr><td>एऩ् मिऩ्ऩु नूल् मार्वऩ्⋆ एऩ् करुम् पॆरुमाऩ् एऩ् कण्णऩ्⋆
तऩ् मऩ्ऩु नीळ् कळल्मेल्⋆ तण्डुळाय् नमक्कऩ्ऱि नल्गाऩ्⋆
कऩ्मिऩ्गाळ् एऩ्ऱुम्मै याऩ्⋆ कर्पियावैत्त माट्रम् शॊल्लि⋆
शॆऩ्मिऩ्गाळ् तीविऩैयेऩ्⋆ वळर्त्त शिऱु पूवैगळे॥६॥</td><td>हे छोटी मैना ! इसी धूर्त ने तेरा पालन पोसन किया है।हमारे तेजोमय वक्षस्थल वाले श्याम कृष्ण अपने दिव्य चरणारविंद की तुलसी से तुम्हें वंचित नहीं रखेंगे।हमने जो सिखाया उसे रास्ते भर दुहराते जाओ एवं जाकर उनसे कहो। 3533</td></tr>
<tr><td>पूवैगळ् पोल् निऱत्तऩ्⋆ पुण्डरीकङ्गळ् पोलुम् कण्णऩ्⋆
यावैयुम् यावरुमाय्⋆ निऩ्ऱ मायऩ् एऩ्ऩाळि पिराऩ्⋆
मावै वल् वाय् पिळन्द⋆ मदुशूदर्कॆऩ् माट्रम् शॊल्लि⋆
पावैगळ् ! तीर्क्किट्रिरे⋆ विऩैयाट्टियेऩ् पाशरवे॥७॥</td><td>हमारे प्रिय खिलौने ! घोड़े का जबड़ा फाड़ने वाले मधुसूदन प्रभु के पास क्या तू नहीं जाओगे औ मेरा संवाद देकर हमारी दयनीय स्थिति का अंत करोगे ? मेरे प्रभु पुवै फूल की तरह श्याम हैं, इनकी आंखें कमल की पंखुड़ी जैसी हैं एवं ये चक्रधारी प्रभु सबमें सबजगह स्थित हैं। 3534</td></tr>
<tr><td>पाशर्वॆय्दि इऩ्ऩे⋆ विऩैयेऩ् एऩै ऊळि नैवेऩ्⋆
आशऱु तूवि वॆळ्ळै क्कुरुगे !⋆ अरुळ् शॆय्यॊरुनाळ्⋆
माशऱु नील च्चुडर् मुडि⋆ वाऩवर् कोऩै क्कण्डु⋆
एशऱुम् नुम्मै अल्लाल्⋆ मऱुनोक्किलळ् पेर्त्तुमट्रे॥८॥</td><td>श्वेत पंख वाले पक्षी ! विनती है, मेरी सहायता करो। अपने प्रेम से वंचित होकर कितने युगों तक मैं इस तरह से पीड़ित रहूंगी ? जाकर सावधानीरहित निर्मल वर्ण के तेजोमय मुकुट वाले प्रभु का दर्शन कर बताओ 'यह किशोरी आपके सिवा किसी का दर्शन नहीं करती'। 3535</td></tr>
<tr><td>पेर्त्तु मट्रोर् कळैगण्⋆ विऩैयाट्टियेऩ् नाऩॊऩ्ऱिलेऩ्⋆
नीर् त्तिरैमेल् उलवि⋆ इरै तेरुम् पुदाविऩङ्गाळ्⋆
कार् त्तिरळ् मा मुगिल् पोल् कण्णऩ्⋆ विण्णवर् कोऩै क्कण्डु⋆
वार्त्तैगळ् कॊण्डरुळि उरैयीर्⋆ वैगल् वन्दिरुन्दे॥९॥</td><td>जल में कीड़े पकड़ती बत्तकी पक्षी का समूह ! अभागिन मैं, उनके सिवा मेरा कोई संरक्षक नहीं है। जाकर वर्षा के मेघ के समान श्याम कृष्ण तथा स्वर्गिकों के देव से मिलो। आकर शीघ्र उनकी बातों को ज्यों का त्यों मुझे बताओ। 3536</td></tr>
<tr><td>वन्दिरुन्दुम्मुडैय⋆ मणि च्चेवलुम् नीरुम् एल्लाम्⋆
अन्दरम् ऒऩ्ऱुम् इऩ्ऱि⋆ अलर्मेल् अशैयुम् अऩ्ऩङ्गाळ्⋆
एऩ् तिरु मार्वर्कॆऩ्ऩै⋆ इऩ्ऩावारिवळ् काण्मिऩ् एऩ्ऱु⋆
मन्दिरत्तॊऩ्ऱुणर्त्ति उरैयीर्⋆ मऱु माट्रङ्गळे॥१०॥</td><td>जल के कमल में क्रीड़ा करते सुन्दर हंस ! तू अपने धवल प्रिया तथा सभी परिवार के साथ जाकर वक्षवस्थल पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु को उनके गर्भगृह में जाकर दर्शन कर उन्हें बताओ 'यह किशोरी ऐसी… ऐसी है'। वापस आकर वे क्या बोले मुझे बताओ। 3537</td></tr>
<tr><td>‡माट्रङ्गळ् आयन्दु कॊण्डु⋆ मदुशूद पिराऩ् अडिमेल्⋆
नाट्रङ्गॊळ् पूम् पॊळिल् शूळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपऩ् शॊऩ्ऩ⋆
तोट्रङ्गळ् आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् ऒरु पत्तुम् वल्लार्⋆
ऊट्रिऩ्गाण् नुण् मणल् पोल्⋆ उरुगानिर्पर् नीराये॥११॥</td><td>सुगंधित बागों के कुरूगुर के शडगोपन को आत्मसाक्षात्कार से प्राप्त होने वाले मधुसूदन के चरणारविंद पर समर्पित ये अतिप्रिय शब्दों से विरचित हजार गीतों का यह दशक हृदय को जल में बालू की तरह द्रवित करता है। 3538

नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्</td></tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः **59 नीराय् निलनाय् (3539 - 3549)** **केट्टोर् नेञ्जम् नीराय् उरूगम वण्णम् आळ्वार एम्पेरूमानै क्कूप्पिडुदल्**	
नीराय् निलनाय्⋆ तीयाय् क्कालाय् नेडुवानाय्⋆ शीरार् शुडर्कळ् इरण्डाय्⋆ च्चिवनाय् अयन् आनाय्⋆ कूरार् आळि वेण् शङ्गेन्दि⋆ क्कॊडियेन्वाल् वाराय्⋆ ऒरुनाळ् मण्णुम् विण्णुम् मगिळवे॥१॥	प्रभु ! आप ज्योतिपुंज, शिव, ब्रह्मा, धरा, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश बन गये। एक दिन इस धूर्त के पास शंख चक्र हाथ में लिये आप नहीं आयेंगे जिससे कि स्वर्ग एवं धरा पर खुशी में उत्सव मनाया जाये ? **3539**
मण्णुम् विण्णुम् मगिळ⋆ क्कुरळाय् वलम् काट्टि⋆ मण्णुम् विण्णुम् कॊण्ड⋆ माय अम्माने⋆ नण्णि उनै नान्⋆ कण्डुगन्दु कूत्ताड⋆ नण्णि ऒरुनाळ्⋆ ञालत्तूडे नडवाये॥२॥	विस्मयकारी प्रभु ! आपने धरा एवं आकाश पर अधिकार कर लिया। वामन स्वरूप में आपने पृथ्वी पर अपनी शक्ति दिखाई। विनती है, एक दिन पुनः इस पृथ्वी पर कदमों से चलिये। आपको छूने एवं आपके दर्शन लाभ से हम आनंद में नाचेंगे। **3540**
ञालत्तूडे नडन्दुम् निन्ऱुम्⋆ किडन्दिरुन्दुम्⋆ शाल प्पल नाळ्⋆ उगन्दोऱुयिर्गळ् काप्पाने⋆ कोल त्तिरुमा मगळोडु⋆ उन्नै क्कूडादे⋆ शाल प्पल नाळ्⋆ अडियेन् इन्नम् तळर्वेनो॥३॥	प्रभु ! हर युग में सबों की आपने रक्षा की है। हम आपको चलते, खड़े, बैठे एवं शयन करते देखते हैं। कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ प्रभु कितने दिन हम विछुड़कर रहेंगे ? **3541**
तळर्न्दुम् मुरिन्दुम्⋆ शगड अशुरर् उडल् वेरा⋆ पिळन्दु वीय⋆ त्तिरु क्काल् आण्ड पेरुमाने⋆ किळर्न्दु पिरमन् शिवन्⋆ इन्दिरन् विण्णवर् शूळ⋆ विळङ्ग ऒरुनाळ्⋆ काण वाराय् विण्मीदे॥४॥	आपने असुरों को ऐंठकर कूचकर उनका नाश किया। अपने चरण से दुष्ट गाड़ी को ध्वस्त किया। कम से कम एक दिन शिव ब्रह्मा इन्द्र एवं सभी देवों से घिरकर आकाश में प्रकट होइये। **3542**
विण्मीदिरुप्पाय् ! मलैमेल् निर्पाय् !⋆ कडल् शेर्प्पाय्⋆ मण्मीदुळल्वाय् !⋆ इवट्रुळ् एङ्गुम् मरैन्दुरैवाय्⋆ एण् मीदियन्र् पुरवण्डत्ताय् !⋆ एनदावि⋆ उळ् मीदाडि⋆ उरुक्काट्टादे ऒळिप्पायो॥५॥	प्रभु ! आप आकाश में बैठते हैं, पर्वत पर खड़ा होते हैं, जल में शयन करते हैं, एवं धरती पर चलते हैं। छिपे हुए आप सब में स्थित हैं। प्रभु ! अनेकों अनगिनत लोकों में भी स्थित हैं। हममें मिले हुए क्या हमसे छिपे रहेंगे ? **3543**

पायोर् अडिवैत्तदन् कीळ्⋆ प्परवै निलम् एल्लाम् ताय्⋆ ओर् अडियाल्⋆ एल्ला उलगुम् तडवन्द मायोन्⋆ उन्नै क्काण्बान्⋆ वरुन्दि एनै नाळुम्⋆ तीयोडु उडन्शेर् मॆळुगाय्⋆ उलगिल् तिरिवेनो॥६॥	प्रभु ! एक पग में आपने धरा एवं सागर को पार कर लिया।एक पग में फैलकर ऊपर के लोक में छा गये। प्रभु ! कितने दिन हम आपके दर्शन के लिये तड़पते रहेगे ? हाय ! आग में मोम की तरह पिघलकर हम पृथ्वी पर घूमते हैं। **3544**
उलगिल् तिरियुम् करुम गतियाय्⋆ उलगमाय्⋆ उलगुक्के ओर् उयिरुम् आनाय्⋆ पुरवण्डत्तु⋆ अलगिल् पॊलिन्द⋆ दिशै पत्ताय अरुवेयो⋆ अलगिल् पॊलिन्द⋆ अरिविलेनुक्करुळाये॥७॥	आप पृथ्वी पर घूमने वाले कर्म की आत्मा हैं। आप विश्व की आत्मा हैं। आप स्वरूपविहीन होकर दस गोल एवं उससे आगे भी हैं। विनती है, अंतहीन अज्ञान वाले इस तुच्छ जीव पर कृपा कीजिये। **3545**
अरिविलेनुक्करुळाय्⋆ अरिवार् उयिर् आनाय्⋆ वॆरि कॊळ् शोदि मूर्त्ति !⋆ अडियेन् नॆडुमाले⋆ किरिशॆय्दॆन्नै प्पुरत्तिट्टु⋆ इन्नम् कॆडुप्पायो⋆ पिरिदॊन्ररिया अडियेन्⋆ आवि तिगैक्कवे॥८॥	मर्त्यो की आत्मा ! इस अज्ञानी पर कृपा कीजिये। अनंत तेज के सुगंधित प्रतीक प्रभु ! क्या अभी भी दूर रह कर आप अपनी युक्ति से हमारी हत्या करेंगे ? हाय ! कोई अन्य को नहीं जानने पर भी हमारी आत्मा पीड़ित है। **3546**
आवि तिगैक्क⋆ ऐवर् कुमैक्कुम् शिट्रिन्पम्⋆ पावियेनै⋆ प्पल नी काट्टि प्पडुप्पायो⋆ तावि वैयम् कॊण्ड⋆ तडम् तामरैगट्के⋆ कूवि क्कॊळ्ळुम् कालम्⋆ इन्नम् कुरुगादो॥९॥	इन्द्रियों के सुख से हमारी आत्मा पीड़ित है। क्या अभी भी आप हमारा नाश अलग रहकर करेंगे ? जिसने फैलकर धरा माप दिया क्या उस चरणाविंद से जुड़ने का समय नहीं आया है ? **3547**
कुरुगा नीळा⋆ इरुदि कूडा एनैयूळि⋆ शिरुगा पॆरुगा⋆ अळविल् इन्बम् शेरन्दालुम्⋆ मरु काल् इन्रि मायोन्⋆ उनक्के आळागुम्⋆ शिरु कालत्तै उरुमो⋆ अन्दो तॆरियिले॥१०॥	प्रभु ! अनेकों अंतहीन युगों तक, जो न बढ़ता है, और न घटता है, मैं आत्मानंद में बना रहता ! हाय! सोचने पर ऐसा लगता है, क्या यह सब आपकी थोड़ी देर की निष्काम सेवा के भी तुलना के योग्य है ? **3548**
तॆरिदल् निनैदल्⋆ एण्णल् आगा त्तिरुमालुक्कु⋆ उरिय तॊण्डर् तॊण्डर्⋆ तॊण्डन् शडगोपन्⋆ तॆरिय च्चॊन्न⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ उरिय तॊण्डर् आक्कुम्⋆ उलगम् उण्डार्के॥११॥	दर्शन, ध्यान, एवं अनुभव से परे प्रभु की प्रशस्ति में भक्तों के भक्त के भक्त कुरूगुर शडगोपन को आत्मसाक्षात्कार हुए हजार पद का यह दशक पृथ्वी को निगलने वाले प्रभु का चरण प्रदान करता है। **3549** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **60 उलगम् उण्ड (3550 - 3560)** **तिरूवेङ्गडमुडैयानदु तिरूवडिगळिल् शरणम् पुगुदल्**	
उलगम् उण्ड पॆरुवाया !⋆ उलप्पिल् कीर्त्ति अम्माने⋆ निलवुम् शुडर् शूळ् ऑळि मूर्त्ति !⋆ नॆडियाय् ! अडियेन् आरुयिरे⋆ तिलदम् उलगुक्काय् निन्ऱ⋆ तिरुवेङ्गडत्तॆम् पॆरुमाने⋆ कुल तॊल् अडियेन् उन पादम्⋆ कूडुमारु कूराये॥१॥	धरा को निगलने वाले चिरंतन गौरव के प्रभु ! तेजोमय ज्ञान के चरम प्रतीक ! हमारी आत्मा के नाथ ! धरती का तिलक के रूप में आप वेंकटम में खड़े हैं। विनती है, आपके चरणारविंद तक पहुंचने का इस बंधुआ जीव को अनुमति दीयिये। **3550**
कूराय् नीराय् निलन् आगि⋆ क्कॊडुवल् अशुरर् कुलम् एल्लाम्⋆ शीरा एरियुम् तिरु नेमि वलवा !⋆ तॆय्व क्कोमाने⋆ शेरार् शुनै त्तामरै शॆन्दी मलरुम्⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ आरा अन्विल् अडियेन्⋆ उन् अडिशेर् वण्णम् अरुळाये॥२॥	स्वर्गिकों के देव ! आप हाथ में भयानक चक्र धारण करते हैं जो दुष्ट असुर को काट कर, टुकड़े टुकड़े कर, तथा पीस कर धूल में मिला दिया। सरोवरों से घिरे वेंकटम के प्रभु जहां अग्नि समान कमल खिले रहते हैं। कृपा कीजिये जिससे कि प्रेमपूरित यह दास आपके चरणारविंद से जुड़ सके। **3551**
वण्ण मरुळ् कॊळ् अणि मेग वण्णा !⋆ माय अम्माने⋆ एण्णम् पुगुन्दु तित्तिक्कुम् अमुदे !⋆ इमैयोर् अदिवदिये⋆ तॆण्णल् अरुवि मणि पॊन् मुत्तलैक्कुम्⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ अण्णले ! उन् अडिशेर⋆ अडियेकॊवा एन्नाये ! ॥३॥	स्वर्गिकों के देव ! मेघ वर्ण के सुन्दर नैसर्गिक प्रभु ! अमृत, आश्चर्यमय प्रभु, चेतन मन से शीघ्र समझे जाने वाले। वेंकटम के प्रभु जहां नदियां मणि मुक्ता एवं स्वर्ण बहाकर लाती हैं। मेरे प्रभु ! मेरे बारे में जानकारी प्राप्त कर अपने चरण से जोड़ लीजिये। **3552**
आवा एन्नादुलगत्तै अलैक्कुम्⋆ अशुरर् वाणाळ्मेल्⋆ तीवाय् वाळि मळै पॊळिन्द शिलैया !⋆ तिरु मा मगळ् केळ्वा तेवा⋆ शुरर्गळ् मुनि क्कणङ्गळ् विरुम्बुम्⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ पूवार् कळल्गळ् अरुविनैयेन्⋆ पॊरुन्दुमारु पुणराये॥४॥	कमलनिवासिनी लक्ष्मी के नाथ ! आपने अग्नि बाणों की वर्षा से पृथ्वी को पीड़ित करने वाले हृदयहीन असुरों का अंत किया। वेंकटम के प्रभु जो देव असुर एवं मुनि से पूजित हैं। विनती है, इस क्षुद्र जीव को अपने चरणारविंद का मार्ग बताइये। **3553**
पुणरा निन्ऱ मरम् एळ्⋆ अन्ऱॆय्द ऑरुविल् वलवावो⋆ पुणरेय् निन्ऱ मरम् इरण्डिन्⋆ नडुवे पोन मुदल्वावो⋆ तिणरार् मेगम् एनक्कळिरु शेरुम्⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ तिणरार् शारङ्गत्तुन पादम्⋆ शेर्वदडियेन् एन्नाळे॥५॥	सात वृक्षों को एक वाण से छेदने वाले दक्ष धनुर्धर! मरूदु वृक्षों में घुसने वाले प्रथम प्रभु ! वेंकटम के प्रभु जहां हाथी घने बादल के समान दिखते हैं। भारी शारंग धनुष को धारण करने वाले प्रभु ! कब आपके चरणारविंद को पा सकेंगे ? **3554**

ए॒न्नाळे नाम्॒ मण्णळन्द⋆ इणै त्तामरैगळ्॒ काण्बदर्॒केन्ऱु⋆ ए॒न्नाळुम्॒ निन्ऱिमैयोर्गळ्॒ ए॒त्ति⋆ इरैञ्जि इनम्॒ इनमाय्॒⋆ मॆयन्ना मनत्ताल्॒ वळिवाडु शॆय्युम्॒⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ मॆयन्नान्॒ ए॒य्दि ए॒न्नाळ्॒⋆ उन्॒ अडिक्कण्॒ अडियेन्॒ मेवुवदे॥६॥	वेंकटम के प्रभु जहां स्वर्गिक हर दिन मन से वचन से कर्मसे प्रशस्ति गाकर आपकी पूजा करते हैं। पृथ्वी को पार करने वाले चरण के दर्शन की चाह है। ओह ! कब वह दिन होगा जब हम आपसे अलग न होने के लिये मिल जायेंगे ? **3555**
अडियेन्॒ मेवि अमर्गिन्ऱ अमुदे !⋆ इमैयोर्॒ अदिबदिये⋆ कॊडिया अडु पुळ्॒ उडैयाने !⋆ कोल क्कनिवाय्॒ प्पॆरुमाने⋆ शॆडियार्॒ विनैगळ्॒ तीर्॒ मरुन्दे !⋆ तिरुवेङ्गडत्तॆम्॒ पॆरुमाने⋆ नॊडियार्॒ पॊळुदुम्॒ उन पादम्॒⋆ काण नोलादाट्ऱेने॥७॥	स्वर्गिकों के देव, हमारे अमृत, हमारे प्रेम के लिये स्थित प्रभु, गरूड़ ध्वज एवं सुन्दर वैर जैसे होंठ वाले प्रभु, कर्म के घास की औषध वेंकटम के प्रभु ! आपके चरण के दर्शन के बिना अब ज्यादा हम नहीं सह सकेंगे। **3556**
नोलादाट्ऱेन्॒ उन पादम्॒⋆ काणवॆन्ऱु नुण्॒ उणर्विल्॒⋆ नील्लार्॒ कण्डत्तम्मानुम्॒⋆ निरै नान्मुगनुम्॒ इन्दिरनुम्॒⋆ शेल्लेय्॒ कण्णार्॒ पल्लर्॒ शूळ विरुम्बुम्॒⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ माल्लाय्॒ मयक्कि अडियेन्बाल्॒⋆ वन्दाय्॒ पोल्ले वाराये॥८॥	हाय ! बिना योग्यता के ही हम आपके चरणाविंद के लिये तड़प रहे हैं। नीलकंठ शिव, चतुरानन, सूक्ष्म बुद्धि के इन्द, तथा अनेकों मीननयनी किशोरियां स्वेछा से आपको सर्वदा घेरे रहते हैं। वेंकटम के प्रभु ! आइये, जैसे आप पहले आये थे, एवं जादू से मुग्ध कर दीजिये। **3557**
वन्दाय्॒ पोल्ले वारादाय्॒ !⋆ वारादाय्॒ पोल्॒ वरुवाने⋆ शॆन्॒ तामरै क्कण्॒ शॆङ्गनि वाय्॒⋆ नाल्॒ तोळ्॒ अमुदे ! ए॒नदुयिरे⋆ शिन्दा मणिगळ्॒ पगर्॒ अल्लै प्पगल्॒ शॆय्॒⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ अन्दो ! अडियेन्॒ उन पादम्॒⋆ अगलगिल्लेन्॒ इरैयुमे॥९॥	जब आने का आभास होता है आप कभी नही आते। आभास होने पर आप आते भी हैं।मेरे अमृत प्रभु, कमल सी आंख, मूंगा जैसे होंठ, चार भुजाओं वाले प्रभु ! वेंकटम के प्रभु जहां तेजोमय मणि रात को दिन में बदल देते हैं। हाय ! हम आपके चरणारविंद से एक क्षण का भी अलगाव सह नहीं सकते। **3558**
‡अगलगिल्लेन्॒ इरैयुम्॒ ए॒न्ऱु⋆ अलर्॒मेल्॒ मङ्गै उरै मार्बा⋆ निगरिल्॒ पुगळाय्॒ ! उलगमून्ऱुडैयाय्॒ !⋆ ए॒न्नै आळ्वाने⋆ निगरिल्॒ अमरर्॒ मुनि क्कणङ्गळ्॒ विरुम्बुम्॒⋆ तिरुवेङ्गडत्ताने⋆ पुगल्॒ ऒन्ऱिल्ला अडियेन्॒⋆ उन्॒ अडिक्कीळ्॒ अमर्॒न्दु पुगुन्देने॥१०॥	आप अपने वक्षस्थल पर अलग न होने वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। अतुलनीय यश वाले, तीनों लोक को धारण करने वाले, स्वर्गिकों एवं महान ऋषियों के चहेते, वेंकटम के प्रभु ! आपके चरण पर गिरकर यह आश्रयविहीन जीव अपना आश्रय पा गया है। **3559**
‡अडि क्कीळ्॒ अमर्॒न्दु पुगुन्दु⋆ अडियीर्॒ ! वाळ्मिन्॒ ए॒न्ऱॆन्ऱरुळ्॒ कॊडुक्कुम्॒⋆ पडिक्केळ्॒ इल्ला प्पॆरुमानै⋆ प्पळन क्कुरुगूर्॒ च्चडगोबन्॒⋆ मुडिप्पान्॒ शॊन्न आयिरत्तु⋆ त्तिरुवेङ्गडत्तुक्किवै पत्तुम्॒⋆ पिडित्तार्॒ पिडित्तार्॒ वीट्रिरुन्दु⋆ पॆरिय वानुळ्॒ निलावुवरे॥११॥	अपने चरण मे आश्रय प्रदान करने वाले वेंकटम प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के संपूर्ण हजार पद का यह दशक सर्वदा वैकुंठ का आनंद देता है। **3560** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

61 उण्णिलाविय (3561 – 3571)

इन्दिरियङ्गळाल् इन्नुम् एत्तनै नाळ् तुन्बुरूवेन् एन्रू आळवार् वरन्दल्

पांच अजेय इन्द्रियां

‡उण्णिलाविय ऐवराल् कुमैदीट्टि⋆ एन्नै उन् पाद पङ्गयम्⋆ नण्णिला वगैये⋆ नलिवान् इन्नुम् एण्णुगिन्राय्⋆ एण्णिला प्पॆरुमायने ! इमैयोर्गळ् एत्तुम्⋆ उलग मून्रुडै⋆ अण्णले ! अमुदे ! अप्पने !⋆ एन्नै आळ्वाने ! ॥१॥	अनंत श्रेयस्वान प्रभु ! स्वर्गिकों से पूजे जाने वाले तीनों लोक के प्रभु ! इस शरीर के पांच इन्द्रियों के माध्यम से आप वेदना देते हैं।अपने चरणाविंद से अलग करके आप अभी भी हमें यातनाग्रस्त किये हुए हैं। हे हमारे अमृत, हमारे माता एवं पिता ! **3561**
एन्नै आळुम् वन्गो ओर् ऐन्दिवै पॆय्दु⋆ इराप्पगल् मोदु वित्तिट्टु⋆ उन्नै नान् अणुगावगै⋆ शॆय्दु पोदि कण्डाय्⋆ कन्नले ! अमुदे ! कार् मुगिल् वण्णने !⋆ कडल् ञालम् काक्किन्र⋆ मिन्नुनेमियिनाय् !⋆ विनैयेनुडै वेदियने ! ॥२॥	रात दिन कष्ट देते हुए आपने पांच अत्याचारी राजाओं को हम पर राज करने के लिये छोड़ दिया है। गन्ना के रस, श्याम प्रभु, धरा एवं सागर के संरक्षक, तेजपूर्ण चक्र को धारण करने वाले ! इस पापी के वैदिक प्रभु ! आपने यह निश्चित व्यवस्था कर दी है कि हम आपके चरणाविंद तक नहीं पहुंच पायें। **3562**
वेदियानिर्कुम् ऐवराल्⋆ विनैयेनै मोदुवित्तु⋆ उन् तिरुवडि शादियावगै⋆ नी तडुत्तॆन् पॆरुदियन्दो⋆ आदियागि अगल् इडम् पडैत्तु⋆ उण्– डुमिळन्दु कडान्दडान्दट्ट⋆ शोदि नीळ् मुडियाय् !⋆ तॊण्डनेन् मदुशूदनने ! ॥३॥	आपने पांच इन्द्रियों को बैठाकर हमारे राह का रोड़ा बनाया है। आप प्रथम कारण हैं। इस विश्व को बनाकर आपने इसे मापा तथा ऊपर उठाया।ऊंचे मुकुट के प्रभु एवं इस दास के अपने मधुसूदन ! हाय ! हमें अपने चरण से दूर रखकर आपको क्या लाभ मिलेगा ? **3563**
शूदु नान् अरियावगै⋆ शुळट्टियोर् ऐवरै काट्टि⋆ उन्नडि प्पोदु नान् अणुगावगै⋆ शॆय्दु पोदि कण्डाय्⋆ यादुम् यावरुम् इन्रि निन्नगम्बाल् ऒडुक्कि⋆ ओर् आलिन् नीळ् इलै⋆ मीदु शेर् कुळवि !⋆ विनैयेन् विनैदीर् मरुन्दे ! ॥४॥	आपने पांच इन्द्रियों को हमारे इर्द गिर्द बंधन की तरह बैठाकर बच निकलने की कोई संभावना नहीं छोड़ी। बिना किसी को छोड़े हुए आपने सभी बस्तुओं एवं प्राणियों को अपने भीतर रखा एवं शिशु की नाई जल पर तैरते बटपत्र पर सो गये। हमारे कर्म की औषध ! आपने अपने चरण तक पहुंचने में हमें असमर्थ बना रखा है। **3564**
तीर् मरुन्दिन्रि ऐन्दु नोय् अडुम्⋆ शॆक्किल् इट्टु त्तिरिक्कुम् ऐवरै⋆ नेर् मरुङ्गुडैत्ता अडैत्तु⋆ नॆगिळिप्पान् ऒक्किन्राय्⋆ आर् मरुन्दिनि आगुवर्⋆ अडल् आळि एन्दि अशुरर् वन् कुलम्⋆ वेर् मरुङ्गरुत्ताय् !⋆ विण्णूळार् पॆरुमानेयो ! ॥५॥	पांच इन्द्रियां एक विशाल गोल घूमने वाले झूले पर हमें घुमाकर रोगग्रस्त कर देती हैं। स्वर्गिकों के प्रभु ! आपने असुर कुल का संहार किया। तेजोमय चक्रवाले प्रभु ! अब कौन हमारी औषधि होंगे ? हाय ! आप फांसी देने वाले की तरह आगे पीछे एवं पार्श्व को कसकर जकड़ देते हैं। **3565**

<table>
<tr><td>विण्णुळार् पॆरुमार्कॆडिमै शॆय्वारैयुम्
शॆरुम्⋆ ऐम्बुलन् इवै⋆
मण्णुळ् एन्नै प्पॆट्टाल्⋆ एन् शॆय्या मट्टु नीयुम् विट्टाल्⋆
पण्णुळाय्! कवि तन्नुळाय्!⋆ पत्तियिन् उळ्ळाय्!
परमीशने⋆ वन्दॆन्
कण्णुळाय्! नॆञ्जुळाय्!⋆ शॊल्लुळाय्! ऒन्ऱु शॊल्लाये॥६</td><td>पांच इन्द्रियां आपकी पूजा करने वाले स्वर्गिकों को भी यातना देती हैं। विशेषकर जब आपने भी हमें अलग छोड़ दिया है तो धरावासियों को वे क्या नहीं क्षति पहुंचायेंगे? महान प्रभु ! आप संगीत, कविता एवं भक्ति में छिपे हैं। हम आपको अपनी आंखों में देखते हैं। अब हृदय मे देखते हैं तथा अपने शब्दों में देखते हैं। विनती है, एक शब्द हमसे बोलिये। **3566**</td></tr>
<tr><td>ऒन्ऱु शॊल्लि ऒरुत्तिनिल् निर्किलाद⋆
ओर् ऐवर् वन् कयवरै⋆
एन्ऱु यान् वॆल्गिर्पन्⋆ उन् तिरुवरुळ् इल्लैयेल्⋆
अन्ऱु देवर् अशुरर् वाङ्ग⋆ अलै कडल्
अरवम् अळावि⋆ ओर्
कुन्ऱम् वैत्त एन्दाय्!⋆ कॊडियेन् परुगु इन्नमुदे! ॥७॥</td><td>ये चंचल इन्द्रियां एक रास्ते या एक लक्ष्य पर नहीं टिकतीं। हमारे प्रिय अमृत ! आपने देवों एवं असुरों के साथ गहरे में बैठाये हुए एक पर्वत पर नाग को लपेट कर सागर का मंथन किया। हाय ! अगर आपकी करूणा नहीं होगी तो हम कैसे इन्द्रियों पर नियंत्रण रख पायेंगे। **3567**</td></tr>
<tr><td>इन्नमुदॆन त्तोन्ऱि⋆ ओर् ऐवर् यावरैयुम्
मयक्क⋆ नी वैत्त
मुन्न मायम् एल्लाम्⋆ मुळु वेर् अरिन्दु⋆ एन्नैयुन्
शिन्नमुम् तिरु मूर्त्तियुम्⋆ शिन्दि त्तेत्ति
कै तॊळवे अरुळ् एनक्कु⋆
एन्नम्मा! एन् कण्णा!⋆ इमैयोर् तम् कुलमुदले! ॥८॥</td><td>आपकी दी हुई पांच इन्द्रियां किसी को प्रिय अमृत देने के बहाने धोखे में रख सकती हैं।हमारे नाथ, हमारे कृष्ण, स्वर्गिकों के नाथ ! कालातीत माया से मुक्त करने की कृपा कीजिये जिससे कि हम आपके प्रतीक अस्त्र एवं स्वरूप पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें। **3568**</td></tr>
<tr><td>कुल मुदल् अडुम् तीविनै⋆ क्कॊडुवन् कुळियिनिल्
वीळक्कुम् ऐवरै⋆
वल मुदल् कॆडुक्कुम्⋆ वरमे तन्दरुळ् कण्डाय्⋆
निलमुदल् इनि एव्वुलगुक्कुम्⋆ निर्पन
शॆल्वन एन⋆ प्पॊरुळ्
पल मुदल् पडैत्ताय्!⋆ एन् कण्णा! एन् परञ्जुडरे! ॥९॥</td><td>पांच इन्द्रियां देवों को भी पाप के गड्ढ़े में डाल देती हैं। मेरे कृष्ण, मेरे तेजोमय ज्योति ! आपने धरा बनाई, सब लोक, गतिमान तथा स्थिर सब कुछ बनाया। पांचो को उनकी शक्ति एवं सब कुछ के साथ विनाश की कृपा कीजिये । विनती है, हमारी बात सुनलें। **3569**</td></tr>
<tr><td>एन् परञ्जुडरे! एन्ऱुन्नै अलट्टि⋆
उन् इणै त्तामरैगट्कु⋆
अन्बुरुगि निर्कुम्⋆ अदु निर्क च्चुमडु तन्दाय्⋆
वन् परङ्गळ् एडुत्तैवर्⋆ दिशै दिचै
वलित्तॆट्टुगिन्ऱनर्⋆
मुन् परवै कडैन्दु⋆ अमुदम् कॊण्ड मूर्त्तियो! ॥१०॥</td><td>प्रभु आपने सागर मंथन कर अमृत देवों को दिया। हम आपकी गाथा गाते हुए प्रेम से द्रवित हो आपके चरणाविंद पर समर्पित हो जाना चाहते हैं। इसके बदले आपने हमें यह लोथड़ा ढ़ोने के लिये तथा इसके वजन से दब जाने के लिये छोड़ दिया है। ओह ! ये पांच हमें घोर तूफान की ओर खींचती हैं तथा हमें कष्टपूर्ण प्रताड़ना देती हैं। **3570**</td></tr>
</table>

कौंण्ड मूर्त्ति ओर् मूवराय्* क्कुणङ्गळ् पडै– त्तळित्तु क्केंडुक्कुम्* अप्– पुण्डरीकप् कौंप्पूळ्* पुनल् पळ्ळि अप्पनुक्के* तौंण्डर् तौंण्डर् तौंण्डर् तौंण्डन्* शडगोपन् शौंल् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्* कण्डु पाड वल्लार्* विनैपोम् कङ्गुलुम् पगले॥११॥	भक्तों के भक्त के भक्त कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक बनाने, पालन करने, एवं संहार करने वाले तीनों गुणों से संपन्न प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं। जो इनका दिन रात गान करेंगे वे कर्मो का क्षय प्राप्त करेंगे। **3571** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

62 कङ्गुलुम् पगलुम् (3572 -3582)

तलैवियन् निलैगण्ड ताय् अरङ्गरै प्पारत्तु विनादल्

नायकी की मां 8

कङ्गुलुम् पगल्लुम् कण् तुयिल् अरियाळ्* कण्ण नीर् कैगळाल् इरैक्कुम्* शङ्गु शक्करङ्गळ् एन्रु कै कूप्पुम्* तामरै क्कण् एन्रे तळरुम्* एङ्गने तरिक्केन् उन्नै विट्टेन्नुम्* इरु निलम् कै तुळाविरुक्कुम्* शेङ्गयल् पाय् नीर् त्तिरुवरङ्गत्ताय् !* इवळ् तिरत्तेन् शेय्गिन्राये॥१॥	नाचती मछलियों के जल में शयन करने वाले तिरूवरंगम के प्रभु! हमारी बेटी को क्या कर दिया है आपने ? रात दिन वह सोती नहीं। चुल्लु भर भर कर आंसू फेंकते हुए हाथ जोड़कर कहती है 'चक्र' तब 'कमल वाले प्रभु' एवं अचेत हो जाती है। 'आपके विना हम कैसे रहेंगे?' रोती है एवं धरती का सहारा लेती है। **3572**
एन् शेय्गिन्राय् एन् तामरै क्कण्णा ! एन्नुम्* कण्णीर् मल्ग इरुक्कुम्* एन् शेय्वोन् एरि नीर् त्तिरुवरङ्गत्ताय् एन्नुम्* वेव्वुयिर्त्तुयिर्त्तुरुगुम्* मुन् शेय्द विनैये ! मुगप्पडाय् एन्नुम्* मुगिल्वण्णा ! तगुवदो एन्नुम्* मुन् शेय्दिव्वुलगम् उण्डुमिळ्न्दळन्दाय् !* एङ्गॊलो मुडिगिन्रदिवट्के॥२॥	आंखों में आंसू भरकर पूछती है 'कमल वाले प्रभु! हमारे लिये क्या कर रहे हैं ? ' फिर 'हे रंगा ! मैं क्या करूं ?' भारी उसांस के साथ रोती है। 'हे मेरे कर्म ' चीखती है। 'श्याम प्रभु आइये, क्या यह उचित है ?' आपने धरा बनाया निगल गये फिर बाहर निकाल दिया तथा मापा। इसके लिये अंत कैसा होगा ? **3573**
वट्किलळ् इरैयुम् मणिवण्णा ! एन्नुम्* वानमे नोक्कुम् मैयाक्कुम्* उट्कुडै अशुरर् उयिर् एल्लाम् उण्ड* ऑरुवने ! एन्नुम् उळ्ळुरुगुम्* कट्किली ! उन्नै क्काणुमारुळाय्* कागुत्ता ! कण्णने ! एन्नुम्* तिण्कॊडि मदिळ् शूळ् तिरुवरङ्गत्ताय् !* इवळ्तिरत्तेन् शेय्दिट्टाये॥३॥	लाज छोड़कर कहती है 'मणि प्रभु' आकाश में देखकर उसांस लेती है। 'असुरों के विनाशक प्रभु !' तब रोने लगती है। 'हे मेरे कृष्ण !, काकुत्स्थ, आईये हम आपको यहां देखना चाहते हैं'। दीवारों से घिरे हे रंगा ! आपने इसके साथ क्या किया है ? **3574**
इट्ट काल् इट्ट कैगळाय् इरुक्कुम्* एळुन्दुलाय् मयङ्गुम् कै कूप्पुम्* कट्टमे कादल् एन्रु मूर्च्चिक्कुम्* कडल्वण्णा ! कडियैगाण् एन्नुम्* वट्ट वाय् नेमि वलङ्गैया ! एन्नुम्* वन्दिडाय् एन्रेन्रे मयङ्गुम्* शिट्टने ! शेळु नीर् त्तिरुवरङ्गत्ताय् !* इवळ्तिरत्तेन् शिन्दित्ताये॥४॥	जैसे छोड़ी गयी थी उसी अवस्था में रहती है। उठती है, गिरती है, फिर हाथ जोड़ती है 'यह प्रेमी, वेदना है' कहती है, फिर अचेत हो जाती है। 'अदृश्यमान सागर के प्रभु' 'प्रभामंडल वाले

	चक के प्रभु'। 'कृपया आइये' इस तरह से कहती हुई अचेत हो जाती है। धवल जल पर सोने वाले हे रंगा ! इसके लिये आपकी क्या मंशा है ? **3575**
शिन्दिक्कुम् तिगैक्कुम् तेरुम् कै कूप्पुम्* तिरुवरङ्गत्तुळ्ळाय् ! एन्नुम् वन्दिक्कुम्* आङ्ग मळैक्कण्णीर् मल्गा* वन्दिडाय् एन्रॆन्रे मयङ्गुम्* अन्दिप्पोदवुणन् उडल् इडन्दाने !* अलै कडल् कडैन्द आरमुदे* शन्दित्तुन् शरणम् शार्वदे वलित्त* तैयलै मैयल् शॆय्दाने ! ॥५॥	सोचने लगती है, अचेत हो जाती है, एवं होश में आती है। करवद्ध होकर बोलती है 'अरंगम में' । उस दिशा में झुकती है एवं वर्षा की तरह आंसू बहाती है। कहती है 'आओ पिरीती' फिर अचेत हो जाती है। हिरण्य की छाती फाड़ने वाले, दुर्लभ अमृत, सागर मथने वाले, आपने एक महान किशोरी को तड़पा दिया है, इसे अब अपने चरण में ले लीजिये। **3576**
मैयल् शॆय्दॆन्नै मनम् कवर्न्दाने ! एन्नुम्* मा मायने ! एन्नुम्* शॆय्य वाय् मणिये ! एन्नुम्* तण् पुनल् शूळ् तिरुवरङ्गत्तुळ्ळाय् ! एन्नुम्* वॆय्य वाळ् तण्डु शङ्गु शक्करम् विल् एन्दुम्* विण्णोर् मुदल् ! एन्नुम्* पै कॊळ् पाम्बणैयाय् ! इवळ् तिरत्तरुळाय्* पावियेन् शॆयर्पालदुवे ॥६॥	शेषशायी प्रभु ! इस किशोरी पर करूणा दिखाइये। कहती है 'प्रभु आप हमारा हृदय चुराकर ले गये'। 'हे लाल होंठ एवं मणि वर्ण के प्रभु' 'शीतल जल से घिरे अरंगम में शयन करने वाले प्रभु'। 'स्वर्गिकों के प्रभु शंख चक गदा खड्ग एवं धनुष वाले'। हाय ! हमारे कर्म का दोष है। **3577**
पाल तुन्बङ्गळ् इन्बङ्गळ् पडैत्ताय् !* पट्टिलार् पट्ट निन्राने* काल शक्करत्ताय् ! कडल् इडम् कॊण्ड* कडल्वण्णा ! कण्णने ! एन्नुम्* शेल् कॊळ् तण् पुनल् शूळ् तिरुवरङ्गत्ताय् ! एन्नुम्* एन् तीर्त्तने ! एन्नुम्* कोल मा मळैक्कण् पनि मल्ग इरुक्कुम्* एन्नुडै क्कोमळ क्कॊळुन्दे ॥७॥	हमारी कोमल राजकुमारी बड़ी बड़ी आंखों से आंसू बहाते बैठती है। कहती है 'प्रभु ने सुख एवं दुख दोनों बनाया एवं प्रेमहीन से भी प्रेम किये गये'। 'कालचक धारण करने वाले तथा सागर में शयन करने वाले' 'शीतल जल में मछली वाले पावन तीर्थस्थल श्रीरंगम के हे कृष्ण'। **3578**

कॉळुन्दु वानवर्गट्कॅन्नुम्⋆ कुन्रेन्दिक्को निरै कात्तवन् ! एन्नुम्⋆ अळुम्दॉळुम् आवि अनल वेव्वुयिरक्कुम्⋆ अञ्जन वण्णने ! एन्नुम्⋆ एळुन्दु मेल् नोक्कि इमैप्पिलळ् इरुक्कुम्⋆ एङ्गने नोक्कुगेन् एन्नुम्⋆ शॅळुन् तडम् पुनल् शूळ् तिरुवरङ्गत्ताय् !⋆ एन् शॅय्गेन् एन् तिरुमगट्के॥८॥	हे रंगा! हम अपनी बहुमूल्य बेटी के लिये क्या करें ? कहती है 'देवों के नाथ आपने गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठा लिया'। रोती है गर्म उसांस लेती है जैसे कि अपनी आत्मा को सुखा देगी। कहती है 'हे प्रभु कैसे आपका दर्शन करू ?' तब ऊपर एकटक देखती है। **3579**
एन् तिरुमगळ् शेर् मार्वने ! एन्नुम्⋆ एन्नुडै आवियेे ! एन्नुम्⋆ निन् तिरुवॅयिट्टाल् इडन्दु नी कॉण्ड⋆ निलमगळ् केळ्वने ! एन्नुम्⋆ अन्रुरुवेळुम् तळुवि नी कॉण्ड⋆ आय्मगळ् अन्बने ! एन्नुम्⋆ तॅन तिरुवरङ्गम कोयिल कॉण्डाने !⋆ तॅळिगिलेन मुडिविवळ तनक्के॥९॥	दक्षिण के मंदिर के हे रंगा ! कहती है 'मेरी आत्मा' 'अपने दाढ़ों पर उठा लेने वाले भू देवी के दूलहा' 'आपके वक्षस्थल पर स्थित कमल निवासिनी लक्ष्मी के नाथ' 'गोपकुमारी के प्रेमी जिसे आपने सात वृषभों का शमन कर प्राप्त किया'। हाय ! हम इसके लक्ष्य को समझ नहीं सकते। **3580**
मुडिविवळ् तनक्कॉन्ररिगिलेन् एन्नुम्⋆ मूवुलगाळिये ! एन्नुम्⋆ कडि कमळ् कॉन्रै च्चडैयने ! एन्नुम्⋆ नान्मुग क्कडवुळे ! एन्नुम्⋆ वडिवुडै वानोर् तलैवने ! एन्नुम्⋆ वण् तिरुवरङ्गने ! एन्नुम्⋆ अडियडैयादाळ् पोल्विवळ् अणुगि अडैन्दनळ्⋆ मुगिल्वण्णन् अडिये॥१०॥	वह कहती है 'विश्व के प्रभु मुझे अपना लक्ष्य नहीं पता' 'जटाधारी कोन्रैय शिव' 'चतुरानन ब्रह्मा' 'महान स्वर्गिकों के सम्राट' 'सुगंधित श्रीरंगम के प्रभु' । आश्रयविहीन होकर हमारी बेटी ने मेघ वर्ण के प्रभु का चरण प्राप्त कर लिया है। **3581**
मुगिल्वण्णन् अडियै अडैन्दरुळ् शूडि उयन्दवन्⋆ मॉय् पुनल् पॉरुनल्⋆ तुगिल् वण्ण त्तू नीर् च्चेरप्पन्⋆ वण् पॉळिल् शूळ् वण् कुरुगूर् च्चडगोवन्⋆ मुगिल्वण्णन् अडिमेल् शॉन्न शॉल् मालै⋆ आयिरत्ति प्पत्तुम् वल्लार्⋆ मुगिल् वण्ण वानत्तिमैयवर् शूळ इरुप्पर्⋆ पेरिन्ब वॅळ्ळत्ते॥११॥	पोरूनल जल के बागों वाले प्रभु के चरण की कृपा से प्राप्त हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन ने वर्षा के मेघ के वर्ण वाले प्रभु की प्रशस्ति में प्रस्तुत किये हैं। इसे याद करने वाले स्वर्गिकों से पावन किये हुए आनंद का जीवन प्राप्त करेंगे। **3582** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

63 वेळळै च्चुरिशङ्गु (3583 – 3593)

ताय्मारूम् तोळिमारूम् उट्रारूम् तडुक्कवुम तलैवि तिरूप्पेरेयिल् शेर त्तुणिदल्

(नायकी भाव में सखियों से वार्ता)

तिरूप्पेरेयिल ः यह स्थान तमिलनाडु में तिरूनेलवेली एवं तिरूच्चेन्डूर मार्ग पर अवस्थित है जो आळवार तिरूनगरी के पास के नवतिरूपति में से एक है। मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। यह ताम्रपणी के दक्षिण तट पर है तथा यह बड़े किला के लिये जाना जाता है। गरूड़ की मूर्ति भगवान के सामने न होकर नदी किनारे है। भगवान बच्चों को अपना अभिनय करते देखना चाहते थे इसलिये गरूड़ को बच्चों पर दृष्टि ओझल होने के कारण सामने से हटा दिये। यहां भगवान को 'मकरा नेडुम कुळे कदर' भी कहते हैं क्योंकि लक्ष्मी को जल में दोनों मकराकृत कुंडल मिले थे जो भगवान धारण किये हुए हैं। (Refer Ramesh vol. 4, pp 54)

वेळ्ळै च्चुरि शङ्गोडाळि एन्दि॰ तामरै क्कण्णन् एन् नेञ्जिनूडे॰ पुळ्ळै क्कडागिन्र वाट्टै क्काणीर्॰ एन् शोल्लि च्चोल्लुगेन् अन्नैमीर्गाळ्॰ वेळ्ळ च्चुगम् अवन् वीट्रिरुन्द॰ वेद ऑलियुम् विळा ऑलियुम्॰ पिळ्ळै क्कुळा विळैयाट्टोलियुम् अरा॰ त्तिरुप्पेरैयिल् शेर्वन् नाने॥१॥	सजनी ! कैसे मैं इसका वर्णन करूं ? जिस तरह से हमारा हृदय देखता है उस तरह से तुम नहीं देखते। कमल के समान शंख चकधारी प्रभु गरूड़ पर चले जा रहे हैं। वे तिरूप्पेरेयिल में हैं जहां वैदिक पाठ एवं उत्सव के स्वर सुनायी पड़ते हैं एवं कीड़ारत बालकों के स्वर कभी कम नहीं होते। वहीं हम जायेंगे। **3583**
नान क्करुङ्गुळल् तोळिमीर्गाळ् !॰ अन्नैयर्गाळ् ! अयल् शेरियीर्गाळ्॰ नान् इत्तनि नेञ्जम् काक्क माट्टेन्॰ एन् वशम् अन्रिदिराप्पगल् पोय्॰ तेन् मोयत्त पूम् पोळिल् तण् पणै शूळ् तेन् तिरुप्पेरैयिल् वीट्रिरुन्द॰ वान प्पिरान् मणिवण्णन् कण्णन्॰ शेङ्गनि वायिन् तिरत्तदुवे॥२॥	सुगंधित लटें वाली सखी ! हे सजनी ! पड़ोस के लोगों ! इस उड़ान भरते हृदय को हम रोक नहीं सकते। यह हमारे नियंत्रण में नहीं है। हाय ! दिन रात यह मूंगा समान होंठ वाले स्वर्गिकों के प्रभु के पीछे लगा रहता है। शीतल उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूप्पेरेयिल में कृष्ण बैठे हैं जहां मधु टपकते बाग हैं। **3584**
शेङ्गनि वायिन् तिरत्तदायुम्॰ शेञ्जुडर् नीळ् मुडि त्ताळ्न्ददायुम्॰ शङ्गोडु चक्करम् कण्डुगन्दुम्॰ तामरै क्कण्कळुक्कट्टु तीर्न्दुम्॰ तिङ्गळुम् नाळुम् विळावराद॰ तेन् तिरुप्पेरैयिल् वीट्रिरुन्द॰ नङ्गळ् पिरानुक्केन् नेञ्जम् तोळि !॰ नाणुम् निरैयुम् इळन्ददुव्वे॥३॥	सखी ! हमारा हृदय लाज खोकर तिरूप्पेरेयिल में रहता है जहां प्रभु बैठे हैं एवं जहां दिनों तथा महीनों उत्सव मनाया जाता है। कैसे हम उनके ऊंचे मुकुट, शंख, चक, कमल सी आंखे, मूंगा से

	होठ, भूल जायें जिसका हम लंबी अवधि तक आनंद ले चुके हैं। **3585**
इळन्द ऍम्मामै तिऱत्तु प्पोन⋆ ऍन् नॆञ्जिनारुम् अङ्गे ऑऴिन्दार्⋆ उळन्दिनि यारै क्कॊण्डॆन् उचागो⋆ ओद क्कडल् ऑलि पोल⋆ ऍङ्गुम् ऍऴुन्द नल् वेदत्तॊलि निन्ऱोङ्गु⋆ तॆन् तिरुप्पेरैयिल् वीट्रिरुन्द⋆ मुऴङ्गु शङ्ग क्कैयन् माय त्ताऴ्न्देन्⋆ अन्नैयर्गाळ्! ऍन्नै ऍन् मुनिन्दे॥ ४॥	सजनी ! हमें क्यों दोष लगाती हो ? उनके अलौकिक शंख की आकृति में भूलकर हम अपना हृदय खो बैठे। जाकर तिरूप्पेरेयिल के प्रभु से हमारी खोयी हुए छटा वापस लाओ जहां वे समुद्र की शाश्वत लहरों से बढ़ते वैदिक पाठ के बीच बैठे हैं। हाय ! मेरा हृदय भी वहीं रह गया। अब क्या करने के लिये किसकी सहायता हमें मिलेगी ? **3586**
मुनिन्दु शगडम् उदैत्तु माय प्पेय् मुलैयुण्डु⋆ मरुदिडै पोय्⋆ कनिन्द विळवुक्कु कन्ऱॆरिन्द⋆ कण्ण पिरानुक्कॆन् पॆण्मै तोट्रेन्⋆ मुनिन्दिनि ऍन् शॆय्दीर् अन्नैमीर्गाळ्⋆ मुन्नियवन् वन्दु वीट्रिरुन्द⋆ कनिन्द पॊऴिल् तिरुप्पेरैयिर्के⋆ कालम् पॆऱवॆन्नै क्काट्टुमिन्ने॥ ५ ॥	हमने अपना सहज नारी का गुण कृष्ण को गंवा दिया जिन्होंने दुष्ट गाड़ी को तोड़ा, राक्षसी का स्तन पान किया, घने मरूदु वृक्षों के बीच घुस गये, एवं एक बछड़ा को ताड़ पेड़ पर पटक दिये। सजनी ! शीघ्र आगे आओ। हमें दोष लगाने का कोई लाभ नहीं। फल से लदे बाग वाले तिरूप्पेरेयिल का मुझे मार्ग बता दो। **3587**
कालम् पॆऱवॆन्नै क्काट्टुमिन्गाळ्⋆ कादल् कडलिन् मिग प्पॆरिदाल्⋆ नील मुगिल् वण्णत्तॆम् पॆरुमान्⋆ निर्कु मुन्ने वन्दॆन् कैक्कुम् ऍय्दान्⋆ ञालत्तवन् वन्दु वीट्रिरुन्द⋆ नान्मऱैयाळरुम् वेळ्वि ओवा⋆ कोल च्चॆन्नॆर्गळ् कवरि वीशुम्⋆ कूडु पुनल् तिरुप्पेरैयिर्के॥ ६ ॥	समय बचाओ एवं हमें वहां ले चलो। हमारा प्रेम सागर की तरह उमड़ रहा है। मेघ वर्ण के प्रभु हमारे सामने प्रकट हुए हैं लेकिन हमारी पकड़ से बाहर हैं। वे अनवरत वैदिक पाठ के बीच बड़े तालों के बीच तिरूप्पेरेयिल में भूमि पर बैठते हैं जहां धान की बाली उनका पंखा करते हैं। **3588**

पेर् एयिल् शूळ् कडल् तेंन् इलङ्गै॰ शेंट्र पिरान् वन्दु वीट्रिरुन्द॰ पेरैयिर्के पुक्केंन् नेंञ्जम् नाडि॰ प्पेरत्तु वरवेंङ्गुम् काण माट्टेन्॰ आरै इनिङ्गुडैयम् तोळि ! ॰ एन् नेंञ्जम् कूव वल्लारुम् इल्लै॰ आरै इनिक्कोंण्डेन् शादिक्किन्ऱदु॰ एन् नेंञ्जम् कण्डदुवे कण्डेने॥७॥	सखी ! अपनी चाह से हमारा हृदय तिरूप्पेरेयिल में रहता है जहां प्रभु विराजते हैं। आपने सागर से घिरे दीवारों के नगर लंका को नष्ट कर दिया।हाय ! मैं अपने हृदय को वापस आते नहीं देखती अब किसके साथ मैं रहूंगी ? कोई उसे वापस बुलाने वाला भी नहीं है। किसकी सहायता से मैं क्या करूं ? हाय ! मैं वही देखती हूं जो मेरा हृदय देखता है। **3589**
कण्डदुवे कोंण्डेल्लारुम् कूडि॰ क्कारक्कडल् वण्णनोर्डेन्दिरत्तु कोंण्डु॰ अलर् तूट्रिट्रदु मुदला॰ क्कोंण्डवेन् कादल् उरैक्किल् तोळि॰ मण् तिणि ञालमुम् एळ् कडलुम्॰ नीळ् विशुम्बुम् कळिय प्पेंरिदाल्॰ तेंण् तिरै शूळ्न्दवन् वीट्रिरुन्द॰ तेंन् तिरुप्पेरैयिल् शेर्वन् शेंन्ऱे॥८॥	सखी ! तुम सभी एकत्र होकर प्रभु के साथ हाथ मिलाकर हम पर दोषारोपण करती हो इसी कारण हमारा प्रेम उमड़ रहा है। कैसे यह हुआ अगर मैं बताऊं तो यह धरा एवं आकाश की सीमा को पार कर जायेगा। हमें चारो तरफ जस से घिरे तिरूप्पेरेयिल जाकर अवश्य प्रभु से मिलना चाहिये। **3590**
शेर्वन् शेंन्ऱेन्नुडै त्तोळिमीर्गाळ् ! ॰ अन्नैयर्गाळ् ! एन्नै त्तेट्र वेण्डा॰ नीर्गळ् उरैक्किन्ऱदेन् इदर्कु॰ नेंञ्जुम् निऱैवुम् एनक्किङ्गिल्लै॰ कार्वण्णन् कार् क्कडल् ञालम् उण्ड॰ कण्ण पिरान् वन्दु वीट्रिरुन्द॰ एर् वळ ओंण् कळनि प्पळनत्तु॰ तेंन् तिरुप्पेरैयिन् मानगरे॥९॥	सखी ! हमें अवश्य जाना चाहिये। सजनी ! विनती है, हमें रोको नहीं। यह किस काम का होगा ? हृदय में अब हमें कोई संतोष नहीं है। सागर सा सलोने प्रभु जो धरा एवं सागर को निगल गये उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूप्पेरेयिल में रहते हैं। **3591**
नगरमुम् नाडुम् पिऱवुम् तेर्वेन्॰ नाण् एनक्किल्लै एन् तोळि मीर्गाळ्॰ शिगरम् अणि नेंडु माडम् नीडु॰ तेंन् तिरुप्पेरैयिल् वीट्रिरुन्द॰ मगर नेंडुङ्गुळै क्कादन् मायन्॰ नूट्रुवरै अन्ऱु मङ्ग नूट्र॰ निगरिल् मुगिल्वण्णन् नेमियान् एन्॰ नेंञ्जम् कवर्न्देंनै ऊळियाने॥१०॥	सखी ! मैं नगर एवं देश में खोजूंगी। हमें कोई लाज नहीं है। रत्न के पहाड़ के समान महलों से घिरे प्रभु तिरूप्पेरेयिल में रहते हैं। आप मकराकृत कुंडल धारण किये मकरा नेडु कुलै कादन हैं। आप चक्रधारी प्रभु हैं जिन्होंने कौरवों का नाश किया। कितनी देर पहले आपने हमारे हृदय को चुरा लिया ? **3592**

‡ऊळिदोऱ्ळि उरुवुम् पेरुम् शॅय्यैयुम्⋆ वेऱवन् वैयङ्गाक्कुम्⋆ आळि नीर् वण्णनै अच्चुतनै⋆ अणि कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ केळिल् अन्दादि ओरायिरत्तुळ् इवै⋆ तिरुप्पेरैयिल् मेय पत्तुम्⋆ आळि अङ्गैयनै एत्त वल्लार्⋆ अवर् अडिमै त्तिरत्ताळियारे॥११।	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद यह दशक तिरूप्पेरेयिल के प्रभु के बारे में है जो अनगिनत युगों से विश्व की रक्षा हेतु अनेकों रूप एवं नाम धारण करते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे चक्रधारी प्रभु के चरणारविंद के अधिकारी होंगे। **3593** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **64 आळियेळ (3594 - 3604)** **एम्बेरूमानदु वेट्रि च्चेयल्गळै प्पेशुदल्**	
‡आळियेंळ⋆ च्चङ्गुम् विल्लुम् एळ⋆ तिशै वाळियेंळ⋆ त्तण्डुम् वाळुम् एळ⋆ अण्डम् मोळैयेंळ⋆ मुडि पादम् एळ⋆ अप्पन् ऊळियेंळ⋆ उलगम् कॊण्डवारे॥१॥	चक्र फैल गया, शंख एवं धनुष भी फैल गये। पृथ्वी पर जयजयकार की ध्वनि गूंज उठी। खड्ग एवं गदा भी फैल गये। संसार एक बुलबुले की भांति दिखने लगा। प्रभु के चरण असुर के सिर पर आ गये। अहा ! किस तरह से फैलकर हमारे पिता ने एक नये युग की शुरूआत करते हुए धरा को माप डाला। **3594**
आऱु मलैक्कु⋆ एदिरन्दोडुम् ऑलि⋆ अर- वूऱु शुलाय्⋆ मलै तेय्क्कुम् ऑलि⋆ कडल् माऱु शुळन्ऱु⋆ अळैक्किन्ऱ ऑलि⋆ अप्पन् शाऱुपड⋆ अमुदम् कॊण्ड नान्ऱे॥२॥	जब हमारे पिता ने अमृत के लिये मंथन किया कितनी आवाज हुई ! नदियां जल को पीछे पर्वत पर धकेल रही थीं।नाग से लिपटा पर्वत पृथ्वी को हिला रहा था और सागर का जल चक्कर काटकर आगे पीछे हो रहा था। **3595**
नान्ऱिल एळ्⋆ मण्णुम् तानत्तवे⋆ पिन्नुम् नान्ऱिल एळ्⋆ मलै तानत्तवे⋆ पिन्नुम् नान्ऱिल एळ्⋆ कडल् तानत्तवे⋆ अप्पन् ऊन्ऱियिडन्दु⋆ एयिट्रिल् कॊण्ड नाळे॥३॥	जब हमारे पिता ने अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठाया तो सात लोक अपनी जगह पर स्थिर रहे, सात पर्वत अपनी जगह पर स्थिर रहे, एवं सात समुद्र भी अपनी जगह पर स्थिर रहे। **3596**
नाळुमॆळ⋆ निल नीरुमॆळ⋆ विण्णुम् कोळुमॆळ⋆ एरि कालुमॆळ⋆ मलै ताळुमॆळ⋆ च्चुडर् तानुमॆळ⋆ अप्पन् ऊळियेंळ⋆ उलगमुण्ड ऊणे॥४॥	जिस दिन हमारे पिता ने विश्व को स्वाद से निगला तो दिन लुप्त हो गये, जल एवं धरा लुप्त हो गये, आकाश एवं तारे लुप्त हो गये, अग्नि एवं वायु लुप्त हो गये, पर्वत एवं मैदान लुप्त हो गये, एवं चमकते ज्योतिपुंज लुप्त हो गये। **3597**
ऊणुडै मल्लर्⋆ तदरन्द ऑलि⋆ मन्नर् आणुडै शेनै⋆ नडुङ्गुम् ऑलि⋆ विण्णुळ् एण् उडै त्तेवर्⋆ वॆळिप्पट्ट ऑलि⋆ अप्पन् काणुडै प्पारतम्⋆ कैयरै प्पोळ्दे॥५॥	जब हमारे पिता ने घोर भारत युद्ध का नियंत्रण संभाला तो ओह! सुपोषित मल्ल योद्धाओं के पिसने की आवाज, वीर योद्धा राजाओं के बिखरे अवशेष, एवं जाग्रत स्वर्गिकों का प्रशस्ति घोष । **3598**

पोऴ्दु मॅलिन्द⋆ पुन् शॅक्करिल्⋆ वान् तिशै शूऴुम् ए़ऴुन्दु⋆ उदिर प्पुनला⋆ मलै कीऴ्दु पिळन्द⋆ शिङ्गम् ऑत्तदाल्⋆ अप्पन् आऴ् तुयर् शॅय्दु⋆ अशुररै क्कॉल्लुमाऱे॥६॥	जब हमारे पिता ने दुष्ट असुर का अंत किया तो दिन के अंत मे घटते प्रकाश के साथ चट्टान फोड़कर एक सिंह निकला एवं झरना की तरह रक्त चतुर्दिक ऊंचा गिरने लगा। **3599**
माऱु निरैत्तु⋆ इरैक्कुम् शरङ्गळ्⋆ इन नूऱु पिणम्⋆ मलै पोल् पुरळ⋆ कडल् आऱु मडुत्तु⋆ उदिर प्पुनला⋆ अप्पन् नीऱ़ुपड⋆ इलङ्गै शॅट्ऱ्नेरे॥७॥	ओह ! हमारे पिता ने लंका को धूल में मिला दिया। बाण से बाण टकराने लगे। सैंकड़ो शव पर्वत की तरह जमा हो गये। सर्वत्र रक्त की नदियां बह निकलीं। **3600**
नेर्शरिन्दान्⋆ कॉडि क्कोळि कॉण्डान्⋆ पिन्नुम् नेर्शरिन्दान्⋆ ए़रियुम् अनलोन्⋆ पिन्नुम् नेर्शरिन्दान्⋆ मुक्कण् मूर्त्ति कण्डीर्⋆ अप्पन् नेर्शरि वाणन्⋆ तिण्तोऴ् कॉण्ड अन्ऱे॥८॥	जब हमारे पिता ने बाणसुर की शक्तिशाली भुजाओं को काट गिराया तो मुर्गा चिह्न के ध्वज वाले देव भाग निकले। जान लो, तब प्रज्वलित अग्नि देव भी भाग चले। तब त्रिनेत्र देव भी भाग खड़ा हुए। **3601**
अन्ऱु मण् नीर् ए़रि काल्⋆ विण् मलै मुदल्⋆ अन्ऱु शुडर्⋆ इरण्डु पिऱवुम्⋆ पिन्नुम् अन्ऱु मऴै⋆ उयिर् तेवुम् मट्रुम्⋆ अप्पन् अन्ऱु मुदल्⋆ उलगम् शॅय्ददुमे॥९॥	जब हमारे पिता ने प्रथम बार विश्व की रचना की तो जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, एवं आकाश से शुरूकर पर्वत, ज्योतिपुंज, उसके बाद वर्षा, देवगन, चेतन प्राणी, एवं अन्य सबों को बनाया। **3602**
मेय् निरै कीऴ् पुग⋆ मा पुरळ⋆ शुनै वाय् निरै नीर्⋆ पिळिऱि च्चॉरिय⋆ इन आनिरै पाडि⋆ अङ्गे ऑडुङ्ग⋆ अप्पन् ती मऴै कात्तु⋆ क्कुन्ऱम् ए़डुत्ताने॥१०॥	जब हमारे पिता ने पर्वत उठाकर घोर वर्षा बंद की तो गायें एवं अन्य पशु इसके नीचे एकत्र हो गये।बड़े तालाब तेज प्रवाह से जल बाहर बहाने लगे। समस्त गोपकुल को एक आश्रय मिल गया। **3603**
कुन्ऱम् ए़डुत्त पिरान्⋆ अडियारॉडुम्⋆ ऑन्ऱि निन्ऱ⋆ शडगोपन् उरै शॅयल्⋆ नन्ऱि पुनैन्द⋆ ओर् आयिरत्तुऴ् इवै⋆ वॅन्ऱि तरुम् पत्तुम्⋆ मेवि क्कर्पार्क्के॥११॥	पर्वत उठाने वाले प्रभु के भक्तों के साथ खड़े होने वाले कृतज्ञ शठगोपन के गाये हुए मधुर हजार पदों यह दशक प्रेम से पाठ करने पर सफलता प्रदान करता है। **3604** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **65 कर्पार् (3605 - 3615)** **एम्बिरान्क्कु आळागाद उलगत्तारै नोक्कि इरङ्गुदल्**	
कर्पार् इराम पिरानै अल्लाल्⋆ मट्रुम् कर्परो⋆ पुर्पा मुदला⋆ प्पुल्लॆरुम्बादि ऒन्रिन्रिये नर्पाल् अयोत्तियिल् वाळुम्⋆ शराशरम् मुट्रवुम् नर्पालुक्कुयत्तनन्⋆ नान्मुगनार् पॆट्र नाट्टुळे॥१॥	ब्रह्मा की सृष्टि में नीच से नीच तृण या कीड़े मकोड़े को भी गौरवपूर्ण अयोध्या में सभी चेतन एवं जड़ प्राणी के साथ ऊंचा स्थान मिला है। क्यों कोई विद्वान राजा राम को छोड़कर दूसरे के बारे में अध्ययन करेगा ? **3605**
नाट्टिल् पिरन्दवर्⋆ नारणर्काळ् अन्रियावरो⋆ नाट्टिल् पिरन्दु पडादन पट्टु⋆ मनिशर्क्का⋆ नाट्टै नलियुम् अरक्करै⋆ नाडि त्तडिन्दिट्टु⋆ नाट्टै अळित्तुय्य च्चॆय्दु⋆ नडन्दमै केट्टुमे॥२॥	मानव समुदाय के कल्याणार्थ नारायण ने धरा पर जन्म लिया एवं अनेकों कष्ट झेलते हुए यहां घूमे तथा राक्षसों के अत्याचार का अंत किया। आपने विभीषण को राज्य दिया तथा अन्य सबों को मुक्ति प्रदान की। यह जानकर मर्त्यजन किसी अन्य के भक्त होंगे क्या ? **3606**
केट्पार्गळ् केशवन् कीर्त्तियल्लाल्⋆ मट्रुम् केट्परो⋆ केट्पार् शॆवि शुडु⋆ कीळ्मै वशवुगळे वैयुम्⋆ शेट्पाल् पळम् पगैवन्⋆ शिशुपालन्⋆ तिरुवडि ताट्पाल् अडैन्द⋆ तन्मै अरिवारै अरिन्दुमे॥३॥	कृष्ण के कट्टर शत्रु शिशुपाल ने कान को पका देने वाला प्रभु पर भद्दी गाली जैसों शव्दों का प्रयोग किया तब भी वह प्रभ के चरण को पा गया। उनलोगों के बारे में जानकर जो इसे अच्छी तरह समझते हैं कोई भी केशव को छोड़कर किसी अन्य की प्रशस्ति सुनेगा क्या ? **3607**
तन्मै अरिववर्⋆ ताम् अवर्काळ् अन्रियावरो⋆ पन्मै प्पडर् पॊरुळ्⋆ आदुम् इल्पाळ् नॆडुङ्गालत्तु⋆ नन्मै प्पुनल् पण्णि⋆ नान्मुगनै प्पण्णि तन्नुळ्ळे⋆ तॊन्मै मयक्किय तोट्रिय⋆ शूळल्गळ् शिन्दित्ते॥४॥	पुराकाल में जब यह सब कुछ भी नहीं था आपने जल बनाया तब चतुरानन ब्रह्मा को बनाया और तब सब को अपने भीतर छिपा लिया। इन विस्मयकारी कृत्यों पर विचार कर वैज्ञानिकगन अन्य चीज पर ध्यान देंगे क्या ? **3608**
शूळल्गळ् शिन्दिक्किल्⋆ मायन् कळल् अन्रि च्चूळ्वरो⋆ आळ प्पॆरुम् पुनल्⋆ तन्नुळ् अळुन्दिय ञालत्तै⋆ ताळ प्पडामल्⋆ तन् पाल् ऒरु कोट्टिडै त्तान् कॊण्ड⋆ केळल् तिरुवुरुवायिट्रू⋆ क्केट्टुम् उणर्न्दुमे॥५॥	सुन्दर सूकर का रूप धरकर गहरे प्रलय जल में डूबे पृथ्वी को प्रभु ने अपने दाढ़ों पर उपर उठाया। यह जानते हुए कोई भी प्रभु के चरण को छोड़कर अन्य किसी चीज की खोज करेगा क्या ? **3609**

केट्टुम् उणरन्दवर्⋆ केशवर्काॅळ् अऩ्ऱियावरो⋆ वाट्टम् इला वण्गै⋆ मावलि वादिक्क वादिप्पुण्डु⋆ ईट्टङ्गॉळ् देवर्गळ्⋆ शॅऩ्ऱिरन्दार्क्किडर् नीक्किय⋆ कोट्टङ्गै वामनन् आय्⋆ च्चॅय्द कूत्तुगळ् कण्डुमे॥६॥	उदार बली राजा से पीड़ित होकर देवों ने प्रभु से विनती की। फलस्वरूप आपने वामन के रूप में भिक्षा मांगी। इन विस्मयकारी कृत्यों से अवगत होकर कैसे कोई केशव का भक्त नहीं होगा ? **3610**
कण्डुम् तॅळिन्दुम् कट्टार्⋆ कण्णर्काॅळ् अऩ्ऱियावरो⋆ वण्डुण् मलर्त्तॉङ्गल्⋆ मार्क्कण्डेयनुक्कु वाळुनाळ्⋆ इण्डै च्चडैमुडि⋆ ईशन् उडन् कॉण्डु उशा च्चॅल्ल⋆ कॉण्डङ्गु त्तन्नॊडुम् कॉण्डु⋆ उडन् शॅऩ्ऱुणरन्दुमे॥७॥	सुगंधित फूल से सजे मार्कण्डेय ने जीवन के लिये प्रार्थना की। जटाधारी शिव ने उन्हें अपने भीतर प्रवेश करा कर अपनी स्थिति दिखाई। प्रभु ने तब उन्हें अपने में मिला लिया। इस पर विचार करते हुए कृष्ण को छोड़कर अन्य को कोई खोजेगा क्या ? **3611**
शॅल्ल उणरन्दवर्⋆ शॅल्वन् तन् शीर् अऩ्ऱि क्कर्परो⋆ एल्लैयिलाद पॅरुम् तवत्ताल्⋆ पल शॅय् मिऱै⋆ अल्लल् अमररै च्चॅय्युम्⋆ इरणियन् आगत्तै⋆ मल्लल् अरियुरुवाय्⋆ च्चॅय्द मायम् अऱिन्दुमे॥८॥	अपनी तपस्या के बल से असुरों के राजा हिरण्य ने देवों को पीड़ा पहंचाई। नरसिंह के रूप में आकर प्रभु ने आश्चर्यमय पराक्रम दिखाया। इससे अवगत होकर जानकार लोग प्रभु के नाम के सिवा अन्य का नाम सीखेंगे क्या ? **3612**
मायम् अऱिबवर्⋆ मायवर्काॅळ् अऩ्ऱियावरो⋆ तायम् शॅरुम् ऑरु नूट्वर् मङ्ग⋆ ओर् ऐवर्क्काय्⋆ तेशम् अऱिय ओर् शारदियाय् च्चॅन्ऱु⋆ शेनैयै नाशम् शॅय्दिट्टु⋆ नडन्द नल् वार्त्तै अऱिन्दुमे॥९॥	संसार से वर्णित घोर युद्ध में रथ चलाकर जुआ से छल करने वाले सौ जनों का प्रभु ने नाशकिया तथा पांचों को विजयश्री दिलवाई। इससे अवगत होकर प्रभु को छोड़कर अन्य की कोई खोज करेगा क्या ? **3613**
वार्त्तै अऱिबवर्⋆ मायवर्काॅळ् अऩ्ऱियावरो⋆ पोर्त्त पिऱप्पॊडु नोयोडु मूप्पॊडु⋆ इऱप्पिवै पेर्त्तु⋆ पॅरुम् तुन्पम् वेरऱ नीक्कि⋆ त्तन् ताळिन् कीळ् शेर्त्तु⋆ अवन् शॅय्युम्⋆ शेमत्तै एण्णि त्तॅळिवुट्रे॥१०॥	माया जनित कष्ट जन्म रोग बुढ़ापा तथा मृत्यु से जड़ से छुटकारा दिला कर हम सबों को आप अपने चरणारविंद में शरण देते हैं। इससे अवगत होकर कोई भी विचारवान प्रभु का भक्त नहीं बनेगा क्या ? **3614**

‡तॅळिवुट्ट वीविन्ऱि⋆ निन्ऱवर्क्किन्ब क्कति शॅय्युम्⋆ तॅळिवुट्ट् कण्णनै⋆ तॅन् कुरुगूर् च्चडगोपन् शॉल्⋆ तॅळिवुट्ट् आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुम् वल्लार् अवर्⋆ तॅळिवुट्ट् शिन्दैयर्⋆ पा मरु मूवुलगत्तुळ्ळे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के सरस हजार पद का यह दशक कृष्ण की प्रशस्ति है जो खड़े होकर पूजा करने वाले अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करते हैं।इसे याद करने वाले शुद्ध विचार से युक्त हो जायेंगे। **3615** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

66 पा मरू मूवुलगुम् (3616 - 3626)

एम्बेरूमानदु गुणम् अऴगु मुदलियवट्रिल् आऴवार् ईडुपट्टु अवनै क्काणुमारू मनम् उरूगि अऴैत्तल्

‡पा मरु मूवुलगुम् पडैत्त⋆ पर्पनाबावो⋆ पामरु मूवुलगुम् अळन्द⋆ पर्प पादावो⋆ तामरै क्कण्णावो !⋆ तनियेन् तनियाळावो⋆ तामरै क्कैयावो !⋆ उन्नै एन्रुगॊल् शार्वदुवे॥१॥	विश्व की रचना करने वाला महान नाभि कमल ! पृथ्वी को मापने वाला महान चरणारविंद ! राजीवनयन प्रभु इस भूले जीव के संरक्षक ! कमल समान हाथ वाले प्रभु ! कब हम आपके पास होंगे ? 3616
एन्रुगॊल् शेर्वदन्दो⋆ अरन् नान्मुगन् एत्तुम्⋆ शॆय्य निन् तिरुप्पादत्तै⋆ यान् निलम् नीर् एरि काल्⋆ विण्णुयिर् एन्रिवै ताम् मुदला⋆ मुट्रुमाय् निन्र एन्दायो⋆ कुन्रॆडुत्तानिरै मेय्त्तु⋆ अवै कात्त एम् कूत्तावो॥२॥	हाय! शिव एवं ब्रह्मा से पूजित आपके चरणारविंद से कब हम जुड़ेंगे ? पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाश के रूप में स्थित प्रभु ! गायों को पर्वत के नीचे संरक्षण देनेवाले नर्तक प्रभु! 3617
कात्त एम् कूत्तावो !⋆ मलैयेन्दि क्कन्मारि तन्नै⋆ पूत्तण् तुळाय् मुडियाय् !⋆ पुनै कॊन्रैयञ्जॆञ्जडैयाय्⋆ वाय्त्त एन् नान्मुगने !⋆ वन्दॆन् आरुयिर् नीयानाल्⋆ एत्तरुम् कीर्त्तियिनाय् !⋆ उन्नै एङ्गु त्तलैप्पॆय्वने॥३॥	शीतल तुलसी के मुकुट वाले प्रभु! कोनरै फूल वाले शिव प्रभु, चतुरानन ब्रह्मा प्रभु, एवं प्रशस्ति योग्य नाम वाले प्रभु ! पर्वत उठाकर आपने तूफान को रोक दिया। अगर सच में आप हमारे जीवात्मा की आत्मा हैं, तो विनती है, कब आपसे साक्षात्कार होगा ? 3618
एङ्गु त्तलैप्पॆय्वन् नान्⋆ एळिल् मूवुलगुम् नीये⋆ अङ्गुयर् मुक्कण् पिरान्⋆ पिरमन् पॆरुमान् अवन् नी⋆ वॆङ्गदिर् वच्चिर क्कै⋆ इन्दिरन् मुदला त्तॆय्वम् नी⋆ कॊङ्गलर् तण्णन् तुळाय् मुडि⋆ एन्नुडै क्कोवलने ! ॥४॥	मधु टपकते शीतल तुलसी की माला पहने हमारे गोपाल ! आप तीनों लोक हैं। त्रिनेत्र शिव आप हैं। चतुरानन ब्रह्मा भी आप हीं है। वज्रधारी इन्द्र एवं अन्य देव भी आप ही हैं। कहां आपसे साक्षात्कार होगा ? 3619
एन्नुडै क्कोवलने !⋆ एन् पॊल्ला क्करु माणिक्कमे⋆ उन्नुडै उन्दि मलर्⋆ उलगम् अवै मून्रुम् परन्दु⋆ उन्नुडै च्चोदि वॆळ्ळत्तगम्बाल्⋆ उन्नै क्कण्डु कॊण्डिट्टु⋆ एन्नुडै आरुयिरार्⋆ एङ्ङनेगॊल् वन्दॆय्दुवरे॥५॥	मेरे गोपाल, मेरे नैसर्गिक श्याम मणि ! आपके नाभि कमल में तीनों लोक स्थित है। आपके तेजोमय आभा के बीच यह जीव कैसे आपको देख कर प्राप्त कर सकेगा ? 3620

<table>
<tr><td>वन्दॆय्दु माररियेन्⋆ मल्गु नील च्चुडर् तळैप्प⋆
शॆञ्जुडर् च्चोदिगळ् पूत्तु⋆ ऑरु माणिक्कम् शॆर्वदु पोल्⋆
अन्दरमेल् शॆम्पट्टोडु⋆ अडि उन्दि कै मार्वु कण् वाय्⋆
शॆञ्जुडर् च्चोदि विडवुरै⋆ एन् तिरुमार्बनैये॥६॥</td><td>मुझे नहीं पता, आपके वक्षस्थल पर लक्ष्मी के साथ आपको कैसे देखें ? नीले प्रकाश की बाढ़ विखेरते आप तेजोमय मणि के समान दिखते हैं। आपके चरण एवं हाथ, होंठ एवं नयन, छाती एवं नाभि, सर्वत्र चमकते लाल ज्योति की तरह दिखते हैं। 3621</td></tr>
<tr><td>एन् तिरुमार्बन् तन्नै⋆ एन् मलैमगळ् कूरन् तन्नै⋆
एन्रुम् एन् नामगळै⋆ अगम्बाल् कॊण्ड नान्मुगनै⋆
निन्र् शशिपदियै⋆ निलम् कीण्डॆयिल् मून्रॆरित्त⋆
वॆन्रु पुलम् तुरन्द⋆ विशुम्बाळियै क्काणेनो॥७॥</td><td>वक्षस्थल पर लक्ष्मी के साथ हमारे प्रभु, आधे अंग पर पार्वती के साथ के प्रभु हैं, अपने मुखड़े पर सरस्वती के प्रभु हैं एवं इन्द्राणी के प्रभु हैं। आपने पृथ्वी को उठाया, तीन नगर को जलाया, तथा इन्द्रियों को शमित करते हुए स्वर्गिकों के लोक पर शासन करते हैं। हाय ! आप को मैं देख नहीं पाती ? 3622</td></tr>
<tr><td>आळियै क्काण् परियाय्⋆ अरि काण् नरियाय्⋆ अरक्कर्
ऊळै इट्टन्रिलङ्गै कडन्दु⋆ पिलम् पुक्कॊळिप्प⋆
मीळियम् पुळ्ळैक्कडाय्⋆ विरल् मालियै क्कॊन्रु⋆ पिन्नुम्
आळुयर् कुन्रङ्गळ् शॆय्दु⋆ अडर्त्तानैयुम् काण्डुङ्गॊलो॥८॥</td><td>डरावने मुनष्य की आकृति वाले के सामने घोड़ा, सिंह के सामने लोमड़ी की जो स्थिति होती है वैसे हीं असुरगन अपना स्थल छोड़कर छिप गये जब गरूड़ पर सवार प्रभु ने भयानक माली का वध किया एवं शवों का पहाड़ जमा कर दिया। क्या हमलोग भी आपका दर्शन नहीं कर सकते ? 3623</td></tr>
<tr><td>काण्डुङ्गॊलो नॆञ्जमे !⋆ कडिय विनैये मुयलुम्⋆
आण् तिरल् मीळि मॊय्म्बिल्⋆ अरक्कर् कुलत्तै त्तडिन्दु⋆
मीण्डुम् अवन् तम्बिक्के⋆ विरि नीर् इलङ्गैयरुळि⋆
आण्डु तन् शोदि पुक्क⋆ अमरर् अरियेट्रिनैये॥९॥</td><td>हे हृदय ! क्या हम लोग भी आपका दर्शन कर सकते हैं ? आपने शक्तिशाली एवं दुष्ट राक्षसकुल का नाश किया तथा राज्य छोटे भाई को सौंप दिया। देवों के बीच केशरी की तरह आपने स्वयं गौरवपूर्ण शासन किया। 3624</td></tr>
<tr><td>एट्रुम् वैगुन्दत्तै⋆ अरुळुम् नमक्कु⋆ आयर् कुलत्तु
ईट्रिळम् पिळ्ळै ऑन्राय् प्पुक्कु⋆ मायङ्गळे इयट्रि⋆
कूट्रियल् कञ्जनै क्कॊन्रु⋆ ऐवर्क्काय् कॊडुम् शेनै तडिन्दु⋆
आट्रल् मिक्कान् पॆरिय⋆ परञ्जोदि पुक्क अरिये॥१०॥</td><td>गोपकुल में जन्मलेकर आपने अनेकों विस्मयकारी कृत्य किया ः कंस का वध, पांडवों के साथ मित्रता, एवं सेना का नाश। हरि ! श्रेष्ठ धैर्य से युक्त आप अपनी करूणा से हमें वैकुंठ का अमूल्य आरोहण प्रदान करेंगे। 3625</td></tr>
<tr><td>‡पुक्क अरियुरुवाय्⋆ अवुणन् उडल् कीण्डुगन्द⋆
चक्कर च्चॆल्वन् तन्नै⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆
मिक्क ओर् आयिरत्तुळ्⋆ इवैपत्तुम् वल्लार् अवरै⋆
तॊक्कु प्पल्लाण्डिशैत्तु⋆ क्कवरि शॆय्वर् एळैयरे॥११॥</td><td>3626

नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्</td></tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

67 एऴैयर् आवि (3627 - 3637)

एम्बेरूमानदु पेरऴगै उरूवेळि त्तोद्रित्तल् कण्डु तलैवि वरून्दि उरैत्तल्

नायकी भाव में सखियों से वार्ता

<table>
<tr><td>‡एऴैयर् आवियुण्णुम्⋆ इणै क्कूट्ट्ङ्गॊलो अऱियेन्⋆
आळियम् कण्ण पिरान्⋆ तिरुक्कण्गळ्गॊलो अऱियेन्⋆
शूळवुम् तामरै नाण्मलर् पोल्⋆ वन्दु तोन्ऱुम् कण्डीर्⋆
तोळियर्गाळ् ! अन्नैमीर् !⋆ एन् शैय्गेन् तुयराट्टियेने ॥१॥</td><td>नारियों के प्राण हरने वाले क्या वे दोनों यमदूत हैं या सागर सा सलोने प्रभु की सुन्दर आंखें हैं ? मुझे नहीं पता वे क्या हैं ? नूतन कमल के फूल की तरह वे सर्वत्र दिखते हैं। ओह ! देखो, पापिनी मैं ! सखी ! सजनी ! मै क्या करूं ? **3627**</td></tr>
<tr><td>आट्टियुम् तूट्रियुम् निन्ऱु⋆ अन्नैमीर् एन्नै नीर् नलिन्दॆन्⋆
माट्टुयर् कर्पगत्तिन्⋆ वल्लियो कॊळुन्दो अऱियेन्⋆
ईट्टिय वॆण्णॆय् उण्डान्⋆ तिरुमूक्कॆनदावियुळ्ळे⋆
माट्टिय वल् विळक्किन्⋆ शुडराय् निर्कुम् वालियदे ॥२॥</td><td>सजनी ! घूंसे एवं गालियों से मुझे दंड देने से क्या लाभ ? क्या यह कोई लता है या कल्प लता का धड़ है ? मुझे नहीं पता।चोर प्रभु की सुन्दर नाक हमारे हृदय में गड़ गयी है जैसे कि प्रकाशित दीप चेन से लटक रहा हो। **3628**</td></tr>
<tr><td>वालियदोर् कनिगॊल्⋆ विनैयाट्टियेन् वल्विनैगॊल्⋆
कोलम् तिरळ् पवळ⋆ क्कॊळुम् तुण्डङ्गॊलो अऱियेन्⋆
नील नॆडु मुगिल् पोल्⋆ तिरुमेनि अम्मान् तॊण्डैवाय्⋆
एलुम् तिशैयुळ् एल्लाम्⋆ वन्दु तोन्ऱुम् एन् इन्नुयिरक्के ॥३॥</td><td>क्या यह सुन्दर बेर का फल है, हमारी दुष्टात्मा का पाप, या मूंगे की सुन्दर शाखा है ? श्यामल प्रभु के दिव्य होंठ, हमारी आत्मा को प्रिय, हमें सर्वत्र दिखते हैं। **3629**</td></tr>
<tr><td>इन्नुयिरक्केऴैयर् मेल्⋆ वळैयुम् इणै नील विऱ्कॊल्⋆
मन्निय शीर् मदनन्⋆ करुप्पु च्चिलैगॊल्⋆ मदनन्
तन्नुयिर् त्तादै⋆ कण्ण पॆरुमान् पुरुवम् अवैये⋆
एन्नुयिर् मेलनवाय्⋆ अडुगिन्ऱन एन्ऱुम् निन्ऱे ॥४॥</td><td>किशोरियों पर संधानित प्रेम के देवता मदन का क्या यह सुन्दर श्याम धनुष है ? हाय ! मदन के पिता हमारे कृष्ण की भौंहें सर्वत्र दिखती हुई हमारी जान लेने वाली है। **3630**</td></tr>
<tr><td>एन्ऱुम् निन्ऱे तिगळुम्⋆ शॆय्य ईन् शुडर् वॆण् मिन्नुक्कॊल्⋆
अन्ऱि एन्नावियडुम्⋆ अणि मुत्तङ्गॊलो अऱियेन्⋆
कुन्ऱम् एडुत्त पिरान्⋆ मुऱुवल् एनदावियडुम्⋆
ऒन्ऱुम् अऱिगिन्ऱिलेन्⋆ अन्नैमीर् ! एनक्कुय्विडमे ॥५॥</td><td>क्या यह तड़ित की चमक आग को प्रज्वलित कर हमारी आत्मा को जलायेगी या मोती की सुन्दर लड़ियां हैं ? मुझे नहीं पता।पर्वत को उठाने वाले प्रभु की आभापूर्ण मुस्कान हमारी जान लेने वाली है। हाय ! सजनी ! कहां भाग जाऊं मुझे नहीं पता। **3631**</td></tr>
</table>

उय्विडम् एळैयरक्कुम्⋆ अशुररक्कुम् अरक्कर्गट्कुम्⋆ एव्विडम् एन्रिलङ्गि⋆ मगरम् तळैक्कुम् तळिरकॊल्⋆ पै विड प्पाम्बणैयान्⋆ तिरु क्कुण्डल क्कादुगळे⋆ कैविडल् ऒन्रुम् इन्रि⋆ अडुगिन्रन काण्मिन्गाळे॥६॥	मकर मछली को झुलाते क्या ये फूल की टहनी हैं ? जिससे असुर एवं किशोरियां भयग्रस्त होकर पूछते हैं 'कहां ?' सजनी ! देखो फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु के आभूषित कान निष्ठुर की तरह हमारी जान लेने वाले हैं। **3632**
काण्मिन्गाळ् अन्नैयर्काळ्⋆ ! एन्रु काट्टुम् वगैयरियेन्⋆ नाण्मन्नु वॆण् तिङ्गळ्गॊल् !⋆ नयन्दार्गट्कु नच्चिलैगॊल्⋆ शेण् मन्नु नाल् तडम् तोळ्⋆ पॆरुमान् तन् तिरु नुदले⋆ कोळ् मन्नि आवियडुम्⋆ कॊडियेन् उयिर् कोळ् इळैत्ते॥७॥	सजनी ! मुझे नहीं पता कैसे इसे मैं दिखाऊं ? परंतु देखो। क्या यह वृद्धि को प्राप्त होने वाला आधा चंद्र है ? हाय ! प्रेमियों के लिये कोई विष है क्या? प्रभु के चारों हाथ के साथ उनका ललाट निष्ठुरता से हमारी जान लेने वाला है। **3633**
कोळ् इळै तामरैयुम्⋆ कॊडियुम् पवळमुम् विल्लुम्⋆ कोळ् इळै त्तण् मुत्तमुम्⋆ तळिरुम् कुळिर् वान् पिरैयुम्⋆ कोळ् इळैयावुडैय⋆ कॊळुम् शोदि वट्टङ्गॊल्⋆ कण्णन् कोळिळै वाळ् मुगमाय्⋆ क्कॊडियेन् उयिर् कॊळ्गिन्रदे॥८॥	कृष्ण का सुन्दर मुखड़ा हमारे मन में बस गया है ः आपकी कमल सी आंख, उठी हुई नाक, मूंगावत होंठ, धनुष के समान भौंहें, मोती सा दांत, आभूषित कान, एवं चंद्र चिह्नत ललाट, पूरा मुखमंडल ज्योतिमय पुंज की तरह दिखता है। **3634**
कॊळ्गिन्र कोळ् इरुळै⋆ च्चुगिरन्दिट्ट कॊळुम् शुरुळिन्⋆ उळ्कॊण्ड नील नन्नल् तळैगॊल्⋆ अन्रु मायन् कुळल्⋆ विळ्गिन्र पून्दण्डुळाय्⋆ विरै नार वन्दॆन् उयिरै⋆ कळ्गिन्रवाररियीर्⋆ अन्नैमीर् ! कळरा निट्रिर॥९॥	क्या वे तेजोमय सूर्य की किरणें हैं जो रात के अंधकार को सोख लिये हैं? नहीं, नूतन तुलसी से सुगंधित वे प्रभु की काली लटें हैं जो हमारे मन को मोह लिये हैं। हाय ! सजनी ! आप इसे समझे विना मुझे अपशब्द कहती हैं। **3635**
निट्रि मुट्रत्तुळ् एन्रु⋆ नॆरित्त कैयराय्⋆ एन्नै नीर् शुट्रियुम् शूळ्न्दुम्⋆ वैदिर् शुडर् च्चोदि मणि निरमाय्⋆ मुट्र इम्मूवुलगुम्⋆ विरिगिन्र शुडर् मुडिक्के⋆ ऒट्रुमै क्कॊण्डदुळ्ळम्⋆ अन्नैमीर् ! नशैयॆन् नुङ्गट्के॥१०॥	सजनी ! आप रूखरे हाथ के साथ चारों ओर से घेरकर हमें वरामदे में खड़े होने के लिये अपशब्द कहती हैं। मेरा हृदय मणि वर्ण के प्रभु पर लग गया है जिनकी आभा सर्वत्र विखर रही हैं। आप हमसे क्या चाहती हैं ? **3636**
कट्करिय पिरमन् शिवन्⋆ इन्दिरन् एन्रिवरक्कुम्⋆ कट्करिय कण्णनै⋆ क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न⋆ उट्कुडै आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् ऒरु पत्तुम् वल्लार्⋆ उट्कुडै वानवरोडु⋆ उडनाय् एन्रुम् मायारे॥११॥	शायद ही दृश्यमान कृष्ण की प्रशस्ति में कुरूगुर के शडगोपन के अतिप्रभावपूर्ण हजार पद का यह दशक याद करने वालों को सर्वदा के लिये स्वर्गिकों का लोक प्रदान करता है। **3637** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

68 माया ! वामनने ! (3638 - 3648)

एम्बेरूमानदु विचित्तिर विबुतियै क्कण्डु आळ्वार वियप्पुरूदल्

</td></tr>
<tr><td>माया ! वामनने ! ⋆ मदुशूदा ! नी अरुळाय्⋆
तीयाय् नीराय् निलनाय्⋆ विशुम्बाय् कालाय्⋆
तायाय् तन्दैयाय्⋆ मक्कळाय् मट्रुमाय् मुट्रुमाय्⋆
नीयाय् नी निन्रवारु⋆ इवै एन्न नियायङ्गळे ! ॥१॥</td><td>आश्चर्यमय प्रभु ! वामन, मधुसूदन, बताइये। आप ही धरा, जल, अग्नि, आकाश, एवं वायु हैं।आप ही माता, पिता, संतान, एवं संबंधी, तथा अन्य सभी हैं, तथा स्वयं भी हैं। क्या है यह सब ? 3638</td></tr>
<tr><td>अङ्गण् मलर् त्तण् तुळाय् मुडि⋆ अच्चुतने ! अरुळाय्⋆
तिङ्गळुम् ञायिरुमाय्⋆ च्चॅळुम् पल् शुडराय् इरुळाय्⋆
पॉङ्गु पॉलि मळैयाय्⋆ प्पुगळाय् पळियाय् प्पिन्नुम् नी
वॅङ्गण् वॅङ्कूट्रमुमाम्⋆ इवै एन्न विचित्तिरमे ! ॥२॥</td><td>तुलसी की माला पहने सुन्दर प्रभु ! अच्युत, कृपाकरके बताइये। आप ही चाद, सूर्य, तारागन, अंधकार, एवं गरजती वर्षा हैं।महान यश, कलंक, क्रूर आंखो वाले मृत्यु के देव यम भी आप ही हैं। क्या है यह सब आश्चर्य ? 3639</td></tr>
<tr><td>चित्तिर त्तेर् वलवा ! ⋆ तिरु च्चक्करत्ताय् ! अरुळाय्⋆
एत्तनैयोर् उगमुम्⋆ अवैयाय् अवट्रुळ् इयल्लुम्⋆
ऑत्त वॉण् पल् पॉरुळ्गाळ्⋆ उलप्पिल्लनवाय् वियवाय्⋆
वित्तगत्ताय् निट्रि नी⋆ इवै एन्न विडमङ्गळे ! ॥३॥</td><td>सुन्दर चक्रधारी प्रभु ! दक्ष रथी, कृपाकरके बताइये। अनेकों अनंत युग, एवं इनमे अनगिनत विभिन्न तरह की वस्तुएं, क्षणिक या क्षणिक नहीं, सब आप ही का विस्मयकारी स्वरूप है। क्या है यह सब शरारत ? 3640</td></tr>
<tr><td>कळ्ळविळ् तामरै क्कण्⋆ कण्णने ! एनक्कॉन्ररुळाय्⋆
उळ्ळदुम् इल्लदुमाय्⋆ उलप्पिल्लनवाय् वियवाय्⋆
वॅळ्ळ त्तडम् कडलुळ्⋆ विड नागणैमेल् मरुवि⋆
उळ्ळप्पल् योगुशॅय्दि⋆ इवै एन्न उपायङ्गळे ! ॥४॥</td><td>मधु टपकाते कमल समान आंखों वाले प्रभु ! कृपा करके उत्तर दीजिये। आप गहरे सागर में फनधारी शेष पर शयन करते हैं। क्या यह सब प्राणी या वस्तुयें स्थायी है या अस्थायी ? क्या है यह सब नियोजित कृत्य ? 3641</td></tr>
<tr><td>पाशङ्गळ् नीक्कि⋆ एन्नै उनक्के अर क्कॉण्डिट्टु⋆ नी
वाच मलर् त्तण् तुळाय् मुडि⋆ मायवने ! अरुळाय्⋆
कायमुम् शीवनुमाय्⋆ क्कळिवाय् प्पिरप्पाय् प्पिन्नुम् नी⋆
मायङ्गळ् शॅय्दु वैत्ति⋆ इवैयॅन्न मयक्कुगळे ! ॥५॥</td><td>सुगंधित एवं प्रस्फुटित तुलसी धारण करने वाले प्रभु ! कृपा करके बोलिये। आपने हमें हमारी इच्छाओं से मुक्त कर अपना बना लिया। वदन, सांस, जन्म, एवं मरण सब आप हैं। अनेकों विस्मयकारी कृतियां हैं आपकी। क्या है यह सब छल ? 3642</td></tr>
<tr><td>मयक्का ! वामनने ! ⋆ मदियाम् वण्णम् ऑन्ररुळाय्⋆
अयरप्पाय् त्तेट्रमुमाय्⋆ अळलाय् क्कुळिराय् वियवाय्⋆
वियप्पाय् वॅन्रिगळाय्⋆ विनैयाय् प्पयनाय् प्पिन्नुम् नी⋆
तुयक्काय् नी निन्रवारु⋆ इवै एन्न तुयरङ्गळे ! ॥६॥</td><td>हे छली वामन प्रभु ! कृपा करके बोलिये जिससे कि मैं समझ सकूं। ज्ञान एवं अज्ञान, शीत एवं ताप, आश्चर्य एवं सामान्य, जीत एवं हार, उपयोग एवं अनुपयोग, सब आप हैं। क्या है यह कष्टपूर्ण श्रम ? 3643</td></tr>
</table>

तुयरङ्गळ् शॆय्युम् कण्णा !⋆ शुडर् नीळ् मुडियाय् अरुळाय्⋆ तुयरम् शॆय् मानङ्गळाय्⋆ मदनागि उगवैगळाय्⋆ तुयरम् शॆय् कामङ्गळाय्⋆ त्तुलैयाय् निलैयाय् नडैयाय्⋆ तुयरङ्गळ् शॆय्दु वैत्ति⋆ इवैयॆन्न शुण्डायङ्गळे॥ ७ ॥	हे कठिनता ! हे ऊंचे मुकुट वाले हमारे कृष्ण ! कृपा करके बताइये। कष्टदायक अभिमान, स्वच्छंदता एवं प्रेम, कष्टदायक इच्छा, भारी एवं स्थिर तथा चलायमान, यह सब बनाकर आपने हमें पीड़ित किया। क्या है यह सब खेल ? **3644**
ऎन्न शुण्डायङ्गळाल्⋆ निन्ऱिट्टाय् ऎन्नै आळुम् कण्णा⋆ इन्नदोर् तन्मैयै ऎन्ऱु⋆ उन्नै यावर्क्कुम् तेट्ररियै⋆ मुन्निय मूवुलगुम्⋆ अवैयाय् अवट्रै प्पडैत्तु⋆ पिन्नुम् उळ्ळाय् ! पुऱत्ताय् !⋆ इवै ऎन्न इयर्कैगळे ! ॥ ८ ॥	हम पर शासन करने वाले कृष्ण ! कितनी चतुराई से आप भरे हुए हैं ! किसी के लिये आपका दर्शन कितना दुर्लभ है एवं आपके बारे में लोग बताते हैं 'यह' और 'वह'। आपने तीन लोक बनाकर वही हो गये। आप हमारे भीतर हैं और बाहर भी। क्या है यह सब रीति ? **3645**
ऎन्न इयर्कैगळाल्⋆ ऎङ्ङने निन्ऱिट्टाय् ऎन् कण्णा⋆ तुन्नु कर चरणम् मुदलाग⋆ ऎल्लावुरुप्पुम्⋆ उन्नु शुवैयॊळि⋆ ऊऱॊलि नाट्रम् मुट्रम् नीये⋆ उन्नै उणरवुऱिल्⋆ उलप्पिल्लै नुणुक्कङ्गळे॥ ९ ॥	हे मेरे कृष्ण ! आप हाथ पैर एवं सभी अंग हैं। स्वाद स्वरूप एवं स्पर्श हैं। शब्द एवं घ्राण भी आप ही हैं। जरा सोचिये, आपके सूक्ष्म स्वभाव का कोई अंत नहीं है। क्या है यह सब तथा कैसे ये सब स्थित हैं ? **3646**
इल्लै नुणुक्कङ्गळे⋆ इदनिल् पिऱिदॆन्नुम् वण्णम्⋆ तॊल्लै नन्नूलिल् शॊन्न⋆ उरुवुम् अरुवुम् नीये⋆ अल्लि त्तुळाय् अलङ्गल्⋆ अणि मार्ब ! ऎन् अच्चुतने⋆ वल्लदोर् वण्णम् शॊन्नाल्⋆ अदुवे उनक्काम् वण्णमे॥ १० ॥	वेद में वर्णित आप रूप वाले हैं तथा रूपविहीन हैं।सच्चाई से सूक्ष्म रूप में अपृथकशील हैं। वक्षस्थल पर तुलसी माला वाले हे मेरे अच्युत ! जिस रूप में आपका संदर्भ दिया जाता है आप सच में वही हैं। **3647**
‡आम् वण्णम् इन्नदॊन्ऱॆन्ऱु⋆ अऱिवदरिय अरियै⋆ आम् वण्णत्ताल्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन् अऱिन्दुरैत्त⋆ आम् वण्ण ऒण् तमिळाळ्⋆ इवै आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ आम् वण्णत्ताल् उरैप्पार्⋆ अमैन्दार् तमक्कॆन्ऱैक्कुमे॥ ११ ॥	कुरूगुर शडगोपन के धवल हजार गीतों का यह दशक उस प्रभु के बारे में है जो 'यह' एवं 'वह' से नहीं बताये जा सकते। इसे याद करने वाले हरि के भक्त हो जायेंगे। **3648** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

69 एन्ऱैक्कुम् (3649 - 3659)

इन्गवि पाडुम् पेट्रै एम्बेरूमान् तमक्कु अरूळियमैक्कु क्कैमारू इल्लै एनल्

3605 के अनुसार गीता की तरह तिरूवायमोळि प्रभु के श्रीमुख के शब्द एवं गीत हैं।

एन्ऱैक्कुम् एन्नै⋆ उय्यक्कॊण्डु पोगिय⋆ अन्ऱैक्कन्ऱैन्नै⋆ त्तन्नाक्कि एन्नाल् तन्नै⋆ इन् तमिळ् पाडिय ईशनै⋆ आदियाय् निन्ऱ एन् शोदियै⋆ एन् शॊल्लि निर्पनो॥१॥	तेजोमय मूल कारण प्रभु की प्रशस्ति हम कैसे गायेंगे ? दिन प्रति दिन आप हमं ऊंचा उठाते जा रहे हैं। प्रति दिन आप हमें अपनाते हैं एवं मेरे माध्यम से तमिल में गाथा गाते हैं। **3649**
एन् शॊल्लि निर्पन्⋆ एन् इन्नुयिरिन् ऑन्ऱाय्⋆ एन् शॊल्लाल् यान् शॊन्न⋆ इन्गवि एन्बित्तु⋆ तन् शॊल्लाल् तान् तन्नै⋆ क्कीर्त्तित्त मायन्⋆ एन् मुन् शॊल्लुम्⋆ मूवुरुवाम् मुदल्वने॥२॥	आज हमारी प्रिय आत्मा को आपने गण्यमान्य बना दिया है यानी गौरवशाली बना दिया है। लग रहा था कि हम अपने शब्दों से गा रहे हैं परंतु आपही अपने शब्दों में प्रशस्ति गाये हैं। कितनी विस्मयकारी बात है ? **3650**
आम् मुदल्वन् इवन् एन्ऱु⋆ तन् तेट्रि⋆ एन् ना मुदल् वन्दु पुगुन्दु⋆ नल्लिन् कवि⋆ तू मुदल् पत्तर्क्कु⋆ त्तान् तन्नै च्चॊन्न⋆ एन् वाय् मुदल् अप्पनै⋆ एन्ऱु मऱप्पनो॥३॥	आप हमारी वाणी में प्रवेश कर गये एवं हमें आपके प्रति कृतज्ञ बना दिया। शुद्ध भक्तों की आवाज में आप अपनी प्रशस्ति स्वयं गाते हैं।अपनी बात में कैसे मैं आदि कारण प्रभु को भूल सकता हूं ? **3651**
अप्पनै एन्ऱु मऱप्पन्⋆ एन्नागिये⋆ तप्पुदल् इन्ऱि⋆ त्तनै क्कवि तान् शॊल्लि⋆ ऑप्पिला त्तीविनैयेनै⋆ उय्यक्कॊण्डु⋆ शेप्पमे शेय्दु⋆ तिरिगिन्ऱ शीर् कण्डे॥४॥	क्या मैं अपने पिता को भूल सकता हूं जिन्होंने मेरी वाणी में स्वयं अपनी प्रशस्ति गाई है ? आपने हमें हमारे आदिरहित कर्म से मुक्त कर दिया। हमारी कुशलता को स्थापित करने के लिये आप घूमते रहते हैं। **3652**
शीर् कण्डु कॊण्डु⋆ तिरुन्दु नल्लिन् कवि⋆ नेर्पड यान् शॊल्लुम्⋆ नीर्मै इलामैयिल्⋆ एर्विला एन्नै⋆ त्तन्नाक्कि एन्नाल् तन्नै⋆ पार् परवु इन् कवि⋆ पाडुम् परमरे॥५॥	आपने मुझे अपना बना लिया तथा मेरे द्वारा आपने ही मधुर पदों को गाया जिसकी प्रशंसा सारा संसार करता है।मैं तो केवल शब्द बोल रहा था उसमें सार तो आप भर रहे थे। **3653**
इन् कवि पाडुम्⋆ परम कविगळाल्⋆ तन् कवि तान् तन्नै⋆ पाडुवियादिन्ऱु⋆ नन्गु वन्दॆन्नुडन् आक्कि⋆ एन्नाल् तन्नै⋆ वन् कवि पाडुम्⋆ एन् वैगुन्द नादने॥६॥	हमारे वैकुंठ नाथ ने हमारे साथ मिश्रित हो जाना पसंद किया एवं अपनी प्रशस्ति गाये। आपने सुयोग्य एवं प्रसिद्ध कवि को इस कार्य के लिये नहीं चुना। **3654**

वैगुन्द नादन् एन् वल्विनै मायन्दर् श्शॅय् कुन्दन् तन्नै एन्नाक्कि एन्नाल् तन्नै वैगुन्दन् आग प्पुगळ वण् तीङ्गवि शॅय् कुन्दन् तन्नै एन्नाळ् शिन्दित्तार्वनो॥७॥	हमारे कर्म का क्षय करने वाले प्रभु को कब हम जी भर कर जान सकेगे ? आप ने हमें अपना बना लिया एवं मेरी वाणी से वैकुंठ की प्रशस्ति स्वयं आप गाये। **3655**
आर्वनो आळियङ्गै एम्पिरान् पुगळ् पार् विण् नीर् मुट्टम् कलन्दु परुगिलुम् एर्विला एन्नै तन्नाक्कि एन्नाल् तन्नै शीर्पॅर इन् कवि शॅान्न तिरत्तुक्के॥८॥	चक्रधारी प्रभु ने हमें अपना बना लिया एवं हमें योग्यता देकर स्वयं का मधुर गीत गाये। यद्यपि कि हम सारी धरती को मिश्रित कर पी जायें क्या यह आपकी गाथा गाने की हमारी प्यास को मिटा पायेगा ? **3656**
तिरत्तुक्के तुप्पुरवाम् तिरुमालिन् शीर् इरप्पॅदिर् कालम् परुगिलुम् आर्वनो मरप्पिला एन्नै तन्नाक्कि एन्नाल् तन्नै उरप्पल इन् कवि शॅान्न उदविक्के॥९।	यद्यपि कि हम भूत एवं भविष्य से पेय पीते रहें क्या यह आपकी गाथा गाने की हमारी प्यास को मिटा पायेगा ? आपने मेरे जैसा बुद्धिहीन को अपना बना लिया तथा मेरी जीभ से आपने स्वयं अपनी विस्मयकारी गीत गाया। **3657**
उदवि क्कैम्मारु एन्नुयिर् एन्न उट्रॅण्णिल् अदुवुम् मट्राङ्गवन् तन्नदॅन्नाल् तन्नै पदविय इन् कवि पाडिय अप्पनुक्कु एदुवुम् ऑन्रुम् इल्लै शॅय्वदिङ्गुम् अङ्गे॥१०॥	मेरी जीभ से गाने की सहायता के लिये मैं आपको क्या पारितोषिक दे सकता हूं ? आपकी प्रशस्ति के पद इतने प्रभावी एवं मुग्धकारी हैं कि इस कोटि की रचना इस लोक या दूसरे लोक में नहीं पायी जा सकती।**3658**
इङ्गुम् अङ्गुम् तिरुमाल् अन्रि इन्मै कण्डु अङ्गने वण् कुरुगूर् च्चडगोपन् इङ्गने शॅान्न ओर् आयिरत्तिप्पत्तुम् एङ्गने शॅाल्लिनुम् इन्बम् पयक्कुमे॥११॥	**3659** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

70 इन्बम् पयक्क (3660 - 3670)

तिरूवार्न्विळै शेन्रू एम्बुरूमानै क्कण्डु आऴ्वार अडिमै शेय्य क्करूदुदल्

इन्बम् पयक्क एऴिल् मलर् मादरुम्* तानुम् इव्वेऴ् उलगै* इन्बम् पयक्क इनिदुडन् वीट्रिरुन्दु* आऴिान्र् एङ्गळ् पिरान्* अन्बुट्रमर्न्दुरैगिन्र्* अणि पॊऴिल् शूऴ् तिरुवार्न् विळै* अन्बुट्रमर्न्दु वलम् शॆय्दु* कै तॊऴुम् नाळ्ाळुम् आगुङ्गॊलो॥१।	कब वह दिन आयेगा जब हम करबद्ध हो बागों से घिरे तिरूवारन्विलै में सुख से पद्मनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु की परिक्रमा करेंगे ? आप हमारे नाथ हैं एवं हम पर स्नेह वश शासन करते हैं तथा सातो लोक में आनंद का संचार करते हैं। **3660**
आगुङ्गॊल् ऐयम् ऑन्रिन्रि* अगल् इडम् मुट्रुम् ईर् अडिये* आगुम् परिशु निमिर्न्द* तिरुक्कुरळ् अप्पन् अमर्न्दुरैयुम्* मागम् तिगऴ् कॊडि माडङ्गळ् नीडु* मदिळ् तिरुवार्न् विळै* मा कन्द नीर् कॊण्डु तूवि वलञ्जॆय्दु* कै तॊऴ क्कूडुङ्गॊलो॥२॥	वामन रूप में आकर आप ऊंचे फैल गये। संदेह को दूर करते हुए फैलकर अपने दोनों चरणों से आपने धरा को मापा। आप तिरूवारन्विलै में रहते हैं जहां महलों के ध्वज आकाश चूमते हैं। करबद्ध हो ताजा जल से कब हम आपकी पूजा करेंगे ? **3661**
कूडुङ्गॊल् वैगलुम्* गोविन्दनै मदुशूदनै क्कोळरियै* आडुम् परवै मिशै क्कण्डु* कै तॊऴुदन्रि अवन् उरैयुम्* पाडुम् पॆरुम् पुगऴ् नान्मरै वेळ्वियैन्दु* आरङ्गम् पन्निनर् वाऴ्* नीडु पॊऴिल् तिरुवार्न् विळै तॊऴ* वाय्क्कुङ्गॊल् निच्चलुमे॥३॥	गरूड़ पर सवार होकर जाते देखने के बदले कब हम आपकी पूजा करेंगे ? आप बागों से घिरे तिरूवारन्विलै में स्थित गोविन्द मधुसूदन एवं नरहरि हैं जो चारो वेद पांच यज्ञ एवं छ आगम के लिये जाना जाता है। **3662**
वाय्क्कुङ्गॊल् निच्चलुम्* एप्पॊऴुदुम् मनत्तु ईङ्गु निनैक्कप्पॆर्* वाय्क्कुम् करुम्बुम् पॆरुञ्जॆन्नॆलुम्* वयल्शूऴ् तिरुवार्न् विळै* वाय्क्कुम् पॆरुम् पुगऴ् मूवुलगीशन्* वड मदुरै प्पिरन्द* वाय्क्कुम् मणि निर क्कण्ण पिरान् तन्* मलरडि प्पोदुगळे॥४॥	क्या कभी भी हम यहां से कृष्ण के चरणाविंद का चिरंतन ध्यान कर सकते हैं ? विश्व के गौरवशाली प्रभु मथुरा में जन्म लिये थे। आप गन्ना एवं धान से घिरे तिरूवारन्विलै में स्थित हैं। **3663**
मलरडिप्पोदुगळ् एन् नॆञ्जत्तॆ प्पॊऴुदुम्* इरुत्ति वणङ्ग* पलर् अडियार् मुन्बरुळिय* पाम्बणैयप्पन् अमर्न्दुरैयुम्* मलरिल् मणि नॆडु माडङ्गळ् नीडु* मदिळ् तिरुवार्न् विळै* उलगम् मलि पुगऴ् पाड* नम्मेल् विनै ऑन्रुम् निल्ला कॆडुमे॥५॥	आपके चरणकमल का ध्यान एवं पूजा करते हुए सदा के लिये अगर हम आपकी सीमारहित प्रशस्ति गायें तो हमारे कर्म का क्षय हो जायेगा। आप महलों की ऊंची दीवारों से घिरे तिरूवारन्विलै में हैं जो पुराकाल के महान भक्तों का साक्षी मित्र है। **3664**
ऑन्रुम् निल्ला कॆडुम् मुट्रुम्* तीविनै उळ्ळित्तॊऴुमिन् तॊण्डीर्* अन्रङ्गमर् वॆन्रुरुप्पिणि नङ्गै* अणि नॆडुम् तोळ् पुणर्न्दान्* एन्रुम् एप्पोदुम् एन् नॆञ्जम् तुदिप्प* उळ्ळे इरुक्किन्र् पिरान्* निन्र् अणि तिरुवार्न् विळैयॆन्नुम्* नीळ् नगरम् अदुवे॥६॥	भक्तों ! अगर हम आपके स्वरूप का ध्यान करें तो हमारे कर्म का क्षय हो जायेगा। मेरे हृदय से प्रशंसित आप सर्वदा हमारे भीतर हैं। अपनी रूक्मिणी से व्याह के लिये आपने युद्ध जीता। आप महान प्रसिद्धि वाले तिरूवारन्विलै में स्थित हैं। **3665**

नीळ् नगरम् अदुवे मलर् च्चोलैगळ् शूळ्⋆ तिरुवारन् विळै⋆ नीळ् नगरत्तुरैगिन्र पिरान्⋆ नेंडुमाल् कण्णन् विण्णवर् कोन्⋆ वाण पुरम् पुक्कु मुक्कण् पिरानै तोंलैय⋆ वेंम् पोर्गळ् शेंय्दु⋆ वाणनै आयिरम् तोळ् तुणित्तान्⋆ शरण् अन्रि मट्रोंन्रिल्लमे ॥७॥	तिरूवारन्विलै नगर बागों से घिरा है। आप वहां स्वर्गिकों के नाथ कृष्ण के रूप में रहते हैं।पुराकाल में आप बाणासुर की किला में घुस कर उस असुर के हजारों भुजाओं को काट दिया जबकि शिव भाग गये। आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं। **3666**
अन्रि मट्रोंन्रिल्लम् निन् शरणे एन्रु⋆ अगल् इरुम् पोंय्गैयिन्वाय्⋆ निन्रु तन्नीळ् कळल् एत्तिय⋆ आनैयिन् नेंञ्जिडर् तीर्त्त पिरान्⋆ शेंन्रङ्गिनिदुरैगिन्र⋆ शेंळुम् पोंळिल् शूळ् तिरुवारन् विळै⋆ ऑन्रि वलञ्जेंय्य ऑन्रुमो⋆ तीविनै उळ्ळत्तिन् शार्वल्लवे ॥८॥	गहरे जल में खड़ा हाथी ने सूढ़ उठाकर पुकारा 'कृष्ण आपके अतिरिक्त हमारा कोई आश्रय नहीं है।' प्रभु ने उसकी आपदा को तब समाप्त कर दिया। आप तिरूवारन्विलै में रहते हैं। अगर हम परिकमा से आपकी पूजा करें तो हमारे सारे कर्मों का क्षय हो जायेगा। **3667**
तीविनै उळ्ळत्तिन् शार्वल्लवागि⋆ त्तेंळि विशुम्बेरलुट्राल्⋆ नाविनुळ्ळुम् उळ्ळ त्तुळ्ळुम्⋆ अमैन्द तोंळिलिनुळ्ळुम् नविन्रु⋆ यावरुम् वन्दु वणङ्गुम् पोंळिल्⋆ तिरुवारन् विळै अदनै⋆ मेवि वलञ्जेंय्दु कै तोंळ क्कूडुङ्गोंल्⋆ एन्नुम् एन् शिन्दनैये ॥९॥	यद्यपि हमारे कर्म का क्षय हो जाये और हम स्वर्ग चले जायें हमारा मन कहेगा 'कब हम आपकी पूजा कर प्रशस्ति गायेंगे ?' उचित कर्म सुयोग्य हृदय एवं सुन्दर शब्दों के साथ कब हम तिरूवारन्विलै में परिकमा करेंगे ? **3668**
शिन्दै मट्रोंन्रिन् तिरत्तदल्ला त्तन्मै⋆ देव पिरान् अरियुम्⋆ शिन्दैयिनाल् शेंय्व तान् अरियादन⋆ मायङ्गळ् ऑन्रुम् इल्लै⋆ शिन्दैयिनाल् शोंल्लिनाल् शेंय्कैयाल्⋆ निल त्तेवर् कुळु वणङ्गुम्⋆ शिन्दै मगिळ् तिरुवारन् विळैयुरै⋆ तीर्त्तनुक्कट्र पिन्ने ॥१०॥	हमने तिरूवारन्विलै के प्रभु के प्रति समर्पण कर दिया है जहां भक्तगन मन वचन कर्म से आपकी पूजा करते हैं। देवपिरान प्रभु हमारे अन्तःमन को जानते हैं।आप जानते हैं कि मेरे पास कोई अन्य छिपी हुई इच्छा नहीं है।**3669**
तीर्त्तनुक्कट्र पिन्⋆ मट्रोर् शरण् इल्लै एन्रेंण्णि⋆ तीर्त्तनुक्के तीर्त्त मनत्तनन् आगि⋆ श्शेंळुङ्गुरुगूर् च्चडगोपन् शोंन्न⋆ तीर्त्तङ्गळ् आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तुम् वल्लार्गळै⋆ देवर् वैगल् तीर्त्तङ्गळे एन्रु पूशित्तु नल्गि उरैप्पर्⋆ तम् देवियर्क्के ॥११॥	संत हृदय कुरूगुर शडगोपन के पावन हजार पद का यह दशक पवित्रात्मा के चरण में समर्पित है। इसे याद करने से स्वर्गिकों एवं उनकी पत्नी की पूजा सुलभता से मिल जाती है। **3670** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

71 देविमारावार (3671 – 3681)

एम्बेरूमानदु अडियार वाशमागुम् निलैयैयुम् यावैयुम् तानागुम् निलैयैयुम् आळ्वार शङ्गित्तु त्तेळिदल्

देविमार् आवार् तिरुमगळ् बूमि॰ एव मट्मरर् आट्शेय्वार्॰ मेविय उलगम् मून्रवै आट्चि॰ वेण्डु वेण्डुरुवम् निन् उरुवम्॰ पावियेन् तन्नै अडुगिन्र कमलक्कण्णदोर्॰ पवळ वाय् मणिये॰ आवियें ! अमुदे ! अलै कडल् कडैन्द अप्पने काणुमार्रुळाय्॥१॥	आपकी प्रिया श्री देवी एवं भू देवी के निदेश पर सभी स्वर्गिक जन सेवारत रहते हैं। तीनो लोक आपका क्रीड़ा स्थल है। जो स्वरूप आप चाहते हैं धारण करते हैं। मणि समान वर्ण, कमल समान आंख, एवं मूंगा समान होठ वाले प्रभु ! हमारी आत्मा के अमृत ! सागर मंथन करने वाले प्रभु ! हमारी द्दष्टि को शुद्ध कीजिये। **3671**
काणुमार्रुळाय् एन्रेन्रे कलङ्गि॰ क्कण्ण नीर् अलमर॰ विनैयेन् पेणुमार्ल्लाम् पेणि॰ निन् पेयरे पिदट्मार्रुळ् एनक्कन्दो॰ काणुमार्रुळाय् कागुत्ता ! कण्णा !॰ तोण्डनेन् कर्पग क्कनिये॰ पेणुवार् अमुदे ! पेरिय तण् पुनल् शूळ्॰ पेरुनिलम् एडुत्त पेराळा ! ॥२॥	हमारी एकमात्र इच्छा आपका दर्शन है। हाय ! हमारी आंखे आंसू से भरी हैं। सब तरह से आप हमें प्रेम करने दीजिये तथा आपका नाम का गान करने दीजिये। हमें अपना दर्शन दीजिये। हे राम, कृष्ण, तथा कल्प फल ! जल से धरा को उठाने वाले प्रभु ! आप भक्तों के अमृत हैं। **3672**
एडुत्त पेराळन् नन्दगोपन् तन्॰ इन्नुयिर् च्चिरुवने॰ अशोदै- क्कडुत्त पेरिन्ब क्कुल विळङ्गळिरे॰ अडियनेन् पेरिय अम्माने॰ कडुत्त पोर् अवुणन् उडल् इरु पिळवा॰ क्कैयुगिर् आण्ड एङ्गडले॰ अडुत्तदोर् उरुवाय् इन्रु नी वाराय्॰ एङ्गनम् तेरुवर् उमरे॥३॥	प्रिय शिशु, प्रमुख नंदगोप के प्राणाधार, मनमोहक हस्तिशावक, यशोदा के आनंद,सागर समान गहरा प्रभु! आपने दुष्ट हिरण्य की चौड़ी छाती को पंजो से चीर दिया। आप नेता के स्वरूप में फिर आइये नहीं तो भक्तगन कैसे जीवित रह सकेंगे ? **3673**
उमर् उगन्दुगन्द उरुवम् निन् उरुवम् आगि॰ उन् तनक्कन्बर् आनार्॰ अवर् उगन्दमर्न्द शेय्गै उन् मायै॰ अरिवोन्रुम् शङ्गिप्पन् विनैयेन्॰ अमर् अदु पण्णि अगल् इडम् पुडै शूळ्॰ अडु पडै अवित्त अम्माने॰ अमरर् तम् अमुदे ! अशुरर्गळ् नञ्जे॰ एन्नुडै आर् उयिरेयो ! ॥४॥	घोर युद्ध में भयानक सेना को लड़ाने वाले प्रभु ! हे स्वर्गिकों के अमृत तथा असुरों के विष ! हमारी आत्मा के प्रिय ! तब हमें भी संदेह होने लगेगा कि जिस रूप में वे आपकी पूजा करते हैं आप भक्तों के सामने उसी रूप में प्रकट होते हैं एवं उनकी अर्चना स्वीकार करते हैं। **3674**
आर् उयिरेयो ! अगल् इडम् मुळुदुम्॰ पडैत्तिडन्दुण्डु उमिळ्न्दळन्द॰ पेर् उयिरेयो ! पेरिय नीर् पडैत्तु॰ अङ्गुरैन्दु कडैन्दडैत्तुडैत्त॰ शीरुयिरेयो ! मनिशर्क्कु त्तेवर् पोल॰ देवर्क्कुम् देवावो॰ ओर् उयिरेयो ! उलगङ्गट्कॆल्लाम्॰ उन्नै नान् एङ्गु वन्दुरुगो॥५॥	हे महान आत्मा ! आपने धरा को बनाया, उसे खा गये, पुनः बनाये, उठाया एवं मापा। हे गौरवशाली आत्मा ! आपने सागर बनाया, उसपर सोये, उसका मंथन किया, उसे दो भाग मे बांट दिया तथा उस पर सेतु बनाया।हे अधिआत्मा ! जिसतरह से देवतागन मनुष्यों के लिये हैं उसीतरह से आप देवतागन के लिये हैं। हे विश्व की आत्मा ! कहां मैं आकर आपसे मिलूं ? **3675**
एङ्गु वन्दुरुगो एन्नै आळ्वाने॰ एळ् उलगङ्गळुम् नीये॰ अङ्गवर्क्कमैत्त देय्वमुम् नीये॰ अवट्वै करुममुम् नीये॰ पोङ्गिय पुरम्बाल् पोरुळ् उळवेलुम्॰ अवैयुमो नी इन्ने आनाल्॰ मङ्गिय अरुवाम् नेरप्पमुम् नीये॰ वान् पुलम् इरन्ददुम् नीये॥६॥	आप स्वरूप रहित, आत्मासमूह, तथा जाग्रत स्वर्गिक हैं। आप सात लोक तथा उसके देवगन एवं उनके कृत्य हैं। अगर आकाश के आगे कुछ है तो आप हैं। मेरे प्रभु ! यहां से कहां जाकर आपसे मिलूं ? **3676**

इरन्ददुम् नीये एदिरन्ददुम् नीये* निगळ्वदो नी इन्नेयानाल्* शिरन्द निन् तन्मै अदुविदुवदुवॅन्रु* अरिवॉन्रुम् शङ्गिप्पन् विनैयेन्* करन्द पाल् नॅय्ये! नॅय्यिन् शुवैये!* कडलिनुळ् अमुदमे* अमुदिल् पिरन्द इन् शुवैये! शुवैयदु पयने!* पिन्नै तोळ् मणन्द पेराया! ॥७॥	बांस सा सुघड़ तथा कोमल बाहों वाली नप्पिनाय का आपने आलिंगन किया। ताजा दूध एवं ताजे मक्खन के समान मृदु प्रभु ! सागर के अमृत समान मधुर प्रभु ! हे भूत वर्तमान एवं भविष्य ! हाय ! हम यह संदेह करने लगेंगे कि आप ये सब हैं। **3677**
मणन्द पेराया! मायत्ताल् मुळुदुम्* वल्विनैयेनै ईर्गिन्र* गुणङ्गळै उडैयाय्! अशुरर् वन्गैयर् कूट्रमे!* कॉडिय पुळ्ळुयर्त्ताय्* पणङ्गळ् आयिरमुम् उडैय पैन्नाग प्पळ्ळियाय्!* पार्कडल् शेर्प्पा* वणङ्गुमारॅरियेन् मनमुम् वाशगमुम्* शॅय्गैयुम् यानुम् नी ताने॥८॥	विवाह के गौरवपूर्ण राजकुमार ! आप हमारे पापी हृदय को तोड़ते हैं। गरूड़ की सवारी कर असुरों को मृत्यु देने वाले प्रभु ! हजारफन के नाग पर सागर में शयन करने वाले प्रभु ! हमारे वचन कर्म तथा हम स्वयं आप ही हैं। मुझे नहीं पता आपकी कैसे पूजा करूं ? **3678**
यानुम् नी ताने आवदो मॅय्ये* अरु नरगवैयुम् नी आनाल्* वान् उयर् इन्बम् एय्दिलॅन्* मट्रै नरगमे एय्दिल् एन् एनिनुम्* यानुम् नी तानाय् तॅळिदॉरुम् नन्रुम् अञ्जुवन्* नरगम् नान् अडैदल्* वान् उयर् इन्बम् मन्नि वीट्रिरुन्दाय्* अरुळु निन् ताळ्गळै एनक्के॥९॥	अगर यह सच है कि आप ही हम हैं तथा स्वर्ग नरक भी आप ही हैं तो इसका क्या तात्पर्य कि सुखद स्वर्ग में जाओ या नरक में ? इसके बाद भी नरक की कल्पना हमें भयग्रस्त कर देती है। सुखद स्वर्ग में स्थित प्रभु कृपया अपने चरण से जोड़ लें। **3679**
ताळ्गळै एनक्के तलैत्तलै च्चिरप्प त्तन्द* पेर् उदवि क्कैम् मारा* त्तोळ्गळै आर त्तळुवि एन्नुयिरै* अर विलै शॅय्दनन् शोदी तोळ्गळ् आयिरत्ताय्! मुडिगळ् आयिरत्ताय्* तुणैमलर् क्कण्गळ् आयिरत्ताय्* ताळ्गळ् आयिरत्ताय्! पेर्गळ् आयिरत्ताय्* तमियनेन् पॅरिय अप्पने! ॥१०॥	हजार भुजायें, हजार सिर, हजार कमल सी आंखें, हजार चरण, एवं हजार नाम वाले तेजोमय प्रभु ! इस क्षुद्र को आपके चरण के उपहार के बदले आपको, मेरे पिता एवं नाथ, हम अपना जीवन समर्पित करते हैं तथा आपको अपने हृदय से लगाते हैं। **3680**
‡पॅरिय अप्पनै प्पिरमन् अप्पनै* उरुत्तिरन् अप्पनै* मुनिवर्- क्कुरिय अप्पनै अमरर् अप्पनै* उलगुक्कोर् तनि अप्पन् तन्नै* पॅरिय वण्कुरूगूर् वण्शडगोपन्* पेणिन आयिरत्तुळ्ळुम्* उरिय शॉल् मालै इवैयुम् पत्तिवट्राल्* उय्यलाम् तॉण्डीर्! नङ्गट्के॥११॥	महान कुरूगुर नगर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक प्रपितामह प्रभु की प्रशस्ति में है जो ब्रह्मा के पिता हैं, रूद्र के पिता हैं, चारण के पिता हैं, देवों के पिता हैं, एवं विश्व के एकमात्र पिता हैं। भक्तों ! इसे याद कर लो तुम भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हो। **3681** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

72 नङ्गळ् वरिवळै (3682 -3692)

तलैवनै नोक्कि च्चेल्लक्करूदिय तलैवि कुट्ट

सखियों से नायकी की वार्ता

मायक्कूत्तनः यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास नव तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपणी के उत्तर है। मूलावर यहां खड़े मुद्रा में 'पेरूंकुळम' या 'कुलन्दै' के नाम से जाने जाते हैं। उत्सव मूर्ति को कुलन्दै मायाकूत्तन कहते हैं। भगवान को यहां वेंकटवनन भी कहते हैं। भगवान एक बालिका को चुराने वाले असुर माया के सिर पर नाच कर उसका नाश किये थे इसे लिये इन्हें चोर नाट्यम तथा माया कूत्तन भी कहते हैं। माया यानी असुर एवं कूत्तन यानी नृत्य। (Refer Ramesh vol. 4, pp 45)

नङ्गळ् वरिवळैयाय् आयङ्गाळो⋆ नम्मुडै एदलर् मुन्बु नाणि⋆ नुङ्गट्कु यान् ऑन्ऱुरैक्कुम् माट्रम्⋆ नोक्कुगिन्ऱेन् एङ्गुम् काण माट्टेन्⋆ शङ्गम् शरिन्दन शाय् इळन्देन्⋆ तड मुलै पॉन् निऱमाय् त्तळर्न्देन्⋆ वेङ्गण् परवैयिन् पागन् एङ्गोन्⋆ वेङ्गडवाणनै वेण्डि च्चॅन्ऱे ॥१॥	कंगन वाली गोरी सखी ! हम अपने धूर्त प्रभु से लज्जित हैं। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि तुमलोगों से बताकर मुंह दिखा सकती हूं। हमारे कंगन खिसक गये, हमारा रंग फीका पड़ गया, हमारे उरोज ढ़ीले हो गये, मैं अचेत हो जाती हूं। हाय ! मैं डरावनी आंखों वाले गरूड़ पर सवार वेंकटम प्रभु के पीछे गयी थी। **3682**
वेण्डि च्चॅन्ऱॅन्ऱु पॅऱुगिर्पारिल्⋆ एन्नुडै तोळियर् नुङ्गट्कॅलुम्⋆ ईण्डिदुरैक्कुम् पडियै अन्दो⋆ काण्गिन्ऱिलेन् इडराट्टियेन् नान्⋆ काण् तगु तामरै क्कण्णन् कळ्वन्⋆ विण्णवर् कोन् नङ्गळ् कोनै क्कण्डाल्⋆ ईण्डिय शङ्गुम् निऱैवुम् कॉळ्वान्⋆ एत्तनै कालम् इळैक्किन्ऱेने ! ॥२॥	प्रभु के पास जाकर उनका स्नेह पाने वाली सखी गन ! हाय ! मेरे पास शब्द नहीं हैं कि तुमलोगों से अपनी वेदना बताकर राहत की सांस लूं। अगर आकर्षक राजीव नयन धूर्त प्रभु यहां कभी दिख जायें तो कैसे मैं उतावली होकर उनसे अपना खोया हुआ कंगन एवं वदन का मोहक रंग प्राप्त कर सकूंगी ? **3683**
कालम् इळैक्किल् अल्लाल् विनैयेन् नान् इळैक्किन्ऱिलन्⋆ कण्डु कॉण्मिन्⋆ ञालम् अऱिय प्पळि शुमन्देन्⋆ नन्नुदलीर् ! इनि नाणि त्तान् एन्⋆ नील मलर् नॅडुम् शोदि शूळ्न्द⋆ नीण्ड मुगिल् वण्णन् कण्णन् कॉण्ड⋆ कोल वळैयॉड मामै कॉळ्वान्⋆ एत्तनै कालम् कड च्चॅन्ऱे ॥३॥	गोरी सखी ! यह समय है जिसका अंत होता है मेरा अंत नहीं होता। प्रतीक्षा करो और देखो। हमने कितने उपहास सहे हैं लज्जित होने से क्या लाभ ? जब तक प्रतीक्षा करनी होगी मैं करूंगी परंतु श्याम वदन आभामय कृष्ण प्रभु से अपना

	कंगन एवं तेज वापस लूंगी जो इसे चुरा ले गये हैं। **3684**
कूड च्चॆन्ऱेन् इनि एन् कॊडुक्केन्⋆ कोल्वळै नॆञ्ज त्तॊडक्कम् एल्लाम्⋆ पाडट्टॊळिय इळन्दु वैगल्⋆ पल्वळैयार्मुन् परिशळिन्देन्⋆ माड क्कॊडि मदिळ् तॆन् कुळन्दै⋆ वण् कुडबाल् निन्ऱ माय क्कूत्तन्⋆ आडल् परवै उयर्त्त वॆल् पोर्⋆ आळिवलवनै आदरित्ते॥ ४॥	सखी ! बागों एवं महलों से घिरे दक्षिण कुऴन्दै के पश्चिम तरफ स्थित विस्मयकारी नर्तक मायक्कूत्तन प्रभु रहते हैं। युद्ध में सिद्धहस्त चक्र चलाने वाले प्रभु नाचते गरूड़ पर चले गये। मैंने पीछा की, मेरे कंगन गिर गये, और मेरा हृदय एवं अन्य सबों ने मेरा त्याग कर दिया। कंगन वाली सखियों के सामने मैं लज्जित खड़ी हूं। अब मै क्या गंवा ही सकती हूं ? **3685**
आळिवलवनै आदरिप्पुम्⋆ आङ्गवन् नम्मिल् वरवुम् एल्लाम्⋆ तोळियर्गाळ् ! नम्मुडैयमेदान्⋆ शॊल्लुवदो इङ्गरियदुदान्⋆ ऊळिदोऱुळि ऒरुवनाग⋆ नन्गुणर्वार्क्कुम् उणरलागा⋆ शूळल् उडैय शुडर् कॊळ् आदि⋆ तॊल्लैयञ्जोदि निनैक्कुङ्गाले॥ ५॥	सखी ! जैसे दीपक पर पतंग कूद पड़ते हैं उसी तरह प्रभु का तेज भी आकर्षक है। अनंत यगों से महान ऋषिगन ने प्रभु को समझने का प्रयास किया परंतु असफल रहे। क्या हमलोग प्रथम हैं जो चक्रधारी प्रभु को अपने बीच देखने के लिये उत्सुक हुए ? बताओ, क्या तुम ठीक बोल रही थी ? **3686**
तॊल्लैयञ्जोदि निनैक्कुङ्गाल्⋆ एन् शॊल् अळवन्ऱिमैयोर् तमक्कुम्⋆ एल्लै इलादन कूळप्पु च्चॆय्युम्⋆ अत्तिरम् निर्क एम्मामै कॊण्डान्⋆ अल्लि मलर् त्तण् तुळायुम् तारान्⋆ आर्क्किडुगो इनिप्पूशल् शॊल्लीर्⋆ वल्लि वळ वयल् शूळ् कुडन्दै⋆ मा मलर्क्कण् वळर्गिन्ऱ माले॥ ६॥	सखी ! तेजोमय प्रभु शब्दों से वर्णनातीत हैं एवं स्वर्गिकों के लिये भी दुर्लभ हैं। जैसा भी हो, उन्होंने मेरा रंग चुरा लिया एवं परागभरे अपनी तुलसी से मुझे वंचित रखा। हाय ! अपनी शिकायत मैं किससे सुनाऊं ? वे उपजाऊ बागों से घिरे कुऴन्दै में स्थित हैं। **3687**
माल् अरि केशवन् नारणन्⋆ शीमादवन् कोविन्दन् वैगुन्दन् एन्ऱॆन्ऱु⋆ ओलमिड एन्नै प्पणि विट्टिट्टु⋆ ऒन्ऱुम् उरुवुम् शुवडुम् काट्टान्⋆ एल मलर् कुळल् अन्नैमीर्गाळ् !⋆ एन्नुडै तोळियर्गाळ् ! एन् शॆय्गेन्⋆ कालम् पल शॆन्ऱुम् काण्बदाणै⋆ उङ्गळोडॆङ्गळ् इडैयिल्लैये॥ ७॥	फूल के जूड़ो वाली सजनी मेरी प्यारी सखी ! वे हमें छोड़कर विना ठिकाना के लुप्त हो गये हैं। 'मल, हरि, केशव, नारायण, श्रीमाधव, गोविन्द वैकुंठ' तथा अनेकों नाम मैं बड़बड़ाती रहती हूं। मैं क्या करूं? यद्यपि कि अनेको वर्ष बीत जायेंगें पर मैं प्रतिज्ञा करती हूं उनका दर्शन अवश्य

	करूंगी। तुमलोग यह समझ सकती हो कि तुम्हारे एवं हमारे एक लक्ष्य नहीं है। **3688**
इडैयिल्लै यान् वळरत्त किळिगाळ्* पूवैगाळ्! कुयिल्गाळ्! मयिल्गाळ्* उडैय नम् मामैयुम् शङ्गुम् नेञ्जुम्* ऑन्रम् ऑळिय ऑट्टादु कॊण्डान्* अडैयुम् वैगुन्दमुम् पार्कडलुम्* अञ्जन वेर्पुम् अवै नणिय* कडैयर प्पाशङ्गळ् विट्टपिन्नै अन्रि* अवन् अवै काण्कॊडाने॥८॥	बाहर चले जाओ। बाहर जाओ। हमारे प्रिय मैना, तोता, मेरे कोयल, एवं मेरे मोर। उन्होंने मेरी कुशलता, सम्पदा, हृदय, तथा अन्य सभी कुछ का कण कण चुरा लिया। वे सुन्दर वैकुंठ, क्षीरसागर, एवं वेंकटम पर्वत पर रहते हैं। जब तक हमारी अंतिम ईच्छा हमें छोड़ नहीं देती है वे हमारे पास नहीं आयेंगे। अतः बाहर जाओ। **3689**
काण्कॊडुप्पान् अल्लन् आरक्कुम् तन्नै* कैशॆयप्पाल्दोर् मायम् तन्नाल्* माण् कुरळ् कोल्ल वडिवु काट्टि* मण्णुम् विण्णुम् निरैय मलरन्द* शेण्शुडर् त्तोळ्गाळ् पल्ल तळैत्त* देव पिरारकॆन् निरैविनोडु* नाण् कॊडुत्तेन् इनि एन् कॊडुक्केन्* एन्नुडै नन्नुदल् नङ्गीमीर्गाळ्॥९॥	सखी ! स्वर्गिकों के प्रभु आसानी से दर्शन वाले नही हैं। आप एक मनमोहक छोकरा के रूप में आये एवं फैलकर धरा आकाश आदि को अधिकार में कर लिये। उनकी सुन्दर तेजोमय भुजायें शरारत वाली हैं। हमने अपनी गरिमा तथा लाज उनके सामने गंवा दिया है। अब हम क्या गंवायेंगे ? **3690**
एन्नुडै नन्नुदल् नङ्गीमीर्गाळ्!* यान् इनि च्चॆय्वदॆन् एन् नॆञ्जॆन्नै* निन्निडैयेन् अल्लेन् एन्रु नीङ्गि* नेमियुम् शङ्गुम् इरुगै क्कॊण्डु* पन्नॆडुम् शूळ् शुडर् ञायिट्रोडु* पान्मदि एन्दि ओर् कोल नील* नन्नॆडुम् कुन्रम् वरुवदॊप्पान्* नाण्मलर् प्पादम् अडैन्ददुवे॥१०॥	कंगनवाली गोरी प्यारी सखी ! मेरा हृदय हमें छोड़कर चला गया और कह गया 'अबसे तुम्हारा नहीं'। जाकर उसने प्रभु के चरणाविंद को पकड़ लिया जो पर्वत के समान वदन से सूर्य के समान चक्र एवं चांद के समान धववाले शंख धारण किये आये। अब मैं क्या करूं ? **3691**
पादम् अडैवदन् पाशत्ताले* मट्रवन् पाशङ्गळ् मुट्र विट्टु* कोदिल् पुगळ् क्कण्णन् तन्नडिमेल्* वण्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न* तीदिल् अन्दादियोर् आयिरत्तुळ्* इवैयुम् ओर् पत्तिशैयोडुम् वल्लार्* आदुम् ओर् तीदिलर् आगि* इङ्गुम् अङ्गुम् एल्लाम् अमैवार्गळ् तामे॥११॥	अंतादि के निर्मल हजार पदों का यह दशक कुरूगुर शठगोपन के हैं जिन्होंने कृष्ण के चरणारविंद के लिये अपनी सारी कामनाओं का त्याग कर दिया। जो इसे भगवान कृष्ण के सामने गायेंगे वे निर्मल होकर धरा पर सब कुछ पाजायेंगे। **3692** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

73 अङ्गुमिङ्गुम् (3693 – 3703)

एम्बेरूमानुक्कु अन्बुडैयार एङ्गुम् उळर् एन्बदै अरूळाल् उणरन्दु आळवार अच्चम् तीर्दल्

तिरूपुलिंगुडी : यह स्थान तमिलनाडु के आळवार तिरूनगरी के पास नव तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपणी के उत्तर में है तथा वरगुणमंगै दिव्य देश के पास है।पेरूमाल को यहां 'कैसिनी बंदन' या 'भूमि पालार' भी कहते हैं। मूलावर भुजंग शयन मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। नवतिरूपति में भगवान दो स्थान पर शयन मुद्रा में देखे गये हैं जिसमें से एक यह स्थान है तथा दूसरा तिरूक्कोलूर है। भगवान के दोनों चरणारविंद 'तिरूवाडी' का दर्शन मुख्य द्वार से ठीक से नहीं होता है।अतः परिक्रमा के कम में एक छोट दरवाजे से तिरूवाडी दर्शन मिलता है।
(Refer Ramesh vol. 4, pp 40)

परिशरम या तिरूवनपरिशरन : यह स्थान केरल में अवस्थित है। इसे तिरूपतीशरम भी कहते हैं तथा नागरकोइल से करीब 5 कि मी पर अवस्थित है। 9 फीट की ऊंची प्रतिमा मूलावर बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं तथा चतुर्भुजी हैं।ऊपर के दो हाथ में शंख चक्र हैं। नीचे का दायां हाथ अभय मुद्रा मे है तथा बायां घुटने पर टिका हुआ है। प्रतिमा का निर्मा ण काडु शर्करा योग से किया गया है। ग्रेनाइट चूना शर्करा सरसों आदि के सम्मिश्रण से प्रतिमा बनी हैं इसीलिये इनका कभी जल आदि द्रव पदार्थ से अभिषेक नहीं किया जाता। तमिल में घोड़ा को 'परि' कहते हैं और कुलशेखर आळवार का खोया हुआ घोड़ा यहां पाया गया था इसीलिये यह परिशरम के नाम से भी जाना जाता है।

नम्माळवार की मां उदयमंगै का यह जन्मस्थल है और नम्माळवार का भी जन्म उनकी मां ने इसी स्थान पर दिया था।नम्माळवार के पिता कारी कुरूगुर के थे और दंपति ने तिरूक्कुरूंगुडी के 'नंबी पेरूमाल' से प्रार्थना कर नम्माळवार को पुत्र के रूप में प्राप्त किया था। (Refer Ramesh vol. 7, pp 94)

‡अङ्गुम् इङ्गुम्⋆ वानवर् तानवर्⋆ यावरुम् एङ्गुम् इनैयै एन्रु⋆ उन्नै अरियगिल्लादलट्रि⋆ अङ्गम् शेरुम्⋆ पूमगळ् मण्मगळ् आय्मगळ्⋆ शङ्गु चक्कर क्कैयवन् एन्बर्⋆ शरणमे॥१॥	शंख चक्रधारी प्रभु! आप में समाहित कमलनिवासिनी लक्ष्मी भूदेवी एवं नप्पिनाय हैं। देव एवं असुर सर्वत्र आपकी पूजा करके आपसे आश्रय मांगते हैं परंतु आपको समझने में सक्षम नहीं हैं। **3693**
शरणम् आगिय⋆ नान्मरै नूल्गळुम् शारादे⋆ मरणम् तोट्रम्⋆ वान् पिणि मूप्पेन्रिवै मायत्तोम्⋆ करण प्पल् पडै⋆ पट्रवोडुम् कनल् आळि⋆ अरण त्तिण् पडै एन्दिय⋆ ईशर्कोळाये॥२॥	बिना पावन वेद मंत्रों को जाने केवल तेजोमय चक्रवाले प्रभु की पूजा करके हम लोगों ने तृष्णा को काटकर जन्म मरण बुढ़ापा एवं रोग की यातना का नाश कर दिया है। प्रभु हमारी शक्ति के स्रोत हैं। **3694**

आळुम् आळार् आळियुम्⋆ शङ्गुम् शुमप्पार् ताम्⋆ वाळुम् विल्लुम् कॊण्डु⋆ पिन् शॆल्वार् माट्रिल्लै⋆ ताळुम् तोळुम्⋆ कैगळै आर त्तॊळ क्काणेन्⋆ नाळुम् नाळुम् नाडुवन्⋆ अडियेन् ञालत्ते॥३॥	हाय ! कोई भी आपका शंख एवं चक्र धारण कर नहीं आता और न तो कोई आपका खड्ग एवं धनुष लिये आपके पीछे आता है। हाय ! इस धरा पर हर दिन हम आपकी पूजा हेतु आपको खोजते हैं परंतु आपको पाते नहीं। **3695**
ञालम् पोनगम् पट्रि⋆ ओर् मुट्रा उरुवागि⋆ आलम् पेर् इलै⋆ अन्नवचम् शॆय्युम् अम्माने⋆ कालम् पेर्वदोर्⋆ कार् इरुळ् ऊळि ऑत्तुळदाल्⋆ उन् कोलम् कार् एळिल्⋆ काणलुट्राळुम् कॊंडियेर्के॥४॥	प्रभु धरा को एक कौर में निगल कर आप बटपत्र पर शिशु की तरह सोये। भक्त उस मौका को देख रहा है कि आपके पीछे आपका शंख चक्र लेकर जा सके। **3696**
कॊंडियार् माड⋆ क्कोळुर् अगत्तुम् पुळिङ्गुडियुम्⋆ मडियादिन्ने⋆ नी तुयिल् मेवि मगिळ्न्ददु तान्⋆ अडियार् अल्लल् तविर्त्त⋆ अशैवो अन्रेल्⋆ इ- प्पडि तान् नीण्डु ताविय⋆ अशैवो पणियाये॥५॥	प्रभु सुन्दर कोलुर एवं पुलिंगुडी में शांत शयन कर रहे हैं। यहां किस कारण आप इतनी गहरी निद्रा में हैं ? क्या आप लंका के युद्ध से या धरती पर लंबी छलांग लगाने से इतना थक गये हैं ? **3697**
पणिया अमरर्⋆ पणिवुम् पण्बुम् तामेयाम्⋆ अणियार् आळियुम्⋆ शङ्गमुम् एन्दुम् अवर् काण्मिन्⋆ तणिया वॆन्नोय्⋆ उलगिल् तविर्प्पान्⋆ तिरुनील मणियार् मेनियोडु⋆ एन् मनम् शूळ वरुवारे॥६॥	देवों के प्रभु हाने के कारण आप उनकी श्रद्धांजलि स्वीकार करते हैं। आप सुन्दर शंख चक्र धारण करते हैं। देखो आप सृष्टि के अंधकार को दूर करते हैं। आप आकर हमारे हृदय को अपने मणि वर्ण से प्रकाशित करेंगे। **3698**
वरुवार् शॆल्वार्⋆ वण्परिशारत्तिरुन्द⋆ एन् तिरुवाळ् मार्वर्क्कु⋆ एन्दिरम् शॊल्लार् शॆय्वदॆन्⋆ उरुवार् शक्करम्⋆ शङ्गु शुमन्दिङ्गुम्मोडु⋆ ऑरुपाडुळल्वान्⋆ ओर् अडियानुम् उळन् एन्रे॥७॥	लक्ष्मी को अपने वक्ष्स्थल पर धारण किये हुए प्रभु परिशरम में रहते हैं। यात्री आते हैं एवं जाते हैं परंतु हाय ! कोई कहता नहीं 'एक भक्त प्रतीक्षा में है कि एक कौर खाकर शिशु की तरह सोये प्रभु के जागने पर आपके शंख चक्र को लेकर वह आपके पीछे जाये। **3699**
एन्रे एन्नै⋆ उन् एरार् कोल त्तिरुन्दडिक्कीळ्⋆ निन्रे आट्चॆय्य⋆ नी कॊण्डरुळ निनैप्पदुदान्⋆ कुन्रेळ् पारेळ्⋆ शूळ् कडल् ञालम् मुळुवेळुम्⋆ निन्रे ताविय⋆ नीळ् कळल् आळि त्तिरुमाले॥८॥	चक्रधारी प्रभु ! आपने सात पर्वत, सात सागर, एवं सात लोक को एक ही पग में लांघ दिया। कब आप हमको अपने चरणारविंद की सेवा कर आनंद मनाने का अवसर प्रदान करेंगे ? **3700**

तिरुमाल् नान्मुगन्⋆ शॅञ्जडैयान् एन्ऱिवर्गळ्⋆ एम् पॅरुमान् तन्मैयै⋆ यार् अऱिगिर्पार् पेशियॆन्⋆ ऑरु मा मुदल्वा !⋆ ऊऴि प्पिरान् एन्नै आळुडै⋆ करु मा मेनियन् ! एन्बन्⋆ एन् कादल् कलक्कवे॥९॥	स्नेह के प्रवाह में हम कहते हैं 'मूल प्रभु, काल, मणिवर्ण वाले, मेरे तिरूमल!' हमारे प्रभु के गौरव को कौन समझ सकता है ? न तो ब्रह्मा, न शिव, न देवगन। बात करने से क्या लाभ ? **3701**
कलक्कम् इल्ला⋆ नल् तव मुनिवर् करै कण्डोर्⋆ तुळक्कम् इल्ला⋆ वानवर् एल्लाम् तॊऴुवार्गळ्⋆ मलक्कम् एय्द⋆ मा कडल् तन्नै क्कडैन्दानै⋆ उलक्क नाम् पुगऴिकर्पदु⋆ एन् शॅय्वदुरैयीरे॥१०॥	स्पष्ट विचार वाले मुनिगन केवल किनारा देख सकते हैं। महान स्वर्गिक गन केवल खड़ा होकर पूजा करते हैं। सागर मथने वाले प्रभु की पूरी प्रशस्ति हमलोग कैसे गा सकते हैं ? विनती है, बताओ। **3702**
उरैया वॆन्नोय् तविर⋆ अरुळ् नीळ् मुडियानै⋆ वरैयार् माडम्⋆ मन्नु कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ उरैयेय् शॊल् तॊडै⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ निरैये वल्लार्⋆ नीडुलगत्तु प्पिरवारे॥११॥	ऊंचे महल वाले कुरूगुर नगर के शडगोपन के सुन्दर हजार पद यह दशक ऊंचे मुकुट वाले प्रभु की प्रशस्ति गाता है जो जन्म की यातना से मुक्ति दिलाते हैं। जो इसे याद कर लेंगे वे पुनर्जन्म से मुक्त हो जायेंगे। **3703** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

74 वार्कडा अरूवि (3704 - 3714)

एम्बेरूमानदु वलिमै अवन् अन्बुडैयारूडन् अमरन्दिरक्कुम् शेरत्ति मुदलियवट्रै त्तिरूच्वेङ्गुन्रूरिल् कण्डु मगिळदल्

तिरूच्वेंगुनुर ः यह स्थान केरल में तिरूअनंतपुरम एवं इर्नाकुलम के बीच अवस्थित है। वास्तव मे यह स्थान तिरूचित्तार के नाम से जाना जाता है जो चेंगुनुर से 1 कि मी पर मन्नार रोड पर है। कहा जाता है पांडव अज्ञातवास में केरल में ही अपना समय विताये थे इसीलिये उनसे संबंधित कई जगह इस क्षेत्र में पाये जाते हैं।
यहां मूलावर पश्चिमाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। भगवान धर्मराज युधिष्ठर के आराध्य देव माने जाते हैं।
(Refer Ramesh vol. 7, pp 42)

वार् कडा अरुवि यानै मामलैयिन्⋆ मरुप्पिणै क्कुवडिरुत्तुरुट्टि⋆ ऊर् कॊळ् तिण् पागन् उयिर् शॆगुत्तु⋆ अरङ्गिन् मल्लरै क्कॊन्रु शूळ् परणमेल्⋆ पोर् कडा अरशर् पुरक्किड⋆ माड मीमिशै क्कञ्जनै त्तगर्त्त⋆ शीर् कॊळ् शिट्टायन् तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल्⋆ तिरुच्चिट्टार्रङ्गळ् शॆल्शार्वे॥१॥	मत्त वहाते पर्वत की तरह हाथी लुढ़क गया। चिपका हुआ महावुत मारा गया एवं उत्सव के मल्लयोद्धा ध्वस्त हो गये। ऊंची दीर्घा वाले भयग्रस्त राजागन पीछे मुड़कर भाग गये। कंस का सिर कुचल दिया गया। तिरूच्वेंगुनुर के प्रभु गोप किशोर विजयी हुए। **3704**
ऎङ्गळ् शॆल्शार्वु यामुडै अमुदम्⋆ इमैयवर् अप्पन् ऎन् अप्पन्⋆ पॊङ्गु मूवुलगुम् पडैत्तळित्तळिक्कुम्⋆ पॊरुन्दु मूवुरुवनॆम् अरुवन्⋆ शॆङ्गयल् उगळुम् तेम् पणै पुडै शूळ्⋆ तिरुच्चॆङ्गुन्रूर् तिरुच्चिट्टा- रङ्गमर्गिन्र⋆ आदियान् अल्लाल्⋆ यावर् मट्रॆन् अमर् तुणैये॥२॥	तिरूच्वेंगुनुर हमारा प्रिय लक्ष्य है जहां अमृत मय जल वाली तिरूच्चिट्रारू में मछलियां प्रसन्न होकर आदि प्रभु को घेर कर नाचती हैं। आप विश्व को बनाने, पालने, एवं संहार के लिये विभिन्न रूप धारण करते हैं। हमारे अमृत एवं नाथ ! आपको छोड़कर अन्य कौन हमारा आश्रय हो सकता है ? **3705**
ऎन्नमर् पॆरुमान् इमैयवर् पॆरुमान्⋆ इरु निलम् इडन्द ऎम् पॆरुमान्⋆ मुन्नै वल् विनैगळ् मुळुदुडन् माळ⋆ ऎन्नै आळ्गिन्र ऎम् पॆरुमान्⋆ तॆन् तिशैक्कणि कॊळ् तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल्⋆ तिरुच्चिट्टाट्रङ्गरै मीपाल् निन्र ऎम्पॆरुमान्⋆ अडियल्लाल् शरणम् निनैप्पिलुम्⋆ पिरिदिल्लै ऎनक्के॥३॥	हमारे शाश्वत प्रभु आये और पृथ्वी तथा आकाश को मापा। हमारे पूर्व के कर्म का मूलोच्छेदन कर आप हम पर शासन करते हैं। आप तिरूच्चिट्रारू के किनारे दक्षिण के आभूषण तिरूच्वेंगुनुर में स्थित हैं। आपके चरणारविंद को छोड़कर दूसरा आश्रय हम सोच ही नहीं सकते। **3706**

पिरिदिल्लै एनक्कु प्पॆरिय मूवुलगुम्⋆ निरैयप्पेर् उरुवमाय् निमिर्न्द⋆ कुरिय माण् एम्मान् कुरै कडल् कडैन्द⋆ कोल माणिक्कम् एन् अम्मान्⋆ शॆरि कुलै वाळै कमुगु तॆङ्गिणि शूळ्⋆ तिरुच्चॆङ्गुन्रूर् तिरुच्चिट्रार् अरिय⋆ मॆय्म्मैये निन्र् एम् पॆरुमान्⋆ अडियिणै अल्लदोर् अरणे॥ ४ ॥	आप वामन की तरह आये आपका स्वरूप फैला एवं धरा को ढ़क लिया। हमारे मणिवर्ण सा सुन्दर प्रभु ने सागर मंथन भी किया। तिरूच्च्वेंगुनुर में आप खड़े हैं जहां नारियल, अरेका, एवं केला के पेड पंक्तिबद्ध आकाश की शोभा बढ़ाते हैं। आपका चरणारविंद ही हमारा आश्रय है। **3707**
अल्लदोर् अरणुम् अवनिल् वेरिल्लै⋆ अदु पॊरुळ् आगिलुम्⋆ अवनै अल्लदॆन् आवि अमरन्दणैगिल्लादु⋆ आदलाल् अवन् उरैगिन्र्⋆ नल्ल नान्मरैयोर् वेळ्वियुळ् मडुत्त⋆ नरुम् पुगै विशुम्पॊळि मरैक्कुम्⋆ नल्ल नीळ् माड त्तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल्⋆ तिरुच्चिट्रारॆनक्कु नल् अरणे॥ ५ ॥	जो सर्वेसर्वा हैं उनका आश्रय आपसे भिन्न नहीं है। यह सच है परंतु मेरा मन एकमात्र आपको ही खोजता है।ऊंचे किलों से घिरे तिरूच्च्वेंगुनुर में आपका निवास ही हमारा आश्रय है जहां वैदिक यज्ञ का धुंआ आकाश मे बादल की तरह छाये रहते हैं। **3708**
एनक्कु नल् अरणै एनदारुयिरै⋆ इमैयवर् तन्दै ताय् तन्नै⋆ तनक्कुम् तन् तन्मै अरिवरियानै⋆ त्तडङ्गडल् पळ्ळि अम्मानै⋆ मनक्कॊळ् शीर् मूवायिरवर्⋆ वण् शिवनुम् अयनुम् तानुम् ऒप्पार् वाळ्⋆ कनक्कॊळ् तिण् माड त्तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल्⋆ तिरुच्चिट्रारदनुळ् कण्डेने॥ ६ ॥	ऊंचे किलों से घिरे तिरूच्च्वेंगुनुर में हमें अपने हृदय का आश्रय मिल गया है। यहां आप शिव एवं ब्रह्मा तथा तीन हजार भक्तों बीच स्थित हैं।आप स्वर्गिकों एवं संतों के माता पिता हैं। आप गहरे सागर में अपने स्वभाव से अनभिज्ञ शयन करते हैं। **3709**
तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल् तिरुच्चिट्रारदनुळ् कण्ड⋆ अत्तिरुवडि एन्रुम्⋆ तिरुच्चॆय्य कमल क्कण्णुम्⋆ शॆव्वायुम् शॆव्वडियुम् शॆय्य कैयुम्⋆ तिरुच्चॆय्य कमल उन्दियुम्⋆ शॆय्य कमल मार्वुम् शॆय्यवुडैयुम्⋆ तिरुच्चॆय्य मुडियुम् आरमुम् पडैयुम्⋆ तिगळ एन् शिन्दैयुळाने॥ ७ ॥	कमल जैसे हाथ चरण आंख नाभि वक्षस्थल, मूगा वत होंठ, पावन लाल मुकुट, तथा लाल वस्त्रावरण वाले आकर्षक प्रभु को हम तिरूच्च्वेंगुनुर में खड़ा देखते हैं। पांच अस्त्रों से युक्त आपका तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय में छाये हुए है। **3710**
तिगळ एन् शिन्दैयुळ् इरुन्दानै⋆ च्चॆंळु निलत्तेवर् नान्मरैयोर्⋆ तिशै कै कूप्पि एत्तुम्⋆ तिरुच्चॆङ्गुन्रूरिल् तिरुच्चिट्राट्रङ्गरैयानै⋆ पुगर् कॊळ् वानवर्गळ् पुगलिडम् तन्नै⋆ अशुरर् वन्नैयर् वॆङ्कूट्रै⋆ पुगळुमाररियेन् पॊरुन्दु मूवुलगुम्⋆ पडैप्पॊडु कॆडुप्पु क्काप्पवने॥ ८ ॥	स्वर्गिकों एवं संतो से पूजित हमारे चित्त के प्रभु तिरूच्च्वेंगुनुर में रहते हैं। आप भक्तों के आश्रय हैं। आप असुरों के संहारक हैं। आपकी कैसे प्रशस्ति गायें हमें नहीं पता। आप तीनों लोक के सृष्टिकर्ता संरक्षक एवं संहारक हैं। **3711**

पडैप्पॊडु कॆडुप्पु क्काप्पवन्⋆ पिरम परम्परन् शिवविरान् अवने⋆ इडैप्पुक्कोर् उरुवुम् ऒळिविल्लै अवने⋆ पुगळ्विल्लै यावैयुम् ताने⋆ कॊडै प्पॆरुम् पुगळार् इनैयर् तन्नानार्⋆ कूरिय विच्चैयोडॊळुक्कम्⋆ नडै प्पलि इयर्कै त्तिरुच्चॆङ्गुन्ऱूरिल्⋆ तिरुच्चिट्रारमरन्द नादने॥९॥	सब कुछ प्रभु हैं, स्वयं ही इन्द्र ब्रह्मा तथा शिव भी हैं।आप सारे विश्व में व्याप्त हैं तथा स्वयं ही ये सब हैं। आप तिरूच्च्वेंगुनुर में रहते हैं।सहृदय महानजन, विद्वान, कलाविद, तथा भक्तगन के पास आपकी गाथा गाने के लिये शब्द नहीं हैं। **3712**
अमरन्द नादनै अवर् अवर् आगि⋆ अवरक्करुळ् अरुळुम् अम्मानै⋆ अमरन्द तण् पळन त्तिरुच्चॆङ्गुन्ऱूरिल्⋆ तिरुच्चिट्राट्ङ्गरैयानै⋆ अमरन्द शीर् मूवायिरवर् वेदियर्गळ्⋆ दम्पति अवनिदेवर् वाळ्वु⋆ अमरन्द मायोनै मुक्कण् अम्मानै⋆ नान्मुगनै अमरन्देने॥१०॥	चिरंतन प्रभु सब कुछ बनकर सबों पर करूणा करते हैं। जो स्वयं शिव एवं ब्रह्मा हैं हमने आपको पा लिया है। तिरूच्चिट्रारू के किनारे तीन हजार वैदिक ऋषियों एवं ऊंची मेधा के भक्तों को प्रेरणा प्रदान करते आप तिरूच्च्वेंगुनुर में स्थित हैं। **3713**
तेनै नन् पालै क्कन्नलै अमुदै⋆ त्तिरुन्दुलगुण्ड अम्मानै⋆ वान नान्मुगनै मलरन्द तण् कॊप्पूळ्⋆ मलर्मिशै प्पडैत्त मायोनै⋆ कोनै वण् कुरुगूर् वण् शडगोपन्⋆ शॊन्न आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ वानिन् मीदेट्रि अरुळ् शॆय्दुमुडिक्कुम्⋆ पिरवि मा माय क्कूत्तिनैये॥११॥	पृथ्वी को निगलने वाले दूध मधु शक्कर एवं रस जैसे प्रिय नाभिकमल वाले प्रभु की प्रशस्ति में कुरूगुर शठगोपन के हजार पदों के इस दशक का जो पाठ कर सकेंगे वे यहां के नाटक का अंत कर स्वर्ग प्राप्त करेंगे। **3714** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

75 मायक्कूत्ता (3715 - 3725)

एम्बेरूमानदु वडिवळिगै क्काणप्पेऱाद आळ्वार् आशै मिगुन्दु अळुदु अरट्टुदल्

मायक्कूत्ता ! वामना !⋆ विनैयेन् कण्णा ! कण् कै काल्⋆ तूय शॆय्य मलर्गळा⋆ च्चोदि च्चॆव्वाय् मुगिळदा⋆ शायल् शाम त्तिरुमेनि⋆ तण् पाशडैया⋆ तामरै नीळ् वाश त्तडम्पोल् वरुवाने !⋆ ऑरुनाळ् काण वाराये॥१॥	वामन, हमारे प्रेम ! आपका स्वरूप एक शीतल सरोवर है। आपकी आंख हाथ चरण प्रस्फुटित कमल हैं। आपका दिव्य होंठ उनके कलि की तरह हैं। आपके अंग श्याम पत्ते की तरह हैं। मुग्धकारी नर्तक ! क्या आप एक दिन दर्शन देने नहीं आयेंगे ? **3715**
काण वाराय् ऎन्ऱॆन्ऱु⋆ कण्णुम् वायुम् तुवर्न्दु⋆ अडियेन् नाणि नन्नाट्टलमन्दाल्⋆ इरङ्गि ऑरुनाळ् नी अन्दो काण वाराय् करु नायिऱुदिक्कुम्⋆ करु मा माणिक्क⋆ नाळ् नल् मलैपोल् शुडर् च्चोदि⋆ मुडि शेर् शॆन्नि अम्माने ! ॥२॥	लड़खड़ाते कदमों से लज्जित होकर हम धरा पर घूमते हैं। सूखे होंठ एवं सूखी आंसू से चारो तरफ पुकारते हुए हम देखते हैं। हाय ! क्या आप एक दिन अपने श्याम स्वरूप एवं नये पर्वत सा चमकते केश तथा उसके शिखर पर उदित काला सूर्य के साथ दर्शन देने नहीं आयेंगे ? **3716**
मुडि शेर् शॆन्नि अम्मा !⋆ निन् मॊय् पून्दाम त्तण् तुळाय्⋆ कडि शेर् कण्णि प्पॆरुमाने !⋆ ऎन्ऱॆन्ऱेङ्गि अळुदक्काल्⋆ पडिशेर् मगर क्कुळैगळुम्⋆ पवळ वायुम् नाल् तोळुम्⋆ तुडि शेर् इडैयुम् अमैन्ददोर्⋆ तू नीर् मुगिल् पोल् तोन्ऱाये॥३॥	तेजोमय जूड़ा वाले प्रभु, सुगंधित माला वाले प्रभु, मेघवर्ण के प्रभु ! आपको पुकारते हुए मैं उदास होकर रोता हूं। हाय ! सुन्दर कर्णफूल, मूंगावत होंठ, चार भुजाओं एवं पतली कमर के साथ मैं आपको नहीं देख पाता। **3717**
तू नीर् मुगिल् पोल् तोन्ऱुम्⋆ निन् शुडर् कॊळ् वडिवुम् कनिवायुम्⋆ ते नीर् क्कमल क्कण्गळुम्⋆ वन्दॆन् शिन्दै निऱैन्दवा⋆ मा नीर् वॆळ्ळि मलै तन्मेल्⋆ वण् कार् नील मुगिल् पोल⋆ तू नीर् क्कडलुळ् तुयिल्वाने !⋆ ऎन्दाय् ! शॊल्ल माट्टेने॥४॥	प्रभु !आपका मूंगावत होठ, नूतन ओसकण सिक्त कमल जैसी आंख, एवं तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय में घर कर गया है। मैं नहीं जानता कैसे यह हुआ। क्षीर सागर में आपको शयन करते ऐसे देखता हूं जैसे श्यामल मेघ बर्फ की चोटी वाला पर्वत पर विराजमान हो। **3718**
शॊल्ल माट्टेन् अडियेन्⋆ उन् तुळङ्गु शोदि त्तिरु प्पादम्⋆ ऎल्लैयिल् शीर् इळ ञायिऱु⋆ इरण्डुपोल् ऎन्नुळ्ळवा !⋆ अल्लल् ऎन्नुम् इरुळ् शेर्दर्कु⋆ उपायम् ऎन्ने आऴि शूऴ्⋆ मल्लल् ञाल मुळुदुण्ड मा नीर्⋆ क्कॊण्डल् वण्णने ! ॥५॥	श्याम मेघ सा प्रभु !आपने गोल पृथ्वी एवं जल को निगल लिया। आपके दिव्य आभापूर्ण चरण का वर्णन हम नहीं कर सकते। ये दो युवा सूर्य की तरह हमारे हृदयाकाश में चमक रहे हैं। कैसे अब दुष्कर्म का अंधकरा हमारे पास फटक सकता है ? **3719**

कॊण्डल् वण्णा ! कुडक्कूत्ता !⋆ विनैयेन् कण्णा ! कण्णा⋆ एन् अण्ड वाणा ! एन्रॆन्नै⋆ आळ क्कूप्पिट्टळैत्तक्काल्⋆ विण् तन्मेल् तान् मण्मेल् तान्⋆ विरि नीर् क्कडल् तान् मट्रुत्तान्⋆ तॊण्डनेन् उन् कळल् काण⋆ ऒरुनाळ् वन्दु तोन्राये ॥६॥	हमारी आंखों की तरह प्यारे हमारे कृष्ण! विश्व के नाथ, मेरे नाथ, मेघ श्याम प्रभु, पात्र नर्तक हमारे प्रभु, आपको हम पुकार रहे हैं। आप आकाश से आईये या धरा से आईये या सागर से या कहीं से आईये परंतु आईये अवश्य एवं अपने चरणारविंद का दर्शन कराईये। **3720**
वन्दु तोन्रायन्रेल्⋆ उन् वैयम् ताय मलर् अडिक्कीळ्⋆ मुन्दि वन्दु यान् निर्प⋆ मुगप्पे कूवि प्पणि कॊळ्ळाय्⋆ शॆन्दण् कमल क्कण् कै काल्⋆ शिवन्द वायोर् करु नायिरु⋆ अन्दम् इल्ला क्कदिर् परप्पि⋆ अलर्न्ददॊक्कुम् अम्माने ! ॥७॥	मेरे पास आईये या हमें अपने पास बुलाईये जिससे कि हमें आपके धरा को मापने वाले चरणारविंद की सेवा का अवसर मिले। आप का स्वरूप अनंत आभायुक्त काले सूर्य की तरह है जिसपर लाल कमल सी आंखें होंठ हाथ एवं चरण चमक रहे हैं। **3721**
ऒक्कुम् अम्मान् उरुवम् एन्रु⋆ उळ्ळम् कुळैन्दु नाणाळुम्⋆ तॊक्क मेग प्पल् कुळाङ्गळ्⋆ काणुम् तोरुम् तॊलैवन् नान्⋆ तक्क ऐवर् तमक्काय् अन्रु⋆ ईर् ऐम्पदिन्मर् ताळ् शाय⋆ पुक्क नळेर् त्तनिप्पागा !⋆ वाराय् इदुवो पॊरुत्तमे ॥८॥	जबकभी भी हम श्याम मेघ को एकत्रित देखते हैं हमारा हृदय द्रवित होकर कहता हैं 'हमारे श्याम प्रभु की तरह दिखता है।' एवं हर दिन मैं मरता हूं। हे प्रभु ! आपने पांच नेक जनों के लिये सौ दुष्टों के विरूद्ध युद्ध में रथ चलाया। अब आईये। क्या यह उचित है ? **3722**
इदुवो पॊरुत्तम् मिन् आळि प्पडैयाय् !⋆ एरुम् इरुम् शिरैप्पुळ्⋆ अदुवे कॊडिया उयर्त्ताने !⋆ एन्रॆन्रेङ्गि अळुदक्काल्⋆ एदुवेयाग क्करुदुङ्गॊल्⋆ इम् मा ञालम् पॊरै तीर्प्पान्⋆ मदु वार् शोलै⋆ उत्तर मदुरै प्पिरन्द मायने ॥९॥	रोकर मैं यातना में पुकारता हूं। प्रदीप्त चकवाले प्रभु, गरूड़ ध्वज वाले प्रभु! हाय ! सच में आपकी क्या मंशा है ? क्या आप मथुरा के सुन्दर बागों में नहीं प्रकट हुए तथा विश्व को यातना से मुक्ति दिलाई ? **3723**
पिरन्द माया ! पारदम् पॊरुद माया !⋆ नीयिन्ने⋆ शिरन्द काल् ती नीर् वान्⋆ मण् पिरवुमाय पॆरुमाने⋆ करन्द पालुळ् नॆय्ये पोल्⋆ इवट्रुळ् एङ्गुम् कण्डुगॊळ्⋆ इरन्दु निन्र पॆरु माया !⋆ उन्नै एङ्ङे काण्गेने ॥१०॥	महान भारत युद्ध लड़ने वाले प्रभु ! आप ही धरा, जल, अग्नि, आकाश, वायु, एवं सब कुछ हैं। ताजा दूध में मक्खन की तरह आप अदृश्यमान हैं। हाय ! कहां आपका दर्शन मिलेगा ? **3724**
‡एङ्ङे काण्गेन् ईन् तुळाय् अम्मान् तन्नै⋆ यान् एन्रॆन्रु⋆ अङ्ङे ताळन्द शॊर्कळाल्⋆ अन्दण् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॆङ्गळ् शॊन्न आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् पत्तुम् वल्लार्गळ्⋆ इङ्ङे काण इप्पिरप्पे मगिळ्वर्⋆ एल्लियुम् कालैये ॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के सरस हजार पद का यह दशक प्रभु से पूछता है 'मृदु तुलसी की माला वाले प्रभु!आपका कहां दर्शन मिलेगा ?' जो इसे गा सकेंगें, वे अब यहीं रात दिन, आनंद विभोर रहेंगे। **3725** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

76 एल्लियुम् (3726 - 3736)

आळ्वारदु तुन्बत्तै त्तीरक्कुम् पोरूट्टु तिरूमाल् तिरूक्कडित्तानत्तिल् इरून्दमै कूरल्

तिरूक्कडित्तानम ः यह स्थान केरल में चेंगनचेरी से **3** कि मी पूरब में तिरूवल्ला कोट्टायम रोड पर अवस्थित है। यहां मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। यहां भगवान पांच पांडवों में से एक भाई सहदेव के आराध्य देव माने जाते हैं। मूलावर के अतिरिक्त गर्भगृह में दक्षिणामूर्ति तथा नरसिंह भगवान की भी मूर्ति है जो मुख्य द्वार से नहीं दिखते हैं बल्कि दीवार में बने एक छिद्र से दर्शन देते हैं जबकि मूलावर का मुख्य द्वार से ही दर्शन किया जाता है।
(Refer Ramesh vol. 7, pp 19)

एल्लियुम् कालैयुम्⋆ तन्नै निनैन्देंळ⋆ नल्ल अरुळ्गाळ्⋆ नमक्के तन्दरुळ्शॅय्वान्⋆ अल्लियन् तण्णन् तुळाय्⋆ मुडि अप्पन् ऊर्⋆ शॅल्वर्गळ् वाळुम्⋆ तिरुक्कडि त्तानमे॥१॥	प्रस्फुटित तुलसी फूल की माला वाले प्रभु सौभाग्यशाली जनों के साथ तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। प्रसन्नता के दिन रात पूजा करने पर आप करूणा एवं अन्य सब कुछ देते हैं। **3726**
तिरुक्कडि त्तानमुम्⋆ एन्नुडै च्चिन्दैयुम्⋆ ऑरुक्कडुत्तुळ्ळे⋆ उरैयुम् पिरान् कण्डीर्⋆ शॅरु क्कडुत्तन्रु⋆ तिगैत्त अरक्करै⋆ उरु क्कॅड वाळि⋆ पॉळिन्द ऑरुवने॥२॥	प्रभु हमारे विचार को जोड़कर यातना का अंत कर दिया। आप शीतल सुगंधित तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं।आपने तब बाणों की वर्षा की और हमलोगों ने राक्षसों का अंत किया। **3727**
ऑरुवर् इरुवर् ओर्⋆ मूवर् एन निन्रु⋆ उरुवुगरन्दु⋆ उळ्ळुन्दोरुम् तित्तिप्पान्⋆ तिरुवमर् मार्वन्⋆ तिरुक्कडित्तानत्तै⋆ मरुवियुरैगिन्र⋆ माय प्पिराने॥३॥	प्रभु एक थे, फिर दो हुए, फिर तीन हुए, एवं सबों में मिश्रित हो गये, तथा स्नेह से हमारे हृदय में आ गये। कमलनिवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण कर विस्मयकारी प्रभु तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। **3728**
माय प्पिरान्⋆ एन वल्विनै माय्न्दर⋆ नेशत्तिनाल् नॅञ्जम्⋆ नाडु कुडि कॉण्डान्⋆ तेशत्तमरर⋆ तिरुक्कडित्तानत्तै⋆ वाश प्पॉळिल् मन्नु⋆ कोयिल् कॉण्डाने॥४॥	हमारे दुष्ट कर्मो का क्षय करते हुए मुग्धकारी प्रभु ने हमारे हृदय को अपना शीतल आवास बना लिया है। सुगंधित बागों से घिरे तेजोमय देवगनों के बीच आप तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। **3729**

कोयिल् कॊण्डान् तन्⋆ तिरुक्कडित्तानत्तै⋆ कोयिल् कॊण्डान्⋆ अदनोडुम् एन् नॆञ्जगम्⋆ कोयिल्गॊळ⋆ दॆय्वम् एल्लाम् तॊळ⋆ वैगुन्दम् कोयिल् कॊण्ड⋆ कुडक्कूत्त अम्माने॥५॥	प्रभु जो नैसर्गिक तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं उन्होंने हमारे हृदय को मंदिर बना लिया है।विस्मयकारी पात्र नर्तक प्रभु ! आप सभी मंदिर के देवों से पूजे जाते हैं। **3730**
कूत्त अम्मान्⋆ कॊडियेन् इडर् मुट्रवुम्⋆ मायत्त अम्मान्⋆ मदुशूद अम्मान् उऱै⋆ पूत्त पॊळिल् तण⋆ तिरुक्कडित्तानत्तै⋆ एत्त निल्ला⋆ कुऱिक्कॊण्मिन् इडरे॥६॥	लीलामय मधसूदन प्रभु ने हमारी यातना का अंत कर दिया। आप तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं।देखो, आपकी पूजा से हमारी सारी यातनाओं का अंत हो जायेगा। **3731**
कॊण्मिन् इडर् कॆड⋆ उळ्ळत्तु क्कोविन्दन्⋆ मण् विण् मुळुदुम्⋆ अळन्द ऑण् तामरै⋆ मण्णवर् ताम् तॊळ⋆ वानवर् ताम् वन्दु⋆ नण्णु तिरुक्कडित्तान नगरे॥७॥	धरा आकाश एवं सबकुछ को मापने वाले गोविन्द के चरणारविंद देवों एवं मर्त्यो से तिरूक्कडित्तानम में पूजे जाते हैं। आपको अपने हृदय में स्थापित कर यातनाओं का अंत करो। **3732**
तान नगर्गळ⋆ तलैच्चिऱन्दॆङ्गॆङ्गुम्⋆ वानिन् निलम् कडल्⋆ मुट्रुम् एम्मायर्कॆ⋆ आनविडत्तुम् एन् नॆञ्जुम्⋆ तिरुक्कडि- त्तान नगरुम्⋆ तन ताय प्पदिये॥८॥	प्रभु के अनेकों नगरों में आरामगाह हैं ः आकाश में, धरा पर, तथा सागर में।तब भी आपने हमारे अधम हृदय तथा तिरूक्कडित्तानम को अपना आवास चुना है। **3733**
ताय प्पदिगळ⋆ तलैच्चिऱन्दॆङ्गॆङ्गुम्⋆ मायत्तिनाल् मन्नि⋆ वीट्रिरुन्दान् उऱै⋆ तेशत्तमरर्⋆ तिरुक्कडित्तानत्तुळ⋆ आयर्क्कदिपदि⋆ अर्पुदन् ताने॥९॥	अनेकों सुन्दर आरामगाहों में रहने वाले प्रभु गोपकुल तथा शाश्वतों के प्रमुख है। आप देवों की संगति में तिरूक्कडित्तानम में रहते हैं। क्या आश्चर्य है ! **3734**
अर्पुदन् नारायणन्⋆ अरि वामनन्⋆ निर्पदु मेवि⋆ इरुप्पॆन् नॆञ्जगम्⋆ नल् पुगळ वेदियर्⋆ नान्मऱै निन्ऱदिर्⋆ कर्पग च्चोलै⋆ त्तिरुक्कडित्तानमे॥१०॥	आश्चर्यमय देव नारायण हरि हमारे हृदय के वामन प्रभु हैं। वैदिक ऋचाओं के पाठ की आवाज तिरूक्कडित्तानम में कल्प वृक्षों के बागों में गूंजती है। **3735**
‡शोलै त्तिरुक्कडित्तानत्तु⋆ उऱै तिरु- माल्लै⋆ मदिळ कुरुगूर्⋆ च्चडगोपन् शॊल्⋆ पाल्तोडमुदन्न⋆ आयिरत्ति प्पत्तुम्⋆ मेलै वैगुन्दत्तु⋆ इरुत्तुम् वियन्दे॥११॥	ऊंचे दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दूध एवं मधु जैसा मृदु दसक तिरूक्कडित्तानम के तिरूमल की प्रशस्ति है तथा यह ऊंचे वैकुंठ प्रदान करता है। आश्चर्य ! **3736** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

77 इरूत्तुम् वियन्दु (3737 - 3747)

तम् उळळत्तिल् एम्बुरूमान् वीट्रिरून्द पडियै आळवार् कूरि मगिळदल्

‡इरुत्तुम् वियन्देन्नै⋆ त्तन् पॊन्नडिक्कीळ् एन्रु⋆ अरुत्तित्तेनैत्तोर्⋆ पल्ल नाळ् अळैत्तेर्कु⋆ पॊरुत्तम् उडै⋆ वामनन् तान् पुगुन्दु⋆ एन्दन् करुत्तैयुर्⋆ वीट्रिरुन्दान् कण्डु कॊण्डे॥१॥	उतावला होकर अनेकों दिन हमने पूजा की एवं पुकारा तथा प्रार्थना की कि हमारी आवाज सुनकर अपने चरणारविंद से जोड़ लिया जया। अहा! सुन्दर वामन ने हमें देख लिया एवं हमारे हृदय में चोरी से घुसकर हमें अपना बना लिया। **3737**
इरुन्दान् कण्डु कॊण्डु⋆ एनदेळै नेञ्जाळुम्⋆ तिरुन्दाद ओर् ऐवरै⋆ त्तेयन्दर् मन्नि⋆ पेरुन्दाळ् कळिट्रुक्कु⋆ अरुळ् शेय्द पेरुमान्⋆ तरुम् तान् अरुळ् तान्⋆ इनियान् अरियेने॥२॥	सब समय खड़े होकर इस अधम को आप देखते हुए पांचों नीच का नाश कर दिया जो हमारे हृदय पर अधिकार किये हुए थे।आपदाग्रस्त हाथी पर करूणा करने वाले प्रभु से अधिक करूणा और क्या चाहिए ? **3738**
अरुळ् तान् इनियान् अरियेन्⋆ अवनेन्नुळ्⋆ इरुळ् तान् अर्⋆ वीट्रिरुन्दान् इदुवल्लाल्⋆ पॊरुळ् तान् एनिन्⋆ मूवुलगुम् पॊरुळ् अल्ल⋆ मरुळ् तान् ईदो⋆ माय मयक्कु मयक्के॥३॥	तीन लोक से ज्यादा कीमत वाले हमारे भीतर रहकर आपने अंधकार को दूर किया। कितना आश्चर्यपूर्ण है यह ? इससे अधिक करूणा और क्या चाहिए ? **3739**
माय मयक्कु मयक्कान्⋆ एन्नै वञ्जित्तु⋆ आयन् अमरर्क्कु⋆ अरियै एनदम्मान्⋆ तूय शुडर्च्चोदि⋆ तनदेन्नुळ् वैत्तान्⋆ तेशम् तिगळुम्⋆ तन् तिरुवरुळ् शेय्दे॥४॥	मेरे प्रभु गोपाल स्वर्गिकों में सिंह हैं। आप अपने युक्तियों से अब और मुझे नहीं छलेंगे।सारे विश्व में आपकी करूणा चमकती है। **3740**
तिगळुम् तन् तिरुवरुळ् शेय्दु⋆ उलगत्तार् पुगळुम् पुगळ्⋆ तानदु काट्टि त्तन्दु⋆ एन्नुळ् तिगळुम्⋆ मणि क्कुन्रम् ऑन्रे ऑत्तु निन्रान्⋆ पुगळुम् पुगळ्⋆ मट्रेनक्कुम् ओर् पॊरुळे॥५॥	तेजोमय प्रभु सारे लोकों से प्रशंसित हैं। तेजोमय मणि पर्वत की तरह आप आये और हमारे हृदय में खड़े हो गये। क्या अन्य चीज का अब कोई महत्व है ? **3741**
पॊरुळ् मट्रेनक्कुम् ओर् पॊरुळ् तन्निल्⋆ शीर्क्क त्तरुमेल्⋆ पिन्नै यार्क्कवन्⋆ तन्नै क्कॊडुक्कुम्⋆ करु माणिक्क क्कुन्रत्तु⋆ त्तामरै पोल्⋆ तिरु माबु काल् कण् कै⋆ शेव्वाय् उन्दियाने॥६॥	अगर हमें आपने किसी मूल्य की वस्तु दी है तो आप अपने को किसे देंगे ? तेजोमय मणि पर्वत की तरह, मूंगावत होंठ लिये, कमल जैसी छाती, अंग, आंखें एवं नाभि के साथ आप हमारे भीतर खड़े हैं। **3742**

शॅव्वाय् उन्दि⋆ वॅण्बल् शुडर् क्कुळै तन्नोडु⋆ एव्वाय् च्चुडरुम्⋆ तम्मिल् मुन् वळाय् क्कॉळ्ळ⋆ शॅव्वाय् मुरुवल्लोडु⋆ एनदुळ्ळत्तिरुन्द⋆ अव्वाय् अन्रि⋆ यान् अरियेन् मट्रुरुळे॥७॥	आप हमारे सामने नाभिकमल, मूंगावत होंठ, मुक्ता सा श्वेत दांत, तथा तेजोमय कुंडल पहने खड़े हैं। आप दिव्य तेज के हैं।अहा ! मुस्कुराते हुए हम आपका आलिंगन किये होते ! आप मेरे हृदय में रहते हैं। इससे बड़ी करूणा हमने नहीं देखी है। **3743**
अरियेन् मट्रुरुळ⋆ एन्नैयाळुम् पिरानार⋆ वॅरिदे अरुळ शॅय्वर⋆ शॅय्वार्गट्कुगन्दु⋆ शिरियेनुडै⋆ च्चिन्दैयुळ मूवुलगुम्⋆ तन्नॅरिया वयिट्रिल् कॉण्डु⋆ निन्रॉळिन्दारे॥८॥	जिसे आप पसंद कर लेते हैं उससे बिना कोई चीज बदले में चाहते हुए उसपर आप कृपा करते हैं। इससे अधिक कृपा हम नहीं जानते। तीनों लोक को स्वयं में स्थित करके आप हमारे छोटे से हृदय में रहने आये हैं। **3744**
वयिट्रिल् कॉण्डु⋆ निन्रॉळिन्दारुम् यवरुम्⋆ वयिट्रिल् कॉण्डु⋆ निन्रॉरु मूवुलगुम्⋆ तम् वयिट्रिल् कॉण्डु⋆ निन्रवण्णम् निन्र माल्लै⋆ वयिट्रिल् कॉण्डु⋆ मन्न वैत्तेन् मदियाल्ले॥९॥	तीनों लोक समस्त प्राणियों एवं स्वर्गिकों को धारण करने वाले प्रभु कभी भी बिना परिवर्तन के एक स्वरूप में स्थित हैं। हम आपको सर्वदा के लिये अपने हृदय मे पाते हैं। **3745**
वैत्तेन् मदियाल्⋆ एनदुळ्ळत्तगत्ते⋆ एय्त्ते ऑळिवेन् अल्लेन्⋆ एन्रुम् एप्पोदुम्⋆ मॉयत्तेय् तिरै⋆ मोदु तण् पार्कडल् उळाल्⋆ पैत्तेय् शुडर् प्पाम्पणै⋆ नम् परनैये॥१०॥	गहरे शीतल क्षीर सागर में फनधारी नाग के शय्या पर शयन करने वाले प्रभु को हमने अपने हृदय की खोह में स्थापित कर लिया है। हम आपका ध्यान करते कभी नहीं उबेंगे। **3746**
‡शुडर् प्पाम्पणै नम् परनै⋆ त्तिरुमाल्लै⋆ अडि च्चेर्वगै⋆ वण् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ मुडिप्पान् शॉन्नवायिरत्तु⋆ इप्पत्तुम् शन्मम् विड⋆ तेयन्दर् नोक्कुम्⋆ तन् कण्गळ शिवन्दे॥११॥	कुरूगुर नगर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक फनधारी शय्या पर शयन करने वाले प्रभु का स्मरण कराते हुए अरूणाभ नयन प्रभु की कृपा से पुनर्जन्म का क्षय कर देगा। **3747** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

78 कण्गळ् शिवन्दु (3748 - 3758)

आरूयिरिन् एट्रेत्तै एम्बेरूमान् काट्ट क्कण्डु आळ्वार् पेशुदल्

<table>
<tr><td>कण्कळ् शिवन्दु पॅरियवाय्* वायुम् शिवन्दु कनिन्दु* उळ्ळे
वॅण् पल् इलगु शुडर् इलगु* विलगु मगर कुण्डलत्तन्*
कॉण्डल् वण्णन् शुडर् मुडियन्* नान्गु तोळन् कुनि शारङ्गन्*
ऑण् शङ्गदै वाळ् आळियान्* ऑरुवन् अडियेन् उळ्ळाने॥१॥</td><td>कोई हमारे साथ लाल बड़ी आंख, लाल मूंगावत होंठ, मोती समान श्वेत दांत, एवं कान में जगमग मकराकृत कुंडल वाला खड़ा है। श्याम मेघ के समान वदन है। तेजोमय मुकुट है।चार भुजाओं पर सुन्दर धनुष चक्र शंख एवं गदा धारण किये हुए हैं।**3748**</td></tr>
<tr><td>अडियेन् उळ्ळान् उडल् उळ्ळान्* अण्डत्तगत्तान् पुरत्तुळ्ळान्*
पडियेयिदुवॅन्ऱुरैक्कलाम् पडियन्* अल्लन् परम्परन्*
कडिशेर् नाट्त्तुळ् आलै* इन्ब त्तुन्ब क्कळि नेमैं*
ऑडिया इन्ब प्पॅरुमैयोन्* उणर्विल् उम्बर् ऑरुवने॥२॥</td><td>जो प्रभु हमारे हृदय में हैं वही शरीर पर तथा विश्व में एवं इसके बाहर भी हैं। सुख दुख से रहित स्वर्गिकों के देव सभी परिभाषा से परे हैं। नैसर्गिक ज्ञान के स्वरूप चिरंतन आनन्द के गौरव वाले आप नूतन ओसकण से भींगे हुए फूल के समान हैं।**3749**</td></tr>
<tr><td>उणर्विल् उम्बर् ऑरुवनै* अवनदरुळाल् उऱल्पॉरुट्टु* एन्
उणर्विन् उळ्ळे इरुत्तिनेन्* अदुवुम् अवनदिन्नरुळे*
उणर्वुम् उयिरुम् उडम्बुम्* मट्ट उलप्पिलनवुम् पळुदेयाम्*
उणर्वै प्पॅरवूरन्दिरवेरि* यानुम् तानाय् ऑळिन्दाने॥३॥</td><td>नैसर्गिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रभु की कृपा की आकांक्षा से हमने प्रभु को अपने हृदय में प्रभु की मृदु कृपा से रखा। आपने यह आभास कराया कि चैतन्य शरीर जीवन एवं संग्रहण सब व्यर्थ हैं। तब प्रभु मेरे हो गये। **3750**</td></tr>
<tr><td>यानुम् तानाय् ऑळिन्दानै* यादुम् यवरक्कुम् मुन्नोनै*
तानुम् शिवनुम् पिरमनुम् आगि* प्पणैत्त तनि मुदलै*
तेनुम् पालुम् कन्नलुम्* अमुदुम् आगि त्तित्तित्तु* एन्
ऊनिल् उयिरिल् उणर्विनिल्* निन्ऱ ऑन्ऱै उणरन्देने॥४॥</td><td>प्रभु जो मेरे हुए थे सब वस्तुओं एवं प्राणियों के समक्ष थे। आदि कारण प्रभु ने अपने को बांट कर ब्रह्मा एवं शिव बना दिया। मधु, दूध, गन्ने का रस की तरह मृदु प्रभु हमारे चैतन्य में, शरीर में, एवं जीवन में खड़े हैं। मैंने आपको समझ लिया है। **3751**</td></tr>
<tr><td>निन्ऱ ऑन्ऱै उणरन्देनुक्कु* अदनुळ् नेमैं अदुविदुवॅन्ऱु*
ऑन्ऱुम् ऑरुवरक्कुणरलागादु* उणरन्दुम् मेलुम् काणवरिदु*
शॅन्ऱु शॅन्ऱु परम्परमाय्* यादुम् इन्ऱि त्तेयन्दट्टु*
नन्ऱु तीदॅन्ऱरिवरिदाय्* नन्ऱाय् ञानम् कडन्ददे॥५॥</td><td>चिरंतन को हमने समझ लिया है। आप का स्वभाव इतना सूक्ष्म है कि आप ‘यह’ एवं ‘वह’ हैं, नहीं कहा जा सकता, और देखना तो दूर की बात रही।सूक्ष्म से सूक्ष्म होने पर जब कुछ जुड़ा हुआ नहीं रहता और आप अच्छा बुरा सब से ऊपर हैं तथा सभी ज्ञान के बाहर हैं। **3752**</td></tr>
</table>

नन्राय् ज्ञानम् कडन्दुपोय्⋆ नल् इन्दिरियम् एल्लाम् ईर्त्तु⋆ ऑन्राय् क्किडन्द अरुम् पेरुम् पाळ्⋆ उलप्पिलदनै उणर्न्दुणर्न्दु⋆ शॆन्राङ्गिन्ब तुन्बङ्गळ्⋆ शॆट्रु क्कळैन्दु पचैयट्राल्⋆ अन्रे अप्पोदे वीडु⋆ अदुवे वीडु वीडामे॥६॥	ज्ञान की परिधि के बाहर जाकर इन्द्रियों की सीमा को तोड़ दो। बार बार महान एवं अंतहीन सत्ता का ध्यान करो। मोह त्यागकर सुख दुख की सीमा से बाहर निकल जाओ। यही एक मात्र तत्क्षण मुक्ति है। **3753**
अदुवे वीडु वीडु पेट्रु⋆ इन्बम् तानुम् अदु तेरि⋆ एदुवे तानुम् पट्रिन्रि⋆ यादुम् इलिगळ् आगिर्किल्⋆ अदुवे वीडु वीडु पेट्रु⋆ इन्बम् तानुम् अदु तेरादु⋆ एदुवे वीडेदिन्बम् एन्रु⋆ एय्त्तार् एय्त्तार् एय्त्तारे॥७॥	तृष्णा त्यागकर जानकारी के साथ अपने को खाली कर दो।यही सच में मुक्ति है तथा स्वर्ग का आनंद है। यह नहीं जानने वाले थक कर पूछते हैं 'मुक्ति क्या है? आनंद क्या है ?' वे केवल बार बार थकते रहेंगे। **3754**
एय्त्तार् एय्त्तार् एय्त्तार् एन्रु⋆ इल्लत्तारुम् पुरत्तारुम् मॊयत्तु⋆ आङ्गलरि मुयङ्ग⋆ त्ताम् पोगुम्बोदु⋆ उन्मत्तर् पोल् पित्तेयरि अनुरागम् पॊळियुम्बोदु⋆ एम् पॆम्मानोडु ऑत्ते शॆन्रु⋆ अङ्गुळम् कूड⋆ क्कूडिट्रागिल् नल्लुरैप्पे॥८॥	संबंधी जन चारो तरफ घेर कर चित्कार करेंगे 'ये जा रहे हैं'। जब तुम प्रस्थान करोगे तो परिवार जन रोयेंगे गिरेंगे तथा तुम्हारे पैर पकड़े रहेंगे। मोह छोड़ते हुए उन्माद को पारकर अगर तुम प्रभु को अपने हृदय में रख सके तो यही तुम्हारा प्रशंसनीय कृत्य होगा। **3755**
कूडिट्रागिल् नल्लुरैप्पु⋆ क्कूडामैयै क्कूडिनाल्⋆ आडल् परवै उयर् कॊडि⋆ एम् मायन् आवदददुवे⋆ वीडै प्पण्णि ऑरु परिशे⋆ एदिर्वुम् निगळ्वुम् कळिवुमाय्⋆ ओडि त्तिरियुम् योगिगळुम्⋆ उळरुम् इल्लै अल्लरे॥९॥	यह अच्छा है कि हम तब प्रभु से मिल जायें परंतु याद रखो कि इसके पहले तक गरूड़ध्वज वाले प्रभु प्रभु हैं तथा जीव जीव है।यह जानना मुश्किल नहीं है कि यहां ऐसे लोग हैं जो स्वनिर्मित स्वर्ग में घूमते रहते हैं। ऐसे योगी धरा पर बहुतायत में हैं, पहले हो चुके हैं, तथा आगे भी होंगे। **3756**
उळरुम् इल्लै अल्लराय्⋆ उळराय् इल्लै आगिये⋆ उळर् एम्मॊरुवर् अवर्वन्दु⋆ एनुळ्ळत्तुळ्ळे उरैगिन्रार्⋆ वळरुम् पिरैयुम् तेय् पिरैयुम् पोल्⋆ अशैवुम् आक्कमुम्⋆ वळरुम् शुडरुम् इरुळुम् पोल्⋆ तॆरुळुम् मरुळुम् माय्त्तोमे॥१०॥	'हैं' एवं 'नहीं हैं' वाले हमारे प्रभु ने अपने बारे में पूरी जानकारी करा दी है। हमारे प्रभु हमारे साथ रहने आये हैं और विकास एवं ह्रास का नाश कर दिया हैः जैसे कि चंद्र घटता बढ़ता है, जैसे विद्या एवं अविद्या, जैसे सूर्य का प्रकाश एवं छाया। **3757**
तॆरुळुम् मरुळुम् माय्त्तु⋆ त्तन्दिरुन्दु शॆम्पॊन् कळल् अडिक्कीळ्⋆ अरुळियिरुत्तुम् अम्मानाम्⋆ अयनाम् शिवनाम्⋆ तिरुमालाल् अरुळ प्पट्ट शडगोपन्⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्ताल्⋆ अरुळि अडिक्कीळ् इरुत्तुम्⋆ नम् अण्णल् करुमाणिक्कमे॥११॥	विद्या एवं अविद्या का नाश करने वाले प्रभु जो ब्रह्मा इन्द्र एवं शिव हैं उन्ही प्रभु का वरदहस्त प्राप्त शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक श्याम मणि वर्ण वाले प्रभु का चरणाविंद प्राप्त कराता है। **3758** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

79 करूमाणिक्कमलै (3759 - 3769)

तलैवियन् उण्मै क्कादलै त्ताय्मारूक्कु त्तोळि एडुत्तुरैत्तु अयल् मणम् विलक्कल्

सखियों का साथ

कुट्टनाट्टु तिरूप्पुलियूर ः यह स्थान केरल में चेंगुनुर से 6 कि मी पश्चिम में चेंगुनुर मन्नार रोड पर अवस्थित है। यहां मूलावर पूर्वाभिमुख खड़े मुद्रा में हैं। यहां भगवान पांच पांडवों में से एक भाई भीम के आराध्य देव माने जाते हैं।

तिरूवायमोळी मे 'तोळी पाशुर' के नाम से तीन दशक ऐसे हैं जिसमें एक सखी किशोरी नायिका की स्थिति को चित्रित करती है। ये दशक हैं (1) 3286 से 3296, (2) 3495 से 3505, (3) 3759 से 3769

(Refer Ramesh vol. 7, pp 61)

करु माणिक्क मलैमेल्⋆ मणि त्तडम् तामरै क्काडुगळ् पोल्⋆ तिरुमार्वु वाय् कण् कै⋆ उन्दि काल् उडै आडैगळ् शॆय्य पिरान्⋆ तिरुमाल् एम्मान् शॆळु नीर् वयल्⋆ कुट्ट नाट्टु त्तिरुप्पुलियूर्⋆ अरु मायन् पेरन्रि प्पेच्चिलळ्⋆ अन्नैमीर् इदर्कॆन् शॆय्गेना॥१॥	मेरी सजनी ! हम क्या करें ? वह तालों वाले कुट्टनाट्टु तिरूप्पुलियूर में मणि पर्वत की तरह खड़े प्रभु के नाम के अतिरिक्त और किसी का नाम नहीं लेती। उनका वक्षस्थल, होंठ, आंख, हाथ, चरण, एवं वस्त्रावरण सभी कमल के गुच्छे जैसे हैं। **3759**
अन्नैमीर् इदर्कॆन् शॆय्केन्⋆ अणि मेरुविन् मीदुलवुम्⋆ तुन्नु शूळ् शुडर् ञायिरुम्⋆ अन्रियुम् पल् शुडर्गळुम् पोल्⋆ मिन्नु नीळ् मुडियारम् पल् कलन्⋆ तान् उडै एम्पॆरुमान्⋆ पुन्नैयम् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुप्पुलियूर् पुगळुम् इवळे॥२॥	मेरी प्यारी सजनी ! हम क्या करें ? वह मुकुट, गले का हार, एवं प्रदीप्त आभूषणों की प्रशंसा गाती है 'मेरू के उज्जवल सूर्य एवं आकाश के तारों की तरह' जो पुन्नै बाग वाले तिरूप्पुलियूर के प्रभु धारण करते हैं। **3760**
पुगळुम् इवळ् निन्रिराप्पगल्⋆ पॊरु नीर्क्कडल् ती प्पट्टु⋆ एङ्गुम् तिगळुम् एरियोडु शॆल्वदॊप्प⋆ श्शॆळुम् कदिर् आळि मुदल्⋆ पुगळुम् पॊरु पडै एन्दि⋆ प्पोर् पुक्कु अचुररै प्पॊन्रुवित्तान्⋆ तिगळु मणि नॆडु माड नीडु⋆ तिरुप्पुलियूर् वळमे॥३॥	दिन रात खड़ा होकर वह धवल महलों वाले तिरूप्पुलियूर का गौरव गाती है ः 'मानो सागर जैसे आग के गोलो से प्रज्वलित हो उठा है उसी तरह हमारे प्रभु असुरों के विनाश के लिये दिव्य अस्त्र धारण करते हैं।' **3761**

ऊर् वळम् किळर् शोलैयुम्⋆ करुम्बुम् पॅरुम् शॅन्नॅलुम् शूळ्न्दु⋆ एर् वळम् किळर् तण् पणै⋆ क्कुट्ट नाट्टु त्तिरुप्पुलियूर्⋆ शीर् वळम् किळर् मूवुलगुण्डुमिळ्⋆ देव पिरान्⋆ पेर् वळम् किळरन्दन्रि प्पेच्चिलळ्⋆ इन्रि प्पुनैयिळैये॥ ४॥	कुट्टनाड्ड के उपजाऊ खेतों की जोताई हल में जुते बैलों से होती है जहां के ऊंचे बाग एवं पौधे विश्व को निगलकर फिर से बनाने वाले स्वर्गिकों के प्रभु की संपदा की संपन्नता के प्रतीक हैं। हमारी सुन्दर किशोरी किसी से कुछ नहीं बोलकर मात्र प्रभु की गाथा गाती है। **3762**
पुनैयिळैगळ् अणिवुम् आडैयुडैयुम्⋆ पुदुक्कणिप्पुम्⋆ निनैयुम् नीमैयदन्रिवट्किदु⋆ निन्रु निनैक्कप्पुक्काल्⋆ शुनैयिनुळ् तडम् तामरै मलरुम्⋆ तण् तिरुप्पुलियूर्⋆ मुनैवन् मूवुलगाळि⋆ अप्पन् तिरुवरुळ् मूळ्गिनळे॥ ५॥	गहने एवं वस्त्र जो यह पहनी है, तथा इसके मुखमंडल की प्रसन्नता, पता नहीं कहां से आते हैं। अहा ! यह कल्पनातीत है। तिरूप्पुलियूर के ताल में एक बड़ा कमल प्रस्फुटित है और यह किशोरी अपने को विश्व के प्रभु की करूणा में डुबोये रहती है। **3763**
तिरुवरुळ् मूळ्कि वैगलुम्⋆ शॅळु नीर् निर् क्कण्ण पिरान्⋆ तिरुवरुळ्गळुम् शेर्न्दमैक्कु⋆ अडैयाळम् तिरुन्दवुळ⋆ तिरुवरुळ् अरुळाल् अवन्⋆ शॅन्रु शेर् तण् तिरुप्पुलियूर्⋆ तिरुवरुळ् कमुगॉण् पळत्तदु⋆ मॅल्लियल् शॅव्विदळे॥ ६॥	इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह कृशकाय किशोरी प्रभु का कृपा पात्र बन गयी है। इसके होंठ का लाल रंग प्रभु की कृपा से उत्पन्न तिरूप्पुलियूर के अरेका फल की लाली है। **3764**
मॅल्लिलै च्चॅल्व वण् कॉडिपुल्ग⋆ वीङ्गिळम् ताळ् कमुगिन्⋆ मल्लिलै मडल् वाळै⋆ ईन् कनि शूळ्न्दु मणम् कमळ्न्दु⋆ पुल्लिलै त्तॅङ्गिनूडु⋆ काल् उलवुम् तण् तिरुप्पुलियूर्⋆ मल्ललम् शॅल्व क्कण्णन् ताळ् अडैन्दाळ्⋆ इम् मडवरले॥ ७॥	कोमल पत्ते वाले पान की लता अरेका फल के वृक्ष का यहां आलिंगन करती है। तिरूप्पुलियूर में पके कदली फल के शीतल सुगंध से नारियल फल के पत्ते पुष्ट हो रहे हैं। यहां के श्रीसंपन्न कृष्ण के चरण से यह किशोरी लाभान्वित हो गयी है। **3765**
मडवरल् अन्नैमीर्गट्कु⋆ एन्चॉल्लि च्चॉल्लुगेन् मल्लै च्चॅल्व⋆ वडमॉळि मरैवाणर्⋆ वेळ्वियुळ् नॅय्यळल् वान् पुगै पोय्⋆ तिडविशुम्बिल् अमरर् नाट्टै मरैक्कुम्⋆ तण् तिरुप्पुलियूर्⋆ पडवरवणैयान् तन् नामम् अल्लाल्⋆ परवाळ् इवळे॥ ८॥	सजनी ! हम कैसे तुमलोगों को समझायें ? शेषशायी प्रभु के प्पुलियूर का शीतल घर संस्कृत के विद्वानों द्वारा दी गयी आहूती से उत्पन्न धुंआ के बादल से आच्छादित रहता है। यह किशोरी सर्वदा इस प्रभु के नाम को बड़बड़ाते रहती है। **3766**
परवाळ् इवळ् निन्रिराप्पगल्⋆ पनि नीर् निर् क्कण्ण पिरान्⋆ विरवार् इशै मरै वेदियर् ऑलि⋆ वेलैयिन् निन्रॊलिप्प⋆ करवार् तडन्दॊरुम् तामरै क्कयम्⋆ तीविगै निन्रलरुम्⋆ पुरवार् कळनिगळ् शूळ्⋆ तिरुप्पुलियूर् प्पुगळ् अन्रि मट्रे॥ ९॥	रात दिन यह मेघ जैसे श्याम प्रभु का नाम लेती है जो उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूप्पुलियूर में रहते हैं जहां घड़ियाल के ताल लाल कमल से मानो प्रज्वलित दिखते हैं तथा जहां अनवरत वैदिक पाठ के गान का संगीत गूंजते रहता है। **3767**

अन्रि मट्रोर् उपायमॆन्⋆ इवळ् अन् तण् तुळाय् कमळ्दल्⋆ कुन्र मा मणि माड माळिगै⋆ क्कोलक्कुळाङ्गळ् मल्गि⋆ तॆन् तिशै त्तिलदम्पुरै⋆ क्कुट्ट नाट्टु त्तिरुप्पुलियूर्⋆ निन्र माय प्पिरान् तिरुवरुळाम्⋆ इवळ् नेर्प्पट्टदे॥१०॥	फिर कैसे इस किशोरी का वदन तुलसी का सुगंध विखेरती है ? निश्चित रूप से दक्षिण कुट्टनाट्टु में प्रकाशस्तंभ की तरह खड़े तिरूप्पुलियूर वाले प्रभु का यह किशोरी कृपा पात्र बन गयी है जो सुन्दर ऊंचे आभूषित महलों के समूह से सुशोभित है। **3768**
नेर्प्पट्ट निरै मूवुलगुक्कुम्⋆ नायगन् तन्नडिमै⋆ नेर्प्पट्ट तॊण्डर् तॊण्डर् तॊण्डर्⋆ तॊण्डन् शडगोपन् शॊल्⋆ नेर्प्पट्ट तमिळ् मालै⋆ आयिरत्तुळ् इवैयुम् ओर् पत्तुम् नेर् पट्टार्⋆ अवर्नेर्पट्टार्⋆ नॆडुमार्कडिमै शॆय्यवे॥११॥	तीनों लोक के नाथ के भक्तों के भक्त शडगोपन के सुन्दर हजार पदों का यह दसक पाठ करने वालों को प्रभु की सेवा में संलग्न जीवन प्रदान करेगा। **3769** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

80 नेडुमार्कडिमै (3770 - 3780)

बागवदर्गट्कु त्ताम् अडिमैयाय् इरूक्कुम् उण्मैये आळ्वार पेशुदल्

नॅडुमार्कडिमै शॅय्वेन्बोल्⋆ अवनै क्करुद वञ्जित्तु⋆ तडुमाट्ट्र तीक्कदिगळ्⋆ मुट्रुम् तविर्न्द शदिर् निनैन्दाल्⋆ कॉडु मा विनैयेन् अवन् अडियार् अडिये⋆ कूडुम् इदुवल्लाल्⋆ विडुमारॆन्बॅदन् अन्दो !⋆ वियन् मूवुलगु पॅरिनुमे॥१॥	केवल मेरे सोचने मात्र से कि मैं प्रभु की सेवा करूंगा हमारे दुष्ट कर्म तत्क्षण बिना किसी विरोध के छोड़ कर चले गये। अब इस पर ध्यान दो कि प्रभु के भक्तों की सेवा के अतिरिक्त तीनो लोक में कोई और प्रिय धन होगा क्या ? **3770**
वियन् मूवुलगु पॅरिनुम् पोय्⋆ त्ताने ताने आनालुम्⋆ पुयल् मेगम् पोल् तिरुमेनि अम्मान्⋆ पुनै पूङ्गळल् अडिक्कीळ्⋆ शयमे अडिमै तलै निन्रार्⋆ तिरुत्ताळ् वणङ्गि⋆ इम्मैये पयने इन्बम् यान् पॅट्रदु⋆ उरुमो पावियेनुक्के॥२॥	तीनों लोक की संपदा का आनंद एवं स्वर्ग का आत्मानंद को मिलाने पर भी क्या यह मेघवर्ण प्रभु के चरणारविंद के निस्वार्थ भक्तों की सेवा की तुलना कर सकेगा जो हमने अभी यहां पाया है ? **3771**
उरुमो पावियेनुक्कु⋆ इव्वुलगम् मून्रुम् उडन् निरैय⋆ शिरुमा मेनि निमिर्त्त⋆ एन् शॅन्दामरै क्कण् तिरुक्कुरळन्⋆ नरुमा विरै नाण् मलरडि क्कीळ्⋆ प्पुगुदल् अन्रि अवन् अडियार्⋆ शिरुमा मनिशराय् एन्नै आण्डार्⋆ इङ्गे तिरियवे॥३॥	क्या यह उचित होगा कि कमल समान आंखों वाले सुन्दर वामन प्रभु के चरणों से जुड़ जाऊं जिन्होंने अपना छोटे स्वरूप का विस्तार कर पूरी प्रथ्वी पर अधिकार कर लिया था, जबकि प्रभु के योग्य भक्त गन, हमारे नाथ, इस धरा पर घूम रहे हों ? **3772**
इङ्गे तिरिन्देर्किळक्कुट्रॅन् !⋆ इरु मा निलम् मुन् उण्डुमिळ्न्द⋆ शॅङ्गोलत्त पवळ वाय्⋆ च्चॅन्दामरै क्कण् एन्नम्मान्⋆ पॅाङ्गेळ् पुगळ्गाळ् वायवाय्⋆ प्पुलन्गॉळ् वडिवॅन् मनत्तदाय्⋆ अङ्गेय् मलर्गळ् कैयवाय्⋆ वळिवट्टॊड अरुळिले॥४॥	मूंगा समान होंठ एवं अरूणाभ कमल के समान आंख वाले प्रभु ने पृथ्वी को निगलकर पुनः बनाया। आपकी गाथा गाता हूं एवं अपने हाथों के फूल से आपकी करूणा की पूजा करता हूं। हमारे हृदय में आपका स्वरूप विराजमान है।अब किस वस्तु की कमी है मुझे ? **3773**
वळिवट्टॊड अरुळ् पॅट्रु⋆ मायन् कोल मलर् अडिक्कीळ्⋆ शुळिवट्टॊडुम् शुडर्च्चोदि वॅळ्ळत्तु⋆ इन्बुट्रिरुन्दालुम्⋆ इळिवट्टॊडुम् उडलिनिल् पिरन्दु⋆ तन् शीर् यान् कट्रु⋆ मॉळिवट्टॊडुम् कवियमुदम्⋆ नुगर्च्चि उरुमो मुळुदुमे॥५॥	अगर आपके चरणाविंद की सेवा का आनंद मिला होता या आपकी नैसर्गिक छटा की बाढ़ को निहारने का आनंद मिला होता तो क्या ये इस अधम शरीर से जन्म लेकर बैठे हुए आपके नाम के प्रिय पदों की बाढ़ के गान का आनंद लेने की तुलना कर सकेंगे ? ? **3774**

नुगर्च्चि उऱमो मूवुलगिन्⋆ वीडु पेऱ तन् केळिल्⋆ पुगर् च्चॆम् मुगत्त कळिऱ्ऱ⋆ पॊन्नाळिक्कै एन्नम्मान्⋆ निगर् च्चॆम् पङ्गि एरिविळिगळ्⋆ नीण्ड अशुरर् उयिर् एल्लाम्⋆ तगर्त्तुण्डुळलुम् पुट्पागन्⋆ पॆरिय तनि मा प्पुगळे॥६॥	तीनों लोक की संपदा का आनंद एवं स्वर्ग का आत्मानंद को मिलाने पर भी क्या यह मेघवर्ण प्रभु के चरणारविंद के निस्वार्थ भक्तों की सेवा की तुलना कर सकेगा जो हमने अभी यहां पाया है ? **3775**
तनि मा प्पुगळे एञ्ञान्ऱुम्⋆ निर्कुम् पडिया त्तान् तोन्ऱि⋆ मुनि मा प्पिरम मुदल्वित्ताय्⋆ उलगम् मून्ऱुम् मुळैप्पित्त⋆ तनि मा त्तॆय्व त्तळिर् अडिक्कीळ्⋆ प्पुगुदल् अन्ऱि अवन् अडियार्⋆ ननि मा क्कलवि इन्बमे⋆ नाळुम् वाय्क्क नङ्गट्के॥७॥	महान गौरवशाली तथा तीनों लोक का अंकुरण कराने वाले स्वयंजात बीज एवं चिरंतन प्रभु के चरणाविंद की सेवा से कहीं ज्यादा आनंददायक होगा प्रभु के प्रिय भक्तों के साथ सर्वदा के लिये समागम। **3776**
नाळुम् वाय्क्क नङ्गट्कु⋆ नळिर् नीर् क्कडलै प्पडैत्तु⋆ तन् ताळुम् तोळुम् मुडिगळुम्⋆ शमन् इलाद पल परप्पि⋆ नीळुम् पडर् पूङ्गर्पगक्कावुम्⋆ निऱै पन्नायिट्ऱिन्⋆ कोळुम् उडैय मणि मलै पोल्⋆ किडन्दान् तमर्गळ् कूट्टमे॥८॥	आपने शीतल सागर बनाकर उस पर अपना अद्वितीय स्वरूप फैला दिया। आपके अनगिनत सिर, हाथ, एवं पैर हजारों सूर्य के समान तेजस्वी मणि पर्वत पर कल्प वृक्ष के महान वन की तरह हैं। प्रभु के प्रिय भक्तों के साथ प्रिय समागम ही मेरी एक मात्र चाह है। **3777**
तमर्गळ् कूट्ट वल्विनैयै⋆ नाशम् शॆय्युम् शदिर् मूर्त्ति⋆ अमर् कॊळ् आळि शङ्गु वाळ्⋆ विल् तण्डादि पल् पडैयन्⋆ कुमरन् कोल ऐङ्गणै वेळ् तादै⋆ कोदिल् अडियार् तम्⋆ तमर्गळ् तमर्गळ् तमर्गळाम्⋆ शदिरे वाय्क्क तमियेर्के॥९॥	प्रभु शंख चक्र धनुष गदा एवं खड्ग तथा अन्य अस्त्रों से अपने भक्तों के कर्म का क्षय करने की शक्ति रखते हैं। आप पूर्ण युवा एवं प्रेम के देवता काम के जनक हैं। आपके भक्तों के एक मात्र सेवकों की मैं सेवा करना चाहता हूं। **3778**
वाय्क्क तमियेर्कु⋆ ऊळिदोऱूळि ऊळि⋆ मा कायाम् पूक्कॊळ् मेनि नान्गु तोळ्⋆ पॊन्नाळि क्कै एन्नम्मान्⋆ नीक्कम् इल्ला अडियार् तम्⋆ अडियार् अडियार् अडियार् एम् कोक्कळ्⋆ अवरक्के कडिगळाय च्चॆल्लम⋆ नल्ल कोटपाडे॥१०॥	मेरी एक मात्र इच्छा है कि काया के वर्ण वाले चार भुजाओं से युक्त चक्रधारी प्रभु के सेवकों के सेवक के परिवार में मेरा जन्म हर युग के हर जीवन में हो। **3779**
नल्ल कोट्पाट्टुलगङ्गळ्⋆ मून्ऱिनुळ्ळुम् तान् निऱैन्द⋆ अल्लि क्कमल क्कण्णनै⋆ अन्दण् कुरुगूर् च्चडगोबन्⋆ शॊल्ल प्पट्ट आयिरत्तुळ्⋆ इवैयुम् पत्तुम् वल्लार्गळ्⋆ नल्ल पदत्ताल् मनै वाळ्वर्⋆ कॊण्ड पॆण्डिर् मक्कळे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह उत्तम दशक विश्व में पूरी तरह सर्वत्र विराजमान नीले कमल के वर्ण वाले कृष्ण की प्रशस्ति है। इसे गाने वालों का पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। **3780** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

81 कोण्ड पेण्डिर (3781 – 3791)

ऎल्ला वगैयिलुम् उरविननान तिरूमालै च्वेर्मिन् एनल्

कॊण्ड पॆण्डिर् मक्कळ् उट्रार्* शुट्रत्तवर् पिररुम्* कण्डदोडु पट्टदल्लाल्* कादल् मट्रु यादुम् इल्लै* ऎण्डिशैयुम् कीळुम् मेलुम्* मुट्रवुम् उण्ड पिरान्* तॊण्डरोमाय् उय्यल् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् तुणैये॥१॥	पत्नी एवं संतान, मित्र एवं संबंधी, को कोई स्नेह नहीं है सिवाय इसके कि वे देखते हैं कि तुम्हारे पास कितना है ? आठों दिशाओं, स्वर्ग, नरक, तथा सभी कुछ को निगलने वाले प्रभु ही मुक्ति के एकमात्र मार्ग हैं। आपकी पूजा ही श्रेयस्कर है। **3781**
तुणैयुम् शार्वुम् आगुवार्पोल्* शुट्रत्तवर् पिररुम्* अणैय वन्द आक्कम् उण्डेल्* अट्टैगळ्पोल् शुवैप्पर्* कणै ऒन्राले एळ् मरमुम् ऎय्द* ऎम् कार् मुगिलै* पुणै ऎन्रुय्य प्पोगिल् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् पॊरुळे॥२॥	मित्र एवं संबंधी तुम्हें अपना समय देते हैं परंतु वे जोंक की तरह तुम्हारे धन को समाप्त होने तक चूसते रहते हैं। उस राजकुमार को खोजो जो एक बाण से सात वृक्षों को वेध दिये थे। आप ही मुक्ति के लिये मरूभूमि की हरियाली हैं। यह निश्चित है कि आप के सिवा अन्य कोई चारा नहीं है। **3782**
पॊरुळ् कैयुण्डाय् च्चॆल्लक्काणिल्* पोट्रि ऎन्रेट्रॆळुवर्* इरुळ्गॊळ् तुन्बत्तिन्मै काणिल्* ऎन्ने! ऎन्पारुम् इल्लै* मरुळ्गॊळ् शॆय्गै अशुरर् मङ्ग* वड मदुरै प्पिरन्दार्कु* अरुळ्गॊळ् आळाय् उय्यल् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् अरणे॥३।	आपको संपन्न देखकर वे आपका स्वागत करेंगे। विपन्नता में एक भी खबर लेने नहीं आयेगा कि क्या हुआ? दुष्ट असुरों को नाश करने हेतु प्रभु मथुरा में पधारे। स्नेह से आपकी सेवा करो। आपको छोड़कर सच में कोई आश्रय नहीं है। **3783**
अरणम् आवर् अट्र कालैक्कु* ऎन्रॆन्रमैक्क प्पट्टार्* इरणम् कॊण्ड तॆप्पर् आवर्* इन्रियिट्टालुम् अगते* वरुणित्तॆन्ने* वड मदुरै प्पिरन्दवन् वण् पुगळे* शरण् ऎन्रुय्य प्पोगिल् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् शदिरे॥४॥	जो तुम्हारी संपति के रखवाले हैं वे तुम्हारे बुरे दिन में ऋण देने वाले की तरह व्यवहार करेंगे। इस पर वर्णन से क्या लाभ ? मथुरा के प्रभु की प्रशस्ति ही बुद्धिमानी का काम है। आप ही हमारी आशा एवं आश्रय हैं। **3784**
शदिरम् ऎन्रु तम्मै त्तामे* शम्मदित्तिन् मॊळियार्* मदुर पोगम् अदुट्रवरे* वैगि मट्रॊन्रुरुवर्* अदिर्गॊळ् शॆय्गै अशुरर् मङ्ग* वड मदुरै प्पिरन्दार्कु* ऎदिर्गॊळ् आळाय् उय्यल् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् इन्बमे॥५॥	जिनलोगों ने तोता की तरह मृदु भाषी नारियों के समागम का आनंद लिया है वे भी कुछ काल बाद फल चखेंगे। मथुरा के प्रभु ने अनेकों असुरों का अंत किया। आपकी सेवा में लगे रहो जो एक मात्र आनंद है। **3785**
इल्लै कण्डीर् इन्बम् अन्दो!* उळ्ळदु निनैयादे* तॊल्लैयार्गळ् ऎत्तनैवर्* तोन्रि क्कळिन्दॊळिन्दार्* मल्लै मूदूर्* वड मदुरै प्पिरन्दवन् वण् पुगळे* शॊल्लि उय्य प्पोगल् अल्लाल्* मट्रॊन्रिल्लै शुरुक्के॥६॥	यहां कोई आनंद निश्चित नहीं है। हाय ! पुराकाल से कितने लोग व्यर्थ आये एवं गये।संक्षेप में समझो कि प्राचीन नगर मथुरा में पधारने वाले प्रभु की गाथा गाओ क्योंकि इसे छोड़कर कुछ है नहीं। **3786**

मट्ऱोन्ऱिल्लै शुरुङ्ग च्चॊन्नोम्* मा निलत्तॆव्वुयिरक्कुम्* शिट्ट वेण्डा शिन्दिप्पे अमैयुम्* कण्डीर्गळ् अन्दो ! * कुट्रम् अन्ऱॆङ्गळ् पॆट्र त्तायन्* वड मदुरै प्पिरन्दान्* कुट्रमिल् शीर् कट्टु वैगल्* वाळ्दल् कण्डीर् कुणमे॥७॥	इसमें कोई संदेह नहीं है, हमने कहा, यहां कुछ है नहीं। इस धरा के प्राणियों के लिये प्रभु के बारे में सोचना भी पर्याप्त है। हाय ! कम से कम आपके नाम के बारे में जानसे कोई क्षति नहीं है। मथुरा के गोपकिशोर का नाम जपो। **3787**
वाळ्दल् कण्डीर् गुणम् इदन्दो ! * मायवन् अडि परवि* पोळ्दु पोग उळ्ळगिर्कुम्* पुन्मै इलादवर्क्कु* वाळ् तुणैया* वड मदुरै प्पिरन्दवन् वण् पुगळे* वीळ् तुणैयाय् प्पोम् इदनिल्* यादुम् इल्लै मिक्कदे॥८॥	कृष्ण के चरण की आजीवन सेवा ही श्रेयस्कर है। हाय ! आपकी गाथा गाने से श्रेयस्कर अन्य कोई काम नहीं है। उत्तर मथुरा में प्रभु का अवतार शुद्ध हृदय के भक्तों को संरक्षण देने के लिय हुआ है जो एकमात्र आपको ही चाहते हैं। **3788**
यादुम् इल्लै मिक्कदनिल्* एन्ऱॆन्ऱदु करुदि* कादु शॆय्वान् कूदै शॆय्दु* कडैमुरै वाळ्क्कैयुम् पोम्* मादुगिलिन् कॊडिक्कॊळ् माड* वड मदुरै प्पिरन्द* तादु शेर् तोळ् कण्णन् अल्लाल्* इल्लै कण्डीर् शरणे॥९॥	मानों अनंत है ही नही एवं जो केवल सीमित लक्ष्य रखते हैं उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ गंवाया । हाय ! जैसे कान का छेद बड़ा होने पर कर्णफूल को गंवा दिया जाता है। ध्वज सुशोभित महलों वाले मथुरा नगर के प्रभु का आश्रय लो। **3789**
कण्णन् अल्लाल् इल्लै कण्डीर्* शरण् अदु निर्क वन्दु* मण्णिन् बारम् नीक्कुदर्के* वड मदुरै प्पिरन्दान्* तिण्णमा नुम् उडैमै उण्डेल्* अवन् अडि शेर्न्दुय्म्मिनो* एण्ण वेण्डा नुम्मदादुम्* अवन् अन्ऱि मट्रिल्लैये॥१०॥	यह निश्चित है कि कृष्ण के सिवा कोई आश्रय नहीं है। इसे प्रमाणित करने के लिये आपने मथुरा में अवतार लिया एवं विश्व को भार मुक्त किया। जिसे तुम अपना मानते हो उसे प्रभु को समर्पित कर दो। भक्तों इसमें संदेह नहीं है कि सब कुछ प्रभु की कृपा से ही होता है। **3790**
‡आदुम् इल्लै मट्रवनिल्* एन्ऱदुवे तुणिन्दु* तादु शेर् तोळ् कण्णनै* क्कुरुगूर् च्चडगोपन् शॊन्न* तीदिलाद ऑण् तमिळाळ्* इवै आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्* ओद वल्ल पिराक्कळ्* नम्मै आळुडैयार्गळ् पण्डे॥११॥	माला से विभूषित वक्षस्थल वाले कृष्ण के चरणाश्रित कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक है। जो इसे गायेंगे वे हमारे चिरंतन नाथ हैं। **3791** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

82 पण्डैनाळाले (3792 -3802)

एल्ला उरविन् कारियमुम् तमक्कु क्कुरैयिल्लामल् अरूळुमारू आळ्वार् एम्बेरूमानै वेण्डुदल्

वरगुणमंगै ः यह स्थान तमिल नाडु में आळवार तिरूनगरी के पास 9 तिरूपति में से एक है तथा ताम्रपर्णी के उत्तर में अवस्थित है। यह 'नाथम' नाम से प्रसिद्ध है। मूलावर को विजयासनार कहा जाता है जो बैठे मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। (Refer Ramesh vol. 4, pp 36)

पण्डै नाळाले निन् तिरुवरुळुम्* पङ्गयत्ताळ् तिरुवरुळुम् कोंण्डु* निन् कोयिल् शीयत्तु प्पल्पडिगाल्* कुडिकुडि वळिवन्दाट्शेय्युम्* तोंण्डरोरक्करुळि च्चोदि वाय् तिरन्दु* उन् तामरै क्कण्गळाल् नोक्काय्* तेंण् तिरै प्पोरुनल् तण् पणै शूळन्द* तिरुप्पुळिङ्गुडि क्किडन्दाने॥१॥	पोरूनल के जल से घिरे तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु हमलोगों पर अपने कमल सी आंखों से दृष्टि डालिये एवं अपना शांत होठ खोलिये। पुराकाल से आपकी तथा कमलनिवासिनी लक्ष्मी की कृपा से हम आपके मंदिर में एकत्रित होकर आपकी हर तरह से बंधुआ सेवक की तरह सेवा करते रहे हैं। **3792**
कुडिक्किडन्दाक्कम् शेय्दु* निन् तीरत्त अडिमै क्कुट्टवल् शेय्दु* उन् पोन् अडि क्कडवादे वळि वरुगिन्र* अडियरोरक्करुळि* नी ओरुनाळ् पडिक्कळवाग निमिरत्त* निन् पाद पङ्गयमे तलैक्कणियाय्* कोडिक्कोळ् पोन् मदिळ् शूळ् कुळिर् वयल् शोलै* त्तिरुप्पुळिङ्गुडि क्किडन्दाने॥२॥	सुनहले दीवार एवं उपजाऊ खेतों से घिरे तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु ! आपके मंगलमय सार्वभौम क्षेत्र को विना लांघे हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हम बंधुआ सेवक की तरह आपके दिव्य चरण की सेवारत रहे हैं। धरा को मापने वाला आपका चरणारविंद हमारे सिर को एक दिन सुशोभित करे ! **3793**
किडन्द नाळ् किडन्दाय् एत्तनै कालम् किडत्ति* उन् तिरुवुडम्बशैय* तोंडरन्दु कुट्टवल् शेय्दु तोंल्लडिमै वळि वरुम्* तोंण्डरोरक्करुळि* तडङ्गोंळ् तामरै क्कण् विळित्तु* नी एळुन्दुन् तामरै मङ्गैयुम् नीयुम्* इडङ्गोंळ् मूवुलगुम् तोंळ इरुन्दरुळाय्* तिरुप्पुळिङ्गुडि क्किडन्दाने॥३॥	तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था वाले प्रभु ! तीनों लोक एकत्रित होकर आपकी पूजा करे! आप हर दिन शयन में रहते हैं, कितनी अवधि तक रहेंगे, तबकत जबतक कि आपका शरीर दुखने नहीं लगे ? अनवरत सेवारत अपने बंधुआ सेवक का आवेदन सुन लीजिये प्रभु ! प्रार्थना है, अपनी कमल सी आंखे खोलिये, जागिये, एवं लक्ष्मी के

	साथ विराजमान होईये। **3794**
पुळिङ्गुडि क्किडन्दु वरगुणमङ्गै इरुन्दु* वैकुन्दत्तुळ् निन्रु* तॆळिन्द एन् शिन्दैयकम् कळियादे* एन्नै आळ्वाय् एनक्करुळि* नळिन्द शीर् उलगम् मून्रुडन् वियप्प* नाङ्गळ् कूत्ताडि निन्रारप्प* पळिङ्गु नीर् मुगिलिन् पवळम् पोल्* कनिवाय् शिवप्प नी काण वाराये॥ ८ ॥	तिरूपुलिंगुडी में शयनावस्था में, वरगुणमंगै में बैठने की मुद्रा में, तथा वैंकुठम में खड़े मुद्रा वाले प्रभु ! हमारे हृदय में विराजकर आपने हमारे विचार को शुद्ध कर दिया है। आपकी इतनी महती कृपा है प्रभु ! तीनों लोक आपका दर्शन करे तथा हम पुकारें नाचें तथा आनंद मनायें ! प्रार्थना है, अपना मेघ सा श्याम वदन का दर्शन दीजिये और आपका मूंगावत होंठ और अधिक लाल हो जाये। **3795**
पवळम् पोल् कनि वाय् शिवप्प नी काण वन्दु* निन् पल् निला मुत्तम्* तवळ् कदिर् मुरुवल् शॆय्दु* निन् तिरुक्कण् तामरै तयङ्ग निन्ररुळाय् पवळ नन् पडर्क्कीळ् शङ्गुरै पॊरुनल्* तण् तिरुप्पुळिङ्गुडि क्किडन्दाय्* कवळ मा कळिट्रिन् इडर् कॆड तडत्तु* क्काय् शिन प्परवै ऊर्न्दाने॥ ५ ॥	तिरूपुलिंगुडी में शीतल जल से घिरे शयनावस्था वाले प्रभु जहां शंख एवं मूंगा की बहुतायत है। प्रार्थना है, मूंगावत लाल होंठ और मोती से चमकते दांत के साथ मुस्कान एवं अर्द्धखुली कमल सी आंखों के साथ आप सामने खड़े होकर दर्शन दीजिये। क्या गरूड़ पक्षी पर सवार होकर फंसे हुए पैर वाले हाथी की रक्षा में आप नहीं आये ? **3796**
काय् शिन प्परवै ऊर्न्दु* पॊन् मलैयिन् मीमिशै क्कार् मुगिल् पोल्* मा शिन मालि मालिमान् एन्रु* अङ्गवर् पड क्कनन्रु मुन् निन्र* काय् शिन वेन्दे ! कदिर् मुडियाने !* कलि वयल् तिरुप्पुळिङ्गुडियाय्* काय् शिनवाळि शङ्गु वाळ् विल् तण्डेन्दि* एम्मिडर् कडिवाने ! ॥ ६ ॥	तिरूपुलिंगुडी के सुखद खेतों वाले प्रभु कायशिनवेन्दे, क्रोधी राजा, सुनहले शिखर पर काले मेघ की तरह, आप गस्सैल गरूड़ पर सवार होकर आये, खड़ा हुये, तथा माली एवं सुमाली की घमासान युद्ध में अंत कर किया। अपने शंख तथा अन्य भीषण अस्त्रों से आप निश्चित हमारी यातना का अंत कर देंगे। **3797**
एम्मिडर् कडिन्दिङ्ग्नै आळ्वाने !* इमैयवर् तमक्कुम् आङ्गनैयाय्* शॆम्मडल् मलरुम् तामरै प्पळन* तण् तिरुप्पुळिङ्गुडि क्किडन्दाय्* नम्मुडै अडियर् कव्वै कण्डुगन्दु* नाम् कळित्तुळ नलम् कूर* इम्मडवुलगर् काण नी ऒरुनाळ्* इरुन्दिडाय् एङ्गळ् कण् मुगप्पे॥ ७ ॥	शीतल जल से घिरे एवं आग की तरह खिले कमल वाले तिरूपुलिंगुडी के शयनावस्था के प्रभु! स्वर्गिकों के भी प्रभु, आप हमारी यातना का अंत करें, तथा हम पर शासन करें। आइये और एकदिन हमारे सामने बैठिये जिससे कि हम आनंदित होकर अपना हृदयोद्गार प्रकट करें, आपके भक्तगन भीड़भाड़ में आनंद मनायें, एवं यह

	मूर्ख संसार साक्षी रहे। **3798**
एङ्गळ् कण् मुगप्पे उलगर्गळ् एल्लाम्⋆ इणैयडि तॉळुदॅळुन्दिरैञ्जि⋆ तङ्गळन्बार तमदु शॉल् वलत्ताल्⋆ तलैत्तलै च्चिरन्दु पूशिप्प⋆ तिङ्गळ् शेर् माड त्तिरुप्पुळिङ्गुडियाय्!⋆ तिरु वैगुन्दत्तुळ्ळाय्! देवा⋆ इङ्गण् मा ञालत्तिदनुळुम् ऑरुनाळ्⋆ इरुन्दिडाय् वीट्रिडम् कॉण्डे॥८॥	चांद को छूते महलों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु! श्रीवैंकुठम के प्रभु सारा संसार आपस में स्पर्द्धा के साथ आपकी चरण की पूजा करे एवं हृदय के पूर्ण स्नेह तथा पूरे ओजसपूर्ण वाणी से आपकी प्रशस्ति गाये। एकदिन हमारे आंखो के सामने आइये एवं उपयुक्त जगह देखकर हमारे साथ बैठिये। **3799**
वीट्रिडम् कॉण्डु वियन्ञॉळ् मा ञालत्तु⋆ इदनुळुम् इरुन्दिडाय्⋆ अडियोम् पोट्रि ओवादे कण्णिनै कुळिर⋆ पुदु मलर् आगत्तै प्परुग⋆ शेट्रिळ वाळै शॅन् नॅल्डुगळुम्⋆ शॅळुम् पणै त्तिरुप्पुळिङ्गुडियाय्⋆ कूट्रमाय् अशुरर् कुलमुदल् अरिन्द⋆ कॉडुविनै प्पडैगळ् वल्लाने! ॥९॥	सुनहले धान के खेत में नाचती मछलियों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु! उपयुक्त जगह देखकर यहां भी बैठिये जहां संसार आपकी प्रशस्ति गाये तथा हमभक्त लोग मधुमक्खी की तरह मंड़राते हुए आपके मुखमंडल के अमृत से लाभान्वित हों। अनेकों भीषण अस्त्रों के साथ असुरगनों का समूह में नाश करने वाले प्रभु ! **3800**
कॉडु विनै प्पडैगळ् वल्लैयाय्⋆ अमरर्क्किडर् कॅड अशुरर्गट्किडर् शॅय्⋆ कडु विनै नञ्जे! एन्नुडै अमुदे⋆ कलि वयल् तिरुप्पुळिङ्गुडियाय्⋆ वडिविणैयिल्ला मलर्मगळ्⋆ मट्रै निलमगळ् पिडिक्कुम् मॅल्लडियै⋆ क्कॉडुविनैयेनुम् पिडिक्क नी ऑरुनाळ्⋆ कूवुदल् वरुदल् शॅय्याये॥१०॥	सुखद खेतों वाले तिरूपुलिंगुडी के प्रभु! हमारे अमृत ! आपने असुरें का अंत किया। अनेकों भीषण अस्त्रों के साथ प्रभु ने देवों की यातना का अंत किया। अद्वितीय कमल निवासिनी लक्ष्मी तथा भू देवी आपके चरणारविंद की सेवा कर आपके चरण का दर्द दूर करते हैं। मैं भी आपका चरण दबाऊं, या आप मेरे पास आयें या हमें अपने पास बुला लें। **3801**
कूवुदल् वरुदल् शॅय्दिडाय् एन्रु⋆ कुरै कडल् कडैन्दवन् तन्नै⋆ मेवि नन्नामरन्द वियन् पुनल् पॉरुनल्⋆ वळुदि नाडन् शडकोपन्⋆ नावियल् पाडल् आयिरत्तुळ्ळुम्⋆ इवैयुम् ओर् पत्तुम् वल्लार्गळ्⋆ ओवुदल् इन्रि उलगम् मून्रळन्दान्⋆ अडियिणै उळ्ळत्तोर्वारे॥११॥	प्रवाह पूर्ण पोरूनल के वलुदि क्षेत्र के शडगोपन का यह दसक सागर मंथन करने वाले प्रभु को अपने पास बुलाता है या प्रभु के पास स्वयं जाने के लिये चाहता है। इसे याद करने वाले प्रभु के चरण को प्राप्त करेंगे। **3802** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **83 ओरायिरमाय् (3803 – 3813)** **एम्बेरूमानोडु उळळ तोडर्बिने क्कण्ड आळवार अवनदु शीलत्तिल् ईडुपट्टु क्कूरूदल्**	
‡ओर् आयिरमाय्⋆ उलगेळ् अळिक्कुम्⋆ पेर् आयिरम् कौण्डदोर्⋆ पीडुडैयन् कार् आयिन⋆ काळ नल् मेनियिनन्⋆ नारायणन्⋆ नङ्गळ् पिरान् अवने॥१॥	अद्वितीय प्रभु! सात लोकों के आप हजार तरह से रक्षक हैं तथा आपके हजार नाम हैं। मेघ समान श्याम प्रभु आप हमारे प्रभु नारायण हैं। **3803**
अवने अगल् ञालम्⋆ पडैत्तिडन्दान्⋆ अवने अग्दुण्डुमिळ्न्दान्⋆ अळन्दान्⋆ अवने अवनुम्⋆ अवनुम् अवनुम्⋆ अवने मट्रॆल्लामुम् अऱिन्दनमे॥२॥	आपने विस्तृत धरा को बनाया एवं इसे ऊपर उठाया। आपने इसे निगला, पुनः बनाया, तथा मापा। आप ही शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र हैं। अन्य सब भी आप ही हैं, हमें यह विदित है। **3804**
अऱिन्दन वेद⋆ अरुम् पौरुळ् नूल्गळ्⋆ अऱिन्दन कौळ्ग⋆ अरुम् पौरुळ् आदल्⋆ अऱिन्दनर् एल्लाम्⋆ अरियै वणङ्गि⋆ अऱिन्दनर्⋆ नोय्गळ् अऱुक्कुम् मरुन्दे॥३॥	वेद हरि को चेतन का सार मानता है।विचारक जनों ! प्रभु की पूजा सभी यातनाओं के विनाशक के रूप में करो। **3805**
मरुन्दे नङ्गळ्⋆ पोग मगिळ्च्चिक्कॆन्ऱु⋆ पैरुम् देवर् कुळाङ्गळ्⋆ पिदट्रुम् पिरान्⋆ करुन्देवन् एम्मान्⋆ कण्णन् विण्णुलगम्⋆ तरुम् देवनै⋆ शोरेल् कण्डाय् मनमे ! ॥४॥	स्वर्गिकों ने आपको आनंद का सोम रस माना है। श्याम कृष्ण ही हमारी मुक्ति हैं। हे हृदय ! इसे समझो एवं कभी आपको छोड़ो नहीं। **3806**
मनमे ! उन्नै⋆ वल्विनैयेन् इरन्दु⋆ कनमे शौल्लिनेन्⋆ इदु शोरेल् कण्डाय्⋆ पुन मेविय⋆ पून् तण् तुळाय् अलङ्गल्⋆ इनम् एदम् इलानै⋆ अडैवदमे॥५॥	तुलसी माला वाले प्रभु एक हैं ऐसा दूसरा नहीं है। आपका अनुभव करो। विनती है हे हृदय ! ध्यान से सुनो। प्रभु को कभी छोड़कर जाने मत दो। **3807**

अडैवदुम् अणियार्⋆ मलर् मङ्गै तोळ्⋆ मिडैवदुम्⋆ अशुरर्क्कु वॆम् पोर्गळे⋆ कडैवदुम्⋆ कडलुळ् अमुदम्⋆ ऎन् मनम् उडैवदुम्⋆ अवर्के ऒरुङ्गागवे॥६॥	कमलनिवासिनी लक्ष्मी का आलिंगन सुखद है। असुरों से अनवरत युद्ध कठिन है। सागर का अमृत ही मंथन है। प्रभु के साथ मिलना मेरे हृदय को तोड़ता है। **3808**
आगम् शेर्⋆ नरशिङ्गम् अदागि⋆ ओर् आगम् वळ्ळुगिराल्⋆ पिळन्दान् उरै⋆ माग वैगुन्दम्⋆ काण्बदर्कु⋆ ऎन् मनम् एगम् ऎण्णुम्⋆ इराप्पगल् इन्ऱिये॥७॥	हमारा हृदय वैकुंठ की एक झलक के लिये लालायित है जहां प्रभु का निवास है। असुर की चौड़ी छाती को आपने अपने नख से चीर दिया। **3809**
इन्ऱि प्पोग⋆ इरु विनैयुम् कॆडुत्तु⋆ ऒन्ऱि याक्कै पुगामै⋆ उय्यक्कॊळ्वान्⋆ निन्ऱ वेङ्गडम्⋆ नीळ् निलत्तुळ्ळदु शॆन्ऱु देवर्गळ्⋆ कै तॊळुवार्गळे॥८॥	परस्पर विरोधी युग्मों का नाश करते हुए आप पुनर्जन्म से मुक्ति देते हैं। आप वेंकटम में रहते हैं जहां देवगन आपकी पूजा करते हैं। **3810**
तॊळुदु मा मलर्⋆ नीर् शुडर् दूपम् कॊण्डु⋆ ऎळुदुम् ऎन्नुमिदु⋆ मिगै आदलिल्⋆ पळुदिल् तॊल् पुगळ्⋆ प्पाम्बणै प्पळ्ळियाय्⋆ तळुवुमाऱऱियेन्⋆ उन ताळ्गळे॥९॥	शेषशायी गौरवशाली प्रभु ! फूल जल दीप तथा सुगंधित अग्नि से आपकी पूजा निरर्थक है। हाय ! हम आपके चरण की सेवा करना नहीं जानते। **3811**
ताळ तामरैयान्⋆ उनदुन्दियान्⋆ वाळ् कॊळ् नीळ् मळुवाळि⋆ उन् आगत्तान्⋆ आळराय् त्तॊळुवारुम्⋆ अमरर्गळ्⋆ नाळुम् ऎन् पुगळ्गो⋆ उन शीलमे॥१०॥	ब्रह्मा आपके नाभिकमल पर बैठते हैं तथा शिव आपके दायें भाग में रहते हैं। स्वर्गिक जन आपके पास खड़ा होकर आपकी पूजा करते हैं। क्या हम कभी आपकी पूरी प्रशस्ति गा सकते हैं ? **3812**
‡शीलम् ऎल्लैयिलान्⋆ अडिमेल्⋆ अणि कोलनीळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॊल् मालै आयिरत्तुळ्⋆ इवै पत्तिनिन् पालर्⋆ वैगुन्दम् एऱुदल्⋆ पान्मैये॥११॥	प्रभु के सद्गुणों का बखान करने वाला कुरूगुर के गोरे शडगोपन के हजार पद का यह दशक महान वैकुंठ की प्राप्ति कराता है। **3813** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **84 मैयार (3814 - 3824)** **एम्बेरूमानै क्काण विरूम्बि अळैत्तु ताम् विरूम्बिय वण्णमे कण्डु मगिळदल्**	
‡मैयार् करुङ्गण्णि⋆ कमल मलर्मेल् शॅय्याळ्⋆ तिरुमार्विनिल् शेर्⋆ तिरुमाले⋆ वॅय्यार् शुडर् आळि⋆ शुरि शङ्गम् एन्दुम् कैया⋆ उनै क्काण⋆ क्करुदुम् एन् कण्णे ॥१॥	काली आंख वाली लक्ष्मी को अपने वक्ष पर धारण करने वाले प्रभु ! शंख एवं चक्र वाले प्रभु ! हमारी आंखें आपके दर्शन के लिये आतुर हैं। **3814**
कण्णे उन्नै⋆ क्काण क्करुदि⋆ एन् नॅञ्जम् एण्णे कॉण्ड⋆ शिन्दैयदाय् निन्ऱियम्बुम्⋆ विण्णोर् मुनिवर्क्कॅन्ऱुम्⋆ काण्बरियायै⋆ नण्णादॉळियेन् एन्ऱु⋆ नान् अळैप्पने॥२॥	प्रभु !आपको देखने की ईच्छा से हमारा हृदय अनेकों तरह का विचार करता है। मैं कहता हूं 'आपके जाने नहीं देंगे'। हाय ! आप तो देवों एवं संतो से भी बच निकलते हैं। **3815**
अळैक्किन्ऱ अडिनायेन्⋆ नाय् कूळै वालाल्⋆ कुळैक्किन्ऱदु पोल⋆ एन्नुळ्ळम् कुळैयुम्⋆ मळैक्कन्ऱु कुन्ऱम् एडुत्तु⋆ आनिरै कात्ताय् ! पिळैक्किन्ऱदरुळ् एन्ऱु⋆ पेदुऱुवने॥३॥	अधम कुत्ता जैसे अपनी पूंछ हिलाते रहता है वैसे ही हम पिघले हृदय से आपको पुकारते हैं। आपने पशुओं की रक्षा पर्वत से की। हमें भय है कि आपकी कृपा से हम वंचित रह गये हैं। **3816**
उऱुवदिदुवॅन्ऱु⋆ उनक्काळ् पट्टु⋆ निन् कण् पॅऱुवदॆदुकॉल् एन्ऱु⋆ पेदैयेन् नॅञ्जम्⋆ मऱुगल् शॅय्युम्⋆ वानवर् दानवर्क्कॅन्ऱुम्⋆ अऱिवदरिय⋆ अरियाय अम्माने ! ॥४॥	देवों एवं असुरों को भ्रमित करते हुए आप नरसिंह रूप में आये। हमने समर्पण कर दिया है परंतु भय है आगे क्या होगा ? **3817**
अरियाय अम्मानै⋆ अमरर् पिरानै⋆ पॅरियानै⋆ प्पिरमनै मुन् पडैत्तानै⋆ वरि वाळ् अरविनणै⋆ प्पळ्ळि कॉळ्गिन्ऱ⋆ करियान् कळल् काण⋆ क्करुदुम् करुत्ते॥५॥	देवों के प्रभु नरसिंह रूप में आये। आपने ब्रह्मा की सृष्टि की। आप फनधारी शेष पर शयन करते हैं। मेरा हृदय आपके चरण का अभिलाषी है। **3818**

करुत्ते ! उन्नै⋆ क्काण क्करुदि⋆ एन् नॆन्ज– त्तिरुत्ताग इरुत्तिनेन्⋆ देवर्गट्कॆल्लाम्⋆ विरुत्ता विळङ्गुम् शुडर्च्चोदि⋆ उयर– त्तॊरुत्ता⋆ उनैयुळ्ळुम्⋆ एन्नुळ्ळम् उगन्दे ॥६॥	आपके दर्शन की ईच्छा से आपके स्वरूप का ध्यान करते हैं। वैकुंठ के अद्वितीय प्रभु ! मेरा हृदय आप से आनंदित रहता है। **3819**
उगन्दे उन्नै⋆ उळ्ळुम् एन्नुळ्ळत्तु⋆ अगम्बाल् अगन्दान् अमरर्न्दे⋆ इडम् कॊण्ड अमला⋆ मिगुन्दानवन् मार्वगलम्⋆ इरु कूरा नगन्दाय्⋆ नरशिङ्गम् अदाय उरुवे ! ॥७॥	प्रभु आप नरसिंह रूप में आये और आपने चौड़ी छाती को चीर डाला। आप हमारे हृदय के अन्तःपुर में रहते हैं एवं मेरा हृदय आप से आनंदित रहता है। **3820**
उरुवागिय⋆ आरु शमयङ्गट्कॆल्लाम्⋆ पॊरुवागि निन्रान्⋆ अवन् एल्ला प्पॊरुट्कुम्⋆ अरुवागिय आदियै⋆ त्तेवर्गट्कॆल्लाम्⋆ करुवागिय कण्णनै⋆ क्कण्डु कॊण्डेने ॥८॥	हमने अपने कृष्ण प्रभु को देखा है। आप छः सिद्धांत से ऊपर स्थित हैं। समस्त विश्व के सूक्ष्म कारण आप देवों के भी गर्भ हैं यानी हिरण्य गर्भा हैं। **3821**
कण्डु कॊण्डु⋆ एन् कण्णिणै आर क्कळित्तु⋆ पण्डै विनैयायिन⋆ पट्रोडरुत्तु⋆ तॊण्डर्क्कमुदुण्ण⋆ च्चॊन्मालैगळ् शॊन्नेन्⋆ अण्डत्तमरर् पॆरुमान् !⋆ अडियेने ॥९॥	हमने प्रभु को अपने समक्ष देखा है।हमारे हृदय ने भक्तों को आनंद देने वाली गाथा गायी है। हमारे कर्म के बंधन कट गये हैं। **3822**
अडियान् इवन् एन्रु⋆ एनक्कार् अरुळ् शॆय्युम् नॆडियानै⋆ निरै पुगळ् अञ्जिरै⋆ प्पुळ्ळिन् कॊडियानै⋆ कुन्रामल्⋆ उलगम् अळन्द अडियानै⋆ अडैन्दडियेन्⋆ उयन्दवारे ! ॥१०॥	गरूड़ध्वज वाले प्रभु ने हमें अपना सेवक बनाया है। एक बार आपके चरण ने पृथ्वी तथा अन्य सबों को माप डाला।कितना आश्चर्य है ? हमने आपको पा लिया।**3823**
‡आरा मदयानै⋆ अडर्त्तवन् तन्नै⋆ शेरार् वयल्⋆ तॆन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ नूरे शॊन्न⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ एरे तरुम्⋆ वानवर् तम् इन्नुयिरक्के ॥११॥	मदमत्त हाथी को नाश करने वाले प्रभु की प्रशस्ति में उपजाऊ खेतों वाले कुरूगुर के शठगोपन के हजार पदों के इस दशक से सबों की आत्मा प्रभु स्वयं मिल जाते हैं। **3724** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

85 यिन्नुयिरच्चेवल् (3825 - 3835)

एम्बेरूमानै निनैविट्टुम् पेरूळगळाल् तलैवि तळरन्दमै कूरूदल्

नायकी भाव में

‡इन्नुयिर् च्चेवलुम् नीरुम् कूविक्कॊण्डु* इङ्ङत्तनै* एन्नुयिर् नोव मिळट्रेन्मिन्* कुयिल् पेडैगाळ्* एन्नुयिर् क्कण्ण पिरानै* नीर् वर क्कूवुगिलीर्* एन्नुयिर् कूवि क्कॊडुप्पार्क्कुम्* इत्तनै वेण्डुमो॥१॥	मादा कोयल ! हमसे क्या शिकायत है ? तुम एवं तुम्हारी जोड़ी यहां आकर अवश्य मीठी वाणी बोलो। हाय ! तू मेरे कृष्ण को यहां आने के लिये नहीं बुलाती। मेरे जीवन का अंत करने के लिये तू इतना कठिन परिश्रम कर रही है ? **3825**
इत्तनै वेण्डुवदन्रन्दो !* अन्रिल् पेडैगाळ्* एत्तनै नीरुम् नुम् शेवलुम्* करैन्देङ्गुदिर्* वित्तगन् गोविन्दन्* मैय्यन् अल्लन् ऒरुवर्क्कुम्* अत्तनैयाम् इनि* एन् उयिर् अवन् कैयदे॥२॥	मछली पकड़ने वाली मादा पक्षी ! तू अपने जोड़ी के साथ उदासी पूर्ण बात करती है। तूझे इतना कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं थी। हाय ! यह तय है छली गोविन्द सच्चे प्रेमी नहीं हैं। मेरा जीवन उनके ही हाथ में है। **3826**
अवन् कैयदे एनदारुयिर्* अन्रिल् पेडैगाळ्* एवन् शॊल्लि नीर् कुडैन्दाडुदिर्* पुडै शूळवे* तवम् शॆय्दिल्ला* विनैयाट्टियेन् उयिर् इङ्गुण्डो* एवन् शॊल्लि निट्रुम्* नुम् एङ्गु कूक्कुरल् केट्टुमे॥३॥	मछली पकड़ने वाली मादा पक्षी ! मेरा जीवन उनके हाथ में है। क्या यह आवश्यक है कि तू हमारे आस पास कामी एवं सहभागिता की चाल से घूमो ? इस पापिनी ने जीवित रहने के लिये कोई तपस्या नहीं की है। हाय ! तुम्हारे दयाभरी आवाज सुनकर हम कैसे जीवित रहेंगे ? **3827**
कूक्कुरल् केट्टुम्* नम् कण्णन् मायन् वॆळिप्पडान्* मेर्किळै कॊळ्ळेन्मिन्* नीरुम् शेवलुम् कोळिगाळ्* वाक्कुम् मनमुम्* करुममुम् नमक्काङ्ङदे* आक्कैयुम् आवियुम्* अन्दरम् निन्रुळलुमे॥४॥	मोर एवं मोरनी ! छली कृष्ण तुम्हारी पुकार नहीं सुनते। विनती है कि ऊंचा मत पुकारो। मेरा हृदय कृत्य एवं वाणी सब उनके साथ है। मेरी आत्मा एवं वदन बीच में कहीं भटक रहे हैं। **3828**
अन्दरम् निन्रुळल्गिन्र्* यानुडै प्पूवैगाळ्* नुम् तिरत्तेदुम् इडैयिल्लै* कुळरेन्मिनो* इन्दिर ञालङ्ङळ् काट्टि* इव्वेळुलगुम् कॊण्ड* नम् तिरु मार्बन्* नम्मावि उण्ण नन्गॊण्णिनान्॥५॥	टहनी पर बैठी मैना ! छल नहीं करो। तुमसे हमारा अब कोई नाता नहीं है। श्रीपति ने तब धरा को छल से ले लिया अब वे हमारा जीवन लेने की योजना बनाये हुये हैं। **3829**

नन्ऱोणिण नान् वळर्त्त⋆ शिऱु किळि प्पैदले⋆ इन् कुरल् नी मिळट्रेल्⋆ एन्नारुयिर् क्कागुत्तन्⋆ निन् शेय्य वायोक्कुम् वायन्⋆ कण्णन् कै कालिनन्⋆ निन् पचुम् शाम निऱत्तन्⋆ कूट्टुण्डु नीङ्गिनान्॥६॥	मूर्ख तोता ! हमने तुम्हें ठीक से पाला है। अब अपनी मृदु भाषा का प्रयोग मत करो।तुम्हारे चोंच एवं पंख हमें राम प्रभु का स्मरण कराते हैं। आपने तब हमारे साथ मिलन का आनंद लिया और फिर छोड़ कर चले गये। **3830**
कूट्टुण्डु नीङ्गिय⋆ कोल त्तामरै कण् शेव्वाय्⋆ वाट्टम् इलेन् करु माणिक्कम्⋆ कण्णन् मायन् पोल्⋆ कोट्टिय विल्लोडु⋆ मिन्नु मेग क्कुळाङ्गळ्गाळ्⋆ काट्टेन्मिन् नुम्मुरु⋆ एन्नुयिर्क्कदु कालने॥७॥	तड़ित वाले काले मेघ ! तुम मुझे हमारे कृष्ण का स्मरण कराते हो। उन्होनें हमारे मिलन का आनंद लिया फिर छोड़ कर चले गये। कृपा करके उनकी कमल सी आंख होंठ एवं श्याम वर्ण मत दिखाओ। तुम्हारा रंग हमारी आत्मा के लिये मृत्युवत है। **3831**
उयिर्क्कदु कालन् एन्ऱु⋆ उम्मै यान् इरन्देर्कु⋆ नीर् कुयिल् पैदल्गाळ्⋆ कण्णन् नाममे कुळऱि क्कोन्ऱीर्⋆ तयिर् प्पळञ्जोट्रोडु⋆ पाल् अडिशिलुम् तन्दु⋆ शोल् पयिट्रिय नल् वळम् ऊट्टिनीर्⋆ पण्बुडैयीरे ! ॥८॥	मूर्ख कोयल ! कृष्ण का नाम नहीं लेने के लिये तुमसे निवेदन किया है। हाय ! तूने हमारी हत्या कर दी। हमने तुम्हें दही भात एवं मीठा खीर देकर बोलने के लिये सिखाया।हे उदार पक्षीगन ! हमारे परिश्रम का अच्छा पारितोषिक है ! **3832**
पण्बुडै वण्डोडु तुम्बिगाळ्⋆ पण् मिळट्रेन्मिन्⋆ पुण् पुरै वेल् कोडु⋆ कुत्ताल् ओक्कुम् नुम् इन् कुरल् तण् पेरु नीर् त्तडम् तामरै⋆ मलर्न्दाल् ओक्कुम् कण् पेरुम् कण्णन्⋆ नम्मावियुण्डेळ नण्णिनान्॥९॥	भौंरा गन ! यहां मत मंड़राओ तुम्हारा संगीत हमारे घाव मे छेद करते हुए घुस जाता है। हमारे श्याम कृष्ण प्रभु बड़े तालाब के प्रस्फुटित कमल के समान बड़ी आंख के साथ केवल हमारी जान लेने के लिये हमारे पास आते हैं। **3833**
एळ नण्णि नामुम्⋆ नम् वान नाडनोडोन्ऱिनोम्⋆ पळन नन्नारै क्कुळाङ्गळ्गाळ्⋆ पयिन्ऱेन्निनि⋆ इळै नल्लवाक्कैयुम्⋆ पैयवे पुयक्कट्रदु⋆ तळै नल्ल इन्बम् तलैप्पेय्दु⋆ एङ्गुम् तळैक्कवे॥१०।	अच्छे जल के सारस ! मैने जानबूझकर वैकुंधापति से समागम की चाह की। आभूषित शरीर कण कण कर खिसक रहा है। हमारे पास एकत्र होने का क्या लाभ ? सर्वत्र आनंद का पदार्पण हो तथा उसका साम्राज्य हो! **3834**
‡इन्बम् तलैप्पेय्देङ्गुम् तळैत्त⋆ पल्लूळिक्कु⋆ त्तण् पुगळ् एत्त⋆ त्तनक्करुळ् शेय्द मायनैत्⋆ तेन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शोल्लायिरत्तुळ् इवै⋆ ओन्बदोडोन्ऱुक्कुम्⋆ मूवुलगुम् उरुगुमे॥११॥	प्रभु जो सर्वत्र आनन्द का साम्राज्य कायम करते हैं उनकी प्रशस्ति में कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक सबके हृदय को द्रवित करने वाला गाने योग्य गीत है। **3835** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

86 उरूगुमाल् (3836 - 3846)

आळ्वार एम्बेरूमानदु शीरै तुयरत्तुडन् कूरूदल्

तिरूक्काटकरै ः यह स्थान केरल में आलुवे त्रिशूर मार्ग के पास अवस्थित है। मूलावर खड़े मुद्रा में दक्षिणाभिमुख हैं। यह स्थान राजा महाबली से संबंध रखता है। 'काटकरै' का शाब्दिक अर्थ है 'जहां भगवान ने अपना चरण रखा था'। इसे 'महाबली करै' या 'वामन क्षेत्र' भी कहते हैं। केरल का अतिप्रसिद्ध 'ओनम' उत्सव यहां से संबंध रखता है। यह पूरे 'सिंहम' मास का पर्व है एवं अंतिम दिन को 'तिरूओनम' कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि वामन भगवान ने महाबली को पाताल में राजा बना दिया था परंतु वर्ष में एक दिन वे अपने पुराने क्षेत्र को देखने आते हैं और वही दिन 'ओनम' कहा जाता है जब अपनी प्रजा की स्थिति से अवगत राजा महाबली पृथ्वी पर पधारते हैं।

3845 पाशुर तिरूवायमोळी का बहुत ही महत्वपूर्ण पाशुर माना जाता है जिसमें आळवार एवं पेरूमाल के बीच प्रतियोगिता में पेरूमाल की जीत देखी जाती है। भक्त भगवान को पाता है एवं भगवान भी भक्त को पाते हैं। इस पाशुर में भगवान ही भक्त को प्राप्त कर लिये हैं।

(Refer Ramesh vol. 7, pp 29)

‡उरुगुमाल् नॅञ्जम्* उयिरिन् परमन्रि* पॅरुगुमाल् वेट्कैयुम्* एन् शॅय्वोन् तॊण्डनेन्* तॆरुवॆल्लाम् कावि कमळ्* तिरुक्काट्करै* मरुविय मायन् तन्* मायम् निनैदॊरे॥१॥	जिताना मैं सह सकता हूं हमारा हृदय उससे ज्यादा पिघलता है। उनके सारे विस्मयों को याद करने पर हमारा प्रेम उमड़ने लगता है। हाय ! एक साधारण सेवक मैं क्या कर सकता हूं ? आप तिरूक्काटकरै में रहते हैं जहां कमल वीथियों में खिलते हैं। **3836**
निनैदॊरुम् शॊल्लुन्दॊरुम्* नॅञ्जिडिन्दुगुम्* विनैगॊळ् शीर् पाडिलुम्* वेम् एनदारुयिर्* शुनैगॊळ् पून्शोलै* त्तॆन् काट्करैयॆन्नप्पा* निनैगिल्लेन् नान् उनक्कु* आट्शॆय्युम् नीर्मैये॥२॥	हर विचार एवं शब्द में मेरा हृदय असफल रह जाता है। जब आपकी गाथा गाता हूं तो हमारी आत्मा पिघलती है। मेरे प्रभु एवं पिता सरोवर भरे तिरूक्काटकरै में रहते हैं। यह मैं नहीं सोच पाता कि कैसे आपकी सेवा कर सकता हूं ? **3837**

नीमैयाल् नॆञ्जम्⋆ वञ्जित्तु प्पुगुन्दु⋆ एन्नै ईमैशॆय्दु⋆ एन्नुयिराय् एन्नुयिर् उण्डान्⋆ शीर् मल्गु शोलै⋆ तॆन् काट्करैयॆन्नप्पन्⋆ कार् मुगिल् वण्णन् तन्⋆ कळ्ळम् अऱिगिलेन्॥३	अच्छाई का प्रदर्शन कर धोखे से आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये। तब आप हमारी आत्मा हो गये एवं मुझे आहत कर हमारे जीवन को हर ले गये। मेरे श्याम प्रभु एवं मेरे पिता तिरूक्काटकरै में रहते हैं। मैं आपका छल नहीं समझ सकता। **3838**
अऱिगिलेन् तन्नुळ्⋆ अनैत्तुलगम् निर्ग नॆऱिमैयाल् तानुम्⋆ अवट्रुळ् निर्कुम् पिरान्⋆ वॆऱि कमळ् शोलै⋆ तॆन् काट्करै एन्नप्पन्⋆ शिऱियवॆन्नारुयिर् उण्ड⋆ तिरुवरुळे॥४॥	प्रभु जो सारे लोकों को अपने भीतर रखते हैं इनलोगों के भीतर स्थित हो गये। हमें नही पता कैसे तिरूक्काटकरै के प्रभु इस अधम आत्मा से मोहित हो गये। **3839**
तिरुवरुळ् शॆय्बवन् पोल्⋆ एन्नुळ् पुगुन्दु⋆ उरुवमुम् आरुयिरुम्⋆ उडने उण्डान्⋆ तिरुवळर् शोलै⋆ तॆन् काट्करैयॆन्नप्पन्⋆ करु वळर् मेनि⋆ एन् कण्णन् कळ्वङ्गळे॥५॥	करूणा का बहाना कर आप हमारे भीतर प्रवेश कर गये एवं एक क्षण में मुझे मेरी आत्मा तथा मेरे शरीर को निगल गये।अहा ! श्याम प्रभु कृष्ण की कितनी युक्तियां हैं ? आप उपजऊ बाग वाले तिरूक्काटकरै में रहते हैं। **3840**
एन् कण्णन् कळ्वम्⋆ एनक्कु च्चॆम्माय् निर्कुम्⋆ अङ्गण्णन् उण्ड⋆ एन्नारुयिरक्कोदिदु⋆ पुन्गण्मै एय्दि⋆ प्पुलम्बि इराप्पगल्⋆ एन् कण्णन् एन्ऱु⋆ अवन् काट्करै एत्तुमे॥६॥	हमारे कृष्ण की युक्तियां सच्ची प्रतीत होती हैं। हमारी आत्मा को चूसने के बाद जो शुष्क पदार्थ उन्होंने फेंक दिया है अब सच्चाई समझ सका है और दिन रात रोते हुए कहता है 'मेरे कृष्ण मेरे कृष्ण' तथा उनकी तिरूक्काटकरै में पूजा करता है। **3841**
काट्करै एत्तुम्⋆ अदनुळ् कण्णा एन्नुम्⋆ वेट्कै नोय् कूर⋆ निनैन्दु करैन्दुगुम्⋆ आट्कॊळ्वान् ऒत्तु⋆ एन्नुयिर् उण्ड मायनाल्⋆ कोळ् कुऱैपट्टदु⋆ एन्नारुयिर् कोळ् उण्डे॥७॥	तिरूक्काटकरै में प्यारे कृष्ण की पूजा करने से मेरा प्रेम रोग बढ़ जाता है। यह सोचकर मैं रोता हूं। वे आये और हमें स्नेह से अपनी सेवा में स्वीकार कर लिये। हाय ! परंतु मेरी आत्मा दिन ब दिन सूख रही है। **3842**
कोळ् उण्डान् अन्ऱि वन्दु⋆ एन्नुयिर् तान् उण्डान्⋆ नाळु नाळ् वन्दु⋆ एन्नै मुट्रवुम् तान् उण्डान्⋆ काळ नीर् मेग⋆ तॆन् काट्करै एन्नप्पर्कु आळ् अन्ऱे पट्टदु⋆ एनारुयिर् पट्टदे॥८॥	वे हमारी सेवा स्वीकार करने नहीं हमारी आत्मा को खाने आये।दिन ब दिन कण कण वे हमारा सब कुछ खा रहे हैं। तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम घन प्रभु क्या हमारी सेवा में अभिरूचि रखते हैं ? उनकी दृष्टि हमारी आत्मा पर है। **3843**
आरुयिर् पट्टदु⋆ एनदुयिर् पट्टदु⋆ पेर् इदळ् त्तामरै क्कण्⋆ कनि वायदोर्⋆ कार् एळिल् मेग⋆ तॆन् काट्करै कोयिल् कॊळ् शीर् एळिल् नाल् तडन्दोळ्⋆ तॆय्व वारिक्के॥९॥	तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम प्रभु की आंख कमल सी हैं, होंठ मूंगा जैसा है, चार भुजायें हैं, तथा नैसर्गिक छटा है।जैसा वे हमारी आत्मा को यातना देते हैं वैसा किस अन्य आत्मा के साथ करते हैं ? **3844**

वारिक्कोंण्डु* उन्नै विळुङ्गुवन् काणिल् एन्रु* आर्वुट्र् एन्नै ओंळिय* एन्निन् मुन्नम् पारित्तु* तान् एन्नै* मुट्र् प्परुगिनान्* कार् ओंक्कुम्* काट्करैप्पन् कडियने॥१०॥	मैंने सोचा 'जब कभी भी हम उनको देखेंगे निगल जायेंगे' लेकिन इसके पहले वे शीघ्रता से हमारा सब कुछ चूस लिये। तिरूक्काटकरै के हमारे श्याम प्रभु बहुत ही चतुर हैं। **3845**
‡कडियनाय् क्कञ्जनै* क्कोंन्र् पिरान् तन्नै* कोंडि मदिळ् तेंन् कुरुगूर्* च्चडगोपन् शोंल्* वडिवमैयायिरत्तु* इप्पत्तिनाल् शन्मम् मुडिवेंय्दि* नाशम् कण्डीर्गळ् एङ्गानले॥११॥	ऊंचे दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दसक कंस के विनाशक प्रभु की प्रशस्ति है। देखो, यह संसार की मृगतृष्णा का अंत करने वाला है।**3846** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

87 एङ्गानल् (3847 - 3857)

एम्बेरूमानदु वडिवळगे पट्टुक्कोडाग तलैवि तिरूमुळिक्कळत्तेपरवैगळै तूदुविडल्

तिरूमूळिक्कळम ः यह स्थान केरल में आलुवे के पास अवस्थित है।यहां कालडी रोड से तथा आलुवे के तरफ से भी पहुंचा सकता है। विदित हो कि कालडी आदिशंकर का अवतार स्थल है।

मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं। यह स्थान लक्ष्मण की तपस्या से संबंध रखता है जो उन्होंने चित्रकूट में भरत के विरोध में बोला था जब भरत राम से मिलने सेना के साथ आ रहे थे। हारीत मुनि के कहने से लक्ष्मण ने अपनी गलती के लिय यहां तपस्या की एवं बाद में भरत भी पधारकर लक्ष्मण को यहां गले लगाये हैं। यह घटना तब की है जब राम राज्य स्थापित हो चुका था एवं भगवान राम के कहने पर दोनो भाई प्रजा की स्थिति को समझने इस क्षेत्र में आये थे।मूलावर को भी लक्ष्मण ही मानते हैं जैसे तिरपिरियार को भगवान राम का मंदिर मानते हैं एवं इरंजालकुडा को भरत जी का तथा पयाम्माल को शत्रुघ्न का। केरल में रामावतार को भी चतुर्भुजी ही दिखाया गया है।

तिरूवायमोळी का यह भाग प्राकुंशनायकी भाव से ओतप्रोत पाया जाता है। नम्माळवार के अतिरिक्त परकाल स्वामी ने भी इस दिव्य देश की प्रशंसा अपने तीन पाशुर '**1553**' '**2061**' तथा 'पेरिय तिरूमडल **2674**' में किया है।

(Refer Ramesh vol. 7, pp 72)

‡एङ्गानल् अगङ्गळिवाय्⋆ इरै तेरन्दिङ्गिनिदमरुम्⋆ शेङ्गाल् मड नाराय्!⋆ तिरुमूळिक्कळत्तुरैयुम्⋆ कॊङ्गार् पून् तुळाय् मुडि⋆ एङ्गुडक्कूत्तर्क्कॆन् तूदाय्⋆ नुङ्गाल्गळ् एन् तलैमेल्⋆ कॆळुमीरो नुमरोडे॥१॥	हमारे बाग की भींगाी जमीन में कीड़ा खोजते पक्षी ! सुगंधित तुलसी धारण किये हमारे पात्र नर्तक प्रभु के पास दूत बनकर तिरूमूळिक्कळम जाओ।तब तू अपने परिवार के साथ सभी जन अपने चरण हमारे सिर पर रखो। **3847**
नुमरोडुम् पिरियादे⋆ नीरुम् नुम् शेवलुमाय्⋆ अमर् कादल् कुरुगिनङ्गाळ्⋆ अणि मूळिक्कळत्तुरैयुम्⋆ एमरालुम् पळिप्पुण्डु⋆ इङ्ङन् तम्माल् इळिप्पुण्डु⋆ तमरोडङ्गुरैवार्क्कु⋆ त्तक्किलमे केळीरे॥२॥	अपनी प्रिया एवं संतान के साथ एकत्र होने वाले प्रेमी पक्षी ! हम उनसे भी वंचित हो गये हैं तथा परिवार जन भी निरादर करते हैं। जीने से क्या लाभ? तिरूमूळिक्कळम में दलबल के साथ रहने वाले प्रभु से जाकर पूछो कि क्या हम उनके दल के योग्य हैं या नहीं ? **3848**
तक्किलमे केळीर्गळ्⋆ तडम् पुनल्वाय् इरै तेरुम्⋆ कॊक्किनङ्गाळ् कुरुगिनङ्गाळ्!⋆ कुळिर् मूळिक्कळत्तुरैयुम्⋆ शॆक्कमलत्तलर् पोलुम्⋆ कण् कै काल् शेङ्गनिवाय्⋆ अक्कमलत्तिलै पोलुम्⋆ तिरुमेनि अडिगळुक्के॥३॥	हमारे सरोबर में एकत्र होकर कीड़ा खोजते पक्षीगन ! प्रभु शीतल तिरूमूळिक्कळम में रहते हैं। आपके अंग कमल के समान हैं तथा वदन का श्याम रंग पत्ता जैसा है। जाकर उनसे पूछो कि क्या हम उनके दल के योग्य हैं या नहीं ? **3849**

तिरुमेनि अडिगळुक्कु* तीविनैयेन् विडु तूदाय* तिरुमूळिक्कळम् एन्नुम्* शॅळु नगर्वाय् अणि मुगिल्गाळ्* तिरुमेनि अवर्क्करुळीर्* एन्रक्काल् उम्मै त्तन्* तिरुमेनि ऑळियगट्रि* त्तॅळि विशुम्पु कडियुमे॥ ४॥	विकासशील तिरूमूळिक्कळम की ओर जाते सुन्दर मेघ ! हमारे मनोहारी प्रभु के पास दूत की तरह जाकर इस अधम जीव को दर्शन देने के लिये बताओ। क्यों वे तुम्हारे रंग छीनकर तुम्हें आकाश से भगा देंगे ? **3850**
तॅळि विशुम्पु कडिदोडि* त्ती वळैत्तु मिन्निलगुम्* ऑळि मुगिल्गाळ् !* तिरुमूळिक्कळत्तुरैयुम् ऑण् शुडरक्कु* तॅळि विशुम्पु तिरुनाडा* त्तीविनैयेन् मनत्तुरैयुम्* तुळि वार्गट्कुळलारक्कु* एन् तूदुरैत्तल् शॅप्पुमिने॥ ५॥	तड़ित रेखा की आग जैसे बलय को आकाश मे घुमाते तेजोमय मेघ! तिरूमूळिक्कळम में रहने वाले प्रभु का हमारा हृदय ही वैकुंठ है। जूड़े से अमृत टपकते हमारे प्रभु के पास जाकर यह बताओ । **3851**
तूदुरैत्तल् शॅप्पुमिन्गाळ्* तूमॊळि वाय् वण्डिनङ्गाळ्* पोदिरैत्तु मदु नुगरुम्* पॊळिल् मूळि क्कळत्तुरैयुम्* मादरै तम् मार्वगत्ते* वैत्तार्क्कॆन् वाय् माट्रम्* तूदुरैत्तल् शॅप्पुदिरेल्* शुडर् वळैयुम् कलैयुमे॥ ६॥	मृदु होंठ वाले भौंरे! अमृत टपकते फूल के बागों से घिरे तिरूमूळिक्कळम में स्थित अपने वक्ष पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु के पास दूत की जाकर जाओ एवं हमारे शब्दों को दुहराओ 'प्रदीप्त गहने एवं रेशमी वस्त्र'। **3852**
शुडर् वळैयुम् कलैयुम् कॊण्डु* अरुविनैयेन् तोळ् तुरन्द* पडर् पुगळान्* तिरुमूळिक्कळत्तुरैयुम् पङ्गयक्कण्* शुडर् पवळ वायनै क्कण्डु* ऑरुनाळ् ओर् तूय् माट्रम्* पडर् पॊळिल्वाय् क्कुरुगिनङ्गाळ् !* एनक्कॊन्रु पणियीरे॥ ७॥	वनमुर्गी गन ! कमल जैसी आंख एवं मूंगावत होंठ वाले बदनाम प्रभु हमारी भाग्यहीना बाहों को छोड़कर तथा हमारे गहने एवं रेशमी वस्त्र ले जाकर तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। उनका एक दिन दर्शन करो और मेरी तरफ से शुभ संदेश दो। **3853**
एनक्कॊन्रु पणियीर्गळ्* इरुम् पॊळिल्वाय् इरै तेर्न्दु* मनक्किन्बम् पड मेवुम्* वण्डिनङ्गाळ् ! तुम्बिकाळ्* कनक्कॊळ् तिण् मदिळ् पुडै शूळ्* तिरुमूळि क्कळत्तुरैयुम्* पुनल्गॊळ् काया मेनि* प्पून् तुळाय् मुडियार्क्के॥ ८॥	बड़े फूलों पर मंड़राते भौंरे एवं बिढ़नी ! हमारे प्रभु से जाकर हमारा पक्ष रखते हुए बोालो 'आपके शब्द हृदय को प्रिय लगते हैं'।आप ऊंचे दीवारों से घिरे तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। उनका रंग काया फूल की तरह है एवं वे प्रस्फुटित तुलसी धारण करते हैं। **3854**
पून् तुळाय् मुडियार्क्कु* प्पॊन्नाळि कैयार्क्कु* एन्दु नीर् इळम् कुरुगे !* तिरुमूळि क्कळत्तार्क्कु* एन्दु पूण् मुलै प्पयन्दु* एन्निणै मलर् क्कण् नीर् तदुम्ब* ताम् तम्मैक्कॊण्डगल्दल्* तकवन्रॆन्रुरैयीरे॥ ९॥	कोमल जल कुक्कुट ! हमारे प्रभु तुलसी का मुकुट एवं सुनहले चक्र धारण कर तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। गहने के लिये सुयोग्य हमारे उरोज पीले पड़ गये हैं एवं कमल सी आंखों में आंसू भर गये हैं। उनसे कहो कि हमसे दूर रहना बिल्कुल ही उचित नहीं है। **3855**

तगवन्ऱेन्ऱैयीर्गळ्⋆ तडम् पुनल्वाय् इरै तेर्न्दु⋆ मिगविन्बम् पड मेवुम्⋆ मॆन्नडैय अन्नङ्गाळ्⋆ मिग मेनि मॆलिवॆय्दि⋆ मेगलैयुम् ईडळिन्दु⋆ एन् अगमेनि ऒळियामे⋆ तिरुमूळि क्कळत्तार्क्के॥१०॥	हमारे सरोबर में भोजन करते मृदु चाल की हंस की जोड़ी ! तुम सुखद कामी संगति का आनंद ले रहे हो। हमारे प्रभु तिरूमूळिक्कळम में स्थित हैं। हम कृशकाय हो गये हैं, हमारा कमरधनी खिसक गया है, एवं मेरा प्राण पयान कर रहा है। उनको बताओ यह उचित नहीं है। **3856**
‡ ऒळिविन्रि तिरुमूळिक्कळत्तुरैयुम्⋆ ऒण् शुडरै⋆ ऒळिविल्ला अणि मळलै⋆ क्किळिमॊळियाळ् अलट्रिय शॊल्⋆ वळुविल्ला वण् कुरुगूर्⋆ शडगोपन् वायन्दुरैत्त⋆ अळिविल्ला आयिरत्ति प्पत्तुम्⋆ नोय् अरुक्कुमे॥११॥	तोता जैसे मधुर शब्दो में तिरूमूळिक्कळम के तेजोमय प्रभु की प्रशंसा करते विकासशील कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक सभी रोग की औषधि है। **3857** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

88 अरूक्कुम विनै (3858 - 3868)

तुदर् मीळुम् अळवुम् तनिमै पोऱाद तलैवि तलैवन् नगरान तिरूनावाय् शेल्ल निनैत्तल्

तिरूनावाय ः यह स्थान केरल में चेन्नै कोझीकोड रेल मार्ग के तिरूनवा रेलवे स्टेशन के पास है। रोड मार्ग से शोर्णुर की ओर से भी आया जा सकता है। मंदिर भरतपुळा नदी के किनारे पर स्थित है। केरल में यह एकमात्र मंदिर हैं जहां लक्ष्मी की अलग सन्निधि है। मूलावर खड़े अवस्था में पूर्वाभिमुख हैं। परांकुशनायकी का प्रत्यक्ष रूप तिरूवायमोळी के तीन स्थलों में पाया जाता है और यह उनमे से एक है। परकाल स्वामी ने भी दो पाशुर में तिरूनावाय की प्रशस्ति गाई है।
(Refer Ramesh vol. 7, pp 51)

‡ अऱुक्कुम् विनैयायिन⋆ आगत्तवनै⋆ निऱुत्तुम् मनत्तॊन्ऱिय⋆ शिन्दैयिनार्क्कु⋆ वॆऱि त्तण् मलर् शोलैगळ् शूऴ्⋆ तिरुनावाय्⋆ कुऱुक्कुम् वगै उण्डुकॊलॊ⋆ कॊडियेऱ्के॥१॥	जो लोग आपको हृदय मे रखते हैं एवं आपका ध्यान करते हैं तिरूनावाय के प्रभु उनके कर्मो का नाश करते हैं। हाय ! मैं कैसे आपसे मिलूं ? **3858**
कॊडियेन् इडै⋆ क्कोगनगत्तवळ् केळ्वन्⋆ वडि वेल् तडङ्गण्⋆ मड प्पिन्नै मणाळन्⋆ नॆडियान् उऱै शोलैगळ् शूऴ्⋆ तिरुनावाय्⋆ अडियेन् अणुगप्पॆऱु नाळ्⋆ ऎवैकॊलो ! ॥२॥	तिरूनावाय के प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी तथा मत्स्य नयना नप्पिनाय के दूलहा हैं। हाय ! कब मैं आपसे मिलूंगी ? **3859**
ऎवैकॊल् अणुग प्पॆऱुनाळ्⋆ ऎन्ऱॆप्पोदुम्⋆ कवैयिल् मनम् इन्ऱि⋆ कण्णीर्गळ् कलुळ्वन्⋆ नवैयिल् तिरुनारणन् शेर्⋆ तिरुनावाय्⋆ अवैयुळ् पुगलावदोर्⋆ नाळ् अऱियेन॥३॥	मैं किसी बात से नहीं रोती बल्कि कब मैं आपसे तिरूनावाय में मिलूंगी इस बात से रोती हूं जहां आप अच्छे लोगों की संगति में रहते हैं। **3860**
नाळेल् अऱियेन्⋆ ऎनक्कुळ्ळन⋆ नानुम् मीळा अडिमै⋆ प्पणि शॆय्य प्पुगुन्देन्⋆ नीळार् मलर् शोलैगळ् शूऴ्⋆ तिरुनावाय्⋆ वाळेय् तडङ्गण्⋆ मड प्पिन्नै मणाळा ! ॥४॥	बागों से घिरे तिरूनावाय के नप्पिनाय के नाथ ! मुझे नहीं पता, नहीं लौटने का उपक्रम करते हुए मैं यहां कब तक टिकूं। **3861**

मणाळन् मलर् मङ्गैक्कुम्⋆ मण् मडन्दैक्कुम्⋆ कण्णाळन् उलगत्तुयिर्⋆ देवर्गट्कॆल्लाम्⋆ विण्णाळन् विरुम्बियुरैयुम्⋆ तिरुनावाय्⋆ कण्णार क्कळिक्किन्रदु⋆ इङ्गॆन्ऱुगॊल् कण्डे॥५॥	कमलनिवासिनी लक्ष्मी श्री देवी एवं भूदेवी के दूलहा मनुष्यों एवं देवों के आंख के तारा हैं। आप तिरूनावाय में रहते हैं। कब मेरी आंखें आपके दर्शन से उत्सव मनायेंगी ? **3862**
कण्डे कळिक्किन्रदु⋆ इङ्गॆन्ऱुगॊल् कण्गळ्⋆ तॊण्डे उनक्काय् ऒळिन्देन्⋆ तुरिशिन्रि⋆ वण्डार् मलर् च्चोलैगळ् शूळ्⋆ तिरुनावाय्⋆ कॊण्डे उरैगिन्र⋆ एङ्गोवलर् कोवे॥६॥	मेरे प्रभु !गोपकुल के सम्राट ! अब तिरूनावाय में रहते हैं। कब मेरी आंखें आपका यहां दर्शन कर शुद्ध प्रेम से आनंदित होंगी ? **3863**
कोवागिय⋆ मा वलियै निलम् कॊण्डाय्⋆ देवाशुरम् शॆट्टवने !⋆ तिरुमाले⋆ नावाय् उरैगिन्र⋆ एन् नारण नम्बी⋆ आवा अडियान्⋆ इवन् एन्ररुळाये॥७॥	आपने बली राजा से धरा को धारण किया। देवों के नाथ ! तिरूमल ! मेरे सखा तिरूनावाय में रहते हैं। अपना सेवक बना लीजिये। **3864**
अरुळादॊळिवाय्⋆ अरुळ् शॆय्दु⋆ अडियेनै प्पॊरुळाक्कि⋆ उन् पॊन्नडि क्कीळ् प्पुग वैप्पाय्⋆ मरुळेयिन्रि⋆ उन्नै एन्नॆञ्जत्तिरुत्तुम्⋆ तॆरुळे तरु⋆ तॆन् तिरुनावाय् एन् देवे ! ॥८॥	सारी शंकाओं को दूर करते हुए मेरे हृदय में स्थित तिरूनावाय के प्रभु ! अपने चरण के योग्य बना लीजिये या त्याग दीजिये। आपका सेवक ! **3865**
देवर् मुनिवर्क्कॆन्ऱुम्⋆ काण्डर्करियन्⋆ मूवर् मुदल्वन्⋆ ऒरु मूवुलगाळि⋆ देवन् विरुम्बियुरैयुम्⋆ तिरुनावाय्⋆ यावर् अणुग प्पॆरुवार्⋆ इनियन्दो ! ॥९॥	अपनी स्वयं की इच्छा से तिरूनावाय के प्रभु सब देवों एवं ऋषियों के लिये अदृश्यमान हैं। अब कौन आपके साथ रहेगा ? **3866**
अन्दो ! अणुग प्पॆरुनाळ्⋆ एन्रॆप्पोदुम्⋆ शिन्दै कलङ्गि⋆ त्तिरुमाल् एन्रळैप्पन्⋆ कॊन्दार् मलर् शोलैगळ् शुळ्⋆ तिरुनावाय्⋆ वन्दे उरैगिन्र⋆ एम्मा मणि वण्णा ! ॥१०॥	अवश्यंभावी मिलन को सोचकर मेरा हृदय घबराया हुआ है। हाय सुगंधित तिरूनावाय के प्रभु को मैं पुकारती हूं। **3867**
‡वण्णम् मणि माड⋆ नन्नावाय् उळ्ळानै⋆ त्तिण्णम् मदिळ्⋆ तॆन् कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ पण्णार् तमिळ्⋆ आयिरत्ति प्पत्तुम् वल्लार्⋆ मण्णाण्डु⋆ मणम् कमळ्वर् मल्लिगैये॥११॥	ऊंचे दीवारों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार गीतों का यह पान्न आधारित दशक रंगीन महलों वाले तिरूनावाय में स्थित प्रभु की प्रशस्ति है। इसे याद करने वाले पृथ्वी पर शासन करेंगे तथा चमेली का गंध बिखेरेंगे। **3868** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

89 मल्लिगै कमळ् (3869 - 3879)

माले प्पोळुदु कण्डु तलैवि इरङ्गि क्कूरूदल्

‡ मल्लिगै कमळ् तॆन्ऱल् ईरुम् आलो !★ वण् कुऱिञ्जि इशै तवळुम् आलो !★ शॆल् कदिर् मालैयुम् मयक्कुम् आलो !★ शॆक्कर् नन्मेगङ्गळ् शिदैक्कुम् आलो !★ अल्लियन् तामरै क्कण्णन् एम्मान् !★ आयर्गळ् एऱरियेॆरॆम् मायोन्★ पुल्लिय मुलैगळुम् तोळुम् कॊण्डु पुगल्लिडम् अऱिगिलम् तमियम् आलो ! ॥१॥	हाय ! चमेली की गंध विखेरती हवा, याल पर कुरूंजी का संबंध, अस्त होता सूर्य, एवं क्षितिज पर सुन्दर लाल बादल, सब मेरे प्राण लेने वाले हैं। कमल समान आंख वाले गोपकुल केसरी ने हमलोगों का त्याग कर दिया है। हमे नहीं पता, हम अपने उरोज एवं बाहें लिये जिसके साथ उन्होंने आनंद मनाया, यहां से हम कहां जायें ? **3869**
पुगल्लिडम् अऱिगिलम् तमियम् आलो ! पुलम्बुरु मणि तॆन्ऱल् आम्बल् आलो !★ पगल् अडु मालै वण् शान्दम् आलो !★ पञ्चमम् मुल्लै तण् वाडै आलो !★ अगल् इडम् पडैत्तिडन्दुण्डुमिळन्दु अळन्दु★ एङ्गुम् अळिक्किन्ऱ आयन् मायोन्★ इगल्लिडत्तशुरर्गळ् कूट्टम् वारान्★ इनियिरुन्दॆन्नुयिर् काक्कुम् आरॆन्॥२॥	हाय ! यह त्यक्त जीव का कोई ठौर नहीं है जिससे कि हम हवा, बांसुरी, सायंकालीन सूर्य, चंदन सुगंध, मुल्लै फूल, एवं पंचम पान्न से बचे रहें। धरा को बनाने, उठाने, एवं मापने वाले प्रभु ने असुरों पर कहर ढ़ा दिया है। हाय ! गोपाल मेरे संरक्षक नहीं आते। अब कैसे हम अपना जीवन बचा कर रखें ? **3870**
इनियिरुन्दॆन्नुयिर् काक्कुम् आरॆन्★ इणै मुलै नमुग नुण्णिडै नुडङ्ग★ तुनियिरुम् कलवि शॆय्दागम् तोय्न्दु★ तुरन्दॆम्मै इट्टगल् कण्णन् कळ्वन्★ तनियिळम् शिङ्गम् एम्मायन् वारान्★ तामरै क्कण्णुम् शॆव्वायुम्★ नील प्पनियिरुम् कुळल्गळुम् नान्गु तोळुम्★ पावियेन् मनत्ते निन्ऱीरुम् आलो ! ॥३॥	धूर्त युवापूर्ण केशरी ! हमारे प्रभु नहीं आते। हाय ! आपने हमारे कोमल उरोज एवं झूलते कमर का आनंद लिया।हमें तब छोड़कर चले गये। अब कैसे हम अपना जीवन बचा कर रखें ? उनकी कमल सी आंख, लाल होंठ, एवं काली लटें हमारे पापी हृदय को पीड़ित करने के लिये विराजमान है। **3871**

पावियेन् मनत्ते निन्रीरुम् आलो !⋆ वाडै तण् वाडै वेव्वाडै आलो !⋆ मेवु तण् मदियम् वेम् मदियम् आलो !⋆ मेन् मलर् प्पळ्ळि वेम् पळ्ळि आलो !⋆ तूवियम् पुळ्ळुडै त्तेय्व वण्डु तुदैन्द⋆ एम् पेण्मैयम् पूविदालो !⋆ आवियिन् परमल्ल अगैगळ् आलो !⋆ यामुडै नेञ्जमुम् तुणैयन्रालो ! ॥ ४ ॥	हाय ! गरूड़ के पंखों पर एक बहुत बड़ा विढ़नी आया। इस नारी रूप फूल का रस लिया और चला गया। अब ठंढ़ी हवा गर्म बहती है तथा हमारे पापी हृदय को जलाती है। प्यारा चांद एवं फूल की शय्या भी तप्त हो गये हैं। हाय ! मेरा हृदय भी मेरे साथ नहीं रहा। अब इससे ज्यादा हम क्या सहन करें ? **3872**
यामुडै नेञ्जमुम् तुणै अन्रालो !⋆ आ पुगुम्मालैयुम् आगिन्रालो !⋆ यामुडै आयन् तन् मनम् कल्लालो !⋆ अवनुडै त्तीङ्गुळल् ईरुम् आलो !⋆ यामुडै त्तुणैयेन्नुम् तोळिमारुम्⋆ एम्मिन् मुन् अवनुक्कु माय्वर् आलो !⋆ यामुडै आरुयिर् काक्कुमारेन् अवनुडै अरुळ् पेरुम्पोदरिदे ! ॥ ५ ॥	हाय ! मेरा हृदय भी मेरे साथ नहीं रहा। अब कैसे हम अपना जीवन रखें ? सूर्यास्त हो चला है। गायें लौट रही हैं। बांसुरी की धुन धीरे धीरे हमें व्यथित कर रहा है। हाय आपका हृदय पत्थर का है। हमारे विश्वासी संगी हमारे समक्ष मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। आपकी करूणा का समय दूर है। **3873**
अवनुडै अरुळ् पेरुम् पोदरिदाल्⋆ अव्वरुळ् अल्लन अरुळुम् अल्ल⋆ अवनरुळ् पेरुम् अळवावि निल्लादु⋆ अडु पगल् मालैयुम् नेञ्जुम् काणेन्⋆ शिवनोडु पिरमन् वण् तिरुमडन्दै⋆ शेर् तिरुवागम् एम्मावियीरुम्⋆ एवम् इनि प्पुगुम् इडम् एवन् शेय्गेनो आरुक्केन् शोल्लुकेन् अन्नैमीर्गाळ् ! ॥ ६ ॥	सजनी ! करूणा का समय दूर है। उनके अलावे किसी अन्य को देखता भी नहीं। हाय ! इतनी लंबी अवधि तक हम जीवित नहीं रह सकेंगे क्योकि गोधूलि वेला आ गयी है परंतु मेरा हृदय नहीं आया। ब्रह्मा, शिव, एवं लक्ष्मी को साथ में रखने वाले प्रभु ने हमारी आत्मा को शुष्क कर दिया है। अब कहां जायें ? क्या करें ? क्या कहें ? और कैसे कहें ? **3874**

आरुक्कॆन् शॊल्लुगेन् अन्नैमीर्गाळ् !⋆ आरुयिर् अळवन्ऱिक्कूर् तण् वाडै⋆ कार् ऒक्कुम् मेनि नम् कण्णन् कळ्वम्⋆ कवरन्द अत्तनि नॆञ्जम् अवङ्गण् अग्दे⋆ शीर् उट्र अगिल् पुगैयाळ् नरम्बु⋆ पञ्चमम् तण् पशुम् शान्दणैन्दु⋆ पोर् उट्र वाडै तण् मल्लिकै प्पू⋆ प्पुदु मणम् मुगन्दु कॊण्डॆरियुम् आलो ! ॥७॥	सजनी ! किसे यह बतायें ? हाय ! हमारा हृदय चोर के साथ है। ठंढ़े चंदन का लेप, अगरबत्ती का सुगंध एवं नूतन चमेली के फूल से शक्तिवान होकर प्रभावकारी शीतल वायु शांति से मेरा वध कर रही है तथा याल वाद्य यंत्र पर पंचम के साथ यह हम पर टूट पड़ती है। **3875**
पुदु मणम् मुगन्दु कॊण्डॆरियुम् आलो !⋆ पॊङ्गिळ वाडै पुन् शॆक्कर् आलो !⋆ अदु मणन्दगन्र् नम् कण्णन् कळ्वम्⋆ कण्णिनिल् कॊडिदिनियदनिल् उम्बर्⋆ मदु मण मल्लिगै मन्द क्कोवै⋆ वण् पशुम् शान्दिनिल् पञ्जमम् वैत्तु⋆ अदु मणन्दिन्नरुळ् आय्च्चियर्क्के⋆ ऊदुम् अत्तीङ्गुळर्के उय्येन् नान्॥८॥	शीतल सुगंधित वायु एवं धूमिल होते लाल बादल कृष्ण से ज्यादा खतरनाक है।आप छल के साथ आये एवं छोड़कर चले गये। गोपियों के लिये अपनी बांसुरी पर पंचम धुन तथा मधु टपकते चमेली की माला एवं शीतल चंदन का लेप ये सब हमारी सहन शक्ति से बाहर हैं।**3876**
ऊदुम् अत्तीङ्गुळर्के उय्येन् नान्⋆ अदु मॊळिन्दिडै इडैत्तन् शॆय् कोल⋆ त्तुदु शॆय् कण्गळ् कॊण्डॊन्रु पेशित्⋆ तू मॊळि इशैगळ् कॊण्डॊन्रु नोक्कि⋆ पेदुरु मुगम् शॆय्दु नॊन्दु नॊन्दु⋆ पेदै नॆञ्जरवर् प्पाडुम् पाट्टै⋆ यादुम् ऒन्ररिगिलम् अम्म अम्म !⋆ मालैयुम् वन्ददु मायन् वारान्॥९॥	गोपियों के लिये अपनी बांसुरी पर पंचम धुन अकेले ही हमारी जान लेने के लिये पर्याप्त है। आपकी सुन्दर आंखे तथा आपके गीत के शब्दों के चुभते संदेश, तब उदास मुख बनाकर आहत होने का बहाना, हाय! हाय! ये सब हमारी सहन शक्ति से बाहर है। शाम आ गयी पर प्रभु नहीं आये। **3877**
मालैयुम् वन्ददु मायन् वारान्⋆ मा मणि पुलम्ब वल्लेरणैन्द⋆ कोल नन्नागुकळ् उगळुम् आलो ! कॊडियॆन कुळल्गाळुम् कुळरुम् आलो !⋆ वाल् ऒळि वळर् मुल्लै करुमुगैगळ्⋆ मल्लिगै अलम्बि वण्डालुम् आलो !⋆ वेलैयुम् विशुम्बिल् विण्डलरुम् आलो !⋆ एन् शॊल्लि उय्वन् इङ्गवनै विट्टे॥१०॥	शाम आ गयी पर प्रभु नहीं आये। कैसे मैं जीवित रहूं? घाय का घुंघरू बज रहा है। बांसुरी की तान हवा में व्याप्त है। मुल्लै चमेली एवं करूमुगै से रस पान कर भौंरे मस्त हैं।सागर की गर्जन हवा में छा गयी है। हाय! हाय! **3878**

‡ अवनै विट्टगन्ऱुयिर् आट्गिल्ला⋆ अणियिळै आय्च्चियर् मालै प्पूशल्⋆ अवनै विट्टगल्वदऱ्के इरङ्गि⋆ अणि कुरुगूर् शडगोपन् मारन्⋆ अवनियुण्डुमिळन्दवन् मेल् उरैत्त⋆ आयिरत्तुळ् इवै पत्तुम् कॊण्डु⋆ अवनियुळ् अलट्टि निन्ऱुय्म्मिन् तॊण्डीर्!⋆ अच्चॊन्न मालै नणिण त्तॊळुदे॥११॥	प्रभु से अलगाव पर उदास कुरूगुर नगर के मारन शडगोपन के मधुर हजार पदों का यह दसक धरा निगलने प्रभु की प्रशस्ति है तथा सायंकाल की गोधूली वेला में प्रभु से गोपियों का अलगाव के विषाद नाद का स्मरण कराता है। भक्तों, इसे पूजा के साथ गाओ एवं धरा का शासक बनो। **3879** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **90 मालै नण्णि (3880 - 3890)** **तिरूकण्णपुरम् शेरूमारू पिऱरक्कु उपदेशित्तल्**	
मालै नण्णि॰ तॊळुदॆळुमिनो विनैगॆड॰ कालै मालै॰ कमल मलर् इट्टु नीर्॰ वेलै मोदुम् मदिळ् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुरत्तु॰ आलिन्मेलाल् अमरन्दान्॰ अडि इणैगळे॥१॥	अपना विषाद मिटाओ। उठो। प्रातः शाम प्रभु के चरणों का कमल के फूल से पूजा करो।प्रलय जल पर बट पत्र पर सोने वाले प्रभु सागर से प्रक्षालित तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं। **3880**
कळ्ळविळुम् मलर् इट्टु॰ नीर् इरैञ्जुमिन्॰ नळ्ळि शेरुम् वयल् शूळ्॰ किडङ्गिन् पुडै॰ वॆळ्ळियेयन्द मदिळ् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुरम् उळ्ळि॰ नाळुम् तॊळुदॆळुमिनो तॊण्डरे! ॥२॥	मधुर फूलों को विखेरकर प्रति दिन पूजा करो। भक्तों, सर्वदा आपको अपने हृदय में रखो।प्रभु तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं जहां गगनचुंबी दीवारे हैं तथा उपजाऊ खेतों एवं तालों में केकड़े की बहुतायत है। **3881**
तॊण्डर्! नुन्दम्॰ तुयर् पोग नीर् एगमाय्॰ विण्डु वाडा मलर् इट्टु॰ नीर् इरैञ्जुमिन्॰ वण्डु पाडुम् पॊळिल् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुर- त्तण्ड वाणन्॰ अमरर् पॆरुमानैये॥३॥	भक्तों ! नूतन ताजा फूल जमा कर पूजा करो। मधुमक्खी मंड़राते बागों के बीच प्रभु तिरूकण्णपुरम में स्थित हैं। आप तुम्हारे एक एक विषाद का अंत कर देंगे। **3882**
मानै नोक्कि॰ मड प्पिन्नै तन् केळ्वनै॰ तेनै वाडा मलर् इट्टु॰ नीर् इरैञ्जुमिन्॰ वानै उन्दुम् मदिळ् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुरम्॰ तान् नयन्द पॆरुमान्॰ शरणम् आगुमे॥४॥	मधु टपकते नूतन ताजा फूल से नप्पिनाय के दूलहा की तिरूकण्णपुरम में पूजा करो जहां गगनचुंबी दीवारें हैं। जो वहां स्वेच्छा से रहते हैं हमे आश्रय प्रदान करेंगे। **3883**
शरणम् आगुम्॰ तन ताळ् अडैन्दार्क्कॆल्लाम्॰ मरणम् आनाल्॰ वैगुन्दम् कॊडुक्कुम् पिरान्॰ अरण् अमैन्द मदिळ् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुर- त्तरणियाळन्॰ तनदन्बरक्कन्बागुमे॥५॥	जो आपको खोजते हैं उनको यहां तथा मृत्यु पश्चात् वैकुठ में आप आश्रय प्रदान करते हैं। ऊंची दीवारो वाले तिरूकण्णपुरम में आप भक्तों के प्रेम के कारण रहते हैं। **3884**
अन्बन् आगुम्॰ तन ताळ् अडैन्दार्क्कॆल्लाम्॰ शॆम् पॊनागत्तु॰ अवुणन् उडल् कीण्डवन्॰ नन् पॊनेयन्द मदिळ् शूळ्॰ तिरुक्कण्ण पुर- त्तन्बन्॰ नाळुम् तन॰ मॆय्यर्क्कु मॆय्यने॥६॥	आप उन सबों के सखा हैं जो आपका चरण खोजते हैं।आप सुनहले स्वर्णाभूषित दीवारो वाले तिरूकण्णपुरम में रहते हैं।आपने हिरण्य की चौड़ी छाती को चीरा। जो खोजता है उसके आप चिरंतन मित्र हैं। **3885**

मॆय्यन् आगुम्⋆ विरुम्बि त्तॊळुवार्क्कॆल्लाम्⋆ पॊय्यन् आगुम्⋆ पुऱमे तॊळुवार्क्कॆल्लाम्⋆ शॆय्यिल् वाळैयुगळुम्⋆ तिरुक्कण्ण पुर– त्तैयन्⋆ आगत्तणैप्पार्गट्कणियने॥ ७॥	जो प्रेम से आपको खोजता है आप उनके प्रति सच्चे हैं। जो दिखाने के लिये आपकी पूजा करता है उसके लिये आप सच्चे नहीं हैं। मछली वाले खेतों से घिरे तिरूकण्णपुरम में आप उनके पास हैं जो आपको अपने हृदय में रखते हैं। **3886**
अणियन् आगुम्⋆ तन ताळ अडैन्दार्क्कॆल्लाम्⋆ पिणियुम् शारा⋆ पिऱवि कॆडुत्ताळुम्⋆ मणि पॊन् एयन्द मदिळ शूळ⋆ तिरुक्कण्ण पुरम् पणिमिन्⋆ नाळुम् परमेट्टि तन् पादमे॥८॥	आप उसके पास हैं जो आपका चरण खोजता है। आप उसे जन्म मरण के चक्कर से मुक्त कर देते हैं। आभूषित दीवारों वाले तिरूकण्णपुरम के प्रभु के चरणों की नित्य की पूजा करो। **3887**
पादम् नाळुम्⋆ पणिय त्तणियुम् पिणि⋆ एदम् शारा⋆ एनक्केल् इनियॆन् कुऱै⋆ वेद नावर् विरुम्बुम्⋆ तिरुक्कण्ण पुर– त्तादियानै⋆ अडैन्दार्क्कल्लल् इल्लैये॥९॥	आपकी पूजा कर रोग मुक्त बनो। हमारे कर्म हमें नहीं बांधेगे अतः हम क्या खोयेंगे ? वैदिक ऋषिगन तिरूकण्णपुरम के प्रभु को चाहते हैं। जो आपको पा जाते हैं उनका विषाद समाप्त हो जाता है। **3888**
इल्लै अल्लल्⋆ एनक्केल् इनियॆन् कुऱै⋆ अल्लि मादर् अमरुम्⋆ तिरुमार्बिनन्⋆ कल्लिल् एयन्द मदिळ शूळ⋆ तिरुक्कण्णबुरम् शॊल्ल⋆ नाळुम् तुयर् पाडु शारावे॥१०॥	हमें कोई विषाद नहीं है, हमें किस बात की कमी है ? आभूषित दीवारों वाले तिरूकण्णपुरम में कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर स्थित हैं। आपकी प्रशस्ति गाओ एवं विषाद सदा के लिये दूर रहेगा। **3889**
‡पाडु शारा⋆ विनै पट्र् वेण्डुवीर्⋆ माडनीडु⋆ कुरुगूर् च्चडगोबन्⋆ शॊल् पाडलान तमिळ⋆ आयिरत्तुळ इप्पत्तुम् पाडियाडि⋆ पणिमिन् अवन् ताळ्गळे॥११॥	जो कर्म के विषाद से मुक्ति चाहते हैं वे ऊंची महलों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद के इस दशक को गायें एवं नाचें तथा तिरूकण्णपुरम में प्रभु के चरण की पूजा करें। **3890** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

91 ताळतामरै (3891 – 3901)

तिरूमोगूर् प्पेरूमानै च्चरणडैन्दु ताम् परमपदम् अडैय क्करूदियदै आळ्वार अरूळि च्चेय्दल्

तिरूमोगूर ः यह तमिलनाडु में मदुरै से 10 कि मी पर है। मूलावर खड़े मुद्रा में पूर्वाभिमुख हैं एवं चतुर्भजी हैं। शंख चक्र के अलावे दायां हाथ वरद मुद्रा में तथा बायां गदा के साथ है।यहां एक और सन्निधि हैं जहां पेरूमाल भुजंग शयनम मुद्रा में हैं। कहते हैं भगवान का शयन मुद्रा सात तरह की है ः भोग, बाल, उत्थान, आनंद, वीर, स्थल, एवं प्रार्थना। यहां प्रार्थना मुद्रा है जिसमें दोनों लक्ष्मी हाथ उठाकर पूजा कर रही हैं तथा शयन करते प्रभु को भक्तों के दर्शनार्थ उठने के लिये प्रार्थना कर रही हैं।

समुद्रमंथन के समय पेरूमाल ने मोहिनी रूप इसी स्थान पर धारण किया तत्पश्चात अमृत बांटा गया। देवों ने प्रभु से मूल रूप के दर्शन की प्रार्थना की तब यह चतुर्भुज रूप यहां द्दश्यमान हुआ। मेघ के समान श्याम स्वरूप को कालमेघ पेरूमाल कहते हैं।

सुदर्शन चक्रतआळवार की अलग सन्निधि है जिसमें 16 हाथ में 16 तरह के आयुध विराजमान हैं तथा विग्रह दौड़ने की मुद्रा में हैं। इसके पीछे योग नरसिंह हैं दोनो ऊपर के हाथ शंख चक्र के साथ तथा नीचे के दोनो हाथ घुटने पर विश्राम करते हुए।

नम्माळवार इस रूप पर अपने मुग्धावस्था के भाव को दर्शाते हैं। 3899 द्रष्टव्य है।
(Refer Ramesh vol. 4, pp 269)

‡ताळ तामरै⋆ त्तडमणि वयल् तिरुमोगूर्⋆ नाळुम् मेवि नन्नामरन्दु निन्रु⋆ अशुररै त्तगरक्कुम्⋆ तोळुम् नान्गुडै⋆ च्चुरि कुळल् कमल क्कण् कनिवाय्⋆ काळ मेगत्तै अन्रि⋆ मट्रोन्रिलम् कदिये॥१॥	चार भुजा, घुंघराले बाल, कमल सी आंख, मूंगावत होंठ वाले आकर्षक मेघ सा श्याम प्रभु ही हमारे एक मात्र आश्रय हैं। कमल की बहुतायत वाले सरोवरों के बीच स्थित तिरूमोगूर में प्रभु सारे असुरों का विनाशकर अपनी स्वेच्छा से रहते हैं।3891
इलङ्गदि मट्रोन्रैम्मैक्कुम्⋆ ईन् तण् तुळायिन्⋆ अलङ्गल् अङ्गण्णि⋆ आयिरम् पेर् उडै अम्मान्⋆ नलङ्गोळ् नान्मरै वाणर्गळ् वाळ्⋆ तिरुमोगूर्⋆ नलङ्गळल् अवन् अडि निळल्⋆ तडमन्रि यामे॥२॥	योग्य वैदिक ऋषियों वाले तिरूमोगूर में प्रभु हजार नाम वाले हैं तथा तुलसी का सुन्दर मुकुट धारण करते हैं। हर जन्म में आपके अतिरिक्त हमारा कोई आश्रय नहीं है। आपके चरणारविंद की साया में सभी अच्छाई का बड़ा सरोवर है।3892
अन्रियाम् ओरु पुगलिडम्⋆ इलम् एन्रेन्रलट्रि⋆ निन्रु नान्मुगन् अरनोडु⋆ देवर्गळ् नाड⋆ वेन्रिम् मूवुलगळित्तुळल्वान्⋆ तिरुमोगूर्⋆ नन्रु नाम् इनि नणुगुदुम्⋆ नमदिडर् केडवे॥३॥	चतुरानन ब्रह्मा शिव एवं अन्य देवगन आपकी पूजा कर आपकी शरण में अपना संरक्षण पाते हैं। लोकों को संरक्षण देते हुए धरा पर आप विजयी होकर घूमते हैं। हमलोगों के लिये तिरूमोगूर में आपके पास आना ही श्रेयस्कर है। 3893

इडर् कॆड ऎम्मै प्पोन्दळियाय्⋆ ऎन्रॆन्रेत्ति⋆ शुडर् कॊळ् शोदियै⋆ त्तेवरुम् मुनिवरुम् तॊडर⋆ पडर् कॊळ् पाम्बणै⋆ प्पळ्ळि कॊळ्वान् तिरुमोगूर्⋆ इडर् कॆडवडि परवुदम्⋆ तॊण्डीर् ! वम्मिने॥४॥	चलो भक्तों क्षीर सागर में फनधारी शेष पर शयन करने वाले प्रभु की तिरूमोगूर में पूजा करें। देव एवं ऋषिगन गाथा गाते हुए सदा आपके पास रहकर अपनी सारी आवश्यकताओं के लिये आपकी पूजा करते हैं तथा अपना संरक्षण चाहते हैं। **3894**
तॊण्डीर् ! वम्मिन्⋆ नम्शुडरॊळि ऒरु तनि मुदल्वन्⋆ अण्ड मूवुलगळन्दवन्⋆ अणि तिरुमोगूर्⋆ ऎण् दिशैयुम् ईन् करुम्बॊडु⋆ पॆरुञ्शॆन्नॆल् विळैय⋆ कॊण्ड कोयिलै वलञ्शॆय्दु⋆ इङ्गाडुदुम् कूत्ते॥५॥	चलो भक्तों अपने प्रिय मंदिर के पास चलें। गन्ने एवं धान के बड़े बड़े पौधे वाले तिरूमोगूर में प्रभु स्थित हैं। आप सबके आदि कारण हैं। आपने धरा मापी ।चलें, आनंद में नृत्य करें। **3895**
कूत्तन् कोवलन्⋆ कुदट्टु वल्लशुरर्गळ् कूट्रम्⋆ एत्तुम् नङ्गट्कुम्⋆ अमरर्क्कुम् मुनिवर्क्कुम् इन्बन्⋆ वाय्त्त तण् पणै वळ वयल् शूळ्⋆ तिरुमोगूर् आत्तन्⋆ तामरै अडियन्रि⋆ मट्रिलम् अरणे॥६॥	गोपाल प्रभु असुरों के लिये मृत्यु हैं तथा भक्तों एवं ऋषियों को प्रिय हैं। चलो भक्तों अपने प्रिय मंदिर के पास चलें। तिरूमोगूर के चारो ओर शीतल एवं उपजाऊ बाग तथा खेत फैले हैं।अपने आत्तन के चरणारविंद के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं है। **3896**
मट्रिलम् अरण्⋆ वान् पॆरुम् पाळ् तनि मुदला⋆ श्शुट्रु नीर् पडैत्तु⋆ अदन् वळि त्तॊन्मुनि मुदला⋆ मुट्रुम् देवरोडु⋆ उलगु शॆय्वान् तिरुमोगूर्⋆ शुट्रि नाम् वलञ्जॆय्य⋆ नम् तुयर् कॆडुम् कडिदे॥७॥	हमारे कोई आश्रय नहीं हैं। आपने विस्तृत एवं शांत स्थान बनाया फिर इसे जल से भर दिया।तब देवगन एवं प्राचीन ऋषियों की रचना की। फिर लोको को बनाकर आनन्द से तिरूमोगूर में रहने लगे। अगर हम आपकी एक परिकमा करें तो हमारे सभी विषाद भाग खड़ा होंगे। **3897**
तुयर् कॆडुम् कडिदडैन्दु वन्दु⋆ अडियवर् तॊळुमिन्⋆ उयर् कॊळ् शोलै⋆ ऒण् तडम् अणियॊळि तिरुमोगूर्⋆ पॆयर्गळ् आयिरम् उडैय⋆ वल्लरक्कर् पुक्कळुन्द⋆ तयरदन् पॆट्र⋆ मरगद मणि त्तडत्तिनैये॥८॥	भक्तों ! विषाद भाग खड़ा होंगे। आओ एवं पूजा करो। हजारनाम वाले प्रभु करूणा के सरोवर हैं। आप सरोवरों एवं सुन्दर बागों के साथ तिरूमोगूर में रहते हैं। लंका का नाश करने के लिये आप दशरथ पुत्र राम बनकर आये। **3898**
मणि त्तडत्तडि मलर्क्कण्गळ्⋆ पवळ च्चॆव्वाय्⋆ अणिक्कॊळ् नाल् तडन्दोळ्⋆ दॆय्वम् अशुरर् ऎन्रुम्⋆ तुणिक्कुम् वल्लरट्टन्⋆ उरै पॊळिल् तिरुमोगूर्⋆ नणित्तु नम्मुडै नल्लरण्⋆ नाम् अडैन्दनमे॥९॥	सरोवरों एवं सुन्दर बागों का तिरूमोगूर अब पास में है। असुरों के विनाशक चार भुजावाले योद्धा प्रभु का यहां निवास है। हमने विशाल किला रूपी प्रभु की सेवा की जिनका चरण एक बड़ा सा सरोवर है, कमल जैसी आंखें हैं एवं प्रवाल जैसे होंठ हैं। **3899**

नाम् अडैन्द नल्लरण्⋆ नमक्कैन्रु नल्लमरर्⋆ तीमै शेय्युम् वल्लशुररै⋆ अञ्जि च्चैन्रडैन्दाल्⋆ काम रूपम् कॊण्डु⋆ एळुन्दळिप्पान् तिरुमोगूर्⋆ नाममे नविन्रॆण्णुमिन्⋆ एत्तुमिन् नमर्गाळ् ! ॥१०॥	दुष्ट असुरों से भयग्रस्त स्वर्गिक जन प्रभु को चाहते हैं जो उसी स्वरूप में दर्शन देते हैं जिस स्वरूप की चाह रहती है तथा वे रक्षा करते हैं। तिरूमोगूर के प्रभु सदा के लिये हमारे किला हैं। आइये प्रसन्न होकर प्रभु के नाम की प्रशस्ति गायें। **3900**
‡ एत्तुमिन् नमर्गाळ्⋆ एन्रु तान् कुडम् आडु कूत्तनै⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ कुट्रेवल्गाळ्⋆ वाय्त्त आयिरत्तुळ् इवै⋆ वण् तिरुमोगूरक्कु⋆ ईत्त पत्तिवै एत्त वल्लार्क्कु⋆ इडर् कॆडुमे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक पात्रनर्तक तिरूमोगूर के प्रभु की प्रशस्ति है। जो प्रभु की पूजाकर इसे गायेंगे निश्चित ही उनके विषाद का अंत हो जायेगा। **3901** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

92 केडुमिडर् (3902 -3912)

तिरूवनन्दपुरत्तै च्चेरन्दाल् परमपदत्तिऱ्पोल त्तोन्डु शेय्यलाम् एन्रू कुरूदल्

तिरूवनन्दपुर नगरः यह केरल की राजधानी तिरूअनंतपुरम में स्थित विख्यात पद्मनाभ स्वामी का मंदिर है जहां भगवान भुजंग शयनावस्था में हैं।
(Refer Ramesh vol. 7, pp 130)

‡ केडुम् इडर् आयवॅल्लाम्* केशवॅन्न* नाळुम् कॉडुविनै शॅय्युम्* कूट्रिन् तमर्गळुम् कुरुक्किल्लार्* विडम् उडै अरविल् पळ्ळि* विरुम्बिनान् शुरुम्पलट्टुम्* तडम् उडै वयल्* अनन्दपुर नगर् पुगुदुम् इन्रे॥१॥	केशव का नाम लेने पर हमारे सारे व्यवधान लुप्त हो जायेंगे। दुष्ट यमदूत भी पास नहीं आयेंगे। हम सुखद खेतों से घिरे तिरूवनन्दपुर नगर चलें जहां प्रभु विषधर शेषशय्या पर शयन करते हैं। **3902**
इन्रु पोय् प्पुगुदिरागिल्* एळुमैयुम् एदम् शारा* कुन्रु नेर् माडम् आडे* कुरुन्दु शेर् शॅरुन्दि पुन्नै* मन्रलर् पॉळिल्* अनन्दपुर् नगर् मायन् नामम्* ऑन्रुम् ओर् आयिरमाम्* उळ्ळुवार्क्कुम्बर् ऊरे॥२॥	अगर हम अभी जायें तो सात जन्म तक विषाद नहीं सतायेगा। महलें पर्वत की तरह खड़ी हैं। हजार नाम से एक नाम भी लेने वाले स्वर्गिकों का नगर तिरूवनन्दपुर नगर में कुरून्दु, शेरून्दि, एवं पुन्नै फूल का सुगंध फैला है। **3903**
ऊरुम्पुट् कॉडियुम् अगते* उलगॅल्लाम् उण्डुमिळन्दान्* शेरुम् तण् अनन्दपुरम्* शिक्कॅन प्पुगुदिरागिल्* तीरुम् नोय् विनैगळ् एल्लाम्* तिण्ण नाम् अरिय च्चॅान्नोम्* पेरुम् ओर् आयिरत्तुळ्* ऑन्रु नीर् पेशुमिने॥३॥	विश्व को निगलकर पुनः बनाने वाले प्रभु अपने बाहन गरूड़ से चिह्नित ध्वज के साथ तिरूवनन्दपुर नगर में शयन कर रहें हैं।अगर विश्वासपूर्वक वहां जाओगे तो तुम्हारे सारे विषाद मिट जायेंगे।हजार नाम से मात्र एक भी नाम का जप करो। **3904**
पेशुमिन् कूशम् इन्रि* पॅरिय नीर् वेलै शूळ्न्दु* वाशमे कमळुम् शोलै* वयल् अणि अनन्दपुरम्* नेशम् शॅय्दु उरैगिन्रानै* नॅरिमैयाल् मलर्गळ् तूवि* पूशनै शॅय्गिन्रार्गळ्* पुण्णियम् शॅय्दवारे॥३॥ II4II	बिना भय के बोलो।आप सबों को मित्रबना लेते हैं तथा वहां सुगंधित फूल के बागों एवं खेतों से घिरे तिरूवनन्दपुर नगर में शयन कर रहें हैं।सागर किनारे वे लोग आपकी पूजा फूल एवं उचित विधि से करते हैं। कितने सौभाग्यशाली हैं वे लोग ! **3905**

पुण्णियम् शॆय्दु⋆ नल्ल पुनलॊडु मलर्गळ् तूवि⋆ एण्णुमिन् एन्दै नामम्⋆ इप्पिऱप्पऱुक्कुम् अप्पाल्⋆ तिण्णम् नाम् अऱिय च्चॊन्नोम्⋆ शॆऱि पॊऴिल् अनन्दपुरत्तु⋆ अण्णलार् कमल पादम्⋆ अणुगुवार् अमरर् आवार्॥४॥ II5II	जो सुगंधित तिरूवनन्दपुर नगर में प्रभु का चरण चाहते हैं एवं आपकी पूजा पवित्र जल तथा नूतन पुष्प से करते हैं और आपके नाम का ध्यन करते हैं वे इस जीवन का अंत कर स्वर्गिक हो जायेगें। हम इसे निश्चित जानते एवं बोलते हैं। **3906**
अमरराय् त्तिरिगिन्ऱार्गट्कु⋆ आदिशेर् अनन्दपुरत्तु⋆ अमरर् कोन् अर्च्चिक्किन्ऱु⋆ अङ्ग प्पणि शॆय्वर् विण्णोर्⋆ नमर्गळो! शॊल्ल क्केळ्मिन्⋆ नामुम् पोय् नणुगवेण्डुम्⋆ कुमरनार् तादै⋆ तुन्बम् तुडैत्त गोविन्दनारे॥५॥ II6II	तिरूवनन्दपुर नगर में शयन करने वाले प्रभु स्वर्गिकों के प्रभु हैं जो इनके प्रथम गण विष्वकसेन से पहले पूजे जाते हैं तथा दूसरे लोग इनके बाद पूजा अर्पित करते हैं। हमारे लोगों ! ध्यान से सुनो, हमें भी वहां जाकर सम्मिलित होना है। आप गोविन्द हैं जिन्होंने सुब्रमनियम के पिता का विषाद मिटाया था। **3907**
तुडैत्त गोविन्दनारे⋆ उलगुयिर् तेवुम् मट्रुम्⋆ पडैत्त एम् परम मूर्त्ति⋆ पाम्बणै प्पळ्ळि कॊण्डान्⋆ मडैत्तलै वाळै पायुम्⋆ वयल् अणि अनन्दपुरम्⋆ कडैत्तलै शीय्क्कप्पॆट्राल्⋆ कडुविनै कळैयलामे॥६॥ II7II	हमारे महान गोविन्द प्रभु विश्व, देवगन, जीव तथा अन्य सभी के संहारक एवं सृष्टिकर्ता हैं।आप उपजाऊ खेतों एवं मछलियां कूदते तालों के बीच तिरूवनन्दपुर नगर में शयन करते हैं। यहां परिसर में भी झाड़ू लगाने की सेवा करने से सभी कर्मों का अंत हो जाता है। **3908**
कडुविनै कळैयलागुम्⋆ कामनै प्पयन्द काळै⋆ इडवगै कॊण्डदॆन्बर्⋆ एऴिल् अणि अनन्दपुरम्⋆ पडम् उडैयरविल् पळ्ळि⋆ पयिन्ऱवन् पादम् काण⋆ नडमिनो नमर्गळ् उळ्ळीर्!⋆ नाम् उमक्कऱिय च्चॊन्नोम्॥७॥ II8II	तिरूवनन्दपुर नगर का सुन्दर स्थल सारे कर्मों के नाश हेतु काम के पिता ने स्वयं पसंद से चुना है। भक्तगनों !यह मेरी अंतिम पुकार है, फनधारी शेष पर शयन करते प्रभु का चरण देखने के लिये तैयार हो जाओ। **3909**
नाम् उमक्कऱिय च्चॊन्न⋆ नाळ्गळुम् नणियवान⋆ शेमम् नन्गुडैत्तु क्कण्डीर्⋆ शॆऱि पॊऴिल् अनन्दपुरम्⋆ तूमनत्तु विरै मलर्गळ्⋆ तुवळऱ आय्न्दु कॊण्डु⋆ वामनन् अडिक्कॆन्ऱु एत्त⋆ माय्न्दऱुम् विनैगळ् तामे॥८॥ II9II	देखो, सूचना की अवधि का भी अंत हो गया है। सुगंधित बागों वाले तिरूवनन्दपुर नगर पावन प्रतीकों से भरा हुआ है। नूतन चुने हुए सुगंधित फूल एवं अगरबत्ती से वामन के चरण की पूजा करो। तुम्हारे विषाद का बिना किसी चिह्न के अंत हो जायेगा। **3910**

मायन्दरुम् विनैगळ् तामे* मादवा एन्न* नाळुम् एयन्द पॉन् मदिळ्* अनन्दपुर नगर् एन्दैक्कॅन्रु* शान्दॉडु विळक्कम् दूपम्* तामरै मलर्गळ् नल्ल* आयन्दु कॉण्डु एत्त वल्लार्* अन्दमिल् पुगळिनारे॥९॥ ॥10॥	हमारे सारे विषाद माधव का नाम लेने पर स्वतः लुप्त हो जायेंगे। प्रभु सुनहले दीवारों वाले तिरूवनन्दपुर नगर में स्थित हैं।जो आपकी पूजा चंदन लेप दीपक अगरबत्ती एवं नूतन कमल पंखुड़ियों से करेंगे वे चिरंतन गौरव के अधिकारी बनेंगे। **3911**
‡अन्दमिल् पुगळ्* अनन्दपुर नगर् आदि तन्नै* कॉन्दलर् पॉळिल्* कुरुगूर् मारन् शॉल् आयिरत्तुळ्* ऐन्दिनोडैन्दुम् वल्लार्* अणैवर् पोय् अमर् उलगिल्* पैन्दॉडि मडन्दैयर् तम्* वेय्मरु तोळ् इणैये॥१०॥ ॥11॥	कुरूगुर शडगोपन के हजारपद का यह दसक तिरूवनन्दपुर नगर के प्रभु के शाश्वत गाथा का है।यह स्वर्गिकों के लोक में सुघड़ बांस की तरह बांह वाली आभूषित नारियों के आलिंगन का सुख देने वाला है। **3912** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

93 वेय मरूदोळ् (3913 – 3923)

आनिरै मेयक्क च्चेन्ऱाल् पिरिवाट्रि इरोम् एन्रू पोक्कै त्तविरक्कुमारू आयच्चियर् कण्णनै वेण्डुदल्

गाय चराने जाने से विछुड़न हुआ है। विषाद से गोपियों का दिन ही भयाक्रांत हो गया है।

‡ वेय् मरु तोळ् इणै मॅल्लियुम् आल्लो !★ मॅल्लिवुम् एन् तनिमैयुम् यादुम् नोक्का★ कामरु कुयिल्गळुम् कूवुम् आल्लो !★ कण मयिल् अवै कलन्दाल्लुम् आल्लो★ आमरुविन निरै मेयक्क नी पोक्कु★ ऑरु पगल् आयिरम् ऊळियाल्लो★ तामरै क्कण्गळ् कॉण्डु ईर्दियाल्लो !★ तगविल्लै तगविल्लैये नी कण्णा ! ॥१॥	जब प्रेम पक्षी कोयल पुकारता है हमारा सुघड़ बांस की तरह बांहें झुक जाती हैं। हमारे अकेलेपन का तिरस्कार कर ये मोरगन समूह में नाच रहे हैं। हे कृष्ण! आप अपनी गायों को चराने चले गये। आप हृदयहीन हैं। हाय !आप अपनी कमल सी आंखों से हमारा प्राणांत कर रहे हैं। दिन चिरंतन अवधि वाला हो गया है। **3913**
तगविल्लै तगविल्लैये नी कण्णा !★ तड मुलै पुणर्दॊरुम् पुणर्च्चिक्कारा★ श्शुगवॆळ्ळम् विशुम्बिरन्दरिवै मूळक्क शूळ्न्दु★ अदु कनवॆन नीङ्गि आङ्ग★ अगवुयिर् अगम् अगन्दोरुम् उळ् पुक्कु★ आवियिन् परम् अल्ल वेक्कै अन्दो★ मिग मिग इनि उन्नै प्पिरिवैयामाल्★ वीवन् निन् पशुनिरै मेयक्क प्पोक्के ॥२॥	जब जब आपने हमारे स्थिर उरोज का स्पर्श किया है आनंद उमड़ कर हमारे मन को धोते हुए आकाश को छेद दिया है तथा हमें स्वप्निल की तरह छोड़ गये हैं। हाय ! हमारी सहन शक्ति से ज्यादा रोम मे रोम में हमारी चाह घुस गयी है। हे कृष्ण! आप हृदयहीन हैं, हमें छोड़कर गायों को चराने चले जाते हैं। हाय ! **3914**
वीवन्निन् पशु निरै मेयक्क प्पोक्कु★ वॆव्वुयिर् कॊण्डॆनदावि वेमाल्★ यावरुम् तुणैयिल्लै यान् इरुन्दु★ उन् अञ्जन मेनियै आट्टम् काणेन्★ पोवदन्ऱॊरु पगल् नीयगन्ऱाल्★ पॊरु कयल् कण्णिणै नीरुम् निल्ला★ शावदिव्वाय्क्कुल त्तायच्चियोमाय् प्पिरन्द★ इत्तॊळुत्तैयोम् तनिमै ताने ॥३॥	हमारी गर्म सांस आत्मा को शुष्क बना रही है। हाय! मैं बिना साथी के मरूंगी। ओह ! आपके श्याम वदन के कृत्य देखने के लिये मैं जीवित ही नहीं रहूंगी। मत्स्यवत नयनों से आंसू रूकते ही नहीं। दिन भी नहीं बीतता। इस गोपकुल का जन्म ही अभिशाप है। इस अकेलापन का अवश्य अंत होना चाहिये। **3915**

तॊळुत्तैयोम् तनिमैयुम् तुणै पिरिन्दार् तुयरमुम्⋆ निनैगिलै गोविन्दा⋆ निन् तॊळुत्तनिल् पशुक्कळैये विरुम्बि⋆ तुरन्दॆम्मै विट्टवै मेयक्क प्पोदि⋆ पळुत्त नल्लमुदिन् इन्शाट्टु वॆळ्ळम्⋆ पावियेन् मनम् अगन्दॊरुम् उळपु– क्कळुत्त⋆ निन् शॆङ्गनि वायिन् कळ्व प्पणिमॊळि⋆ निनैदॊरुम् आवि वेमाल्॥ ४॥	गोविन्द !आप हमारी अकेलापन की चुभन को नहीं समझते।आप केवल अपनी गायों को चाहते हैं एवं हमे छोड़कर उनके पीछे चले जाते हैं।आपकी मिथ्या बातें मीठे जहर के समान आपके वेर जैसे होंठ से निकलती हैं। हमारे रोम रोम में ये घुस गयी हैं एवं जब भी स्मरण करती हूं प्राणांत का दुख झेलती हूं। **3916**
पणिमॊळि निनैदॊरुम् आवि वेमाल्⋆ पगल् निरै मेयक्किय पोय कण्णा !⋆ पिणियविळ् मल्लिगै वाडै तूव⋆ प्पॆरु मद मालैयुम् वन्दिन्रालो !⋆ मणि मिगु मार्बिनिल् मुल्लै प्पोदु⋆ एन् वन मुलै कमळ्वित्तुन् वाय् अमुदम् तन्दु⋆ अणि मिगु तामरै क्कैयै अन्दो !⋆ अडिच्चियोम् तलैमिशै नी अणियाय्॥ ५॥	कृष्ण !आप सारा दिन गाय चराने में बिताते हैं।आपकी क्षमायाचना हमारा प्राणांत करती है। यह मदमत्त भौंरा सायं काल की चमेली का सुगंध विखेरता है। आओ, तुम अपनी छाती से मुलै फूल की गंध को हमारे उरोजों पर लगाओ। तुम अपना होंठ हमे दे दो। हाय ! तू अपना आभूषित हाथ हमारे सिर पर रख दो।**3917**
अडिच्चियोम् तलैमिशै नी अणियाय्⋆ आळियङ्गण्णा ! उन् कोल प्पादम्⋆ पिडित्तदु नडुवुनक्करिवैयरुम् पल्लर् अदुनिर्क एम् पॆण्मै आट्रोम्⋆ वडित्तडम् कण्णिणै नीरुम् निल्ला⋆ मनमुम् निल्ला एमक्कदु तन्नाले⋆ वॆडिप्पु निन् पशु निरै मेयक्क प्पोक्कु⋆ वेम् एमदुयिर् अळल् मॆळुगिल् उक्के॥ ६॥	कृष्ण !आप अपना आभूषित हाथ शीघ्र हमें दीजिये। हाय ! हमारा नारीपन इसे सह नहीं सकता। इसबीच अन्य किशोरियां आपके चरण को अपने अधिकार में ले लेंगी। हाय ! आपकी गाय की चरवाही हमारे लिये कितना विध्वंसक है जो हमें शुष्क कर रही है।इन आंखों में आंसू रूकते ही नहीं और न तो मेरा हृदय रूकता है। **3918**
वेम् एमदुयिर् अळल् मॆळुगिल् उक्कु⋆ वॆळ् वळै मेगलै कळन्रु वीळ⋆ तूमलर् क्कण्णिणै मुत्तम् शोर⋆ तुणै मुलै पयन्दॆन तोळ्गाळ् वाड⋆ मामणि वण्णा ! उन् शॆङ्गमल वण्णा⋆ मॆल् मलर् अडि नोव नी पोय्⋆ आमगिळ्न्दुगन्दवै मेयक्किन्रुन्नोडु⋆ अशुरर्गळ् तलैप्पॆय्यिल् एवन्गॊल् आङ्गे॥ ७॥	हमारा हृदय आग में मोम की तरह पिघल रहा है। हमारी कमरधनी ढ़ीली पड़ गयी है। हमारी निर्मल आंखे मोती गिराती हैं, उरोज मुर्झा गये हैं, बाहें ढ़ीली होकर झुक गयी हैं।मणिवर्ण वाले प्रभु ! कमल से सुकोमल चरण को आप प्यारी गायों को चराने में आहत कर लेते हैं। क्या होगा अगर असुर गन वहां आक्रमण कर दें ? **3919**

अशुरर्गळ् तलैप्पॅय्यिल् एवन्गॊल् आङ्गॆन्ऱु⋆ आळुम् एन्नार् उयिर् आन् पिन् पोगेल्⋆ कशिगैयुम् वेङ्गैयुम् उळ्ळलन्दु⋆ कलवियुम् नलियुम् एङ्ग कळियेल्⋆ वशिशॆयुन् तामरै क्कण्णुम् वायुम्⋆ कैगळुम् पीदग उडैयुम् काट्टि⋆ ऑशिशॆय् नुण् इडै इळवायच्चियर्⋆ नी उगक्कुम् नल्लवरॊडुम् उळिदरायेे॥८॥	हमारा हृदय बैठ रहा है, विनती है, मत जाइये। क्या होगा अगर असुर गन वहां आप पर आक्रमण कर दें ? मिलन की चाह भींग कर हमारे भीतर फैल गयी है। कृष्ण ! चुपके से भाग मत जाइये। अपने मनमोहक कमल जैसी आंख, होंठ, हाथ, एवं पीत वस्त्र को प्रदर्शित करते हुए इन पतली कटि वाली अन्य गोपकिशोरियों के साथ मधुर मिलन का आनंद लीजिये। **3920**
उगक्कु नल्लवरॊडुम् उळिदन्दु⋆ उन्दन् तिरुवुळ्ळम् इडर् कॆडुम्दोऱुम्⋆ नाङ्गळ् वियक्क इन्बुऱुदुम् एम् पॆण्मै आट्टोम्⋆ एम् पॆरुमान्! पशु मेयक्क प्पोगेल्⋆ मिग प्पल अशुरर्गळ् वेण्डुरुवम् कॊण्डु⋆ निन्ऱुळिदरुवर् कञ्जन् एव⋆ अगप्पडिल् अवरॊडुम् निन्नॊडु आङ्गे⋆ अवत्तङ्गळ् विळैयुम् एन् शॊल् कॊळ् अन्दो! ॥९॥	जब जब आप गोपकिशोरियों के साथ मधुर मिलन का आनंद लेते हैं तथा आप अपना विषाद का अंत करते हैं हमारे भीतर का नारीपन अनियंत्रित हो जाता है। हम लोग ज्यादा ही आनंद लेते हैं। हाय ! विनती है, आप गायों के पीछे मत जाइये। कंस ने असुरों के समूह को छोड़ रखा है। हाय ! अगर आप पकड़े गये तो हाहाकार मच जायेगा। **3921**
अवत्तङ्गळ् विळैयुम् एन् शॊल् कॊळ् अन्दो!⋆ अशुरर्गळ् वन् कैयर् कञ्जन् एव⋆ तवत्तवर् मऱग निन्ऱुळिदरुवर्⋆ तनिमैयुम् पॆरिदुनक्किरामनैयुम् उवर्त्तलै⋆ उडन् तिरिगिलैयुम् एन्ऱॆन्ऱु ऊडर्⋆ एन्नुडै आवि वेमाल्⋆ तिवत्तिलुम् पशु निरै मेयप्पुवत्ति⋆ शॆङ्गनि वाय् एङ्गळ् आयर् तेवे! ॥१०॥	कंस के भेजे गये दुष्ट असुर घूमकर व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। ध्यान दीजिये। ओह ! आप अकेले जाना चाहते हैं। बलराम या उनके साथियों की चिंता आपको नहीं है। हाय ! मेरी संवेदनायें हमारी आत्मा को जला रही हैं। कृष्ण ! मूंगावत होंठ के गोपकिशोर ! गाय चराना आपको वैकुठ से भी ज्यादा प्रिय है। **3922**
‡ शॆङ्गनि वाय् एङ्गळ् आयर् तेवु⋆ अ त्तिरुवडि तिरुवडिमेल्⋆ पॊरुनल् शङ्गणि तुऱैवन् वण् तॆन् कुरुगूर्⋆ वण् शडगोपन् शॊल्लायिरत्तुळ्⋆ मङ्गैयर् आयच्चियर् आयन्द माल्लै⋆ अवनॊडुम् पिरिवदर्किरङ्गि⋆ तैयल् अङ्गवन् पशु निरै मेय् प्पॊळिप्पान् उरैत्तन⋆ इवैयुम् पत्तवट्रिन् शार्वे॥११॥	पोरूनल कुरूगुर के शडगोपन के हजार पद का यह दशक मूंगावत होंठ के श्रीपति गोपकिशोर के बारे में है जिनको गाय चराने जाने के लिये मना करती हुई एक युवती गोपी समझा रही है। जो इसे गा सेकेंगे वे उस गोपी की तरह लाभान्वित होंगे। **3923** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

94 शारवे तवनेऱि (3924 - 3934)

आळवार् ताम् पेऱ् क्करूदिय बक्ति पलित्तमैयै अरूळि च्चेय्दल्

‡ शार्वे तवनॆरिक्कु⋆ त्तामोदरन् ताळ्गळ्⋆ कार्मेग वण्णन्⋆ कमल नयनत्तन्⋆ नीर् वानम् मण्णॆरि कालाय्⋆ निन्ऱनेमियान्⋆ पेर् वानवर्गळ्⋆ पिदट्रुम् पॆरुमैयने॥१॥	दामोदर के चरण भक्ति के उपाय हैं। चक्रधारी श्याम वदन राजीवनयन प्रभु जल, मिट्टी, अग्नि, वायु एवं आकाश के रूप में खड़े हैं। आपकी गाथा महान स्वर्गिकों द्वारा गायी जाती है। **3924**
पॆरुमैयने वानत्तिमैयोर्क्कुम्⋆ काण्डर्– करुमैयने⋆ आगत्तणैयादार्क्कु⋆ ऎन्ऱुम् तिरु मॆय् उऱैगिन्ऱ⋆ शॆङ्गण् माल्⋆ नाळुम् इरुमै विनै कडिन्दु⋆ इङ्ॆन्नै आळ्गिन्ऱाने॥२॥	स्वर्गिकों में गौरवशाली प्रभु का दर्शन प्रेम के बिना संभव नहीं है। श्री देवी से सुशोभित वक्षस्थल वाले । राजीवनयन प्रभु परस्पर विरोधी युग्मों के बाहर हैं। **3925**
आळ्गिन्ऱान् आळियान्⋆ आराल् कुऱैवुडैयम्⋆ मीळ्गिन्ऱदिल्लै⋆ प्पिऱवि त्तुयर् कडिन्दोम्⋆ वाळ् कॆण्डै ऑण्गण्⋆ मड प्पिन्नै तन् केळ्वन्⋆ ताळ् कण्डु कॊण्डु⋆ ऎन् तलैमेल् पुनैन्देने॥३	जब चक्रधारी प्रभु हमारे शासक हैं तो कौन हमारी क्षति पहुंचायेगा ? पुनर्जन्म की यातना से ऊपर उठ कर अब हम दुबारे जन्म नहीं लेंगे। मत्स्यनयना नप्पिनाय के पति को हमने देखा है एवं आपको हम अपने सिर पर स्थापित कर चुके हैं। **3926**
तलैमेल् पुनैन्देन्⋆ शरणङ्गळ्⋆ आलिन् इलैमेल् तुयिन्ऱान्⋆ इमैयोर् वणङ्ग⋆ मलैमेल् तान् निन्ऱु⋆ ऎन् मनत्तुळ् इरुन्दानै⋆ निलै पेर्क्कल् आगामै⋆ निच्चित्तिरुन्देने॥४॥	बटपत्र पर सोने वाले प्रभु पर्वतों पर खड़े होकर देवों से पूजित हैं एवं हमारे हृदय में स्थित हैं। आपके चरण हमारे सिर पर हैं। मुझे विश्वास है कि आप मुझसे अलग नहीं किये जा सकते। **3927**
निच्चित्तिरुन्देन्⋆ ऎन् नॆञ्जम् कळियामै⋆ कै च्चक्करत्तण्णल्⋆ कळ्वम् पॆरिदुडैयन्⋆ मॆच्चप्पडान् पिऱर्क्कु⋆ मॆय्पोल्लुम् पॊय् वल्लन्⋆ नच्चप्पडुम् नमक्कु⋆ नाग त्तणैयाने॥५॥	मुझे विश्वास है कि आप मेरे हृदय को नहीं छोड़ सकते। चक्रधारी प्रभु के भीतर शरारत कूट कूट कर भरा है। जो आपको नहीं समझते उन्हें आप मिथ्या को सच के रूप में प्रदर्शित करते हैं। आप में प्रेम रखने वाले हमलोगों को आप शयनावस्था में दर्शन देते हैं। **3928**

नागत्तणैयानै⋆ नाळ्दोरुम् ञानत्ताल्⋆ आगत्तणैप्पारक्कु⋆ अरुळ्शेय्युम् अम्मानै⋆ मागत्तिळ मदियम्⋆ शेरुम् शडैयानै⋆ पागत्तु वैत्तान् तन्⋆ पादम् पणिन्देन॥६॥	शेषशायी प्रभु का ध्यान करने वाले आपके कृपापात्र बनते हैं। जटाधारी शशिभूषण शिव आपके एक अंश में अवस्थित हैं। हम अपने हृदय में प्रभु का ध्यान करते हैं। **3929**
पणि नॆञ्जे ! नाळुम्⋆ परम परम्परनै⋆ पिणि ऑन्रुम् शारा⋆ पिरवि कॆडुत्ताळुम्⋆ मणि निन्र शोदि⋆ मदुशूदन् एन्नम्मान्⋆ अणि निन्र शॆम्पॊन्⋆ अडल् आळियाने॥७॥	हे हृदय ! अतिश्रेयस्कर की पूजा कर। रोग दूर रहेंगे तथा पुनर्जन्म से मुक्त हो जाओगे। मणिवर्ण वाले प्रभु चक्र धारण करते हैं। आप हम पर शासन करने वाले मधुसूदन हैं। **3930**
आळियान् आळि⋆ अमरर्क्कुम् अप्पालान्⋆ ऊळियान् ऊळि पडैत्तान्⋆ निरै मेय्त्तान्⋆ पाळियन् तोळाल्⋆ वरै एडुत्तान् पादङ्गळ्⋆ वाळि एन् नॆञ्जे !⋆ मरवाद् वाळ्कण्डाय॥८॥	चक्रधारी प्रभु देवों के समूह से ऊपर हैं। आप कालातीत प्रभु सृष्टि कर्ता हैं तथा गाय चराने वाले हैं। अपने चौड़े कंधों पर आपने पर्वत उठाया। हे नेक हृदय ! आपके श्रीचरण की प्रशस्ति गाओ। **3931**
कण्डेन् कमल मलर् प्पादम्⋆ काण्डलुमे⋆ विण्डे ऑळिन्द⋆ विनैयायिन एल्लाम्⋆ तॊण्डे शॆय्देन्रुम्⋆ तॊळुदु वळियॊळुग⋆ पण्डे परमन् पणित्त⋆ पणिवगैये॥९॥	जैसा आपने पूर्व में शिक्षा दी थी हमने अनवरत आपकी सेवा की एवं पूजा की तथा आपके दिव्य चरणारविंद का दर्शन पाया। तत्क्षण हमारे कर्मों का नाश हो गया। **3932**
वगैयाल् मनम् ऑन्रि⋆ मादवनै⋆ नाळुम् पुगैयाल् विळक्काल्⋆ पुदु मलराल् नीराल्⋆ तिशैदोरमरर्गळ्⋆ शॆन्रिरैञ्ज निन्र⋆ तगैयान् शरणम्⋆ तमर्गट्कोर् पट्रे॥१०॥	हर दिशाओं में प्रशंसित माधव हीं देवों के नाथ हैं। आपके चरणकमल सर्वत्र आपके भक्तों से पूजित हैं। अपना मन आप पर टिका कर नित्य दीपक, अगरबत्ती, नूतन पुष्प, तथा जल से पूजा अर्पित करो। **3933**
‡ पट्रॆन्रु पट्रि⋆ प्परम परम्परनै⋆ मल् तिण्तोळ मालै⋆ वळुदि वळनाडन्⋆ शॊल् तॊडैयन्दादि⋆ ओर् आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम्⋆ कट्रार्क्कोर् पट्रागुम्⋆ कण्णन् कळल् इणैये॥११	वळुदि क्षेत्र के कुरूगुर शडगोपन के हजार पदों का यह दशक स्वर्गिकों के देव मल्ल योद्धा के शक्तिशाली कंधों वाले प्रभु की प्रशस्ति है। इसके गान से प्रभु के चरणों का आश्रय मिलता है। **3934** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

95 कण्णन् कऴलिणै (3935 - 3945)

बक्ति पण्णुम् वगैगळै त्तोगुत्तु क्कुरल्

‡कण्णन् कऴल् इणै⋆ नण्णुम् मनम् उडैयीर्⋆ एण्णम तिरुनाममम⋆ तिण्णम नारणमे॥१॥	जो कृष्ण के चरण की चाह रखते हैं वे आपके नाम का स्मरण करें। नारायण मंत्र हैं। **3935**
नारणन् एम्मान्⋆ पार् अणङ्गाळन्⋆ वारणम् तॊलैत्त⋆ कारणन् ताने॥२॥	भूदेवी के पति हमारे प्रभु नारायण मदमत्त हाथी के विनाशक हैं। आप स्वयं ही स्वयं के कारण हैं। **3936**
ताने उलगॆल्लाम्⋆ ताने पडैत्तिडन्दु⋆ ताने उण्डुमिऴन्दु⋆ ताने आळ्वाने॥३॥	आपने विश्व बनाया। आपने इसे उठाया। आप इसे निगल गये एवं पुनः बना दिया। आप ही संरक्षक हैं। **3937**
आळ्वान् आऴि नीर्⋆ क्कोळ्वाय् अरवणैयान्⋆ ताळ्वाय् मलरिट्टु⋆ नाळ्वाय् नाडीरे॥४॥	स्वामी सागर में शेष पर शयन करते हैं। आपके चरण पर फूल बिखेर कर प्रतिदिन पूजा करो। **3938**
नाडीर् नाळ्दोरुम्⋆ वाडा मलर् कॊण्डु⋆ पाडीर् अवन् नामम्⋆ वीडे पॆऱलामे॥५॥	नूतन पुष्प से प्रतिदिन पूजा करो एवं नाम गान करो। मुक्ति यहीं मिलेगी। **3939**
मेयान् वेङ्गडम्⋆ काया मलर् वण्णन्⋆ पेयार् मुलैयुण्ड⋆ वायान् मादवने॥६॥	काया फूल के रंग वाले प्रभु वेंकटम में रहते हैं। आप पूतना के स्तन चूसने वाले माधव हैं। **3940**
मादवन् एन्ऱॆन्ऱु⋆ ओद वल्लीरेल्⋆ तीदॊन्ऱुम् अडैया⋆ एदम् शारावे॥७॥	अगर माधव के नाम का गान करोगे तो कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और न तो पाप ही पास रहेगा। **3941**
शारा एदङ्गळ्⋆ नीरार् मुगिल् वण्णन्⋆ पेर् आर् ओदुवार्⋆ आरार् अमररे॥८॥	मेघ समान रंग वाले प्रभु के त्रुटि रहित नाम गान से देवगन की तरह रहोगे। **3942**
अमरर्क्करियानै⋆ तमर्गट्कॆळियानै⋆ अमर त्तॊऴुवार्गट्कु⋆ अमरा विनैगळे॥९॥	आप देवों की दृष्टि से ओझल रहकर कर्मो का नाश करते हुए भक्तों के पास रहते हैं। **3943**
विनैवल् इरुळ् एन्नुम्⋆ मुनैगळ् वॆरुविप्पोम्⋆ शुनै नल् मलरिट्टु⋆ निनैमिन् नॆडियाने॥१०॥	कमल का फूल चढ़ाकर ध्यान लगाओ कर्मों का समूह डर से भाग जायेगा। **3944**
‡नॆडियान् अरुळ् शूडुम्⋆ पडियान् शडगोपन्⋆ नॊडि आयिरत्ति प्पत्तु⋆ अडियार्क्करुळ् पेऱे॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दशक भक्तों को प्रभु का मुखड़ा दिखायेगा। **3945** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

96 अरूळ् पेरूवार् (3946 - 3956)

तमक्कु पेरू अळिक्क च्चमयम् पारत्तिरून्द पेररूळै प्पाराट्टि आळवार् नेञ्जुडन् कूरूदल्

तिरूवत्तारू ः यह स्थान केरल में तिरूअनंतपुरम से करीब **45** कि मी पूरब में तथा नागरकोइल से **30** कि मी पश्चिम में अवस्थित है। मूलावर भुजंगशयन मुद्रा में पश्चिमाभिमुख हैं एवं आदिकेशव पेरूमाल कहे जाते हैं। पद्मनाभ स्वामी मंदिर तिरूअनंतपुरम एवं आदिकेशव मंदिर तिरूवत्तारू में बहुत समानता है।दर्शन तीन द्वारों से किया जाता है। आदिकेशव को पद्मनाभ स्वामी का बड़ा भाई माना जाता है एवं दोनों एक दूसरे को शयना वस्था में देख रहे हैं। कहा जाता है कि **12000** शालग्राम से पद्मनाभ स्वामी के विग्रह को बनाया गया है जबकि आदिकेशव का विग्रह **16008** शालग्राम से बने हैं। आदिकेशव का संपूर्ण स्वरूप स्वर्ण एवं हीरे से जड़ित है।
तिरूवायमोळी मे पाशुर **3946** के पहले आळवार पेरूमाल को खोजते हैं परंतु **3946**के बाद क्रम बदल जाता है एवं पेरूमाल ही आळवार को खोजने लगते हैं।
(Refer Ramesh vol. 7, pp 161)

‡अरुळ् पॆरुवार् अडियार्⋆ तम् अडियनेर्कु⋆ आळियान् अरुळ् तरुवान् अमैगिन्रान्⋆ अदु नमदु विदिवगैये⋆ इरुळ् तरुमा ञालत्तुळ्⋆ इनि प्पिरवि यान् वेण्डेन्⋆ मरुळ् ऑळि नी मड नॆञ्जे !⋆ वाट्टाट्रान् अडि वणङ्ग॥१॥	चक्रधारी प्रभु तिरूवत्तारू में भक्तों के आदेश की प्रतीक्षा करते हुए स्थित हैं। इस काले संसार में मैं अब कोई जन्म नहीं चाहता। हे मन ! सब संशय हटाकर आपकी पूजा करो। **3946**
वाट्टाट्रान् अडि वणङ्गि⋆ मा ञाल प्पिरप्परुप्पान्⋆ केट्टाये मड नॆञ्जे !⋆ केशवन् ऎम् पॆरुमानै⋆ प्पाट्टाय पल पाडि⋆ प्पळविनैगळ् पट्रुत्तु⋆ नाट्टारोडियल्वॊळिन्दु⋆ नारणनै नण्णिनमे॥२॥	तिरूवत्तारू में केशव नाम का गान एवं पूजा करके हम कर्म के बंधन काटते हुए संसार के मोह को त्याग चुके हैं। हम नारायण के चरण को प्राप्त कर गये हैं जो पुनर्जन्म का अंत करते हैं। हे क्षीण हृदय! क्या तुम सुनते हो ? **3947**
नण्णिनम् नारयणनै⋆ नामङ्गळ् पल शॊल्लि⋆ मण्णुलगिल् वळम् मिक्क⋆ वाट्टाट्रान् वन्दिन्रु⋆ विण्णुलगम् तरुवानाय्⋆ विरैगिन्रान् विदिवगैये⋆ ऎण्णिन वाराग⋆ इक्करुमङ्गळ् ऎन् नॆञ्जे ! ॥३॥	आप आजही धरा पर श्रीसंपन्न तिरूवत्तारू में आये हैं एवं हमारे आदेश पर वैकुंठ प्रदान करेने के लिये शीघ्रता में हैं। हे मेरे हृदय! यह मात्र संयोग नहीं है। **3948**

एन् नॆञ्जत्तुळ् इरुन्दिङ्गिरुम् तमिऴ् नूल् इवै मॊऴिन्दु⋆ वन्नॆञ्ज त्तिरणियनै⋆ मारिडन्द वाट्टाटान⋆ मन्नञ्ज प्पारदत्तु⋆ प्पाण्डवरक्का प्पडै तॊट्टान्⋆ नल् नॆञ्जे ! नम् पॆरुमान्⋆ नमक्करुळ् तान् शॆय्वाने॥४॥	तिरूवत्तारू के प्रभु ने हिरण्य की चौड़ी छाती अपने नखों से विदार दी। आपने पांडवों के लिये घोर भारत की लड़ाई लड़ी। हमारे हृदय में रहते हुए आपने हमें महान तमिल गीत प्रदान किया। हे मेरे नेक हृदय!हमारे करूणानिधान प्रभु सच में श्रेयस्कर हैं। **3949**
वान् एऱ वऴि तन्द⋆ वाट्टाट्टान् पणिवगैये⋆ नान् एऱ पॆऱुगिन्ऱेन्⋆ नरगत्तै नगु नॆञ्जे⋆ तेनेऱु मलर् तुऴवम्⋆ तिगऴ् पादन्⋆ शॆऴुम् परवै तान् एऱि त्तिरिवान्⋆ ताऴ् इणै तन् तलैमेले॥५॥	तिरूवत्तारू के प्रभु ने स्वेच्छा से हमें मुक्ति का मार्ग दिया है। हम आपके चरण अपने सिर पर रखते हैं। आप मधु टपकते तुलसी धारण करते हैं तथा गरूड़ की सवारी करते हैं। हे मेरे हृदय ! अब नरक का उपहास कर सकते हो। **3950**
तलैमेल ताऴ् इणैगळ्⋆ तामरैक्कण् एन् अम्मान्⋆ निलैपेरान् एन् नॆञ्जत्तु⋆ एप्पॊऴुदुम् एम्पॆरुमान्⋆ मलै माडत्तरवणैमेल्⋆ वाट्टाट्टान् मद मिक्क⋆ कॊलै यानै मरुप्पॊशित्तान्⋆ कुरै कऴल्गळ् कुऱुगिनमे॥६॥	मेरे राजीवनयन प्रभु कभी हमारे हृदय का त्याग नहीं करेंगे। तिरूवत्तारू के पर्वत पर प्रभु शेषशायी हैं। आपने मदमत्त हाथी का उसके दांत से नाश किया। आपके नुपूर की ध्वनि वाले चरण हमारे सिर पर हैं। **3951**
कुरै कऴल्गळ् कुऱुगिनम्⋆ नम् गोविन्दन् कुडि कॊण्डान्⋆ तिरै कुऴुवु कडल् पुडै शूऴ्⋆ तॆन् नाट्टु त्तिलदम् अन्न⋆ वरै कुऴुवु मणि माड⋆ वाट्टाट्टान् मलर् अडिमेल्⋆ विरै कुऴुवु नऱुम् तुऴवम्⋆ मॆय्न्निन्ऱु कमऴुमे॥७॥	हमने गोविन्द प्रभु के चरण पा लिये जो रत्नों से आभूषित महलों वाले तिरूवत्तारू में स्थित हैं। यह सागर तट वाले दक्षिण क्षेत्र का तिलक है। हमारा वदन आपके चरण की तुलसी का सुगंध विखेर रहा है। **3952**
मॆय्न्निन्ऱु कमऴ् तुऴव⋆ विरैयेरु तिरुमुडियन्⋆ कैन्निन्ऱ चक्करत्तन्⋆ करुदुम् इडम् पॊरुदु पुनल्⋆ मैन्निन्ऱ वरै पोलुम्⋆ तिरुवुरुव वाट्टाट्र्कु⋆ एन्नन्ऱि शॆय्देना⋆ एन् नॆञ्जिल् तिगऴ्वदुवे॥८॥	तेजोमय मुकुट एवं सुगंधित तुलसी माला वाले प्रभु चक्र से जहां भी चाहते हैं विजय प्राप्त करते हैं। पर्वत के रंग वाले प्रभु तिरूवत्तारू में स्थित हैं।मैं यह नहीं समझता कि आपका कृपापात्र बनन के लिये हमने क्या किया है। **3953**
तिगऴ्गिन्ऱ तिरुमार्बिल्⋆ तिरुमङ्गै तन्नोडुम्⋆ तिगऴ्गिन्ऱ तिरुमालार्⋆ शेर्विडम् तण् वाट्टारु⋆ पुगऴ्गिन्ऱ पुळ्ळूर्ति⋆ पोर् अरक्कर् कुलम् कॆडुत्तान्⋆ इगऴ्विन्ऱि एन् नॆञ्जत्तॆप्पॊऴुदुम् पिरियाने॥९॥	रत्न आभूषित प्रभु शीतल तिरूवत्तारू में शयन करते हैं। अपने दिव्य वक्षस्थल पर आप कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करते हैं। महान गरूड़ पर सवार हो आपने अनेकों असुरों का अंत किया। आप स्वेच्छा से हमारे हृदय में सर्वदा विराजमान हैं। **3954**

पिरियादाट् शेय्येन्रु★ पिरप्परुत्ताळ् अर क्कोण्डान्★ अरियागि इरणियनै★ आगम् कीण्डान् अन्रु★ पेरियारक्काट् पट्टक्काल्★ पेराद पयन् पेरुमारु★ वरि वाळ् वाय् अरवणैमेल्★ वाट्टाट्रान् काट्टिनने॥१०॥	तिरूवत्तारू में प्रभु फनधारी शेष पर शयन करते हैं। नरसिंह रूप में पधारकर आपने हिरण्य की चौड़ी छाती चीर दी। हमारे पुनर्जन्म के बंधन को काटकर हमे सेवक बनाते हुए आपने अपनी करूणा दी जो पूर्व में हमें कभी नहीं मिला था। **3955**
‡काट्टि त्तन् कनै कळल्गाळ्★ कडु नरगम् पुगल् ऑळित्त★ वाट्टाट्रम् पेरुमानै★ वळङ्गुरुगूर् च्चडगोपन्★ पाट्टाय तमिळ् मालै★ आयिरत्तुळ् इप्पत्तुम् केट्टु★ आरार् वानवर्गळ्★ शेविक्किनिय शेञ्जोल्ले॥११॥	कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दसक तिरूवत्तारू प्रभु की प्रशस्ति है जो अपना चरण का दर्शन देकर नरक की यातना का अंत करते हैं। यह मधुर कविता देवों की चाह को सदा बनाये रखता है। **3956** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः **97 शेञ्जोर्कविगाळ् (3957 - 3967)** **आळ्वार तमदु मेनियिन्मेल् एम्बेरूमान वैत्तुल्ल वाञ्जैयै प्याराट्टि प्पेशुदल्**	
शैञ्जॊल् कविगाळ्! उयिर् कात्ताट्शैय्म्मिन्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ वञ्ज क्कळ्वन् मा मायन्⋆ माय क्कवियाय् वन्दु⋆ एन् नॆञ्जुम् उयिरुम् उळ् कलन्दु⋆ निन्ऱार् अरिया वण्णम्⋆ एन् नॆञ्जुम् उयिरुम् अवैयुण्डु⋆ ताने आगि निऱैन्दाने॥१॥	मधुर भाषी कविगन !जब आप गाते है तो सावधान रहें। तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु धूर्त युक्ति वाले हैं। आप हमारे हृदय एवं आत्मा में मुग्धकारी कवि की तरह प्रवेश किये। फिर सबका खा गये। फिर स्वयं वही हो गये एवं बिना मेरी जानकारी के मुझमें पूरी तरह भर गये। **3957**
ताने आगि निऱैन्दु⋆ एल्ला उलगुम् उयिरुम् तानेयाय्⋆ ताने यान् एन्बान् आगि⋆ तन्नै ताने तुदित्तु⋆ एनक्कुत् तेने पाले कन्नले अमुदे⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ कोने आगि निन्ऱॊळिन्दान्⋆ एन्नै मुट्टुम् उयिरुण्डे॥२॥	आप 'हम' हो करके समस्त विश्व एवं सब आत्मा हो गये एवं सबको भर दिया। तब स्वयं 'हम' होकर आपने अपनी प्रशंसा की। मधु, दूध, एवं गन्ने के रस की तरह मधुर तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारी आत्मा को खा जाने के बाद आप ये सब हो गये। **3958**
एन्नै मुट्टुम् उयिरुण्डु⋆ एन् माय आक्कै इदनुळ् पुक्कु⋆ एन्नै मुट्टुम् तानेयाय्⋆ निन्ऱ माय अम्मान् शेर्⋆ तॆन्नन् तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ त्तिशै कै कूप्पि च्चेर्न्द यान्⋆ इन्नुम् पोवेनो कॊलो!⋆ एन्गॊल् अम्मान् तिरुवरुळे॥३॥	हमें खाकर प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में स्थित हैं। आप हमारी विस्मयकारी वाणी में प्रवेश कर गये, और तब हमें सब अपना बना लिया। कितनी बड़ी कृपा है। पूजा में करबद्ध हैं हम। ज्यादा हम क्या बतायें ? **3959**
एन्गॊल् अम्मान् तिरुवरुळ्गाळ्⋆ उलगुम् उयिरुम् तानेयाय्⋆ नङ्गॆन्नुडलम् कैविडान्⋆ ञालत्तूडे नडन्दुळक्कि⋆ तॆन् कॊळ् तिशैक्कु त्तिलदमाय् निन्ऱ⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ नङ्गळ् कुन्ऱम् कैविडान्⋆ नण्णा अशुरर् नलियवे॥४॥	समस्त विश्व एवं इसकी सारी आत्मा होकर आप हमारे भीतर पूरी तरह से, पृथक नहीं करने लायक, मिल गये। आपने धरा का सर्वेक्षण कर तिरूमालिरूञ्जोलै को चुना। आप हमारा त्याग कभी नहीं करेंगे। हमारे शत्रुओं का अंत हो जायेगा। **3960**
नण्णा अशुरर् नलिवॆय्द⋆ नल्ल अमरर् पॊलिवॆय्द⋆ एण्णादनगळ् एण्णुम्⋆ नल् मुनिवर् इन्बम् तलैशिऱप्प⋆ पण्णार् पाडल् इन्गविगळ्⋆ यानाय् त्तन्नै त्तान् पाडि⋆ तॆन्ना एन्नुम् एन्नम्मान्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलैयाने॥५॥	युद्धरत असुरों का अंत हो गया। स्वर्गिकगन प्रगति पथ पर हैं। अज्ञात का ध्यान करने वाले ऋषिगन भी प्रसन्न हैं। हमारे माध्यम से पान्न आधारित गीत गाने वाले प्रभु तिरूमालिरूञ्जोलै में पावन तेनेका गाते हुए खड़े हैं। **3961**

तिरुमालिरुञ्जोलै याने आगि॰ च्चॆंऴु मूवुलगुम्॰ तन् ऑरुमा वयिट्रिन् उळ्ळे वैत्तु॰ ऊऴि ऊऴि तलैयळिक्कुम्॰ तिरुमाल् एन्नै आळु माल्॰ शिवनुम् पिरमनुम् काणादु॰ अरुमाल् एय्दि अडि परव॰ अरुळै ईन्द अम्माने॥६॥	तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु समस्त विश्व को खा जाते हैं। हमारे प्रिय प्रभु सबों को युगों तक संरक्षण देते हैं। शिव एवं ब्रह्मा को न दिखने वाले श्रीपति ने हमें अपना गौरवशाली चरण स्नेह से पूजा के लिये दिया। **3962**
अरुळै ई एनम्माने ! एन्नुम्॰ मुक्कण् अम्मानुम्॰ तॆरुळ कॊळ पिरमन् अम्मानुम्॰ देवर् कोनुम् देवरुम्॰ इरुळ्गाळ कडियुम् मुनिवरुम्॰ एत्तुम् अम्मान् तिरुमलै॰ मरुळ्गाळ कडियुम् मणिमलै॰ तिरुमालिरुञ्जोलै मलैये॥७॥	प्रेम गीत गाने वाले मणि पर्वत समान तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु इन्द्र, शिव, ब्रह्मा, एवं अन्य देवों से पूजित हैं। महान ज्ञान वाले ऋषि गन पर्वत की प्रशस्ति गाते हैं। **3963**
†तिरुमालिरुञ्जोलै मलैये॰ तिरुप्पार्कडले एन् तलैये॰ तिरुमाल् वैगुन्दमे॰ तण् तिरुवेङ्गडमे एनदुडले॰ अरुमा मायत्तॆनदुयिरे॰ मनमे वाक्के करुममे॰ ऑरुमा नॊडियुम् पिरियान्॰ एन् ऊऴि मुदल्वन् ऑरुवने॥८॥	तिरूमालिरूञ्जोलै पर्वत ! क्षीर सागर! मेरे शिखर! तिरूमल ! वैकुंठ! शीतल वेंकटम पर्वत ! मेरे शरीर ! महान विस्मय ! मेरे जीवन, विचार, एवं कृत्य ! आदिकारण प्रभु! आप हमें कभी नहीं छोड़ते। **3964**
ऊऴि मुदल्वन् ऑरुवने एन्नुम्॰ ऑरुवन् उलगॆल्लाम्॰ ऊऴिदोरुम् तन्नुळ्ळे पडैत्तु कात्तु कॆडुत्तुऴलुम्॰ आऴि वण्णन् एन् अम्मान्॰ अन्दण् तिरुमालिरुञ्जोलै॰ वाऴि मनमे कैविडेल्॰ उडलुम् उयिरुम् मङ्गॊट्टे॥९॥	सागर सा सलोने तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारे नाथ हैं। युग युगान्तर से आप सार्वभौम नाथ हैं जो स्वयं सृष्टिकर्ता, पालन कर्ता तथा संहारकर्ता हैं। हे हृदय !अच्छे काम के लिये श्रेय है तुम्हारा। आपके पास ही रहो। इस शरीर एवं जीवन का अंत होने दो। **3965**
मङ्गॊट्टुन् मा मायै॰ तिरुमालिरुञ्जोलै मेय॰ नङ्गळ कोने ! याने नी आगि एन्नै अळित्ताने॰ पॊङ्गैम् पुलनुम् पॊरियैन्दुम्॰ करुमेन्दिरियुम् ऐम्बूदम्॰ इङ्गिव्वुयिर् एय् पिरगिरुदि॰ मानाङ्गार मनङ्गळे॥१०॥	तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु, हमारे संरक्षक, हमारी आत्मा ! पांच इन्द्रियों के क्षेत्र, पांच इन्द्रियों के अवयव, पांच संचालक अंग, पांच तत्व, एवं आत्मा के चार आवरण सब आपकी नैसर्गिक लीला के अंग हैं। विनती है, इनका अंत होनें दें। **3966**
‡मानाङ्गार मनम् कॆड॰ एवर् वन्नैयर् मङ्ग॰ तानाङ्गार मायप्पुक्कु॰ ताने ताने आनानैत्॰ तेनाङ्गार पॊऴिल् कुरुगूर्॰ शडगोपन् शॊल्लायिरत्तुळ॰ मानाङ्गारत्तिवै पत्तुम्॰ तिरुमालिरुञ्जोलै मलैक्के॥११॥	मधु टपकते कुरूगुर के बागों के शडगोपन के हजार पद का यह सुन्दर दसक महत, अहंकार, मनस, एवं पांच इन्द्रियों के नाश का वर्णन करते हुए तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु की प्रशस्ति गाता है जो हमारे भीतर प्रवेश कर स्वयं हम हो गये। **3967**

श्रीमते रामानुजाय नमः

98 तिरूमालिरूञ्जोलैमलै (3968 - 3978)

एम्बेरूमानदु अरूळ् तिऱत्तै प्पेशुदल्

‡ तिरुमालिरुञ्जोलै मलै⋆ एन्ऱेन् एन्न⋆ तिरुमाल् वन्दु⋆ एन् नॆञ्जु निऱैय प्पुगुन्दान्⋆ कुरु मा मणियुन्दु पुनल्⋆ पॊन्नि त्तॆन्बाल्⋆ तिरुमाल् शॆन्ऱु शेर्विडम्⋆ तॆन् तिरुप्पेरे॥१॥	जैसे ही हमने तिरूमालिरूञ्जोलै बोला प्रभु हमारे हृदय में प्रवेश कर इसे भर दिया। कावेरी के दक्षिणी तट पर जहां बहुमूल्य रत्न प्रवाह से धुलते हैं श्री के साथ श्रीपति तेन तिरूप्पेर में स्थित हैं। **3968**
पेरे उऱैगिन्ऱ पिरान्⋆ इन्ऱु वन्दु⋆ पेरेन् एन्ऱु⋆ एन् नॆञ्जु निऱैय प्पुगुन्दान्⋆ कार् एऴ् कडल् एऴ्⋆ मलै एऴ् उलगुण्डुम्⋆ आरा वयिट्ऱानै⋆ अडङ्ग प्पिडित्तेने॥२॥	तेन तिरूप्पेर में स्थित प्रभु हमारे पास आज आये और हमारे हृदय में प्रवेश कर इसे भर दिया, आप इसे कभी नहीं छोड़ेगे। सातो लोक, बादल, पर्वत, एवं सागर को निगलने वाले प्रभु हमारे भीतर दृढ़ता से स्थिर हैं। **3969**
पिडित्तेन् पिऱवि कॆडुत्तेन्⋆ पिणि शारेन्⋆ मडित्तेन् मनै वाऴ्क्कैयुळ्⋆ निर्पदोर् मायैयै⋆ कॊडि क्कोपुर माडङ्गळ् शूऴ्⋆ तिरुप्पेरान्⋆ अडि च्चेर्वदॆनक्कु⋆ एळिदायिन वाऱे ! ॥३॥	आपको धारण करके हमने पुनर्जन्म का नाश कर दिया, रोग पर विजयी हो गये, एवं अपने को सांसारिक जीवन के लोभ से दूर कर लिया। तेन तिरूप्पेर ध्वज वाले ऊंचे महलों से घिरा है। देखो, आपके चरण की प्राप्ति हमारे लिये एक सरल कार्य है। **3970**
एळिदायिनवाऱॆन्ऱु⋆ एन् कण्गळ् कळिप्प⋆ क्कळिदागिय शिन्दैयनाय्⋆ क्कळिक्किन्ऱेन्⋆ किळि ताविय शोलैगळ् शूऴ्⋆ तिरुप्पेरान्⋆ तॆळिदागिय⋆ शेण् विशुम्पु तरुवाने॥४॥	आपको देखकर हमारी आंखें कितनी सरलता से प्रसन्न हो जाती है। हृदय को भारविमुक्त होने से हम भी प्रसन्न होते हैं। तेन तिरूप्पेर मृदु भाषी तोता वाले बागों से घिरा है। यहां के प्रभु हमें निश्चित वैकुंठ देंगे। **3971**
वाने तरुवान्⋆ एनक्का एन्नोडॊट्टि⋆ ऊनेय् कुरम्बै⋆ इदनुळ् पुगुन्दु⋆ इन्ऱु ताने तडुमाट्ऱ⋆ विनैगळ् तविर्त्तान्⋆ तेन् एय् पॊऴिल्⋆ तॆन् तिरुप्पेर् नगराने॥५॥	अमृतमय बागों से घिरा तेन तिरूप्पेर के मुक्ति प्रदान करने वाले प्रभु आज हमारे भीतर प्रवेश कर गये हैं। इस मांस के पिंजड़ा में प्रवेश कर आप सारे व्यवधानों को दूर कर रहे हैं। **3972**
तिरुप्पेर् नगरान्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलै⋆ प्पॊरुप्पे उऱैगिन्ऱ पिरान्⋆ इन्ऱु वन्दु⋆ इरुप्पेन् एन्ऱु⋆ एन् नॆञ्जु निऱैय प्पुगुन्दान्⋆ विरुप्पे पॆट्ऱु⋆ अमुदम् उण्डु कळित्तेने॥६॥	तेन तिरूप्पेर एवं तिरूमालिरूञ्जोलै के प्रभु हमारे हृदय को भरकर सर्वदा के लिये इसमें स्थित हो गये हैं। मुक्ति के शीतल अमृत का स्वाद चखकर हम परम संतुष्ट हैं। **3973**

उण्ड् कळित्तर्कु⋆ उम्बर् एन् कुरै⋆ मेलै तॊण्ड् कळित्तु⋆ अन्दि तॊळुम् शॊल्लु प्पॆट्रेन्⋆ वण्ड् कळिक्कुम् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुप्पेरान्⋆ कण्ड् कळिप्प⋆ क्कण्णुळ् निन्ऱगलाने॥ ७॥	उमड़ते स्नेह के द्वारा हमारे हृदय ने चरम शब्द को प्राप्त कर लिया है। मधुमक्खी मंड़राते बाग वाले तेन तिरूप्पेर के प्रभु सदा प्रसन्नता देने के लिये हमारे आंखों में बस गये हैं। इस स्वाद को चखने के बाद हमें किस चीज की कमी है ? **3974**
कण्णुळ् निन्ऱगलान्⋆ करुत्तिन्गण् पॆरियन्⋆ एण्णिल् नुण् पॊरुळ्⋆ एळ् इशैयिन् शुवै ताने⋆ वण्ण नल् मणि माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुप्पेरान्⋆ तिण्णम् एन् मनत्तु⋆ प्पुगुन्दान् शॆरिन्दिन्ऱे॥ ८॥	बुद्धि से परे प्रभु हमारी आंखों में बसे हैं। आप सातो स्वर के सूक्ष्म सार हैं। तेन तिरूप्पेर के प्रभु रत्न जड़ित महलों से घिरे हैं। आज हमारे हृदय को आपने पूरी तरह से भर दिया है। **3975**
इन्ऱॆन्नै प्पॊरुळाक्कि⋆ तन्नै एन्नुळ् वैत्तान्⋆ अन्ऱॆन्नै प्पुऱम्बोग⋆ प्पुणरत्तदॆन् शॆय्वान्⋆ कुन्ऱॆन्न त्तिगळ् माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुप्पेरान्⋆ ऒन्ऱॆनक्करुळ् शॆय्य⋆ उणरत्तल् उट्रेने॥ ९॥	पर्वत समान महलों से घिरे तेन तिरूप्पेर के प्रभु ने हमारे हृदय में स्थान लेकर हमे आज एक व्यक्ति बना दिया है। इतने लंबे घूमने के लिये आपने हमें क्यों छोड़ दिया था ? विस्मित हूं। विनती है, उतर दीजिये। **3976**
‡ उट्रेन् उगन्दु पणि शॆय्दु⋆ उन् पादम् पॆट्रेन्⋆ ईदे इन्नम्⋆ वेण्डुवदॆन्दाय⋆ कट्रार् मरैवाणर्गळ् वाळ्⋆ तिरुप्पेरार्कु⋆ अट्रार् अडियार् तमक्कु⋆ अल्लल् निल्लावे॥ १०॥	हमारे प्रभु ! सुखद सेवा करके हमने आपका चरण पा लिया है। यही मैं चाहता था।अनेको वैदिक ऋषियों वाले तेन तिरूप्पेर के प्रभु के भक्तों को कभी यातना नही सतायेगी। **3977**
‡ निल्ला अल्लल्⋆ नीळ् वयल् शूळ् तिरुप्पेरमेल्⋆ नल्लार् पलर् वाळ्⋆ कुरुगूर् च्चडगोपन्⋆ शॊल्लार् तमिळ्⋆ आयिरत्तुळ् इवैपत्तुम् वल्लार्⋆ तॊण्डर् आळ्वदु⋆ शूळ् पॊन् विशुम्बे॥ ११॥	श्रेयवान लोगों वाले कुरूगुर के शडगोपन के हजार गीतों का यह दशक बड़े खेतों से घिरे तेन तिरूप्पेर के प्रभु की प्रशस्ति है।यह भक्तों को दिव्य वैकुंठ प्रदान करने वाला है। **3978** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

99 शुळिवशुम्बु (3979 - 3989)

तिरूनाडु शेल्वारूक्कु नडैबेरूम् उबशारङ्गलै तामे अनुबवित्तु प्पेशुदल्

अर्चिरादि मार्ग से मुक्त भक्त की यात्रा का आंखोदेखी हाल

‡शूळ् विशुम्बणि मुगिल्★ तूरियम् मुळक्किन★ आळ् कडल् अलै तिरै★ क्कै एडुत्ताडिन★ एळ् पॊंळिलुम्★ वळम् एन्दिय एन् अप्पन्★ वाळ् पुगळ् नारणन्★ तमरै क्कण्डुगन्दे॥१॥	आकाश मे बादल शुभ संकेत देते क्रीड़ारत थे। सागर की लहरें ताली बजाकर नाच रही थीं। नारायण के चिरप्रशंसित भक्त को घर आते देख सात महादेश उपहार से प्रसन्न था। **3979**
नारणन् तमरै क्कण्डुगन्दु★ नन्नीर् मुगिल्★ पूरण पॊंर्कुडम्★ पूरित्तदुयर् विण्णिल्★ नीर् अणि कडल्गळ्★ निन्रार्त्तन★ नॆडुवरै– त्तोरणम् निरैत्तु★ एङ्गुम् तॊंळुदनर् उलगे॥२॥	नारायण के भक्त को देखकर मेघ प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ण पात्र भर रहे थे। खड़ा होकर सागर ने प्रसन्नता से स्वागत किया। पर्वत ने ध्वज बनाये एवं सारा विश्व पूजा में झुक गया। **3980**
तॊंळुदनर् उलगर्गळ्★ तूबनल् मलर् मळै पॊंळिवनर्★ पूमि अन्रळन्दवन् तमर् मुन्ने★ एळुमिन् एन्रिरुमरुङ्गिशैत्तनर्★ मुनिवर्गळ्★ वळियिदु वैगुन्दर्कॆन्रु★ वन्दॆदिरे॥३॥	धरा मापने वाले प्रभु के भक्त को देखकर उनलोगों ने पुष्पवर्षा की, अगरबत्ती जलायी, एवं पूजा अर्पित की। चारण दोनो ओर खड़े होकर जयजयकार करते हुए बोल रहे थे 'वैकुंठ का यह मार्ग है'। **3981**
एदिर् एदिर् इमैयवर्★ इरुप्पिडम् वगुत्तनर्★ कदिर् अवर् अवर् अवर्★ कैन्निरै काट्टिनर्★ अदिर् कुरल् मुरशङ्गळ्★ अलै कडल् मुळक्कॊंत्त★ मदु विरि तुळाय् मुडि★ मादवन् तमर्क्के॥४॥	मार्ग पर स्वर्गिकों ने विश्राम स्थल बना रखे थे। चांद एवं सूर्य मार्ग को प्रकाशित कर रहे थे। अमृतमय तुलसी धारण करने वाले माधव के भक्त के सम्मान में बजते नगाड़े सागर की तरह गरज रहे थे। **3982**
मादवन् तमर् एन्रु★ वाशलिल् वानवर्★ पोदुमिन् एमदिडम्★ पुगुदुग एन्रलुम्★ कीदङ्गळ् पाडिनर्★ किन्नरर् कॆरुडर्गळ्★ वेदनल् वायवर्★ वेळ्वियुळ् मडुत्ते॥५॥	देवगन देखने के लिये बाहर आकर अपना स्थान प्रभु के भक्त को दे रहे थे। किन्नर एवं गुरूदास गीत गा रहे थे जबकि वैदिक ऋषिगन अग्नि होम कर रहे थे। **3983**

वेळ्ळियुळ मडुत्तलुम्* विरै कमळ् नरुम् पुगै* काळङ्गळ् वलम्बुरि* कलन्देङ्गुम् इशैत्तनर्* आळिमन्नाळ् वानगम्* आळियान् तमर् एन्रु* वाळॊण् कण् मडन्दैयर्* वाळ्त्तिनर् मगिळ्न्दे॥६॥	अग्नि होम की सुगंधि व्याप्त हो गयी थी। वाद्य यंत्र की ध्वनि एवं शंख नाद आकाश में गूंज रहे थे। मत्स्य नयना नारियों ने हर्षनाद करते हुए कहा 'हे भक्त ! आकाश पर शासन करो'। **3984**
मडन्दैयर् वाळ्त्तलुम्* मरुदरुम् वशुक्कळुम्* तॊडरन्देङ्गुम्* तोत्तिरम् शॊल्लिनर्* तॊडुगडल् किडन्द एम् केशवन्* किळर् ऑळि मणिमुडि* कुडन्दै एम् कोवलन्* कुडियडि यार्क्के॥७॥	नारियां प्रभु के बंधुआ सेवक को देखकर हर्षनाद कर रही थीं। सागर में शयन करने वाले दिव्य मुकुट धारी गोपाल तथा कुडन्दै के प्रभु के भक्त की घर वापसी यात्रा पर आगवानी में मरूत एवं वसु पूजा अर्पित कर रहे थे। **3985**
कुडियडियार् इवर्* कोविन्दन् तनक्केन्रु* मुडियुडै वानवर्* मुरै मुरै एदिर् कॊळ्ळ* कॊडियणि नॆडु मदिळ्* कोबुरम् कुरुगिनर्* वडि वुडै मादवन्* वैगुन्दम् पुगवे॥८॥	देवगन समूह में पंक्तिबद्ध हो कह रहे थे 'ये गोविन्द के बंधुआ सेवक हैं'। भक्त की झांकी पाने के लिये तब गोपुरम के ऊंची दीवार पर चढ़ गये। माधव के स्वरूप में वह वैकुंठ में प्रवेश किया। **3986**
वैगुन्दम् पुगुदलुम्* वाशलिल् वानवर्* वैगुन्दन् तमर् एमर्* एमदिडम् पुगुदेन्रु* वैगुन्दत्तमररुम्* मुनिवरुम् वियन्दनर्* वैगुन्दम् पुगुवदु* मण्णवर् विदिये॥९॥	भक्त के प्रवेश द्वार पर आते ही चारणजन आनंदमग्न हो गये। देवगन झुककर अपना स्थान समर्पित कर रहे थे क्योंकि वैकुंठ में जाना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। **3987**
विदिवगै पुगुन्दनर् एन्रु* नल् वेदियर्* पदियिनिल् पाङ्गिनिल्* पादङ्गळ् कळुविनर्* निदियुम् नर्शुण्णमुम्* निरै कुड विळक्कमुम्* मदि मुग मडन्दैयर्* एन्दिनर् वन्दे॥१०॥	एकतरफ भक्त के चरण धोने में वैदिक ऋषिगण अपना सौभाग्य मान रहे थे तो दूसरी ओर चंद्रमुखी नारियां पुमा, कुंभ, दीपक, तथा केशर युक्त जल से स्वागत में तल्लीन थीं। **3988**
वन्दवर् एदिर् कॊळ्ळ* मा मणि मण्डबत्तु* अन्दमिल् पेरिन्बत्तु* अडियरोडिरुन्दमै* कॊन्दलर् पॊळिल्* कुरुगूर् च्चडगोबन्* शॊल् शन्दङ्गळ् आयिरत्तु* इवै वल्लार् मुनिवरे॥११॥	रत्न जड़ित मंडप में भक्त प्रभु के समक्ष खड़ा होकर चिरआनन्द में मग्न था। कुरूगुर शडगोपन के हजार पद का यह दसक जो याद कर लेंगे वे चारण बन जायेंगे। **3989** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**

श्रीमते रामानुजाय नमः

100 मुनिये (3990 - 4000)

आळ्वार परम पत्तियाल् कनिन्दु तिरूमाले त्ताम् अडैन्दमैये अरूळि च्चेय्दल्

मुनिये ! नान्मुगने ! * मुक्कणप्पा * एन् पॉल्ला क्कनिवाय् * त्तामरै क्कण् करुमाणिक्कमे एन् कळ्वा ! * तनियेन् आरुयिरे ! * एन् तलै मिशैयाय् वन्दिट्टु * इनि नान् पोगलॉट्टेन् * ऑन्रुम् मायम् शॅय्येल् एन्नैये ॥१॥	चारण, ब्रह्मा, शिव, राजीवनयन प्रवाल होंठ के धूर्त प्रभु, श्याम प्राकृतिक मणि, इस तिरस्कृत जीव की आत्मा ! अंत में आप हमारे पास आये। अब हम आपको नहीं जाने देंगे। कृपा करके पुनः अपनी युक्ति मत खेलिये। **3990**
मायम् शॅय्येल् एन्नै * उन् तिरुमार्वत्तु मालै नङ्गै * वाशम् शॅय् पूङ्गुळलाळ् * तिरुवाणै निन्नाणै कण्डाय् * नेशम् शॅय्दुन्नोडॅन्नै * उयिर् वेरिन्रि ऑन्रागवे * कूशम् शॅय्यादु कॉण्डाय् * एन्नैक्कूविक्कॉळ्ळाय् वन्दन्दो ! ॥२॥	कृपा करके पुनः अपनी युक्ति मत खेलिये।आपके वक्षस्थल पर विराजने वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी की शपथ लेकर कहता हूं।ध्यान से सुनें। खुलेयाम हमसे प्रेम करके आप हमारी आत्मा में मिश्रित हो गये। हाय ! अब आप अवश्य हमें अपने पास बुलायें। **3991**
कूवि क्कॉळ्ळाय् वन्दन्दो ! * एन् पॉल्ला क्करु माणिक्कमे ! * आविक्कोर् पट्रुक्कॉम्बु * निन्नलाल् अरिगिन्रिलेन् यान् * मेवि त्तॉळुम् पिरमन् शिवन् * इन्दिरन् आदिक्कॅल्लाम् * नावि क्कमल मुदर्किळङ्ङ ! * उम्बर् अन्ददुवे ॥३॥	आदि कारण प्रभु ! नाभि कमल से उत्पन्न ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, एवं अन्य देव जो आपकी पूजा करते हैं, आपके सबके भंडारगृह हैं। आपको छोड़कर हमारे पास सहारा के लिये कोई डंडा भी नहीं है। हमारे श्याम प्राकृतिक मणि ! आप अवश्य आकर हमें बुलाइये। **3992**
उम्बरन् तण् पाळेयो ! * अदनुळ् मिशै नीयेयो * अम्बर नल्ल शोदि ! * अदनळ पिरमन अरन नी * उम्बरुम् यादवरुम् पडैत्त * मुनिवन् अवन् नी * एम्बरम् शादिक्कलुट्रु * एन्नै प्पोर विट्टिट्टाये ॥४॥	व्योम के अंधकार एवं सभी जो इसमें है। आप गगन, प्रकाश, देवगन एवं अन्य सब कुछ हैं। आप देवों एवं मनुष्यों के आदि कारण हैं। हाय ! आपने हमें अकेले बोझ ढ़ोने के लिये छोड़ दिया है। **3993**
पोर विट्टिट्टॆन्नै * नी पुरम् पोक्कलुट्राल् * पिन्नै यान् आरै क्कॉण्डॆत्तै अन्दो ! * एनदॆन्बदॆन् यान् एन्बदॆन् * तीर इरुम्बुण्ड नीर् अदु पोल * एन्नारुयिरै आर प्परुग * एनक्कारा अमुदानाये ॥५॥	अगर आप हमें त्याग कर भ्रमने के लिये छोड़ देंगे तो हम किसके साथ क्या करेंगे ? हाय ! क्या बचा है हमारे पास ? हम हैं कौन ? मेरे प्रभु ! जैसे तप्त लोहा जल में डालने पर जल सोखता है उसी तरह आपने हमारी आत्मा को पिया है। फिर भी आप हमारे अमृत हैं। **3994**

एनक्कारा अमुदाय्⋆ एनदावियै इन्नुयिरै⋆ मनक्कारामै मन्नि उण्डिट्टाय्⋆ इनि उण्डॊळियाय्⋆ पुन क्काया निरत्त⋆ पुण्डरीग क्कण् शेङ्गनिवाय्⋆ उनक्केर्कुम् कोल मलर् प्पावैक्कु⋆ अन्बा ! एन्नन्बेयो ! ॥६॥	मेरे प्रिय प्रभु, मेरे जीवन, मेरी आत्मा ! आपने हमें अतृप्त की तरह पिया है। अब हमें आप पीते रहें। कया के रंग वाले, पवाल होंठ वाले, राजीव नयन प्रभु ! कमलनिवासिनी लक्ष्मी की उपयुक्त जोड़ी, हमारे स्नेह ! **3995**
‡कोल मलर् प्पावैक्कन्बागिय⋆ एन् अन्बेयो⋆ नील वरै इरण्डु पिरै कव्वि⋆ निमिरन्ददॊप्प⋆ कोल वरागम् ऑन्राय्⋆ निलम् कोट्टिडै क्कॊण्ड एन्दाय्⋆ नील क्कडल् कडैन्दाय् !⋆ उन्नै प्पॆट्रिनि प्पोक्कुवनो॥७॥	हमारे स्नेह ! आप कमलनिवासिनी लक्ष्मी के स्नेह बन गये। काले पहाड़ पर अर्द्धचंद्र की तरह वराह स्वरूप में आपने धरा को अपनी दाढ़ो पर रखा। सागर मंथन करने वाले प्रभु ! हम आपको जाने कैसे देंगे ? **3996**
पॆट्रिनि प्पोक्कुवनो⋆ उन्नै एन् तनि प्पेरुयिरै⋆ उट्र इरुविनैयाय्⋆ उयिराय् प्पयनाय् अवैयाय्⋆ मुट्र इम्मूवुलगुम्⋆ पॆरुम् तूराय् तूट्रिल् पुक्कु⋆ मुट्र क्करन्दॊळित्ताय् !⋆ एन् मुदल् तनि वित्तेयो ! ॥८॥	हमारी अपनी प्रिय आत्मा ! हम आपको जाने कैसे देंगे ? आप चिरंतन कर्म, उसके फल, तथा उसके आनंद भोगने वाले हैं। एक विशाल काली छिद्र की तरह तीनों लोक में प्रवेश कर आप अपने को पूर्णतया छिपा लिये हैं। मेरे आदि बीज ! **3997**
मुदल् तनि वित्तेयो !⋆ मुळुमूवुलगादिक्कॆल्लाम्⋆ मुदल् तनि उन्नै उन्नै⋆ एनै नाळ् वन्दु कूडुवन् नान्⋆ मुदल् तनि अङ्गुम् इङ्गुम्⋆ मुळुमुट्रुरु वाळ् पाळाय्⋆ मुदल् तनि शूळ्न्दगन्राळ्न्दुयरन्द⋆ मुडिविलीयो ! ॥९॥	तीनो लोक के आदि बीज ! आदि कारण आप। कब हम आकर आपमें मिल जायें ? आदि व्योम, यहां, वहां, एवं सर्वत्र, हमारे चारो तरफ चौड़ा, लंबा एवं अनंत। **3998**
‡शूळ्न्दगन्राळ्न्दुयरन्द⋆ मुडिविल् पॆरुम् पाळेयो⋆ शूळ्न्ददनिल् पॆरिय⋆ पर नल् मलर् च्चोदीयो⋆ शूळ्न्ददनिल् पॆरिय⋆ शुडर् ज्ञान इन्बमेयो !⋆ शूळ्न्ददनिल् पॆरिय⋆ एन् अवावर च्चूळ्न्दाये ! ॥१०॥	महत व्योम, चौड़ा, लंबा एवं अनंत ! उससे भी बड़ा विस्तार । तेजोमय पुष्प ! उससे भी बड़ा विस्तार । तेजोमय ज्ञानानंद ! उससे भी बड़ा विस्तार ।आप हममें मिश्रित हो गये। **3999**
‡अवावर च्चूळ्⋆ अरियै अयनै अरनै अलट्रि⋆ अवावट्रु वीडु पॆट्र⋆ कुरुगूर् च्चडगोबन् शॊन्न⋆ अवाविल् अन्दादिगळाल्⋆ इवैयायिरमुम्⋆ मुडिन्द अवाविल् अन्दादि इप्पत्तरिन्दार्⋆ पिरन्दार् उयरन्दे॥११॥	अपनी मुक्ति प्राप्त करलेने वाले कुरूगुर शडगोपन के पूज्यनीय हजार पद का यह पूर्णाहुति दसक प्रभु की प्रशस्ति है जो हरि ब्रह्मा एवं शिव के रूप में प्रकट हुए। जो इसे याद करलेंगे वे ऊंचे कुल में जन्म लेंगे। **4000** **नम्माळवार तिरूवडिगळे शरणम्**